आर्यभाषा पुस्तकालय
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
में उपलब्ध

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

चतुर्थ खंड

हस्तलिखित

संस्कृत-ग्रंथ-सूची

संपादकमंडल

सुधाकर पांडेय करुणापति त्रिपाठी

मोहनलाल तिवारी

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी



नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०३३
७५० प्रतियाँ

मूल्य——७५-००

मुद्रक
शंभुनाथ वाजपेयी
नागरीमुद्रण, वाराणसी

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एवं देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरंभ किया, अपितु ऐसे गुरु गंभीर आयोजन भी आरंभ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अभ्युदय और विकास-मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ़ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोत्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परंपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल संपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या बेठनों में पड़ी पड़ी एकांत धरती में गड़े धन की भाँति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८६४ ई० में हिंदी पुस्तकों की खोज की दिशा में सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यज्ञ में विभिन्न अवसरों पर प्रांतीय एवं केंद्रीय सरकारों ने समयोचित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढ़ाया है।

इतनी लंबी अवधि के बीच हिंदी ग्रंथों की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य संस्कृत ग्रंथों की भी उपलब्धि होती रही। संस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रंथ अत्यंत ही उपादेय एवं साहित्यान्वेषण के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनों से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनाभाव के कारण सभा का संकल्प बहुत दिनों तक अधूरा पड़ा रहा। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के संकल्प को मूर्त रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एवं भविष्य के लिये और सहयोग की आकांक्षा रखती है। संस्कृत ग्रंथों की सूची के तीन खंड पहिले ही प्रकाशित हो चुके हैं। इस चतुर्थ एवं अंतिम खंड को प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और आशा है कि विद्वज्जन इससे यथोचित लाभ उठाते हुए हमें इस प्रकार के उपादेय ग्रंथों के प्रकाशन के लिए अपनी उदार संमतियों से उत्साहित करते रहेंगे।

मेष संक्रांति
सं० २०३३ वि०

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १९०० से आरंभ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे है। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक अज्ञात लेखकों और ज्ञात लेखकों के अज्ञात ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिससे अनवरत प्रवहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतल-स्पर्शिता का आकलन करने में अकल्पनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों में जो भाषाएं प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का संचय, जो समयसीमा की दृष्टि को लाँघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपजीव्य एवं मूलाधार के रूप में प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्यौतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध अंग——छंद, अलंकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों में संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा में निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहले से ही अभिमुख थे। परंपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह में पड़कर व्यर्थ ही धरित्री में गड़ी हुई संपत्ति की तरह वेष्टन में लिपटी हुई शनैः शनैः नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूँदे पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १९वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश में अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथों की व्यापक पैमाने पर देशव्यापी खोज आरंभ हुई। रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बंबई तथा मद्रास की प्रेसीडेंसी सरकारों ने इस कार्य में अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध संस्थाओं और विद्वानों द्वारा भी खोज में उपलब्ध ग्रंथों के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्नों से प्राप्त ग्रंथों के विवरण के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य के अनेक अज्ञात लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक अज्ञात ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक अज्ञात ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। इस संबंध में रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएँ अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथों के प्रकाशन के क्रम में प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के आग्रह से

ही संस्कृत ग्रंथों की खोज में प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रंथों की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बंगाल ने किया जिसमें सन् १८९५ की खोज में प्राप्त ६०० हिंदी ग्रंथों की सूची और विवरण संकलित है। इसके अनंतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रंथों की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओं को संस्कृत के भी ग्रंथ उसी प्रकार प्राप्त होते रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बंगाल को संस्कृत ग्रंथों की खोज में हिंदी के ग्रंथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार संस्कृत के प्राचीन हस्तलेखों का सभा के पास एक अच्छा और अनेक विषय के ग्रंथों का संकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानकारी के लिये हिंदी के हस्तलेखों के विवरण की तरह इनका भी संपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्रार्थना पर केंद्रीय सरकार ने विचार किया और इसके संपादन और प्रकाशन के लिये अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसके संपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसके कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रंथों की कुल संख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयश्रेणियों में रखा गया है। इनमें साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, आचार, धर्मशास्त्र, ज्यौतिष, व्याकरण, उपनिषद्, कोश ग्रंथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तंत्र, मंत्र यंत्र, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपरीक्षा, वास्तुविद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों के विवरण उपलब्ध हो सके हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण कार्डों पर तैयार किए गए, जिनमें (१) विषय एवं क्रमसंख्या, (२) पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या, (३) ग्रंथनाम, (४) ग्रंथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रों या पृष्ठों का आकार, (९) पत्रसंख्या, (१०) प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और (११) प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या, (१२) क्या ग्रंथ पूर्ण है, अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शीर्षक से संकलन किया गया है। इस कार्य के करने में सभा के निम्नांकित कार्यकर्ताओं सर्वश्री शिवशंकर मिश्र, डा० प्रेमीराम मिश्र, मयालाल मिश्र, पारसनाथ पांडेय, वृजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद शुक्ल, महानंद तिवारी, प्रेमनारायण पांडेय, आदि का तत्पर सहयोग और श्रम प्रशंसनीय रहा है अतः ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने कार्य के प्रति इन लोगों की निष्ठापूर्ण लगन प्रशंस्य है।

कार्डों के तैयार हो जाने पर इसके संयोजन और संपादन के निमित्त श्री श्रीपति त्रिपाठी जी से सहयोगार्थ अनुरोध किया गया। उन्होंने इसे स्वीकार किया और दो चार दिन आए भी पर अंत में वे इससे एकदम विरत हो गए।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण का यह चतुर्थ खंड है जिसमें विभिन्न विषयों के लगभग १६००-५० ग्रंथों का विवरण आ सका है जो पूर्वोक्त विधि से संकलित है।

इसमें 'स्तुति-स्तोत्र' विषयक १५१८ तथा विविध विषय के ११४ ग्रंथों का विवरण प्रकाशित है। इस चतुर्थ खंड के अंत में 'परिशिष्ट' भाग है जिसमें पूर्व खंडों में प्रकाशित सूचना के अनुसार उन ग्रंथों के विशिष्ट विवरण भी दिए गए हैं जो संपादन क्रम में विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रंथ प्रत्येक खंडों में पुष्प चिह्नांकित (*) हैं।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रंश के भी अनेक ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रंथ हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रंश के ग्रंथों का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्व के ग्रंथ प्रकाश में आ सकेंगे।

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

—०—

विषय-निर्देश

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
स्तुति-स्तोत्र						
१	२५४१/२५	अंत:करणप्रबोध	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
२	४०६४	अक्षरवल्ली			दे० का०	दे०
३	५६८८	अध्यात्म स्तोत्र			दे० का०	दे०
४	४५६०	अनुपदेश स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५	७७५०	भानुस्मृति स्तोत्र			मि० का०	दे०
६	७७२८	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
७	१०६/(द)	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
८	६६१/५	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरचितं अंतः-करणप्रवोध संपूर्णं ॥
२२ × ९ सें० मी०	२ (१–२)	८	३३	पू०	प्राचीन	इत्यक्षरवल्ली संपूर्णं ॥
१२ × ७·५ सें० मी०	८ (१–८)	५	१६	अपू०	प्राचीन	
११·४ × ९·८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितंऽनुपदेश स्तोत्रं संपूर्णं ॥ राम
१६·५ × १०·२ सें० मी०	११ (१–११)	७	२०	पू०	आधुनिक	इति श्री महाभारते शतसहस्रसंहित यां वैय्याशक्यां विष्णुधर्मोत्तरे अनुसमृति संपूर्णं ॥ ··· ॥
१६·२ × १०·४ सें० मी०	७ (१–७)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेविष्णुधर्मोत्तरे अनु-समृतिसंपूर्णं ॥
१२·५ × ७·५ सें० मी०	१३	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत सहस्रां संहिताय दानधर्मोत्तरे अनुस्मृति संपूर्णं समाप्तम् शुभ मस्तुः ॥
१२·६ × ७·१ सें० मी०	१२	६	२१	पू०	प्राचीन सं० १९३१	इति श्रीमहाभारतेशतसहस्रां संहिता-यां शांति पर्वणि विष्मधर्मोतरेश्च नुस्मृति संपूर्णं समाप्तम् ···॥

मांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९	७१८२/५	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०	५४१२/५	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
११	६०४५/३	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२	६०७६/५	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३	६१०४	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४	·१३६८/५	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५	५९७१/६	अमुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६	५५१०/३	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९.६ × ९.३ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दान धर्मोत्तरे श्री अनुस्मृत्य संपूर्णम् ॥
१४.१ × ७.९ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते विष्णोःधर्मोत्तरे अनुस्मृति समाप्तः ॥
१३.१ × ७.५ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्रीमहाभारते शत सहस्र संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि अनुस्मृति समाप्तं ॥ शुभंशुभं ॥
१५.४ × ९.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्रसंहितायां वैय्यासिक्यां शांति पर्वणि श्रीविष्णु-धर्मोत्तरेषु अनुस्मृतिः संपूर्णम् ॥शुभम्॥
१९.८ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	९	२१	पू०	प्राचीन सं०१८५२	इति श्री महाभारते शांतिपर्वणिः शतसाहस्त्रां संहितायां वैसिक्यां विष्णुधर्मे अनुस्मृति संपुर्णः ॥संवत१८५२···
१५.७ × ७.८ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते वैयासिक्यां शांति पर्वणि दानधर्मोत्तरै मनु स्मृति संपूर्णम् ॥
१०.८ × ६.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्रायां संहितायां वैयासिक्यां विष्णोधर्मोत्तरेषु अनुस्मृत्य संपूर्ण समाप्तम् ॥
१६.९ × ९.६ सें० मी०	१० (१७–२६)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्त्रां संहितायां वैय्यासिक्यां शांति पर्वणि धान धर्मोत्तम अनुस्मृति समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७	५५२०/५	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१८	४६४८/२	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
१९	६३४७/२	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२०	५२५०	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२१	२९३३/५	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२२	७३०३	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२३	१५९२	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२४	३३४८/४६	अनुस्मृति स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·६ × ७·९ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	१५	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ८·३ सें० मी०	३ (९-१०,१२)	१४	२७	अपू०	प्राचीन	॥ श्री भगवान उवाच ॥ हंत ते कथयिष्यामि मुनेर्दिव्यामनुस्मृति ॥ मरणेयामनुस्मृति प्राप्नोति परमां गति ॥७॥ (पृ० १०, श्लोक सं०-७)
११·२ × ८ सें० मी०	१८ (१–१८)	९	८	अपू०	प्राचीन	
१३·८ × ८·६ सें० मी०	८ (१–८)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१५·७ × १०·९ सें० मी०	६	२५	२५	अपू०	प्राचीन सं०१९०८	इति श्री महाभारतेशतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां विष्णु धर्मोत्तरे अनुस्मृति समाप्ता: संबत् १९०८ चैत्र कृष्णा चतुर्दशी ······
१६·३ × ८·३ सें० मी०	७ (५–११)	५	१९	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ११ सें० मी०	४ (३–६)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२० (१–२०)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते श्रीविष्णोधर्मे नारायणनारद संवादे अनुस्मृति स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	३२२५/२	अनुस्मृतिस्तोत्र			दे० का०	दे०
२६	४२४३/४	अनुस्मृतिस्तोत्र			दे० का०	दे०
२७	२४८०/३	अन्नपूर्णाष्टक			दे० का०	दे०
२८	१४६४/५	अन्नपूर्णाष्टकस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२९	२१६१/७	अन्नपूर्णासहस्रनाम			दे० का०	दे०
३०	३२३८	अन्नपूर्णासहस्रनाम			दे० का०	दे०
३१	५७३९	अन्नपूर्णास्तवराज			दे० का०	दे०
३२	२१६१/७	अन्नपूर्णास्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·५ × ७·७ सें० मी०	१२ (१६–२७)	७	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शांतिपर्वणि भीष्म युधिष्ठिर संवादे अनुस्मृति स्तोत्र सम्पूर्णमस्तु ।। श्री कृष्णार्पणमस्तु ।।
२६·५ × १४·२ सें० मी०	३	१५	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते श्रीविष्णु ······ नारदसंवादे अनुस्मृति स्तोत्रसंपूर्णम् ।। ······संमत् १८८९ ।। मिति भाद्रवै.वुधि कृष्णपक्षे जनम अष्टमीबार ······।।
१७ × १२ सें० मी०	३½	१६	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमान्यासोन विरचितं अन्नपूर्णाष्टकं संपूर्ण समाप्तम् ।।
१८·७ × १२·७ सें० मी०	१½ (११–१२)	१५	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री मछंकराचार्य दिरचितां अन्न पूर्णाष्टकं स्तोत्रं संपूर्ण ।।
१४·५ × १०·५ सें० मी०	२८ (४०–६७)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे सर्व विद्यारहस्ये पंचांग खंडे श्री मदन्नपूर्णा मंत्र नाम सहस्त्रंपूर्ण ।।
१३·७ × ११·५ सें० मी०	१६	९	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री व्रह्मयामले पूर्व खंडे गौरी खंडे अन्नपूर्णा नाम्नां सहस्रकं संपूर्णम् ।।
२५·८ × १०·२ सें० मी०	१	६	३०	पू०	प्राचीन	इत्यन्नपूर्णा स्तवराज संपूर्णम् ।।
१४·५ × १०·५ सें० मी०	५ (६८–७२)	९	१५	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे सर्वविद्या रहस्ये श्री मदन्नपूर्णेश्वरी स्तवराजः समाप्तम्।। संवत् १८८३ शाके १७४८ आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदस्यां गुरुवासरे लिषतं नाथुराम, शुभमस्तु ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३	५६०१	अन्नपूर्णा स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३४	४७०३	अन्नपूर्णा स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३५	३७६६/२	अन्नपूर्णा स्तोत्र	,,		मि० का०	दे०
६३	६०६	अन्नपूर्णा स्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
३७	२१६१/७	अन्नपूर्णा स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३८	२४८७	अन्नपूर्णा स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३९	३३६७/२	अन्नपूर्णा स्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
४०	३३४१	अन्नपूर्णा स्तोत्र	,		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·६ × ८·८ सें० मी०	१	६	४०	पू०	प्राचीन	इत्याचार्य शंकर विरचितमन्नपूर्णास्तोत्रं समाप्तम् ॥
१७·३ × ८·७ सें० मी०	४ (१–४)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरंचि अनपूरर्णाऽ स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१८·२ × ११ सें० मी०	१½	१२	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री अन्नपूर्णास्तोत्रं सं० ॥
१७·५ × ८·५ सें० मी०	६	९	२२	पू०	प्राचीन	इति अन्न पूर्णाचा······
१८·५ × १०·५ सें० मी०	३ (७२-७४)	९	१५	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य विरचितं अन्नपूर्णा-स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
१५ × १०·१ सें० मी०	५ (१–५)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य्य विरचितं अन्नपूर्णा स्तोत्र समाप्तं लि० सागरदत्त······॥
२०·१ × १०·२ सें० मी०	१५ (४–१८)	७	२४	पू०	प्राचीन	इतिन्नपूर्णास्तोत्रं समाप्त इत्यन्नपूर्णा पंचांग संपूर्णसमाप्त सुभमस्तु सर्वेषाम् ॥
१२ × ७·५ सें० मी०	६ (१–६)	४	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रजामले अन्नपूर्णाऽस्तोत्र संपूर्णं ॥ शुभमस्तु पठनार्थं चिरंजीव:

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१	१२७२	अन्नपूर्णास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४२	२८१२	अन्नपूर्णास्तोत्र			दे० का०	दे०
४३	१५७५	अन्नपूर्णास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४४	५१५५	अन्नपूर्णास्तोत्र (पंचरत्न)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४५	५४२२	अन्नपूर्णास्तोत्र			दे० का०	दे०
४६	१०४३/४	अन्नपूर्णास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७	३८०१	अन्नपूर्णास्तोत्र	वेदव्यास		दे० का०	दे०
४८	४५७०/४	अन्नपूर्णास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८ × १२·१ सें० मी०	१	१४	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकराचार्य विचितं अन्नपूर्णा स्तोत्र संपूर्णम् ॥
१०·४ × ७ सें० मी०	६	५	१३	पू०	प्राचीन	इति अन्नपूर्णा स्तोत्रं ॥
२५ × १० सें० मी०	२	८	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं अन्नपूर्णास्तोत्र संपूर्णम् ॥ राम राम ॥
२३·५ × १०·१ सें० मी०	१	२०	१२	पू०	प्राचीन	......काशी पुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥ (प्रारंभ) इतिश्रीवेदव्यासविरचितं पंचरत्नं स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ (अंत)
१५·७ × ७·८ सें० मी०	३ (१–३)	५	२३	पू०	प्राचीन	...इत्यन्नपुर्नास्तोत्रं समाप्तं ॥ शुभमस्तु।
१४·७ × १३·३ सें० मी०	३	१२	१४	अपू०	प्राचीन	
१६.४ × ८·८ सें० मी०	१	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीशवेदव्यासकृतमन्नपूर्णास्तोत्रं समाप्तं ॥ शुभं ॥
२१·५ × १३·२ स० मी०	२	१६	९	अपू०	प्राचीन	दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देही० ॥१०॥ अन्नपुरणे......॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	१९० / ४(ग)	अपराजिता स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५०	५८५७	अपराधक्षमा स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५१	७०२३	अपराधक्षमा स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५२	७१६५	अपराधक्षमापन स्तोत्र	,,		मि० का०	दे०
५३	६४८५	अपराधक्षमापन स्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
५४	५४८६	अपराधभंजन स्तोत्र			दे० का०	दे०
५५	३४३४	अपराधभंजन स्तोत्र			दे० का०	दे०
५६	४३३७ / ८	अपराधसुंदर स्तोत्र	शंकराचार्य		दे०	दे०

पत्नों या पृष्ठों का आकार	पत्नसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२.२ × ८.८ सें० मी०	६ (१–६)	११	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णुधर्मोत्तरे त्रैलोक्यबिजया श्रीमदपराजिता सामाप्ता ॥
१६.६ × १० सें० मी०	५ (१–५)	७	२०	पू०	सं०१९४१	इति श्री मत्संकराचार्य विरचितं अपराध शमव स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु लिखितं १९४१ के……॥
२०.६ × ९.८ सें० मी०	३ (१–३)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
१३.३ × ८.२ सें० मी०	३ (१–३)	९	२३	पू०	प्राचीन सं०१९३८	इती श्रीमदापराधक्षमापन स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ × × × × × संवत् १९३८ मिती वैशाखवद्य १४ बुधवासरे ॥ जगदंवार्पणमस्तु ॥
१६.२ × ८.४ सें० मी०	७ (१–७)	५	१४	अपू०	प्राचीन	
२२ × १० सें० मी०	४ (१–४)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति रुद्रयामले महाकाल विरचितं अपराध भंजनं स्तोत्र समाप्तम् ॥
१३.९ × ८.२ सें० मी०	२ (१–२)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
१९ × १३.३ सें० मी०	३ (८३–८५)	१२	२५	पू०	प्राचीन सं०१९१४	इति श्री परमहंस परिब्राजकार्ये श्री मत्संकाराचार्य विरचितं अपराध सूंदर स्तोत्रं समाप्तां शुभंमस्तुः ॥ लिख्यतं…… संवत् १९१४ ॥

और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	१८११	अपराधसुंदर स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५८	२६४५	अपराधसुंदर स्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
५९	३२९८	अपराधसुंदर स्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
६०	७२२०	अपराधसूदन स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६१	४४५७	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
६२	७३६८	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
६३	७७४१	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
६४	४३३	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	९	२२	पू०	प्राचीन	इत्यपराधसुंदर स्तोत्रम् ॥
२०·७ × १० सें० मी०	३ (१–३)	८	२७	पू०	प्राचीन सं० १८३१	इति श्री शंकराचार्यविरचितं अपराध सुन्दरस्तोत्र समाप्तं श्री शुभमस्तु ॥ संवत् १८३१ के शाके १६९६ मार्ग शुक्लपक्ष ······॥
१९·४ × १०·६ सें० मी०	५ (१–५)	९	२०	पू०	प्राचीन सं० १८०५	इति शंकराचार्य विरचीतं अपराध सुंदर स्तोत्र संपुर्णं ॥ शुभंमस्तु ॥ संवः १८०५ ॥ चैतवदि ॥४॥
१६·८ × ९·६ सें० मी०	५ (१–५)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकराचर्य्य विरचितं अपराध-सूदन स्तोत्र संपूर्णं शुभमस्तु नारायणेन लिपितं × × × × ॥
२३·२ × ८·५ सें० मी०	२२ (१-१२, १४-२२)	५	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णुधर्मोत्तरपुराणे पुलस्त्य दालभ्य संवादे विष्णोरपामार्जन स्तोत्रं संपूर्णं ॥ × × ×
१९·७ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	११	३३	पू०	प्राचीन	इति विष्णु धर्मोत्तरे दालभ्यपुलस्त्य सम्वांदे अपामार्जनकं स्तोत्रं सम्पूर्णं ॥
२२·६ × १०·२ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं० १७२०	इति श्री विष्णुधर्मोत्तरे पौलस्त्यदालभ्य संवादे अपामार्ज्जनकं स्तोत्र समाप्तम् । सम्वत् १२२० (?) समय चैत्रवदि अमाब्स्यां लीषतं शुषदेव काऐथ. × × ॥
२५ × १०·७ सें० मी० (सं०सू०४-३)	१८	७	३०	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री विष्णुधर्मोत्तरे विष्णोरपामर्जनस्तोत्रं संपूर्णम । शुभमस्तुः संवत् १९०२ के शाल आषाढ़सुदिय का पुस्तक लिषा श्री मिश्रमोलऊ राम रघुनाथपुर वैठे श्री चौबे वोधाली राम पठनार्थकम् । श्री राम सीता राम राम······ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५	३७५	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
६६	४८४८	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	
६७	५७६१	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
६८	६०३६	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
६६	५४१०	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
७०	१४३१	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
७१	७५५६	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०
७२	१३	अपामार्जन स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·७ × ८·३ सें० मी०	८ (१–८)	५	२१	पू०	प्राचीन	अपामार्ज्जन स्तोत्रमंत्रस्य पुलस्त्यऋषि: वाराह नृसिहवामन परमात्मा स्वरूपी··· ··· ···
२१ × ९·७ सें० मी०	११ (१–११)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १८९६	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे पुलस्त्य-दालभ्य संवादे अपामार्ज्जनकं स्तोत्रं समाप्तम् ॥ शुभ सम्वत्सरा १८९६ शाके १७६१ समये भाद्रमासे कृष्णपक्षे दशम्या भौमवासरे × × × × ॥
२१·२ × ९·९ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	२५	पू०	प्राचीन सं० १८२३	इति श्री विष्णु धर्मोत्तरे पुलस्त्यदालभ्य संवादे अपामार्जनकंस्तोत्रं समाप्तं सुभमस्तु ॥ संवत् १८२३ आस्वन सुक्ल द्वितीया चंद्रवासरे ॥
२१·१ × ९·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णु धर्मोत्तरे अपामार्जनकं संपुरणं मिति पौष वदि ६ वार मंगलवारे लिषितं हरदत्त पठनार्थं सं० १९०२ का ॥
३०·४ × ११·७ सें० मी०	४	८	२४	अपू०	प्राचीन	
१८ × ८·५ सें० मी०	१७	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२०·७ × ९·५ सें० मी०	११ (१–११)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
१३·३ × ९·३ सें० मी०	२२ (४-२१, २३-२५)	९	१६	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १८१४	इति श्री विस्नु धर्मोत्तरे दालभ्यपुलस्ति संवादे अपामार्जन स्तोत्रं समाप्तं ॥··· लिखितं रामदत शुक्ल: स्वयं पाठार्थ: । ···संवत् १८१४ शाके १६७९ सर्वजित नाम संवत्सरे उत्तरायने ॥ मीनाऋतौ जेष्ठे मासि शुक्लपक्षे तिथौ पंचमं चंद्रवासरे कह इदं पुस्तक समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	७२३६	अर्गला स्तोत्र			दे० का०	दे०
७४	३०८१	अल्पमृत्युहर स्तोत्र	मार्कंडेय मुनि		दे० का०	दे०
७५	२५४१/२५	अष्टोत्तरशतनाम (श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र)	अग्निकुमार		दे० का०	दे०
७६	२५४१/२५	अष्टोत्तरशतनाम (श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र)			दे० का०	दे०
७७	२५४१/२५	अष्टोत्तरशत विट्ठलेश नामावली	हरिदास		दे० का०	दे०
७८	२५४१/२	अष्टोत्तरशत नामावली			दे० का०	दे०
७९	३७५८/७	अहिल्यास्तोत्र			दे० का०	दे०
८०	१४७९	अहिल्या स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१४·८ × ८·८ सें० मी०	२ (९–१०)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
२१·८ × ७·३ सें० मी०	२	८	३०	पू०	प्राचीन	इति मार्कंडेय कृतं अपमृत्युहरं स्तोत्रं संपूर्ण ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	३	१३	१८	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमदाग्नि कुमार प्रोक्तं अष्टोत्तरशत नाम परमितं श्री सर्वोत्तम-स्तोत्र संपूर्ण ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२	१४	१७	पू०	प्राचीन	इतिश्री सर्वोत्तमके अष्टोत्तर सतनाम संपूर्ण ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२	१३	१७	पू०	प्राचीन	इतिश्री बिठलेशाष्टोत्तर शतनामावली हरिदास विरचिता समाप्तं ॥
१५·७ × ८·५ सें० मी०	२	११	२३	पू०	प्राचीन	इति अष्टोशत नामावली समाप्तः···॥ श्री रघुनाथ द्विवेदन लिखितं पुस्तकं इदम् ॥······
१६·५ × १२·८ सें० मी०	३	१२	२५	पू०	प्राचीन	अहल्यायाः कृतं स्तोत्रं···
२१·४ × १०·४ सें० मी०	३ (१–३)	९	२८	पू०	प्राचीन	इत्यहल्या स्तोत्रं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१	२५४१/२५	आचार्य अष्टोत्तर शतनाम	हरिदास		दे० का०	दे०
८२	७०८६	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
८३	७७५४	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
८४	६०७१	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
८५	६०६५	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
८६	६००८	आदित्यहृदय स्तोत्र			मि० का०	दे०
८७	५६५०	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
८८	५७८२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१६·३ × १५·८ सें० मी०	३	१३	१६	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदाचार्यैरष्टोत्तर शतनामावली हरिदासोदिता समाप्तः ॥
१६·२ × १२·६ सें० मी०	१६ (१-१३, १५-२०)	६	२०	अपू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे श्री आदित्यहृदस्तोत्र संपूर्ण भाद्रे मासे सिते पक्षे द्वादश्यां चंद्रवासरे॥ संवत् १८८४······॥
१४·५ × ६·४ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	१७	पू०	प्राचीन श. १६५४	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णं ॥ ······॥ शके १६५४··· ॥
२२·१ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	२४	पू०	प्राचीन सं० १८३५	इति श्री कृष्ण अर्जुन संवादे आदित्यहृदय स्तोत्र संपूर्णम् ॥ अथ शुभ संवत् १८३५ मासोत्तमासे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे पून्य स्थितौ षष्टम्यायां वार रविवासरे ॥·······।
१४·६ × ८·४ सें० मी०	२६ (१-२६)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१६·४ × १२·३ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१५	पू०	प्राचीन सं० १६१०	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे आदित्य हृदयस्तोत्रं संपूर्णं ॥ श्री संवत् १६१० मिति आश्वनशुक्ला ५ सुक्रवासरे लिखितं वंगालिघाट ब्राह्मण जमुनादास॥
२१·८ × १०·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	३०	पू०	प्राचीन	अस्य श्री आदित्य हृदय स्तोत्र (पृ० सं० ३) × × × इति श्री भविष्योत्तर पुराणें श्री कृष्णार्जुन संवादे श्री कृष्ण प्रोक्तः ॥ शुभमस्तु ॥
२१·५ × ६·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

...मांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९	४२९५/३	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९०	२२९७	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९१	२२२८	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९२	५४१४	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९३	५४५२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	
९४	५११९	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९५	२९०१	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९६	४६२०	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.५ × १०.२ सें० मी०	३७ (४–४०)	७	१५	पू०	प्राचीन सं०१९७०	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे आदित्यहृदयस्तोत्रं संपूर्णम् ...संवत् १९७० मासोत्तमेमासे मार्गशिरमासे शुक्ल पक्षे शुभतिथौ द्वितीयायां २ शनिवासरे...... ॥
१७.२ × १३.४ सें० मी०	१७ (१–१७)	१०	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णम् शुभं भूयात् ॥
२३ × १०.५ सें० मी०	४	७	२३	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे बाल्मीकीये युद्धकांडे षष्टी सप्तमः सर्गः ॥ शुभंभवतु पाठक लेखकयोः ॥छ॥
१७.८ × १२ सें० मी०	२५ (१–२५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं०१९११	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे श्रीमदादित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥ मीती चैत्र... संवत् १९११ ॥
२५.१ × ११ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योतरपुराणे श्रीकृष्णार्जुन सम्वादे आदित्य हृदय स्तोत्रं संपूर्णं ॥
२३ × १०.५ सें० मी०	३४ (१–३४)	५	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१५.६ × ८.५ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	२०	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १८८२ केसाल चैत्रवदि ५ भौमेकह ।
१६.३ × ६.२ सें० मी० (सं०सू० ४–४)	१६ (१–१६)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन सम्वादे आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णम् भास्करायनमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७	४७०२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९८	४८३३	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९९	६३७/२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१००	४२६	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०१	७३१	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०२	१९०/४ (क)	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०३	२४८०/३	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४	६३१२/७	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·५ × ११·५ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	३०	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्र मंत्र समाप्तः !! शुभमस्तु: ।। संवत १८८२ समैनाम अस्विनस्कल्क: पंचमी ५ रविवासरे ।।
१७ × १३·३ सें० मी०	२५ (१–२५)	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्र सम्पूर्णम् ।।
२६·४ × ११·१ सें० मी०	१९ (१–१९)	८	२६	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जन संवादे अदित्य हृदय स्तोत्रं समाप्तं कर्तिकमासे कृष्णपक्षे अष्टमी शुक्रवासरे लिखितं रामसरणाख्यं ग्राममंमध्ये चपिनणा संवत् १९०९ ।।
१६·४ × ९·९ सें० मी०	८	६	१६	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये युद्ध काण्डे आंदित्य हृदय स्तोत्र संपूर्ण ।
१२·३ × १०·५ सें० मी०	१९ (१–१९)	८	२६	पू०	प्राचीन	इतिश्रीभविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आदित्यहृदयस्तोत्रं समाप्तं ।।०।।
१२·२ × ८·८ सें० मी०	२४ (१–२४)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्ण अर्जुन संवादे आदित्य हृदयं संम्पूर्णम् ।।
१७ × १२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१५	१६	पू०	प्राचीन सं०१९४४	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे अदित्यं हृदयं स्तोत्रं संपूर्णं ।। संवत् १९४४ फाल्गुन मासे कृष्णय पक्षे······।।
२०·८ × १४·२ सें० मी०	९ (२५–३३)	१५	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री भवोत्तर पुराणे कृष्णा अर्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्र संपूर्ण ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	४०६६	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६	४०१६	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०७	३३४८/४६	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०८	३३४५	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१०९	२८५६	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
११०	२८६९	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१११	७६९९	आदित्यहृदय स्तोत्र	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
११२	४४१५	आदित्य हृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·३ × ९·२ सें० मी०	११ (१–११)	६	४५	पू०	प्राचीन सं०१८२५	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन सवाद आदित्य हृदय स्तोत्र संपूर्णम् । शुभ भवत् संवत् ।। १८२५ केशाल ।।
१५·७ × ९·८ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	१७	पू०	प्राचीन सं०१८०१	इति श्री भविष्यंत्तर पुराणे कृष्णार्जुन सवादे आदित्य हृदयस्तोत्र संपूर्ण संवत् १८०१ का।वृषे। शाके। १७०६। मीती चैत्र सुदि १५ लिषतं। माहात्मा चैनराम जा बरोरि ग्राम मध्ये: ।।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री भविष्य त्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णं सवत् १८८१ के कार्तिक सुदी २ कः समाप्तं सुभमस्तु ।।
१५·५ × ७ सें० मी०	४७ (१–४७)	५	२३	पू०	प्राचीन सं०१८९२	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्र समाप्तं। लिप्यतं कायस्त छोटेलाल संवत् १८९२ माह।मा० कृष्ण: ति५ शुक्र: शाकीन गंगानिकटे विंध्यक्षेत्रे ।।
१५·१ × ८·२ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१८०६	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्यहृदय स्तोत्र संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८०६ ··· ··· ।।
(१६·९ × ८·४) सें० मी०	९ (१–९)	५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीक रामायणे युद्ध कांडे श्री राम अगस्ति संवादे आदित्यहृदय स्तोत्र संपूर्णमस्तु ।। शुभंभवतु ।।
१४·७ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१६	१८	पू०	प्राचीन	
१५·२ × ९·२ सें० मी०	२८ (१–२८)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन सवादे आदित्य हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् ।। श्री सविता सूर्य नारायणार्पण मस्तु ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	
११३	१३३०	आदित्यहृदय स्तोत्र			का०	दे०
११४	१९१७	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
११५	४५१३	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
११६	७०८५	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
११७	१५२८/६	आदियहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
११८	३४६६	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
११९	६२१३	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२०	६२२८	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × १०·५ सें० मी०	१९	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णं श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवति ॥
२३·४ × १०·९ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन० आदित्यहृदयस्तोत्र संपूर्ण ॥
२२·६ × १०·८ सें० मी०	४ (१-४)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १९३४	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे युद्धकांडे आदित्य हृदयं समाप्तं शुभमस्तु लिषितं पं श्री पाडे गंगा प्रसादेन गोबिंददास वैष्णव पठनार्थं शुभ संवत १९३४ के शाल········
३१·१ × १२·२ सें० मी०	८ (१–८)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
१४·८ × ११ सें० मी०	४१ (१,१–४०)	८	१६	अपू०	प्राचीन	
१३·४ × ७·२ सें० मी०	३६ (१-३५,३७)	७	१९	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्यत्तर पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य स्तोत्र संपूर्ण राम राम
१७·५ × ९·४ सें० मी०	२ (४–५)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये युद्ध कांडे षष्टोत्तर शाप्तमश्शर्गाः शुभमस्तू ॥ (पृ० सं० ५)
१३·३ × ९·५ सें० मी०	२८ (१,३-२९)	७	१४	अपू०	प्राचीन सं० १९०९ (?)	संवत् १९ ६ मीति भाद्रपद शुदि १५·······॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२१	३८७३	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२२	७४४	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२३	४०३४	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२४	४६१५	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२५	५०६७	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२६	४६०४	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२७	५४८२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२८	२३१७	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·४ × १०·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	२९	अपू०	प्राचीन	
३२ × १०४ सें० मी०	१४ (३–१६)	९	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८४४	इति श्री भविष्योत पुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्रम संपूर्णम् संवत् १८४४······सुद्धो वा मम दोसो न दियते श्री सुजाय नमः ॥
१८·४ × १०·२ सें० मी०	१४ (१-५,७-१५)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं० १९१२	इति श्री भविष्योत्तरे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् संवत् १९१२ पौष कृष्णा ११ शुभतिथौ शुक्रवासरे लिखितं पचौली महतावराय स्वात्मपठनार्थं शुभंभूयात्···
१६·८ × ८·२ सें० मी०	७ (२–८)	५	१३	अपू०	प्राचीन सं० १९११	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मी किये युद्ध कांडे शतशांतमः सर्गः आदित्यहृदय स्तोत्रं संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १९११ राम ॥
१५ × ९·६ सें० मी०	७ (४–५८, १०–१३)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१६·६ × ११·१ सें० मी०	१५ (६–२०)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
१९ × १०·९ सें० मी०	१९ (१–१९)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
१६·४ × ८·४ सें० मी० (सं०सू०४–५)	२८ (१-५,७,९-२४,२६-३१)	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत पुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आदित्यहृदय स्तोत्र सपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	२२६४	अदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३०	२१५२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३१	२११४	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३३	५७६३	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३३	५७६०	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३४	६०१२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३५	६१२०	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६	६०७२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९ × १०·८ सें० मी०	६ (१–६)	९	२२	अपू०	प्राचीन	
२२·२ × १०·६ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
१५· × ··८ सें० मी०	३८ (२–३९)	९	१६	अपू०	प्राचीन श० १७१०	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रीकृष्णार्जुन सवादे आदित्य हृदयं स्तोत्रं संपूर्णं शके १७१० ॥ मिति मार्ग सीर्ष सुक्लपक्षे पंचम्यां भौम वासरे ॥ राम राम राम राम
१६·६ × ११·६ सें० मी०	२ (२५–२६)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भाविष्योत्तर पुपाणे श्री कृष्णाजुंन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्र संपूर्ण ॥
१६·३ × ११·३ सें० मी०	६ (७–१०, १२-१३)	११	२४	अपू०	प्राचीन सं० १८६५	इति भविष्योत्तर पुराणे आदित्य हृदय स्तोत्र संपूर्णम् ॥·········· वैशाष सुदि १५ संवत् १८६५ मुकाम जैत्रपुरे ।
१३ × ८·२ सें० मी०	२९ (१–२९)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२७ × ९·३ सें० मी०	५ (२–६)	५	२६	अपू०	प्राचीन	आदित्य हृदय पुण्यं सर्व्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपेन्नित्यमक्षयम्परमं शिवम् ॥ ४ ॥––(पृ० संख्या–२) इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे युद्धकाण्डे सप्तोत्तर शततमः सर्गः ॥
२२ × १०·५ सें० मी०	१० (३–१२)	१०	३३	अपू०	प्राचीन सं० १८१४	इति श्रीभविष्योत्पुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्र संपूर्णं मीति कार्तिम शुक्ला ५ संवत् १८१४ लीषतं सीताराम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१३७	६७६२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८	५१६०	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३९	६९९६/२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४०	७०००	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४१	१८२०/२	आदित्यहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२	१९०/४ (ख)	आनंदलहरी (सौंदर्यलहरी)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४३	१४६१	आनंदलहरी (सौंदर्यलहरी)	शंकराचार्य		दे० का०	[illegible]
१४४	६०८४	आपदुद्धारक बटुक स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.२ × १०.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × १०.३ सें० मी०	१	९	३३	अपू०	प्राचीन	अस्यादित्य हृदय स्तोत्रस्या गस्त्यऋषि रनुटुप्छन्दः आदित्यहृदयभूतो भगवान्ब्रह्मा देवता (प्रारभ)
१०.१ × ६.५ सें० मी०	२३	९	१३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे आदित्य हृदय स्तोत्रं सपूर्ण ॥
२३.६ × १०.३ सें० मी०	२	९	३७	अपू०	प्राचीन सं० १९२३	इत्यार्षेरामायणे बाल्मिकिये आदिकाव्ये युद्ध कांडे आदित्य हृदयं नाम पष्टोत्तरशत तमः सर्गः समाप्तम् शुभम् ॥...... इति सम्वत् १९३२ ... ॥
१८ × १३-२ सें० मी०	४	९	१७	अपू० (खंडित)	प्राचीन	
१२.२ × ८.८ सें० मी०	४ (१–४)	११	१८	पू०	प्राचीन	इति श्रीशंकराचार्य विरता आनन्द लहरी सम्पूर्णा
१६ × ७.५ सें० मी०	७	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकरा चार्य विरचितं आनंदलहरी स्तोत्रं संपूर्णं ॥
१६·२ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्र जामले उमा महेश्वर संवादे आपदुद्धार वटुक स्तोत्र संपूर्णं समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४५	१५८५	आपदुद्धारक स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४६	५५३३	आपदुद्धार दुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०
१ ७	७२५६	आपदुद्धारबटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४८	५७७	आलमंदार स्तोत्र	श्रीयामुनाचार्य		दे० का०	दे०
१४६	५४७४	आलमंदारस्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
१५०	४६८०	आलमंदारस्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
१५१	७२८०	आलमंदारस्तोत्र			दे० का०	दे०
१५२	५५६३	आलमंदारस्तोत्र	,,		मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·६ × ११·३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	१३	पू०	प्राचीन सं० १६०५	इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वर संवाद्र आपदुद्धारकं स्तोत्रं समाप्तं ॥ संपूर्णम् संवत् १६०५ आषाढ़ कृष्ण ७ भृगुावसरे ॥
२०·६ × ६·६ सें० मी०	२	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीसिद्धेश्वरी तंत्रे गौरोसंवादे आपदुद्धारणे दुर्गा स्तोत्रं सम्पूर्ण ॥ शुभंभूयात्
१६·१ × १०·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीरुद्रयामले आपदुद्धारण बटुक भैरव स्तोत्रराजः समाप्तः ॥शुभंमुस्तु॥
२७·५ × ११·३ सें० मी०	६ (१–६)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीयामुनाचार्यविरचितं आलमंदार स्तोत्र संपूर्णं शुभ स्तु कल्याणं मस्तु शुभंभूयात् पुस्तकं भूयात् ।
३३.८ × १५·३ सें० मी०	५ (१–६)	६	४०	अपू०	प्राचीन सं० १७१४	इति श्रीमद्यामुनाचार्य कृतं आलुवंदारु-स्तोत्रं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७१४ वैशाख कृष्ण चतुर्दश्यां × ॥
२०·६ × ६·८ सें० मी०	८ (१–८)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीयामुनाचार्य विरचितमाल-मंदार स्तोत्र × × ॥
२५·५ × १२·७ सें मी०	६ (१,२,४–७)	६	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री आलमंदार स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२२ × ११·२ सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	आधुनिक	इति श्री आलुवंदारु संपूर्णम् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५३	३७८	आलवंदारुस्तोत्र (सटीक)	यामुनाचार्य		दे० का०	दे०
१५४	५६४४/१७	आशाशत स्तव	गोस्वामी कृष्णचंद्र		दे० का०	दे०
१५५	७२०६	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५६	७१५४	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५७	७१५१	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५८	७११८	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५९	४५०६	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६०	१७४०	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
३२.९ × १५.७ सें० मी०	१४ (१से१९तक (स्फुटपत्र)	१४	४५	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८.५ सें० मी०	७५ (१–७५)	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १८३१	इति श्री निकुंजेश्वरी चरणकृपामात्र प्रसिद्ध श्री आशा शत स्तव श्रीमद्धित-कृष्णचंद्र गोस्वामिना विरचितः समाप्तः……संवुत् १८३१ ॥……
१५.५ × ७.३ सें० मी०	३ (१,३–४)	५	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री इंद्रवृहस्पति संवादे इंद्राक्षी स्तोत्र संपूर्णम् ॥ × × × × × × संवत् १८७४ के ×
१३.६ × ९.५ सें० मी०	३ (२–४)	६	१९	अपू०	प्राचीन सं० १८२६	इति द्रा स्तोत्र स प्तः सुभंमस्तू ॥ संवत् १८२६ ॥
२१.३ × १०.३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
९.८ × ५.८ सें० मी०	४ (२–५)	८	१७	अपू०	प्राचीन	इति इन्द्राक्षी स्तोत्रं संपूर्ण ॥
१२.६ × ९.५ सें० मी०	१६	७	८	पू०	प्राचीन	इति श्रीं मदिंद्राछी स्तोत्रं संपूर्ण शुभं । … …
१८.५ × ९.५ सें० मी० (सं०सू०४-६)	२ (१–२)	८	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री इंद्राक्षी स्तोत्र समाप्तं शुभ-मस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	१३२६/२	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६२	७७६/२	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६३	६२१०	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६४	४२०० /५	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६५	३१२६	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६६	६१३	इंद्राक्षी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१६७	१८५९	उग्रतारा कवचम्			दे० का०	दे०
१६८	१९८६/२२	उपदेशपंचक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·८ × १२ सें० मी०	४ (८–११)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति इन्द्र प्रोक्तं इंद्राक्षी स्तोत्रं समाप्तम्
१५·४ × १०·६ सें० मी०	५ (१८–२२)	६	१०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे इंद्राक्षी स्तोत्र संपूर्ण शुभ भूयात्
२२·५ × ११·५ सें० मी०	१	२२	१६	पू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्री इंद्राछी अस्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु: ॥
१३·८ × ८·६ सें० मी०	४	७	१५	पू०	प्राचीन	इती श्री स्कंद पुराणे··· इद्राक्षी स्तोत्रं संपूर्ण ॥
१६·५ × १०·७ सें० मी०	५ (१–५)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १६१८	इति श्री मंदिर विरंचितं इद्राक्षी स्तोत्र संपूर्ण ॥··· संवत् १६१८ मिति आषाड + वद्य २ चंद्रवासरे शुभमस्तु ॥
१५·५ × ६ सें० मी०	३	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे इंद्राक्षी स्तोत्र समाप्त: श्री गणेशायनम: ॥ श्री राम श्री राम ॥
२५·७ × ६·८ सें० मी०	२३ (१–१४, १६–२४)	६	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री गंधर्वतंत्रे ब्रह्मतारा कवचं संपूर्णं ॥
२६·२ × १४·१ सें० मी०	पृ० ½	६½	४६	पू०	प्राचीन	इति उपदेशपंचकं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	५६४४/१७	उपराधासुधानिधि	गोस्वामीकृष्णचंद्र		दे० का०	दे०
१७०	३५५७	ऋणनाशकरण स्तोत्र			दे० का०	दे०
१७१	७७६६	ऋणहर स्तोत्र			दे० का०	दे०
१७२	३१०१	ऋणहर स्तोत्र			दे० का०	दे०
१७३	४६४५/५	एकश्लोकी रामायण एवं भागवत			दे० का०	दे०
१७४	७४८४	एकाक्षरी श्लोक			दे० का०	„
१७५	१२७१	एकीभाव स्तोत्र	वादिराज		दे० का०	दे०
१७६	१६८६/२२	कमलनेत्र स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३ × ८.५ सें० मी०	१५ (१२२-१३)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्कृष्ण चक्रोस्वामिना विरचित श्री उप सुधानिधिः समाप्तः ॥
१४.७ × ८.२ सें० मी०	२ (१-२)	६	१४	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति ऋणनाशकरण स्तोत्रम् समातपम् स० १९०९'''
९.६ × ५.७ सें० मी०	४ (१-२,४-५)	४	१०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीरिणहर स्तोत्र संपूर्ण ॥ श्री-जगन्नाथाय नमः ॥
१८ × १०८ सें० मी०	१	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले ऋणहर स्तोत्रम् समाप्तम् संवत् १८६६ ॥ श्री रामः ॥
१२.२ × ८.५ सें० मी०	२ (१-२)	८	१२	पू०	प्राचीन	इति ऐक श्लोकी रामायन संपूर्न ॥ ······· इति एक श्लोकी भागवत संपूर्न ॥
२३.७ × ११.३ सें० मी०	२	७	२४	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११.३ सें० मी०	४	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्धदिराज विरचिमे की भाव स्तोत्तं समाप्तं ॥ शुभंभवतु सर्घदा ॥
२९.२ × १४.१ सें० मी०	१	१४½	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री कमलनेत्र स्तोण संपूरणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७७	५७१६	कर्पूरस्तव (सटीक)		रंगनाथ	दे० का०	दे०
१७८	१५५३	कर्पूरस्तव			दे० का०	दे०
१७९	१८००	कर्पूर स्तोत्र			दे० का०	दे०
१८०	६३१२/७	कल्याणमदिर स्तोत्र			दे० का०	दे०
१८१	६००६	कल्याणमंदिर स्तोत्र			दे० का०	दे०
१८२	२००७	कात्यायनी स्तोत्र			मि० का०	दे०
८१३	३००१/३	कामदाष्टक	योगसखी		दे० का०	दे०
१८४	१४३८	कार्तवीर्यार्जुन कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८ × ११·६ सें० मी०	१० (१–१०)	८	४५	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ११ सें० मी०	३	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाकाल विरचितं दक्षिण कालिकाया स्वरूपाख्य कर्पूरस्तवः समाप्तः शुभमस्तु
२०.५ × १३·५ सें० मी०	७	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री महाकाल कृत कर्पूरस्य स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ श्रीरस्तु ॥ श्री कल्याण-मस्तु ॥
२०·८ × १४·२ सें० मी०	५ (२१–२५)	१५	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री कल्याण मंदिरांभिध्यानमिदं स्तोत्रं संपूर्णं ॥
२७·२ × ११·६ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री कल्याण मंदिर स्तोत्रं ॥ समाप्तम् ॥
१६·३ × १२·३ सें० मी०	२	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनी स्तोत्र संपूर्णम् ॥ शुभम ॥
२१·३ × ८·१ सें० मी०	१½	८	३८	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री योगसखी विरचितं कामदाष्टक समाप्तं । शुभमस्तु संवत् १८८४ कै सालमिति पौ सुदि ८॥
२१ × ९ सें० मी०	३	९	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	६०४२	कार्तवीर्यार्जुनकवच			दे० का०	दे०
१८६	१५६१/५	कार्त्तवीर्यार्जुन स्तोत्र			दे० का०	दे०
१८७	३७४८	कार्तवीर्यार्जुन स्तोत्र			दे० का०	दे०
१८८	४०८६	कालभैरव सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
१८९	३७९९/२	कालभैरवाष्टक	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
१९०	७५१	कालभैरवाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१९१	२५९६	कालभैर वाष्टकं	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१९२	२९३६/१२	कालभैरवाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·२ × ११ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री कार्तवीर्य संपूर्ण ॥
१६.२ × १०.१ सें० मी०	२	८	१९	पू०	प्राचीन	इति कार्त्तिवीर्ज स्तोत्र सपूरण ॥
२३·२ × ११ सें० मी०	१० (१–१०)	११	१३	अपू०	प्राचीन	
२३.७ × १० सें० मी०	८ (१–८)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
१८.२ × ११ सें० मी०	१	१३	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं कालभैरवाष्टकं संपूर्णं ॥
२४ × १०.५ सें० मी०	३	९	३५	पू०	प्राचीन सं० १९०४	इति मच्छंकराचार्य विरचितंकाल भैरवाष्टकं संपूर्णं ॥ संवत् १९०४ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु समै नाम वार मंगल परिवा तिथि आसारु मासे प्रथम कृष्ण पक्षे आगसभी पुस्तकं लेख्यं ॥
१०.५ × ८ सें० मी०	३	८	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्शंकराचार्य विरचित कालभैरववाष्टकं संपूर्णं ॥ शुभमस्तु
२४.३ × १३.१ सें० मी० (सं०सू० ४–७)	२½	१९	१४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत् शंकराचार्य विरंचित काल भैरव ष्टकं समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९३	७०१९	कालभैरवाष्टक स्तोत्र			दे० का०	दे०
१९४	१३४३	कालिका कवच			दे० का०	दे०
१९५	२८०२/९	कालिका रहस्य			दे० का०	दे०
१९६	१३७५/२	कालिकारहस्यकवच			दे० का०	दे०
१९७	१५६७	कालिकासहस्रनाम			दे० का०	दे०
१९८	७०८३	कालिका सहस्रनाम			दे० का०	दे०
१९९	२९२६	कालिकासहस्रनाम			दे० का०	दे०
२००	२७८०	कालिकासहस्रनाम-स्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·१ × ९·५ सें० मी०	१ (१–२)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे काल भैरवाष्टक स्तोत्रं संपूर्णं । + + + + श्री काशी विश्वेरार्पणमस्तु ॥
१७·३ × ८·८ सें० मी०	४ (१-२,४-५)	५	१६	अपू०	प्राचीन सं०१९२९	इति श्री कालिका कवचं समाप्तमा ॥ १ ॥ संवत् १९२९ ॥ श्री मीती चाइतु सुदी दुइज २ रविवासरे समस्तु ॥
२० × ११·१ सें० मी०	१२	९	२२	अपू०	प्राचीन	
१५ × ९·५ सें० मी०	१०	८	१६	पू०	प्राचीन	इति कालिका रहस्ये कालिका रहस्य कवच संपूर्णं ॥ सुभं भवति, मंगल ददातु ॥
२४ × ११ सें० मी०	१३	१०	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री कालि ा नाम्नां सहस्त्रं संपूर्णं ॥
१४·२ × ९ सें० मी०	२५ (१से३५तक) स्फुट पत्र	७	१५	अपू०	प्राचीन सं०१८९४	इति कालिका कुलसर्वस्वे परशुराम शिव संवादे कालिका सहस्रनाम समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ × × × × संवत् १८९४ । २०८
२०·१ × १०·१ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२१	पू०	प्राचीन	
१७.७ × १०·७ सें० मी०	२७ (२–२८)	८	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री काली कुल······दक्षिण कलिका सहस्र नाम स्तवराजः समाप्ति मगात् ॥···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०१	५२२२	कालिकासहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
२०२	१२६९	कालीसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
२०३	७८६२/४	काली सहस्रनाम			दे० का०	दे०
२०४	३०८८	कालीसहस्रनाग स्तोत्र			दे० का०	दे०
२०५	१७९८	कालीहृदय			दे० का०	दे०
२०६	४६१३	काशीप्रदक्षिणात्मकस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२०७	७६५२	काशीविश्वनाथमंगल-स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२०८	३८५९	काशीस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·९ × ४·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	४	३८	अ पू०	प्राचीन	अस्य श्री कालिका सहस्रनाम स्तोत्र मंत्रस्य कलभैरव ऋषिरनुष्टुप छंदः श्मसान काली देवता··· (प०सं०-३)
२०·५ × १३·५ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री कालिकुल सर्वस्वे शिव पर-राम संवाद काला सहस्रनाम संपूर्णम् ॥ १ ॥
१० × ९·६ सें० मी०	७ (३०–३७)	५	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री कालिका नाम्नीं सहसं शक्ति भाषितम् ॥
२६·६ × ८·८ सें० मी०	१० (१–१०)	९	४५	पू०	प्राचीन	इति कालिकाकुल सर्वस्वे हरराम-संवादे काली सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तं श्री कालिका चरणाभ्यांनमः ॥
२० ५ × १३·५ सें० मी०	२	७	१६	पू०	प्राचीन	श्यामा तंत्रे काली हृदंय संपूर्णम ॥ ॥ श्री ॥
१६·४ × ८.१ सें० मी०	५ (१,४–७)	८	२१	अपू०	प्राचीन सं० १९०८	इति श्री मत्संकराचार्य्य विरचितं काशी प्रदक्षिणात्मक स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु श्री विश्वेश्वरायनमः ॥ .आस्वनवदि १४ संवत् १९०८ लिखत प० श्री दुबे गिरधारीजू ॥
१७·५ × ८·६ सें० मी०	५ (१,५–८)	७	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य्य विरचितं काशी विश्वनाथ मंगल स्तोत्र संपूर्ण ॥
१५·३ × १०·८ सें० मी०	२ (१–२)	७	१६	पू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री मत् शंकराचार्य विरचितं काशी स्तोत्रं संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०६	२३६/१२	कुज स्तोत्र			दे० का०	दे०
२१०	५०३१	कृष्णअष्टोत्तर शतनाम-स्तोत्र			दे० का०	दे०
२११	३६५५	कृष्णकवच			दे० का०	दे०
२१२	१२८८	कृष्णकवच			दे० का०	दे०
२१३	६७६८	कृष्णकवच			दे० का०	दे०
२१४	२१३७	कृष्णसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
२१५	१७४५	कृष्णस्तोत्र			दे० का०	दे०
२१६	२७०८/३	कृष्णस्तोत्र			दे० का०	०दे

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × १०.५ सें० मी०	३	१४	१२	पू०	प्राचीन	मुकुंदे घनश्यामवर्णम् ॥
१७ × ७.५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति पद्म पुराणे क्रियायोगसारे श्री कृष्णाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥···
१६.२ × १०.७ सें० मी०	२	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्म वैवर्त्ते महापुराणे कृष्ण खंडे श्री कृष्ण कवचं संपूर्णं शुभमस्तु ॥
२४.५ × १५ सें० मी०	२ (१–२)	१८	३१	पू०	प्राचीन	मंत्रसिद्धि भवेत्तस्यपुरश्यचर्याविधा ॥
१३ × ५.६ सें० मी०	२ (१–२)	५	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे श्री कृष्ण कवच समाप्तम् ॥
१५.८ × ९.५ सें० मी०	३०	९	१७	पू०	प्राचीन सं० १९१९	इति श्री रुद्रजामले रहस्ये पार्वतीश्वर संवादे श्री कृष्ण सहस्रनाम स्तवराज स्तोत्रं संपूर्णं शूमंभूयात् ॥ संवत् १९१९ के शाल श्रावन सुदी २५ शनौ का लिखितं
१८.२ × १२.५ सें० मी०	७ (१–७)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री व्रह्मवैवर्ते महापुराणे श्री कृष्ण स्तोत्रम् ॥
१६ × १० सें० मी०	३	६	१८	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	२५४१/२५	कृष्णाय स्तोत्र	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
२१८	४६०४	कृष्णाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२१९	२१५३	कृष्णाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२२०	२४८८	क्षमापराधसुन्दर स्तोत्र			दे० का०	दे०
२२१	२०७०	क्षमाषोडशी संस्कृतटीका (सहिता)	रंगराज		दे० का०	दे०
२२२	४०७७	क्षमाषोडशी(मूलव्याख्या)	रंगराज		दे० का०	दे०
२२३	१३४६	क्षमाषोडशी स्तोत्र			दे० का	दे०
२२४	७६५५	क्षेत्रपालभैरवाष्टक			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२	१३	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरंचितं कृष्णाश्रय स्तोत्रं संपूर्णं
२९·३ × १३·६ सें० मी०	३ (१–३)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य कृतौ कृष्णाष्टकौ संपूर्णो ॥
३३·८ × १७·६ सें० मी०	१	११	३४	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इति शंकराचार्यः विरंचिते कृष्णाष्टक संपूर्ण ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री रस्तु ॥ संवत् १९१६ ॥
१५·८ × १२ सें० मी०	३ (१–३)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिब्राजकाचार्य गोविंद भगवत्पाद पूज्यशिष्यशंकराचार्य विरचिते क्षमापराध सुंदर स्तोत्र संपूर्णम् ॥
३१·८ × १४ सें० मी०	६ (१–६)	१७	५६	पू०	प्राचीन	इति श्री क्षमाषोडशो मूल व्याख्यानं संपूर्णं ॥
३१·१ × १४ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	४८	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति श्री क्षमापोडशीमूल व्याख्यानं समाप्तम् शुभम् संवत् १८४७ शके १७१२ कार्तिक शुदि १४ शनौ शुभम् ॥
१९·२ × १०·७ सें० मी०	५ (१–५)	८	३०	पू०	प्राचीन सं० १८९२	इति श्री क्षमाषोडसी स्तोत्रं सम्पूर्णम ॥ ...... इति श्री लक्ष्मीस्तवः समाप्तः ॥ श्रीभाष्यकारो जयति अब्देदिनंदनागेन्दु ॥ सं० १८९२ ॥ मीती पुस सुदी ॥ १३ ॥ वार सुक्र ॥ यादृशं पुस्तके दृष्टातादृशं लिखते मया। यदि शुद्धम् असुधोवा मम दोषयनवीद्यते ॥ श्रीमते रामानुयाय नमः ॥
१६·७ × १०·१ सें० मी०	२ (१–२)	८	२३	पू०	आधुनिक	

(सं० सू० ४–८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२५	२७५०	खड्गमाला स्तोत्र			दे० का०	दे०
२२६	६३११/३	गंगा आरती	स्वामी मानगिरि		दे० का०	दे०
२२७	१४२३	गंगाकवच			दे० का०	दे०
२२८	३३३६	गंगामंगलाष्टक			दे० का०	दे०
२२९	७१९३	गंगालहरी सटीक (पीयूषलहरी)	पंडित राज जगन्नाथ		दे० का०	दे०
२३०	४२७/४	गंगालहरी	पंडित राज जगन्नाथ		दे० का०	दे०
२३१	६	गंगालहरी	पंडित राज जगन्नाथ		दे० का०	दे०
२३२	२२४०	गंगालहरी	पंडित राज जगन्नाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	ग्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२० × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	२६	पू०	प्राचीन	इत्याथर्वणरहस्ये खड्गमालास्तोत्र संपूर्णम् ॥
१९ × ९·४ सें० मी०	२ (२–३)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वामि मानगिरि विरचिता गंगा आरती समाप्ता ॥
११·९ × ४·८ सें० मी०	१०	५	१६	अपू०	प्राचीन	
१२·६ × ७·२ सें० मी०	७ (१–७)	४	१७	पू०	प्राचीन सं० ९१५	इति श्री गंगामंगलाष्टक संपूर्णम् श्रीः शु: ६ सनि सं० १९१५ ॥
२७·९ × १२·६ सें० मी०	१८ (१–१८)	११	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री पंडितराज कृतागंगालहरी टीकायां समाप्तम् ॥ चैत्रशुक्ला१३रवौ श्री शुभम्भूयात् वंशीधर द्विजेनेयं गंगा लहरी लिपि कृता स्वहस्तेन ॥
१४·५ × १० सें० मी०	१९ (१–१९)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री जगन्नाथ कृत गंगालहरी अस्तलो समाप्तां ॥
१५ × १२ सें० मी०	१६	८	१४	अपू०	प्राचीन	
२४ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री जगन्नाथ त्रिशूली पंडितराज विरचिता गंगालहरी समाप्ता ॥ श्री राम ॥ श्री राम ॥ लिख्यंत कुस्याल रामेण किनोणी ग्राम मध्ये ॥ श्री राम श्रीराम श्रीराम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३३	७३७१/३	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२३४	३७०८	गंगाष्टक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२३५	७६७५	गंगाष्टक			दे० का०	दे०
२३६	४७७१	गंगाष्टक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२३७	५२८०	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	
२३८	४८८२/२	गगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२३९	४८९८	गंगाष्टक	वाल्मीकि		दे० का०	
२४०	५०२३	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
९·९ × ४·१ सें० मी०	६	५	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्यं विरचितं गंगाष्टक संपूर्ण ॥
१७ × ९·७ सें० मी०	३ (१–३)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीकविरतं गंगाष्टकं श्री शिवार्पणमस्तु रामायनमः ॥
१५· × ९·४ सें० मी०	३ (१–३)	७	१५	अ्पू०	प्राचीन	
२२·६ × ७·५ सें० मी०	१	८	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीकीना कृतं गंगाष्टक संपूर्णम् ॥
२५·९ × ११ सें० मी०	१	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री संकराचार्य विरचित गंगाष्टक समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
१४·३ × १३·४ सें० मी०	३ (१–३)	९	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य कृतं गंगाष्टकं संपूर्ण लिखतं जानकिदास॥ सुभमस्तु।
२१· × १०·४ सें० मी०	२ (१–२)	९	२४	पू०	प्राचीन सं० १७६८	इति श्री वाल्मीकिना विरतं गंगाष्टकं समाप्तंमिदं । संवत् १७६८ द्वितीय भाद्रवशु दि पंचमी ऋषि पंचमी गुरवासरे लिपीदं धर्मदासेन ॥
२२·२ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकरा दचिवजशारे गंगष्टक संपूर्ण शुभमस्तू······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३४४६	गंगाष्टक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२४२	२५५२/५	गंगाष्टक			दे० का०	दे०
२४३	११५५	गंगाष्टक			दे० का०	दे०
२४४	३११८	गंगाष्टक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२४५	४२२४	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२४६	१८३८/२	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२४७	२०७३	गंगाष्टक			दे० का०	दे०
२४८	२००६	गंगाष्टक	वालमीकि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीकिनाविरचितं गंगाष्टक संपूर्णम् ।। श्री रामोविजयते ।।
१६·१ × ५१ सें० मी०	७ (२२–२८)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीकेना विरचितं गंगाष्टक संपूर्न समाप्ता शुभमस्तु ।।
१६·२ × ८·५ सें० मी०	४	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री कालदास कृतं गंगाष्टकं संपूर्ण शुभ मस्तु मंगलं ददातु ।।
१५.६ × ६·६ सें० मी०	५ (१–५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीकि ना विरचितं गंगा ष्टक संपूर्ण ।।
३१·५ × ११·४ सें० मी०	२ (१–२)	७	३३	पू०	प्राचीन सं०१६३१	इति श्री मच्छंकरार्यं विरचितं गंगाष्टक समाप्तम् शुभमस्तु संवत् १६३१श्रावण मासे शुक्ल पक्षे सुभतिथौ अष्टम्याम्··· ··· ··· ।।
१६·७ × १०·४ सें० मी०	४ (५–८)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्शंकराचार्य विरचितं दिग् विजय सारगंगाष्टक सम्पूर्णम् षट्-वाणांक भूश्वैव सम्वतोयं प्रकीत्तितम् सम्भुतिथ्यां दुवासरेण नभ शुक्लामुदा-हृता खिलारि पठनार्थाय दुर्गादत्त अयं लिषे १ ।।
२५·२ × ६·७ सें० मी०	४ (१–४)	५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री गंगाष्टक संपूर्णम् शुभम् ।।
२५ × १०·५ सें० मी०	२	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री वाल्मीकि विरचित गंगाष्टकम् श्री···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४६	५७६८	गंगाष्टक	ढुंढिराजभट्ट		दे० का०	दे०
२५०	५८५४	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२५१	२६६६/८	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२५२	६०६६	गंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
२५३	२२५३	गंगाष्टक			दे० का०	दे०
२५४	५१५७	गंगाष्टक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
२५५	७६६८	गंगाष्टक			दे० का०	दे०
२५६	१८६६	गंगाष्टक स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४·४ × १०·३ सें० मी०	२ (१–२)	९	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्चतुसमुद्रराज मान्यमहापंडित धुरीण धुल्ये इत्युपनामक श्री अनताभट्टात्मज ढुंढ़िराज ढुंढिराज भट्ट विरचितं गंगाष्टकं समाप्तम् ॥ ···
१४·३ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री मंछकरावार्य विरचितं गंगाष्टक समाप्तं ॥
१५·५ × १४·५ सें० मी०	१½	११	१७	पू०	प्राचीन	इति संकराचार्य गंगाष्टक संपूर्ण ॥
१८·५ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं गंगाष्टक सपूर्ण ॥ लिखितं हरिभजन ब्राह्मण ॥
१९·५ × ९·५ सें० मी०	२	७	२३	अपू०	प्राचीन	श्री गंगा अष्टक संपूर्णम् ।
२४·२ × १०·५ सें० मी०	२	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाकिनां विरचितं श्री गंगाष्टकं स्तोत्रं संपूर्ण
१६·५ × ८·२ सें० मी०	२ (२–३)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मन्नाराधणहनुमत्विरचितायां गंगाष्टकं समाप्तं शुभमस्तु ॥
२९.५ × १४ सें० मी०	४	१३	३६	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इति श्री शंकराचार्य बिरचितं गंगाष्टक स्तोत्रमसमाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८६१ जेस्ट शुदि १ बधवासरे लिखंत मिदं लक्ष्मण मिश्र घूर्त कौश सगोत्र चँडीपुर मध्ये शुभंभूयात् ···

(सं०सू०४-९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५७	१४४४/५	गंगाष्टक स्तोत्र			दे० का०	दे०
२५८	५१३५	गंगासहस्रनाम			दे० का०	दे०
२५९	७६४३	गंगासहस्रनाम			दे० का०	दे०
२६०	२०२३	गंगासहस्रनाम			मि० का०	दे०
२६१	१४७२	गंगासहस्रनाम			दे० का०	दे०
२६२	४३८६	गंगासहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
२६३	३७७९	गंगासहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
२६४	३४४५	गंगास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१८·७ × १२·७ सें० मी०	१½ (९–१०)	१५	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री ॥
२७·५ × ९.१ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३७	पू०	प्राचीन सं० १९३२	इति श्री स्कंदपुराणे काशी खंडे गंगा सहस्रनामैकोन विंशत्तमोध्यायः ॥ शुभम् । भूयात् सम्वत् १९३२ जेष्टमासे शुक्ल ॥ पक्षे प्रतिपदायां शुक्रवासरे ॥
२७·५ × १०·९ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १९३१	इति श्री गंगा सहस्रनाम संपूर्ण संवत् १९३१ मिती × × × × ॥
१६·३ × १०·७ सें० मी०	१०० (१-२९, ४२-६७, ७२-११३)	७	१४	अपू०	प्राचीन सं० १९३३	इति श्री नानापुराणसारोद्धारे गंगासहस्र नाम वर्ननो नाम अष्टम ८ प्रकरणम् समाप्तम् मितिश्रावणवदि ९ शनिवार संवत् १९३३ शुभम् भूयात्
१४·५ × १२·५ सें० मी०	१९ (४–२२)	११	१६	अपू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री स्कंद पुराणे काशी खंडे गंगा सहस्र नामैकोनत्रिशंतमोध्यायः ॥ सं० १९११
१५·३ × ९·७ सें० मी०	३६ (१–३६)	७	१५	पू०	प्राचीन शके १७१८	इति श्री स्कंद पुराणे काशीखंडे गंगा-सहस्रनामस्तोत्रं संपूर्ण ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु शके १७१८ नलनामसंवत्सरे आषाढ शुक्ल त्रयोदशांभानुवासरे इदं-पुस्तकं समाप्तं ॥
१५·४ × ९·६ सें० मी०	३८ (१-७, ९-३९)	६	१६	अपू०	प्राचीन शके १७३५	इति श्री स्कंदपुराणे काशीखंडे गंगा-सहस्र नाम स्तोत्रं संपूर्ण ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ शके १७३५ ॥ श्री मुखनाम संवत्सरे तद्दिनीइदं पुस्तकं समाप्तं श्रीरामः ॥
१४·८ × ८·६ सें० मी०	५ (१–५)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे प्रकृतिखंड धर्मस्व-कृतं ॥ गंगा स्तोत्र समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
२६५	५६०५	गंगास्तोत्र			दे० का०	दे०
२६६	६११९/७	गउत्पारणी स्तोत्र			दे० का०	दे०
२६७	५६३०	गजेंद्रमोक्ष			का०	दे०
२६८	५५१०/२	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२६९	६६१/५	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७०	५९७१/६	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७१	६०४५/३	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	
२७२	७५१७	गजेंद्रमोक्ष			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·९ × ८·६ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री धर्मस्त्र कृतं गंगास्तोत्रं समाप्तं ॥
१४·७ × ९·९ सें० मी०	३ (४७–४९)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति गउत्पारणी समाप्ता ॥
१६· × १०·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	२२	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री महाभारथे सतसहस्रसंहितायां वैयाशिक्या शाति पर्वणि गजेन्द्र मोक्षणं संपूर्ण माहु वदि १८ संवत् १८७२•••
१६·३ × ९·६ सें० मी०	२४ (२७–५०)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्यं संहितयां शांति पर्वणि गजेन्द्र मोक्षणं स्तोत्र संपूर्ण ॥
१२·६ × ७·१ सें० मी०	२५	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्र संहितायां शांति पर्वणि गजेंद्र मोक्ष संपूर्ण समाप्तम्
१०·८ × ६·७ सें० मी०	३३ (१–३३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारत शत सहस्रायां संहितायां वैयासिस्यां शातिपर्वणि गजेंद्र मोक्षणं संपूर्णम् ॥
१३·१ × ७·५ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि गजेद्र मोक्षणं समाप्तम् शुभमस्तु सर्व जगताम × ॥
१६·४ × ९·९ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	१६	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री मन्महाभारते शतसाहस्य संहितायां वैयाशक्यां सांख्य पर्वणि गजेंद्र मोक्षणं संपूर्ण ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तू इति गीता पंचरत्नसमाप्तः शके १७८२ संवत् १९१७ आंगिरानामसंवत्सरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	४४४० / १०	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७४	३२२५ / २	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७५	५·१५	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७६	७२७१	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७७	६७६६	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७८	१०६ / (ल)	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२७९	७१८२ / ५	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२८०	३१६९	गजेंद्रमोक्ष			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·४ × ९·१ सें० मी०	२०	९	१७	पू०	प्राचीन सं०१८९८	श्री मन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैय्यासक्यां शांति पर्वणि भीष्म युधिष्टिर संवादे गजेंद्र मोक्षणं समाप्तं ॥ शुभ भवत् संवत् १८९८ ॥ प्रया मध्ये लिषते परमहंस जी के स्थान यमुना-तिरे कटगंजे प्रायग दास वैष्णवा लिषते ।
१५·५ × ७·७ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभा ते शतमहस्त्र संहिता
१५·८ × ९·७ सें० मी०	२० (१–२०)	८	२०	पू०	प्राचीन सं०१९२२	इति श्री गजेन्द्रमोक्ष समाप्त ॥ शुभ संवत् १९२२ के लिषा + + ॥
२४·३ × १०·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	३३	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री महाभारते सतसहस्त्र संहितायां वैयासि × × × गजेंद्र मोक्षणं समाप्त ॥ × × × × संवतु १८९८ मुकाम × × ॥
१७·१ × ८·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	२३	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ७·५ सें० मी०	२७	६	१७	अपू०	प्राचीन	
१६·६ × ९·३ सें मी०	२९ (१–२९)	६	१९	अपू०	प्राचीन	
१२ × ९·२ सें० मी०	११ (९-१५,१५-१७,२४)	७	१७	अपू०	प्राचीन सं०१८१६	इति श्री महाभारतेशांतिपर्वणि गजेन्द्र मोक्षणं संपूर्णं ॥ संवत् १८१६मार्ग शीर्षव० १ ।

क्रमांक और विवरण	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८१	१८२७	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२८२	५५२०/५	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२८३	५४१२/५	गजेंद्रमोक्ष			दे० का०	दे०
२८४	२६३३/५	गजेंद्रमोक्षस्तोत्र			दे० का०	दे०
२८५	२४४०	गजेंद्रमोक्षस्तोत्र			दे० का०	दे०
२८६	३३४८/४६	गजेंद्रमोक्षस्तोत्र			दे० का०	दे०
२८७	६०७६/५	गजेंद्रमोक्षस्तोत्र			दे० का०	दे०
२८८	४२४३/४	गजेंद्रमोक्षस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनत	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३ × ८ सें० मी०	८ (१७–२४)	७	१५	अपू०	प्राचीन	
१३·६ × ७·६ सें० मी०	३० (१–३०)	६	१५	अपू०	प्राचीन	
१४·१ × ७·६ सें० मी०	२८ (१-२०,२२-२९)	६	१४	अपू०	प्राचीन	
१५·७ × १०·६ सें० मी०	१४	७	२६	अपू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां बैयासिक्यां शांतिपर्वणि गजेंद्र मोक्षणं नाम स्तोत्र संपूर्णम् संवत् १९०६ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा रवि दिने···
१८·५ × १३ सें० मी०	१६	९	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत साहस्यां संहितायां वैयसक्यां शान्ति पर्वणि गजेंद्र मोक्षस्तोत्र संपूर्ण ॥ राम ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३५ (१–३५)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि गजेंद्र मोक्षे स्तोत्रं संपूर्णम् शुभमस्तु श्री
१५·४ × ९·५ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·२ × १४·२ सें० मी०	५	१५	४९	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्यां संहितायां वैयासक्यां शांतिपर्वणि गजेंद्र-मोक्ष स्तोत्र संपूर्णम् ॥

(सं०सू०४–१०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८९	१३६८/५	गजेंद्र स्तोत्र			दे० का०	दे०
२९०	५९२६	गणपतिसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
२९१	२९६५/४	गणपति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२९२	२८०२/६	गणपति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२९३	७५३४	गणपति स्तोत्र			मि० का०	दे०
२९४	५६७१	गणपति स्तोत्र			दे० का०	दे०
२९५	३२०८	गणाधीशस्तोत्र गणपति (स्तोत्र)			दे० का०	दे०
१९२	७५५१/२	गणेशऋणहरण स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.७ × ७.८ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२५.३ × १२.१ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	३५	पू०	प्राचीन सं० १७८८	इति श्री पद्मपुराणे श्री महागणपति सहस्र नाम स्तोत्रं ।। संवत् १७८८ फाल्गुन कृष्णपक्षे ।। भृगुवासरे लिखितं .... ।।
१५.५ × ९.५ सें० मी०	६	११	१०	अपू०	प्राचीन	
२० × ११.७ सें० मी०	३½	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री गणपति स्तोत्र संपूर्णम् ।।
१७.३ × ८.९ सें० मी०	२ (१–२)	६	१८	अपू०	प्राचीन सं० १९२१	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे गणपति खण्डे गणपति स्तोत्रम् संवत् १९२१ के मिती क्वारवदि १२ ।।
२७.४ × ९.६ सें० मी०	५ (१–५)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
१३.८ × ७५ सें० मी०	३ (१–३)	६	१४	अपू०	प्राचीन	
२३ × ११.३ सें० मी०	१	७	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे उमामाहेश्वर संवादे गणेश ऋणह ··· त्वं संपूर्णं ···।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९७	४३७७	गणेशकवच			दे० का०	दे०
२९८	२१८३	गणेशद्वादशनाम			दे० का०	दे०
२९९	५०२४	गणेशपंचरत्न			का०	
३००	३१३७	गणेशसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	
३०१	१८१६	गणेशसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३०२	७७५८	गणेशस्तवन			दे० का०	
३०३	४८४५/५	गणेशस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३०४	२१६८	गणेशस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४.२ × ९.१ सें० मी०	६ (१-६)	७	१६	पू०	प्राचीन सं० १९१२	इति श्री महागणपति व्यथा बंधमोचन कवच संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु लिखितं × × × × संवत् १९१२ ॥
२३ × ११ सें० मी०	१	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश द्वादश नाम संपूर्ण ॥ शुभ भूयाज्जगतः ।
२१ × ९.७ सें० मी०	१	९	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश पंचरत्न संपूर्ण ॥
१५.५ × ७.९ सें० मी०	१० (१-७,९-११)	९	२९	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयाम लेइश्वर पार्वती संवादे इश्वर प्रोक्तं वरदगणेश सहस्त्रं नाम स्तोत्रं संपुर्णमस्तु ॥
१५.४ × ७ सें० मी०	१६ (२-६,८-११, १३-१४,१६, १९,२१)	७	१५	अपू०	प्राचीन	
२७.७ × ११ सें० मी०	३ (१-३)	७	३९	अपू०	प्राचीन	
११.२ × ८.५ सें० मी०	४ (१-४)	५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकराचार्य्य विरचितं गणेश स्तोत्र संपूर्ण ॥......
२३.४ × १०.१ सें० मी०	४ (१-४)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे गणेश-स्तोत्र समाप्तम् ॥ शुभमस्तु पाठक-लेखयोः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०५	२३६२/२	गणेशस्तोत्र			दे० का०	दे०
३०६	७२५०	गणेशस्तोत्र			दे० का०	दे०
३०७	६५२०/१६	गणेशाष्टक			दे० का०	दे०
३०८	१३०३/४	गणेशाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३०९	४७३५	गणेशाष्टक			दे० का०	दे०
३१०	३९००	गरूड स्तव			दे० का०	दे०
३११	३८२०	गायत्री अष्टसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
३१२	७१०५	गायत्रीअष्टसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२ × ९·७ सें० मी०	२	८	१२	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × ९·२ सें० मी०	११	८	२०	अपू०	प्राचीन	
९·९ × ९·५ सें० मी०	२	१०	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री भुजंग प्रयात छंद गनेसाष्टक संमाप्त सुभमस्तु ॥
१०·८ × ८ सें० मी०	५ (३४–३८)	५	९	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकराचार्य विरचितं गणेशाष्टक् पूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्री ॥
१८·२ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति गणेशाष्टकं गणेशपुराणातर्गतं समाप्तं ।।
२४ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	११	२३	पू०	प्राचीन	इति गरुड़ स्तवः ॥
९·५ × ७·५ सें० मी०	५० (१–५०)	६	१२	पू०	प्राचीन	ॐ तत्सदिति विष्णयामले सृष्टि प्रसंशायां ब्रह्माविष्णु संवादे नारदाय प्रोक्तं ग।यत्र्यष्टसहस्त्रनाम पंचक्षततमोध्यायः ॥
१५·६ × ८·५ सें० मी०	१५ (३–१७)	९	१८	अपू०	प्राचीन सं० १८५२	ॐ तत्सदिति विष्णु यामले सृष्टि प्रसशाया ब्रह्माविष्णु संवादे नारदाय प्रोक्तं गायत्र्यष्ट सहस्त्रनाम पंचाक्षत तमोध्यायः ॥ ··· ··· ··· संवत् १८५२ मिति वैष शुद्ध ६ भृगुवासरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१३	४३४२	गायत्री अष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रं			दे० का०	दे०
३१४	१५७१	गायत्रीअष्टोत्तर सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
३१५	३३७९/६	गायत्रीकवच			दे० का०	दे०
३१६	३०७९	गायत्रीकवच			दे० का०	दे०
३१७	३३७९/६	गायत्रीपंचांग			दे० का०	दे०
३१८	३३७९/६	गायत्रीपद्धति			दे० का०	दे०
३१९	६६६३	गायत्रीबीजरामायण			दे० का०	दे०
१२०	३३७९/६	गायत्रीमूतशुद्धि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·६ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र कल्पे गायत्री अष्टोत्तर शत नामामृत स्तोत्र संपूर्ण ॥ ....
२७ × ११·५ सें० मी०	१०	६	३३	पू०	प्राचीन	
२० × ८·३ सें० मी०	४ (१–४)	५	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहितायांब्रह्मनारद संवादे गायत्री कवचं समाप्तम् ॥
१६ × ९·५ सें० मी०	५	८	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री गायत्री कल्पेगात्रीकवचं समाप्तं, शुभमस्तु ॥ श्री राम ॥ श्री रामायनमः ॥
२०· × ८·३ सें० मी०	१८ (८४–१०१)	५	२८	पू०	श०१७६४	इति श्री गायत्री पंचाग समाप्तः दंपूस्तक शके १७६४ शुभकृत्नामब्दे आश्विन शुक्ल त्रितीयायां भृगुवासरेत्त दिने समाप्तः
२० × ८·३ सें० मी०	१९ (२२–४०)	५	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री शारदातिलके एक विंशतिमे पटले गायत्री पद्धति समाप्त
१६·६ × ७·७ सें० मी०	२ (१–२)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति गायत्री बीज रामायणं समाप्तं रामार्पणमस्तु ॥
२० × ८·३ सें० मी० (सं०सू०४-११)	१७ (५–२१	५	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री गायत्रीभूत शुद्धिसमाप्तः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२१	४३३९	गायत्रीमंत्रकवच			दे० का०	दे०
३२२	३३७९/६	गायत्रीसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३२३	३४३९	गायत्रीसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३२४	७३६२	गायत्रीसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३२५	३२०१	गायत्रीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३२६	४३४७	गायत्रीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३२७	४६५४	गायत्रीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३२८	७२८६	गायत्रीस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·२ × ११·६ सें० मी०	४ (१–४)	८	१८	पू०	प्राचीन सं० १९४०	इति भगवती भागवते महापुराणे द्वादशस्कधे गायत्री मंत्र कवचं नाम तृतियोध्याय: ३ चैत्र कृष्ण १० शनौ संवत् १९४० ॥
२० × ८·३ सें० मी०	३० (५४–८३)	५	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामल तंत्रेगायत्री रहस्ये गायत्री नाम सहस्रं संपूर्णं ॥
१८·२ × १० सें० मी०	१९ (२–२०)	८	२४	अपू०	प्राचीन सं० १८९९	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे देवी गायत्री रहस्ये सहस्रनाम संपूर्णं ॥ शुभमस्तु संवत् १८९९ ॥
१७·१ × ८·४ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	२४	अपू०	प्राचीन	अथ गायत्री सहस्रनाम प्रारंभ ॥ (प्रारंभ से)
२८·१ × ११·६ सें० मी०	८	११	३०	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री ब्रह्मयामले ब्रह्मानारद संवादे गायत्री सहस्रनामस्तोत्र संपूर्णम् संवत्-१८८८शाके १७५३ चैत्रवदि त्रयोदशो गुरुवासरे १ ॥
३५·३ × १७·७ सें० मी०	६ (१–६)	१६	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वर संवादे गायत्री सहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम्गमत् शुभं भूयात् श्री संवत्········ ॥
१३·३ × १० सें० मी०	१ (१–१७)	८	२४	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री गायत्री सहस्रनामस्य सदाशिव ऋषि: त्रिष्टुप्छंद: श्री परमात्मा गायत्री देवता···
१५.३ × ११·२ सें० मी०	८ (१–८)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति गायत्री स्तवराज: समाप्त: ॥ शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥ मंगललेखकपाठकयो: संवत् १८४९ पौष कृष्ण १ गुरौ ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६ : २	३५६७	गायत्रीस्तवराजस्तोत्र	विश्वामित्रकृत		का०	दे०
३३०	४५८५	गायत्रीस्तोत्र	दिलेराम सूरि		दे० का०	दे०
३३१	२१४१	गायत्रीस्तोत्र			दे० का०	दे०
३३२	७६६८	गायत्रीस्तोत्र			दे० का०	दे०
३३३	७७३२	गायत्रीस्तोत्र			दे० का०	दे०
३३४	५४२६ / ४	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३३५	७६९७	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३३६	७२६६	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·६ × ८·३ से० मी०	५ (१–५)	७	३५	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र संहितायां विश्वामित्र कृतं गायत्री स्तवराज स्तोत्रं समाप्तं
३३·३ × १२·४ सें० मी०	२ (१–२)	८	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्सारस्वत द्विजरत्न कौशल्य वंशावतंस श्री मद्दिलेराम सूरि प्रणीतं श्री गायत्री स्तोत्रम् ॥ निधिपति शोधितमेतत् ॥
१६ × १० सें० मी०	४ (१–४)	८	१	पू०	प्राचीन	इति गायत्रीस्तोत्रं समाप्तं सुभमस्तु ॥
११·५ × ६·७ से० मी०	४	६	१३	अपू०	प्राचीन	
११·२ × ६·४ सें० मी०	४ (३५–३८)	५	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्वाशिष्ट संहितायां गायत्री स्तोत्रं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥
१७·३ × ८·६ से० मी०	६ (१–६)	७	२९	पू०	प्राचीन	गायत्री हृदयं संपूर्णं × × × ॥
२६·५ × ११·७ से० मी०	८ (१–८)	९	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री गायत्री हृदयं समाप्तम् ॥
२१·६ × १० से० मी०	६ (१–६)	९	२३	पू०	प्राचीन सं०१८४८	इति श्री गायत्रीहृदयं संपूर्णः संवत् १८४८ मीती कार्तिग शुक्ला एकादशी ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३७	६१५/३	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३३८	३३७९/६	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३३९	४९७९	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३४०	५५३०/३	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३४१	२९४७	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३४२	४२५२	गायत्रीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
३४३	४४४०/१०	गुरुअष्टक			दे० का०	दे०
३४४	४०१४/६	गुरुअष्टक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
१९½ × ११½ सें० मी०	४	१२	३२	पू०	प्राचीन	इति गायत्री हृदयं सम्पूर्णं यदछरेत्यादि॥
२० × ८.३ सें० मी०	१३ (४१–५३)	५	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गायत्री हृदयं समाप्तं ॥
२२·८ × ८·८ सें० मी०	१६ (१–१६)	५	३२	अपू०	प्राचीन	इति गायत्रीहृदयं संपूर्णं × × ॥
२६ × १४·७ सें० मी०	८ (१–८)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मेति वेदोक्तं गायत्रीहृदयं संपूर्णम् ॥
२४·३ × ९·४ सें० मी०	१	४५	२२	पू०	प्राचीन सं०१८५०	इति गायत्रीहृदय समाप्तं सुभमस्तु संवत् १८५० ॥
२० × ११ सें० मी०	४ (१–४)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति भ० भा० म० द्वा० गा० हृ०४।
१२·४ × ९·१ सें० मी०	२	९	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री गुरुअष्टक संपूर्णं ॥
१८·१ × १६·१ सें० मी०	२	१३	११	पू०	प्राचीन	इति श्री गुरुअष्टक संपूर्णं समाप्तं··· ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४५	७७६४	गुरुकवच			दे० का०	दे०
३४६	५२४७	गुरुगीतास्तोत्र			दे० का०	दे०
३४७	५६३२	गुरुचरणारविंदस्तोत्र			मि० का०	दे०
३४८	६११३/१०	गुरुपरंपरा			दे० का०	दे०
३४९	५२९४	गुरुसहस्रनाममालामंत्र			दे० का०	दे०
३५०	७७६६/२	गुरुस्तोत्र			दे० का०	दे०
३५१	३०५९	गुरुस्तोत्र			दे० का०	दे०
३५२	२७४०	गुर्वष्टकम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·४ × ९ सें० मी०	५ (२–६)	९	१७	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १०·६ सें० मी०	९ (१–९)	१३	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर षंडे श्री गौरी-शंकर संवादे गुरूगीता संपूर्ण समाप्तम् शुभमस्तु ॥
१६·३ × १० सें० मी०	१	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गुरुचरणारविन्द स्तोत्रं संपूर्णं मस्तु ॥ श्रीः ॥
१६·५ × १३ सें० मी०	७ (२१–२७)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री गुरुपरंपरा संपूर्णं ॥
१४·३ × १०·६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री गुरुसहस्रनाममाला मंत्रस्य श्री सदाशिव ऋषिः नाना विधानि छंदांसि श्री गुरुर्देवता श्री गुरु प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः··· ··· ··· ··· (श्लोक १६ के बाद) ॥
२०·८ × ११ सें० मी०	२ (४–५)	५	२३	पू०	प्राचीन	इति षोडस नित्यात···दि मते गुरुस्तोत्रम् सम्पूरणम् ॥
१२ × ६ सें० मी०	३ (१–३)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री गुरूस्तोत्र संपूर्णं शफली भूयात् राम लिपि द्वारिका रामेण गुरोर्ध्यानार्थे ॥
१२·३ × ६·३ सें० मी० (सं०सू०४-१२)	३ (१–३)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१९६४	इति गुर्वष्टकं समाप्तिमगमत् ८ श्री संवत् १९६४ शके १८२९ अधिक चैत्र शुक्ले कादश्यां सोमवासरेऽदं पुस्तकं लिखितम् लेनश्री गुरुः प्रीयताम्

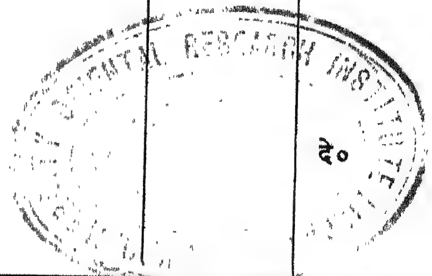
क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	२५४१/२५	गोकुलाष्टक	विठ्ठलेश्वर		दे० का०	दे०
३५४	३८९९	गोपाल आरती	वेद व्यास		दे० का०	दे०
३५५	४२१४/२	गोपालकवच			दे० का०	दे०
३५६	८०७	गोपालकवच			दे० का०	दे०
२५७	१२२२	गोपलरहस्यसहस्र-नामस्तवः			दे० का०	दे०
३५८	१२९९	गोपाललहरी			दे० का०	दे०
३५९	१८१५	गोपालसंमोहनकवच			दे० का०	दे०
३६०	६०१०/४	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	२०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री विट्ठलेश्वर विरंचित श्री गोकुष्टक संपूर्ण ॥ श्री कृष्णायनमः ।
२५·५ × ११·३ सें० मी०	२ (१–२)	८	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदव्यास विरचिता गोपालार्ति समाप्ता लिखितं गंगासहायेन करनालः संस्थितं ।
२७·४ × ११·३ सें० मी०	१	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री नारदपञ्चारात्रे गोपाल कवच समाप्तम् ॥ लिषा श्री शुक्लरामरतन ॥ श्री गोपालायनमः ॥
१७·५ × १०·५ सें० मी०	७ (२–८)	८	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री गोपालमोहनंनाम कवचं समाप्तम् ॥ हस्ताक्षरः ।
२३·८ × १०·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति संमोहनाख्येमहा तंत्रे श्री गोपाल रहस्य सहस्र नामस्तवः समाप्तः ॥ श्री गोपालार्पणं मस्तु श्री गोपालायनमः शुभमूयात् ॥
१६·६ × ९·५ सें० मी०	४	७	१४	अपू०	प्राचीन	
२०·८ × १० सें० मी०	५ (१–५)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री गौतमी तंत्रे गोपाल संमोहनं नाम कवचं संपूर्ण ॥
१५·९ × १२·१ सें० मी०	२८ (२६–५३)	६	१५	पू०	प्राचीन सं०१९२१	इतीशमोहनं तंत्रे पार्वतीश्वर संवादे श्री गोपाल सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्णं शुभं मस्तू लिष्यंतपरमानंद मिस्र अधोमुखं संवत् १९२१ मीती भादो सुदी ४ चंद्रवासरे × × × ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संज्ञा	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६१	६	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३६२	७,४५	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३६३	७३६१	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३६४	३३३७	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३६५	३१२/२	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३६६	२६७५	गोपालसहस्रनाम			मि० का०	दे०
३६७	१४०२	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०
३६८	४४०५	गोपालसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·×१२ सें० मी०	१८	८	२२	पू०	प्राचीन सं०१६२५	इति श्री संमोहन तंत्रेपार्वतीहर संवादे श्री गोपाल सहस्रनाम स्तोत्र त्रैलोक्य-मोहनं संपूर्ण ।। शुभमस्तु ।। मिति माघशुक्ल ।। १३ ।। भौमवारे ।। संमत् १६२५ ।। श्री राम ।। श्रीराम ।।श्री।
१६·२×१० सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति संमोहन तंत्रे पार्वतीहरसंवादे श्री गोपालसहस्रनाम संपूर्ण × × ×
२७.४×११·४ सें० मी०	६ (१–६)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री संमोहन तंत्रे हर पार्वती सवादे गोपाल सहस्रनाम संपूर्ण ।। शुभंभूयात् ।। श्री शम्वत् १६१६ मासोत्तमे मासे पौषमासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां भृगुवासरे तद्दिने गउरी दत्तेक्षेण लिखितं सहस्रनामकं शुभम् ।। + + + +
१३·५×११·५ सें० मी०	२८ (१–२८)	८	१७	पू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री संमोहनं तंत्रे पार्वतीहर संवादे श्री गोपाल सहश्र नाम त्रैलोक्य मोहन यंत्र समाप्तम् संवत् १६१५। श्रावण भाशे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ रविवांयां भौमवासरे।
२१ ५×१५ सें० मी०	१८	७	१७	अपू०	प्राचीन सं०१६४३	इति श्री संमोहनाख्ये महातंत्रे ।। श्री गोपाल सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्ण ।। संवत् १६४३ कृष्णाके १८७ मासानाममसोत्तमे मासे मागसर मासे शुभेशुक्लपक्षे पुन स्थिती १४।
१६·१×१०·२ सें० मी०	१२	८	१५	अपू०	प्राचीन	
२१·३×१० सें० मी०	८ (२१-१५,२०)	७	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री संमोहनतंत्रे पार्वतीश्वर संवादे श्रीगोपाल सहस्रनाम समाप्तम् ।।
१६.७×१२ सें० मी०	२० (५–२४)	८	१७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६९	१०९०	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३७०	२४८५	गोपाजसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३७१	४६६५	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३७२	५२२३	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			मि० का०	दे०
३७३	६४८२	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३७४	५४३९	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३७५	१५१९	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३७६	४२१५	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे०	दे०



पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ९·८ सें० मी०	११ (१–११)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री संमोहन तंत्रे पार्वती ईश्वर संवादे श्री गोपाल सहस्र नाम संपूर्णं ॥ श्री ॥
२१·१ × १०·४ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं० १९०४	इति श्री संमोहन तंत्रे पार्वतीहर संवादे श्री गोपाल सहस्रनाम त्रैलोक्य मोहनं नाम संपूर्णं समाप्तम् संम्वत् १९०४ मिति मार्गशीर शुक्लपक्षे भौवासरे ॥
१४·८ × ९·५ सें० मी०	१२ (१-३,७-९, १२-१७)	७	२१	अपू०	प्राचीन सं० १८९४	इति श्री संमोहन तंत्रे पार्वतीहर संवादे श्री गोपाल सहस्रनाम स्तोत्र त्रैलोक्य मोहन समाप्तम् इंद पुस्तकं लिखतं महतावद्विजेन स्वात्मपठनार्थ संवत् १८९४ ॥······
२४·१ × ९·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३५	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री गोपाल सहस्रनाम स्तोत्रस्य नारद ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्री गोपालो देवता कामो बीजं······पू० संख्या-३)
१५ × ८.५ सें० मी०	५ (१४,२३,२८, ३२,३४)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१३·४ × ९·७ सें० मी०	४ (१-२,४-५)	७	२०	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री गोपाल सहस्रनाम स्तोत्र मंत्रस्य नारद ऋषिरनुष्टुप् छंदः ॥··· पृ० सं० ४)
२६ × १०·२ सें० मी०	९	८	४५	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·४ सें० मी०	४ (३–६)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७७	४१९३	गोपालसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
३७८	३९०८	गोपालस्तव			दे० का०	दे०
३७९	३९३९	गोपालस्तव			दे० का०	दे०
३८०	३२७६	गोपालस्तवराज			दे० का०	दे०
३८१	२५२४	गोपालस्तवराज			दे० का०	दे०
३८२	४९६६	गोपालस्तवराजस्तोत्रं			दे० का०	दे०
३८३	१६५१	गोपालस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
३८४	७७३५	गोपालस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × ११.३ सें० मी०	११ (१,५-१४)	८	२६	अपू०	प्राचीन सं० १९३२	इति श्री संमोहन तंत्रे पार्वती इश्वर संवादे गोपालसहस्त्रनाम संपूर्णं शुभभूयात् सम्वत १९३२ मासपौष वदि १ वार वुद्धवासरेन्वितायाम् लिखतं विद्यार्थि गंगासहाय निखाथाणेम राम ॥
१५ × ७·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री गौतमीतंत्रे गोपाल स्तवं समाप्तं ॥
१३·५ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री गौतमी तंत्रे गोपाल स्तवं समाप्तं श्री राधाकृष्णायनमः ॥
१६·५ × ९ सें० मी०	६ (१–६)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री गौतमी तंत्रे श्री गोपाल स्तवराज संपूर्णम् ॥
१५·४ × ९·३ सें० मी०	२ (३–४)	७	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८९१	इति गौतमीय तंत्रे श्री गोपाल स्तव राजं समाप्तम् ॥ संवत् १८९१ वैशाख वदि ११ कः लिषितं··· ॥
२४·१ × ९·८ सें० मी०	२ (१–२)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री वृहद्गौतमी मंत्रे गोपाल स्तवराज संपूर्णं ॥
१८ × १०·५ सें० मी०	३	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री गौतमी तंत्रे इंद्रनारद संवादे गोपालस्तवराज स्तोत्रं संपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥ श्री रामकृष्णाय नमः ॥
१६·४ × १०·४ सें० मी०	७	५	१४	पू०	प्राचीन सं० १९४९	इति श्री नारद पंचरात्रे ज्ञानामृतसारे चतुर्थरात्रे गोपाल स्तोत्रं षष्टोध्याय मिती कार्तिक शुक्ला ४ संवत् १९४९ शुभभूयात् श्री ॥

(सं०सू०-४-१३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	४२१४/२	गोपालस्तोत्र			दे० का०	दे०
३८६	२९६६/८	गोपीजनवल्लभाष्टक			दे० का०	दे०
३८७	२३८७	गोरक्षशतकम्			दे० का०	दे०
३८८	४६९१	गोविंददामोदर स्तोत्र	विल्वमंगलाचार्य		दे० का०	दे०
३८९	५२०९	गोविंद दमोदर स्तोत्र	विल्वमंगल		दे० का०	दे०
३९०	३५३१	गोविंददामोदरस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३९१	९१११	गोविंददामोदर स्तोत्र	विल्वमंगल		दे० का०	दे०
३९२	४४५९	गोविंदनामाख्यास्तोत्र	विल्वमंगल		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·४ × ११·३ सें० मी०	१	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद पंचरात्रे गोपाल स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१५·५ × १४·५ सें० मी०	१½	११	१३	पू०	प्राचीन	इति गोपीजनवल्लभाष्टक स्पुंरणास्या॥
१५·४ × ११·१ सें० मी०	३२ (१–३२)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोरक्षशतकं समाप्तं ।। शुभं भूयात् ।
१७·३ × ७.८ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री विल्ल मंगलाचार्य कृतं गोविंद दामोदर स्तोत्रं संपूर्णं ॥
१९·४ × ११·८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री बिल्व मङ्गल कृष्ण गोविन्द दामोदर स्तोत्रं समाप्तम् ॥
१३·३ × ८·२ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं गोविन्द दामोदर स्तोत्र संपूर्ण ॥
१६ × १०·५ सें० मी०	९ (१-६,८-१०)	७	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री विल्व मंगल कृतं गोविंद दामोदर स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२७ × १२·३ सें० मी०	५ (२–६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री विल्व मंगल विरचितं गोविन्द नामाख्यं स्तोत्रं समाप्तम् शुभमस्तु मी० मर्गशीष वदी ५ वार बुद्ध सं० १९३९ लीखीत ब्रह्मदत्तेन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९३	७२६३	गोविंद पद्माष्टक			दे० का०	दे०
३९४	५८७५	गोविंद स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३९५	७२९८/२	गोविंद स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३९६	६११३/१०	गोविंद स्तोत्र	बिल्वमंगल		दे० का०	दे०
३९७	३३७७	गोविंद स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	
३९८	६७	गोविंद स्तोत्र			दे० का०	दे०
३९९	१९८६/२२	गोविंद स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४००	१९८६/२२	गोविंद स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५ ८ × ६·३ सें० मी०	२	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंद पद्माष्टक संपूर्णम् ॥
२३ ५ × १·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति संपूर्णम् समाप्तम् ॥
१६·४ × १२·५ सें० मी०	१	१८	१५	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति शंकरा चार्य्यकृतं गोविंद स्तोत्रं संपूर्णम् ० ॥
१६·५ × १३ सें० मी०	१२ (१०–२१)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति विल्वमंगल कृत संपूर्ण···
२३ ५ × १०·५ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	पू०	प्राचीन सं०१८६२	इति श्री संकराचार्य विरचितं भजगोविंद स्तोत्रं समाप्त शुभमस्तु श्री संम्वत् १८६२ अश्विन कृष्ण ४ शुक्र लिषितं राम चरण अयोध्या वासी··· ··· ···
१६ × १३·२ सें० मी०	२	११	१३	पू०	प्राचीन	
२६ २ × १४·१ सें० मी०	१	१७	५०	पू०	प्राचीन	इतिशंकराचार्य विरचितं गोव्यंदं स्तोत्र संपूर्ण ॥
२६·२ × १४·१ सें० मी०	१/२	१३	४४	पू०	आधुनिक	इतिशंकराचार्य्यविरंचित गोव्यंदं स्तोत्र संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०१	३५८८	गोविंद स्तोत्र			दे० का०	दे०
४०२	१७८६	गोविंद स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४०३	३३२०	गोविंद स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४०४	६२७३	गोविंदाष्टक			दे० का०	दे०
४०५	१६१८	गोविंदाष्टक			दे० का०	दे०
४०६	३१५२	गोविंदाष्टक	आनंद गिरि		दे० का०	दे०
४०७	२५	गोविंदाष्टकं	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४०८	४८१५	गोविंदाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१६·३ × ७·७ सें० मी०	३ (१–३)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१८३०	इति श्री संगराचार्ज विचित्तं गोविंद स्तोत्रं संपूर्ण समाप्ता ॥ संवत्१८३०॥ मिति फाल्गुण सुद ६ मुकामु छत्रपुर ॥
२३ × ७·५ सें० मी०	३ (१–३)	५	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्यं विरचितं गोबिंद स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ १ ॥ शुभं
१५· × ११·६ सें० मी०	४	१२	१२	अपू०	प्राचीन	इति संकरारचार्ज विरचितं गोबिंदर भजन स्तोत्र ॥
१०·८ × ५·६ सें० मी०	२ (१–२)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंद इति संवदे गोविंदाष्टक संपूर्ण सुभमस्तु ॥ संवत् १८२५ शाके १६६० लिषितं × × × × ॥
२६·८ × ९·३ सें० मी०	३	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत् शंकराचार्य्यं विरचितं गोविंदाष्टक संपूर्णं ॥ श्री ···
२६·४ × १०·८ सें० मी०	६ (१–६)	६	४४	पू०	प्राचीन सं०१७११	इति गोविंदाष्टकानंदगिरीयं ॥ संवत् १७११ वर्षे प्रथमभाद्रपद १२ सोमे···
१४·६ × ९·५ सें० मी०	२	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहं सपरिव्राज कीचार्य श्रीमत्शंकराचार्यं कृतौ गोविंष्टकं संपूर्णं लिखतं कुस्याल रामेणा श्री राम
२५·७ × १०·९ सें० मी०	२ (१–२)	६	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्यं गोविंद भगवत्पूज्यपाद श्रीमछकराचार्यं विरचितं गोविंदाष्टष्टसकं॰ प्तम्··· ··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०९	३८१७	गोविंदाष्टक			दे० का०	दे०
४१०	१९८६/२२	गोविंदाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४११	२२३३	गोविंदाष्टक स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४१२	५०३३	गौरीदशक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४१३	५९२५	गौरीदशक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४१४	१३५२	चंडीकवच			दे० का०	दे०
४१५	४५३०/३	चंडीकवच			दे० का०	दे०
४१६	६५१	चंडीशतक	बाणभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२ × ८·२ सें० मी०	२ (१–२)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति गोबिंदाष्टकं संपूर्णम् ॥
२९·२ × १४·१ सें० मी०	½	१४	४८	पू०	प्राचीन	इतिमत्छंकराचार्यकृतगोव्यंदाष्टक समाप्त:
२१·५ × ११·५ सें० मी०	१	९	२६	पू०	प्राचीन	इति शंकरा चार्य विरचितं गोविंदाष्टक स्तोत्र संपूर्णम् ······ ॥
२७·४ × ११·७ सें० मी०	१	९	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं गौरीदशकं समाप्तत् श्री कृष्णायनम रामायनम: ···।
२०·५ × ९·५ सें० मी०	१	१२	३७	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य विरचितं गौरीदशंक स्तोत्रं समाप्तं ॥
१६ × ९·५ सें० मी०	७ (१–६, ९)	८	१९	अपू०	प्राचीन	—
१०·१ × ६·८ सें० मी०	२	५	१६	अपू०	प्राचीन	
१५ × ९·३ सें० मी०	५ (१–५)	७	२२	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०४-१४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१७	६०२४	चंद्रशेखर स्तोत्र			दे० का०	दे०
४१८	२७१६	चंडिबमहावली स्तोत्र			दे० का०	दे०
४१९	२५४१/२५	चतु:श्लोकी भागवत	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
४२०	६०९८/२	चतु:श्लोकी भागवत			दे० का०	दे०
४२१	४६४५/५	चतु:श्लोकी भागवत			दे० का०	दे०
४२२	१७२४/३	चर्पटपंजरिका स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४२३	७२५९	चर्पटपंजरिका स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४२४	५५५४	चर्ममुंडा स्तोत्र	नल		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·६ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय विरचितं चंद्रशेखर स्तोत्र सपुर्ण ॥
१८·२ × १२·२ सें० मी०	५	८	९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मारकंडे पुराणे चंडिका महावली स्तोत्र संपुर्ण शुभं मंगलं दद्यात ॥ श्री श्री राम ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२	१०	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरंचितं चतुश्लोंकी संपूर्णं ॥
२२ × १०·१ सें० मी०	१	८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते द्वितीयस्कंधे चतुःश्लोकीभागवंत समाप्तं ॥
११·२ × ८·५ सें० मी०	३ (१२–१४)	५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवत चतुर्थश्लोकी संपूर्नं समापतं ······
१६·५ × ११·३ सें० मी०	३	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री मछंकराचार्य विरचितं चरपट पंजरि समाप्तः शुभमस्तु ।
१५·७ × ७·९ सें० मी०	४ (१–४)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री मच्छंकराचार्य विरचितं चर्पटपंजरिका स्तोत्र संपूर्णम् ॥
१४·३ × ६·४ सें० मी०	३ (१–३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे तृतीय परिछेदे नल निर्मिता चर्ममुडा स्तोत्रं संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२५	२४३६/२	चैतन्यसहस्रनाम			दे० का०	दे०
४२६	१२८५/८	चौबीस गायत्री			दे० का०	दे०
४२७	६०६३	जगतमंगल स्तोत्र (पार्श्व स्तोत्र)	पद्मप्रभुदेव		दे० का०	दे०
४२८	२७८७	जगन्नाथस्तुति			दे० का०	दे०
४२९	५३८६	जगन्नाथस्तोत्र			दे० का०	दे०
४३०	५९०७	जगन्नाथाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४३१	१९८६/२२	जगन्नाथाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे
४३२	२२४५	जगान्नाथाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१६ × १०.७ सें० मी०	२०	७	१८	पू०	प्राचीन	इति चैतन्यसह चरित्रे विमलज्ञान प्रकाशक श्री चैतन्य सहस्रनाम संपूर्ण समाप्त ॥ शुभं भूयात ॥
१७.५ × ९.५ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	२१	पू०	प्राचीन सं० १८५५	इति श्री चौवीसगायत्री संपूर्ण समाप्तं श्री रामायनमः। श्री कल्याणमस्तु।।श्री।। समत् १८५५ नावर्षेमाघमासे शुक्लक्षां नौमिदिने गुरुवासरे ।। खेताचल निकटे वगुदुग्रामे लिखितं बावा बालकदास ज के प्रताप सा लिखितं वैष्णलक्ष्मदास पठनार्थं वैष्णव सीताराम जी ··· ···।
२५.७ × ११ सें० मी०	१	१७	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मप्रभुदेव निर्म्मिते मिदं स्तोत्रं जगतमंगलं ॥
१२.३ × ८.३ सें० मी०	४ (१–४)	६	१२	अपू०	प्राचीन	
२२.३ × ७.८ सें० मी०	७ (१–७)	५	३५	पू०	प्राचीन	
२६.६ × १० सें० मी०	२ (१–२)	८	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं जगन्नाथाष्टकं संपूर्णं ॥
२९.२ × १४.५ सें० मी०	१	१३½	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं जगन्नाथाष्टकं संपूर्णं ॥
१२.१ × ७.९ सें० मी०	४ (१–४)	७	१४	पू०	प्राचीन	श्री मच्छङ्कराचार्य विरचितं जगन्नाथाष्टकम् । श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३३	७७७१	जगनाथांष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४३४	४२९८	जगन्नाथाष्टकस्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
४३५	४५०२	जमुनाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४३६	३३४८/४६	जानकीसहस्रनाम			दे० का०	दे०
४३७	३०२६	जानकीसहस्रनाममाला स्तोत्र			दे० का०	दे०
४३८	४०७४	जानकीस्तवराज			दे० का०	दे०
४३९	५८७६	जानकीस्तवराज			दे० का०	दे०
४४०	२०७२	जानकीस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·२ × ८·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	१५	पू०	प्राचीन	
२४ ३ × १० ३ सें० मी०	२ (१–२)	७	३०	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितंजगन्नाथाष्टकं स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥ स्वस्ति श्री संवत् १८६५ शाके १७३० भौमवासरे लिखितं शुभम् ॥ श्रीरामचंद्रायनमः
१३·५ × ८·८ सें० मी०	४ (१–४)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमक्षंकराचार्य विरंचितयं···
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री रामचंद्रलक्ष्मिन संवादे श्री जानकी सहस्रनाम संपूर्णम् शुभमस्तु श्री ··· ॥
१३ × ८·३ सें० मी०	१९ (१–१९)	८	१५	अपू०	प्राचीन	
१५·९ × ७·८ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२१	पू०	प्राचीन सं० १८९०	इति अगस्त संहितायां परमरहस्ये श्री जानकी अस्तवराजवर्न नाम एकेन चत्वारिंशोध्यायः फाल्गुन सुदि ११ संवत् १८९० ॥ श्रीरामः
२३·५ × १३ सें० मी०	५	११	३५	पू० (जीर्ण)	प्राचीन सं० १९७५	इति श्री अगस्त्य संहितायां जानकी स्तव राज वर्णनं नाम एक चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥ सुभमस्तु संवत् ॥ १९२५ ॥
२४·४ × १०·८ सें० मी०	११ (१–११)	६	२९	पू०	प्राचीन सं० १९१३	इति श्री अगस्त्य संहितायामेक चत्वारिंशोध्याय ४१ संवत्१९१३ मासोत्तमें मासे कार्तिके माशे कृष्णपक्षे तिथौ ५ शनिवासरे मुकांम मउ लिखतं पंद्खारहर प्रसाद सीताराम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	४३५६	जानकीस्तवराज (सुबोधिनी व्याख्या)			दे० का०	दे०
४४२	७०८१	जिनंते स्तोत्र			दे० का०	दे०
४४३	६०५५	जिनपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
४४४	६३३१	जिनस्तवन			दे० का०	दे०
४४५	६१६४	जिनेशस्तुति			दे० का०	दे०
४४६	५१८५	जीवन्मुक्तस्तोत्र	दत्तात्रेय		दे० का०	दे०
४४७	३३४८/४६	जुगलस्तोत्र	श्री हनुमत्कृतं		दे० का०	दे०
४४८	६४०६	ज्वरस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·२ × १५·४ सें० मी०	१४ (१–१४)	१२	२६	अपू०	प्राचीन सं०१९३५	इति श्री जानकी स्तवराजव्याख्यां सुबोधिन्या व्याख्यां एक चत्वारिंशेऽध्याय।। जेष्ठ वदि १० संवत् १९३५ के ।।
१४·५ × ८ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति पंचरात्र्यागमेमहोपनिषदे ब्रह्मतंत्रे श्री मदष्टाक्षर कल्पे जितंते स्तोत्रे पंचमोध्यायः ५ ॥
२४·५ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	११	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री जिनपिंजर स्तोत्र संपूर्णम् ॥
२६ × १०·६ सें० मी०	२	१०	३०	पू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	१८	पू०	प्राचीन सं०१९२१	इति श्री दत्तत्रेय विरचितं जीवन्मुक्त स्तोत्र संपूर्ण संवत १९२१ फाल्गुण ३ खैरागढ खलौटी ······
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री हनुमद्विरचितं श्री शीतारामात्मक जुगुल स्तोत्र समाप्तम् राम ॥
१५·९ × ८·५ सें० मी०	२ (१–२)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवते दशमस्कन्धे ज्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ स्वार्थं लोकोपकारार्थं लिखितं ॥ संम्वत् १९०३ के आषाढ वदि १ तिथौ बुद्धवासरेकह लिखितं श्री देवीदीनेन ॥···

(सं०सू०४-१५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४६	२०६१	ज्वालामुखी स्तोत्र	गोरखनाथ		दे० का०	दे०
४५०	५०३८	तारादक्षिणकालिका-स्तोत्र			दे० का०	दे०
४५१	१५१२	तारादेवी सहस्रनाम-स्तोत्र			दे० का०	दे०
४५२	४४६१	तारा-तकारादिसहस्र-नाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
४५३	३८७१	तारासहस्रनाम	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४५४	११४८	तारिणीशतनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
४५५	६७७४	त्रयोदशश्लोकी दुर्गा-स्तोत्र			दे० का०	दे०
४५६	४६३	त्रिकंडिका स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
६·७ × ७ सें० मी०	१५	४	१०	अपू०	प्राचीन	इति श्री गोरखनाथ विरचितं ज्वालामुखी स्तोत्र संपूर्णम् ॥
२४ × १०·४ सें० मी०	१	१६	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलतंत्रे तारा द० कं० स्तोत्र शुभमस्तु ॥
१६·३ × ६·७ सें० मी०	४ (२७–३०)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२४·६ × १०·७ सें० मी०	२० (१–२०)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १८४४	इति श्री ब्रह्मयामलोक्तं तारायास्तकारादि सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु ॥ सम्वत् १८४४ समयनाम वैशाष सुदि १० वारशुक्र शुभंभवतु ॥
३०·५ × १२·६ सें० मी०	७ (१–७)	१५	५६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवच्छंकराचार्यं विरचिता तारायाः पञ्झतिका समाप्तां ॥८॥
१६·५ × ८·५ सें० मी०	४ (३–६)	६	१३	अपू०	प्राचीन सं० १९३७	इति श्री मुण्डमाला तंत्रे तारिणीशतनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥ लिषतं पं० श्री पटैं दयाराम गुलाम की संवत् १९३७··· ॥
१३·९ × ८·९ सें० मी०	२ (१–२)	१२	२१	पू०	प्राचीन	इति त्रयोदश श्लोकी दुर्गा स्तोत्रं समाप्तिमगमत् × × × × ॥
२१ × १०·३ सें० मी०	३ (१,२-५)	६	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
४५७	१ ५०	त्रिपुरसुंदरीकवच			दे० का०	दे०
४५८	१३१९	त्रिपुरसुंदरीकवच			दे० का०	दे०
४५९	३,९५	महिम्नत्रिपुरसुंदरीस्तोत्र	मुनींद्र दुर्वासा		दे० का०	दे०
४६०	५८६५	त्रिपुरसुंदरीस्तोत्र			दे० का०	दे०
४६१	५८७७	त्रिपुरा आरार्तिक			दे० का०	दे०
४६२	२७४१	त्रिपुराष्टक			दे० का०	दे०
४६३	२९६९	त्रिपुरासहस्रनाम			दे० का०	दे०
४६४	६८९	त्रिपुरसुंदरीअष्टोत्तर-शतनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२३·९ × ९·३ सें० मी०	७ (१–७)	७	२४	अपू०	प्राचीन	
२२ ६ × १६·४ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × १२.७ सें० मी०	७ (४–१०)	११	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री दुर्वासा मुनीन्द्र विरचितं श्रीमन्महा त्रिपुर सुन्दरी महिम्नाख्यं स्तोत्रं संपूर्णम् शुभमस्तु ॥ श्री विश्वेवराय नमः ॥
१६· × ९ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
२१·४ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	८	२२	पू०	प्राचीन	इत्यारार्त्रि विधिः ॥
१२·३ × ६·३ सें० मी०	४ (१–४)	६	१३	पू०	प्राचीन सं० १९६४	इति देव्यष्टकं त्रिपुराष्टकपरपर्यायं समाप्तम् सं० १९६४ अधिक चैत्र-शुक्लैका दश्यामिन्दु वासरेदं समाप्तम् तेन श्री त्रिपुराम्बा प्रीयताम् ।
१०·६ × ६ सें० मी०	१६	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × १० सें० मी०	५ (१–५)	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले देवी ईश्वर संवादे श्री मतिपुर्यष्टोत्तर शतनाम चिन्तामणि-स्तवं श्री ललिता देव्यार्पण मस्तु ॥ श्री देहो ······ जीव चक्र यथाविधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	२५४१/२५	त्रिविध नामवली	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
४६६	१७६९	त्रैलोक्यमोहनकवच			दे० का०	दे०
४६७	७८६२/४	दक्षिणाकालीसहस्रनाम-स्तोत्र			दे० का०	दे०
४६८	१४४३	दक्षिणामूर्तिअष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
४६९	१५५४	दक्षिणामूर्तिकवच			दे० का०	दे०
४७०	२३६०	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र			दे० का०	दे०
४७१	६०६०	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र वार्तिकमानसोल्लास	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७२	३७६८	दक्षिणामूर्तिस्तोत्रव्याख्या (मानसोल्लासवृत्तांत-विलास)	विश्वरूपाचार्य (सुरेश्वर)		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६·३ × १५·८ सें० मी०	११½	१२	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरंचितं त्रिविध नामावली संपूर्णं ॥
२०·५ × १३·५ सें० मी०	५	७	१६	पू०	प्राचीन	इति त्रैलोक्यमोहनं कवच संपूर्णम् ॥
१८ × ·६·६ सें० मी०	१३ (६-१०,१७-१८,२०, २२-२६)	५	२१	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × ८·४ सें० मी०	१	१८	४३	पू०	प्राचीन सं०१७५३	सं०१७५३ आषा. ब. ७ गु० । काश्यां दक्षिणामूर्ति अष्टोत्तर श नाम स्तोत्रं लि० ॥
२२·२ × ८·५ सें० मी०	२	११	४५	पू०	प्राचीन	इति नारदंकृतं दक्षिणामूर्ति कवचं शुभम् ॥ ॥
२२ × १५ सें० मी०	२	१०	२०	पू०	प्राचीन सं०१६१६	इति श्री शंकराचार्य विरचितं दक्षिणामूर्ति स्तोत्रं संपूर्णं। संवत् १६१६ श्रावण स्यासिते पक्षे दशम्यां चंद्रवासरे लिप्तंह्य्, मासहायेन श्री शंकर प्रसादतः···
२४·३ × ११ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री शंकर भगवत् पूज्य पादाचार्य कृति श्री दक्षिणामूर्ति स्तोत्र भावार्थ वार्तिकं मानसोल्लासाख्यं श्री सुरेश्वचार्य-निर्मितं समाप्तं ॥
१८ × ६ सें० मी०	८६ (२-८६,१००)	१२	३४	अपू०	सं०१६५६	इति श्री दक्षिणामूर्ति स्तोत्र व्याख्याप्रबंध मानसोल्लासवृत्तांतविलासः समाप्तः भगवत्या प्रसादेन भट्ट गणपतिः सुधीः व्यलिखत्स्वात्मबोधार्थं मानसोल्लास संज्ञकं ॥ संवत् १६५६ समये पौष शुद्धचतुर्दश्यां बुधवासरे लिखितं परोपकारार्थं ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७३	७७१२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र (सटीक)			मि० का०	दे०
४७४	४०१४/६	दत्तात्रेयएकविंशतिनाम-स्तोत्र			दे० का०	दे०
४७५	३७९२	दत्तात्रेयस्तोत्र	नारद		मि० का०	दे०
४७६	२९३६/१२	दत्तात्रेयाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७७	३०२४	दशश्लोकी, स्तोत्र			दे० का०	दे०
४७८	३५९९	दशहरागंगास्तोत्र			दे० का०	दे०
४७९	५६३३	दशहरास्तोत्र			दे० का०	दे०
४८०	४०९१	दशहरास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·७ × १३ सें० मी०	१५	१३	२४	पू०	प्राचीन	इति श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सटीक संपूर्णम् श्री गुरुदेवतर्पणमस्तु ॥ × × × ×
१८·१ × १६·१ सें० मी०	१	११	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रय ऐकविसत नाम संपूर्न
१६·१ × ९·६ सें० मी०	५ (१–५)	७	२३	पू०	आधुनिक	इति श्री नारद पुराणे नारद वीरचितं दत्तात्रेय स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२४·३ × १३·१ सें० मी०	१	२५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य कृतं दत्तात्रेयाष्टकं संपूर्णं समाप्तं शुभम् ॥
११·८ × ७·१ सें० मी०	६ (१–६)	६	२२	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायन प्रोक्तं दशश्लोकी स्तोत्रं समाप्तं ॥
१६·७ × ८·६ सें० मी०	४ (१-३,३)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री दशहरागंगा स्तोत्रं संपूर्णं ॥ शुभंभवतु ॥
१०·६ × ६ सें मी०	६ (१–६)	७	१६	पू०	प्राचीन सं० १८२६	इति श्री स्कंद पुराणे काशी खंडे दशहरा स्तोत्रं संपुर्णं ॥ संवत् १८२६ श्रावण शुदि ३ शुक्रे कः पुस्तक लिखितमिदं भूदूरामेना ॥
१५·५ × ८ सें० मी०	४ (२-४,७)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे काशीषण्डे दशहरा स्तोत्रं संपूर्णं ॥

(सं० सू० ४-१६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८१	४३७०	दशहरास्तोत्र			दे० का०	दे०
४८२	१४६३	दारिद्र दहन स्तोत्र	वशिष्ठ		दे० का०	दे०
४८३	२५६८	दारिद्रविद्रावणनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
४८४	१४५२	दालभ्य स्तोत्र			दे० का०	दे०
४८५	१४५३	दालभ्य स्तोत्र			दे० का०	दे०
४८६	६५३६	दुर्गाअष्टोत्तरशतस्तोत्र			दे० का०	दे०
४८७	६२८	दुर्गाकवच			दे० का०	दे०
४८८	६७७०	दुर्गाशतनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·५ × ८·८ सें० मी०	६ (१-३,५-७)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे काशी खंडे दशहरा स्तोत्रं समाप्तं ॥
१७·५ × ११ सें० मी०	२	६	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री वसिष्ठ विरचितं दारिद्र दहन स्तोत्रं संपूर्णम् श्री सांवस दाशिवार्पणमस्तु ।
१६·४ × १०·१ सें० मी०	५ (१–५)	७	१८	पू०	प्राचीन	श्रीमत् परमहंश परिव्राजक शंकराचार्य विरचितं दारिद्र विद्रावनं नामस्तोत्रं ॥ शुभमस्तु
१४·८ × ८·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णुधर्मोत्तरे दालभ्य स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥
१६·१ × ·२ सें० मी०	६ (१–८,११)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × ८·६ सें० मी०	२ (१–२)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं० १८८४	श्री विस्वसारतंत्रे हरगौरी संवादे दुर्गानामष्टोत्तर शतस्तोत्रं समाप्तम्॥ मिति कार्तिक सुदी १४··· सम्वत् १८८४ के॥ अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं जेन चराचर तप्पंद दर्शितं जेन तस्मै श्री गुरुवेनमः ॥
२६·४ × ११·२ सें० मी०	६ (२–७)	८	३१	अपू०	प्राचीन	इति हरिहर ब्रह्माविरचितं देव्या कवच समाप्तम् ॥ १ ॥
१७·२ × ८·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति मार्कंडेय पुराणे दुर्गाशतनाम संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८९	६७४६	दुर्गाशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
४९०	३५८४	दुर्गाशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
४९१	१०७२	दुर्गाशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
४९२	२०३५	दुर्गासप्तशतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
४९३	३१७२	दुर्गासहस्रनाम			मि० का०	दे०
४९४	२७३४	दुर्गासहस्रनामस्तोत्र	नंदिकेश्वर		दे० का०	
४९५	४१६४	दुर्गास्तव			दे० का०	दे०
४९६	२१४२/६	दुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·९ × १०·१ सें० मी०	२ (१–२)	७	३०	पू०	प्राचीन	इती श्री स्कंधपुराणे उमामहेस्वर संवादे दुर्गाशतनाम समाप्तं ॥
२४·२ × १६·५ सें० मी०	४ (१–४)	७	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वसार तंत्रोक्तं दुर्गाशत-नाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
३०·५ × १२·५ सें० मी०	१६ (१-७,९-१८)	९	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे चतुरसीतिसाहस्रे अंबिका खण्डे दुर्गामाहात्म्ये विष्णुशंकर-योर्युद्ध समाधाने देव्याः सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
१५·६ × १०·२ सें० मी०	८९	८	१७	अपू०	प्राचीन सं० १८७६ श० १७४१	इति मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वं-तर देवी माहात्म्ये समाप्तं ॥······ संवत् १८७६ शके १७४१ ॥ ४ ॥ लिखितं पं० श्री पाठकजवाहिर षोंप ग्रामे विहारी आश्रमे··· ॥
२०·८ × १०·५ सें० मी०	१० (९–१८)	७	२९	अपू०	प्राचीन	
१९·८ × १०·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
३०·८ × १२·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिवंशे बाणयुद्धे वंधनमोक्ष दुर्गा स्तवः समाप्तः ॥ श्री ··· शुभ-मस्तु ॥
१८·५ × १६ सें० मी०	३ (३–५)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे नारायण नारद संवादे दुर्गास्तोत्र संपूर्णम् ॥१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९७	२२५९	दुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०
४९८	१४६०	दुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०
४९९	१११११/६	देवाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५००	१६६५	देवीअष्टक	लालजनार्दनसिंह		दे० का०	दे०
५०१	५२८६	देवीआरात्रिकम्			दे० का०	दे०
५०२	१४७६	देवीकवच			दे० का०	दे०
५०३	४३३७/८	देवीकवच			दे० का०	दे०
५०४	२९३५/७	देवीदशक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·१ × १५·६ सें० मी०	६ (१-४,६-७)	११	१६	अपू०	प्राचीन सं० १६३६	इति दुर्गा स्तोत्र संपूर्ण संवत् १६३६ मि० आश्वन शु० ७ चं ॥
१७ × ८·५ सें० मी०	११ (४-७,१६-१७,१६-२३)	७	२४	अपू०	प्राचीन	
१६ × १३ सें० मी०	१½	११	२२	पू० (कृमिकृतित)	प्राचीन	इति शंकराचार्य विरचितं देवाष्टक संपुरणं ॥
१६·२ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाराज कुमार श्रीलाल अजमेर सिंह जू देवात्मज श्रीलाल जनार्दन सिंह विरचितं देव्यष्टकं समाप्त शुभंभूयात् ॥
१६·६ × १०·५ सें० मी०	४ (१–४)	८	१६	अपू०	प्राचीन	···गतिभिरुचितोयं मौलितः पादमूलं हरतु दुरित जातं देवि कर्पूर दीपः ४१ ततो विचित्र दीपं मूलेन प्रज्वाल्य आरात्रिकं पठेत् यथा जयदेविरजय विश्वाधारे २ ··· (पृ० सं० १)
१६·३ × १० सें० मी०	६ (१–६)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति वाराह पुराणे हरिहर··विरचितं देवि कवच समाप्तं ॥
१६ × १३·३ सें० मी०	४ (३८-४१)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिहरि ब्रह्मा विरचितं देव्याकवचं समाप्ताम् ॥
२४·५ × १४·५ सें० मी०	३½	२३	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं देवीदशकं समाप्तिमगात् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०५	६६७	देवीपुष्पांजलि	श्रीरामकृष्ण		दे० का०	दे०
५०६	१४८६	देवीरहस्य स्तोत्र			दे० का०	दे०
५०७	५७६६	देवीलघुस्तव			मि० का०	दे०
५०८	५२९६	देवीशतनाम			दे० का०	दे०
५०९	१४२९	देवीसरस्वतीलक्ष्मी सूक्त			दे० का०	दे०
५१०	७०३८	देवीसूक्त			दे० का०	दे०
५११	१५२८/६	देवी सूक्त			दे० का०	दे०
५१२	२६१३	देवी सूक्त			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × ६ सें० मी०	६ (३–८)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री राम कृष्णविरचितां देवी पुष्पांन्जलि संपूर्णम् ।।
२४ × ११ सें० मी०	५	११	३४	पू०	प्राचीन	इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवी महात्म्ये शप्तशति का स्तोत्र संपूर्ण ।। शुभं भवत् मंगल ददात् देबीरहस्य स्तोत्र संपूर्ण
१६·४ × १०·१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री देव्यालघुस्तवः समाप्तम् ।।
१२·४ × १०·६ सें० मी०	३ (१–३)	१२	१७	पू०	प्राचीन	नाम्नां शतं पठेन्मंत्रंसंजप्य भक्तिभावतः ।। प्रत्यहं प्रपठेद्देवि यदाछेत् शुभ मात्मान ।। ।। नील समाप्तमं शुभमस्तु ।।
१६ × ९·५ सें० मी०	१८	६	१५	पू०	प्राचीन	इति देवीसूक्तं लक्ष्मी सरसस्वती सूक्तं समाप्तम् शुभब्रूयात् ।।
२३·५ × १०·७ सें० मी०	८ (१–८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले घट तंत्रे श्रीदेवीसप्तसतिकायान्देवीसूतं वर्णना नाम महा सरस्वती महा लक्ष्मी महाकाली सूक्त समाप्तम् सवत् १९८ माघ सुदि १३ भोमेकः लिषितं × × ×
१४·८ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी महात्म्ये सुरथ वैश्ययोर्वर प्रदानो नाम त्रयोदशोध्यायः ।। १३ ।।···
२५ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	[हाशिये पर उल्लिखित ग्रंथनाम है । दे० सू०]
(सं०सू०४–१७)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१३	४६३३	देवीस्तोत्र (अनिरुद्धमोक्षण स्तव)			दे० का०	दे०
५१४	४११४	देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
५१५	३८५६	देव्यपराधस्तोत्र	गोविंद		दे० का०	दे०
५१६	२५४१/२५	दैन्याष्टक	हरिदास		दे० का०	दे०
५१७	२५४१/२५	दैन्याष्टक	हरिदास		दे० का०	दे०
५१८	२५४१/२५	दैन्याष्टक	हरिदास		दे० का०	दे०
५१९	२५४१/२५	दैन्याष्टक	हरिदास		दे० का०	दे०
५२०	१८६१/५	द्वादशनामगणेशस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × १२·३ सें० मी०	५ (१–५)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री खिलेषु हरिवंशेषु वाणयुद्धे-अनिरुद्धमोक्षणं स्तव संपूर्णं ॥
१६·४ × ८·४ सें० मी०	५ (१–५)	५	२७	पू०	प्राचीन सं० १९५९	इती श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विरचितं देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ संवत् १९५९ ॥ शके ॥ १८२४ ॥ आषाढ कृष्ण॥ १४ ॥ भृगौ लिखितम् ॥ श्री शुभम् ।
१९ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मत्छंकराचार्य शिष्य गोविंदेन विरचित देव्यापराधस्तोत्रं संपूर्ण ॥ श्रीदेव्यार्पणमस्तु ॥ शुभंभवतु ।
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिदास विरचितं दैन्याष्टकं संपूर्णं ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिदास विरंचितं दैन्याष्टक संपूर्णं ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिदासजी विरंचितं दैन्याष्टकं संपूर्णं ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिदाससोक्तं दैन्याष्टक संपूर्णं ॥
२८·४ × १४ सें० मी०	१	२	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री द्वादस नामाभिधं गणेसस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२१	२८२७/५	धनदाकवच			दे० का०	दे०
५२२	२८२७/५	धनदासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
५२३	७८२०/७	नर्मदाष्टक			दे० का०	दे०
५२४	७३२८	नर्मदाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५२५	६६६६	नर्मदा स्तोत्र			दे० का०	दे०
५२६	२८८७	नवग्रह स्तोत्र	व्यास		दे० का०	दे०
५२७	३४३०	नवग्रह स्तोत्र			दे० का०	दे०
५२८	२५४१/२५	नवनीतप्रियाष्टक	हरिदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·८ × ९·२ सें० मी०	३ (१–३)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले धनदाकवचं संपूर्णं ॥
१५·८ × ९·२ सें० मी०	१८½	७	१७	पू०	प्राचीन	इतिधनदासहस्रनाम स्तोत्र संपूर्णम् ॥
१३·५ × ९·५ सें० मी०	४ (२६–२९)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री नर्वदाष्टक संपूर्णम् ॥
१४·८ × ८·७ सें० मी०	३ (१–३)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं नर्मदाष्टकं संपूर्णं ॥
१०·१ × ९·५ सें० मी०	३	९	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री नर्मदाष्टकम्
१६ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री व्यास विरचितं आदित्यादि नवग्रह स्तोत्रं संपूर्णम्: आदित्यादि नवग्रहार्पणं मस्तु: रामजीशाहायेद्द जी
१४·३ × १०.८ सें० मी०	४ (१–४)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति नवग्रह स्तोत्र संपूर्ण सुभं भवति मंगलं ददाति ।
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१४	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिदास जी विरंचितं नवनीत प्रीयाष्टक संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२६	२५४१/२५	नवरत्न	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
५३०	५८७६	नवरत्नमातृस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५३१	५०२०	नवरत्नमाल्य	कालिदास		मि० का०	दे०
५३२	२५४१/२५	नामरत्नाख्यस्तोत्र	विट्ठलनंदन		दे० का०	दे०
५३३	४५६६	नामविरदावली	किशोरीअली		दे० का०	दे०
५३४	३१३	नारायणकवच	व्यास		मि० का०	दे०
५३५	१५८६	नारायणकवच			दे० का०	दे०
५३६	२१६७/२	नारायणपंचमहायुधस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द		१०	११
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरचितं नवरत्न संपूर्णं ।।
१६·१ × ८·३ सें० मी०	२ (१–२)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री संकराचार्यं कृतं नवरत्न माका स्तोत्र संपूर्णम्ः ।।
१०.६ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	५	१८	पू०	प्राचीन सं० १९३६	इति श्री कालिदास विरचितं नवरत्न-माल्यं संपूर्णम् ।।···संवत् १९३६ वैशाखासित पक्षे ५ म्यां लिखितम् ।।
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री विठलनंदन विरचितंनामरत्नाख्य स्तोत्रं संपूर्णं ।।
२२·९ × १०·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री नामविरंदावली किशोरीअली-कृत संपूर्णम् ।।
१६· × १०·४ सें० मी०	६ (१–६)	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १९१९	श्री भागवते महापुराणे षष्टस्कंधे अष्ट-मोध्याय: ।। समप्त शुभमस्तु सं० १९१८ केमि: भाद्रपद कृष्ण पक्षे १३ चंद्रवासरे लिषितं श्रीमिश्र वृन्दावन राम श्रीराधा वल्लभार्पणमस्तू ।
१६·६ × ११ सें० मी०	२६ (२–२७)	८	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणेषष्ट स्कंधे नारायण कवच संपुरणं···।।
२२.८ × १०·३ सें० मी०	१	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री नारायण पंचमहायुध स्तोत्र संपूर्णम् शुभम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३७	१५१७	नारायणमंत्र राजस्तव			दे० का०	दे०
५३८	५४६७	नारायण वर्म			दे० का०	दे०
५३९	४६६४	नारायण वर्म			दे० का०	दे०
५४०	१५०५	नारायण वर्म			दे० का०	दे०
५४१	२१४५/७	नारायणषट्पदी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५४२	४६७३	नारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
५४३	२४६२	नारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
५४४	६३५५	नारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·५ × १० सें० मी०	९	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२१ × १०·३ सें० मी०	७ (१–७)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवते महापुराणे षष्टस्कंधे नारायणवर्माष्टमोध्यायः ॥ सुभमस्तु
१३·४ × १० सें० मी०	६ (१–६)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × १० सें० मी०	४ (२,४-६)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × १२·८ सें० मी०	१½	१७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य विचिता नारायणषटपदी समाप्तं शुभं ॥
२५·५ × १३·४ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इत्यथर्वण रहस्ये उत्तरभागे श्री मन्नानारायण हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् संमत १८८७ राम राम × × ॥
१६·३ × १० सें० मी०	५ (१–५)	७	१९	पू०	प्राचीन सं० १९६५	इति श्री अथर्वण रहस्ये उत्तर भागे नारायण हृदय स्तोत्र संपूर्ण लि० स्वामी कबूल चंदस्य सं० १९६५ मा० शु० १५ दि०
१५.१ × ९·४ सें० मी० (सं०सू०४-१८)	६ (१–६)	७	१८	पू०	प्राचीन सं० १९८६	इति श्री आथवर्ण रहस्ये उत्तरभागे नारायण हृदय स्तोत्रं संपूर्ण १ × × काठोडी मध्ये १९८६ मार्गशिर कृष्ण ७ ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४५	५८७२	नारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
५४६	४२७८/२	नारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
५४७	२८७५	नारायणहृयय स्तोत्र			दे० का०	दे०
५४८	७१४९	नारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे-
५४९	११७५	नारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
५५०	३१९६	नारायणाष्टदशक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५५१	१९८६/२२	निरंजनाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५५२	४६४६	निरंजनाष्टक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १० सें० मी०	३ (१–३)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणरहस्ये उत्तरभागे नारायण हृदयस्तोत्रं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १९१७ चैत्र वदि १० ॥•••
२० × १०·५ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३४	पू०	प्राचीन	
१५·६ × ८·२ सें० मी०	७ (१–७)	६	१९	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वण रहस्ये उत्तरभागे नारायण हृदयस्तोत्र संपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥
१८·४ × ९·१ सें० मी०	४ (१–४)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
२५·७ × १३·३ सें० मी०	३ (१–३)	११	४१	अपू०	प्राचीन	
१७·३ × ११ सें० मी०	३	९	२८	अपू०	प्राचीन	इतिमच्छंकराचार्य विरचित मार्तत्राण परायण नारायणाष्टा दशक संपूर्णम् ॥
२९·२ × १४·१ सें० मी०	२	८	४७	पू०	प्राचीन	इति मस्संकराचार्य विरचितं निरंजनाष्टकं संपूर्णं ॥
१९·७ × ९·१ सें० मी०	१	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री निरंजनअष्टक संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५३	३८१२/२	निर्गुणाष्टक	शुकेंद्र		दे० का०	दे०
५५४	१:६७	निर्वाण अष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
५५५	३६६१	निर्वाणाष्टक स्तोत्र	शुकयोगी		दे० का०	दे०
५५६	२६३०	नीलकंठ स्तोत्र			दे० का०	दे०
५५७	१६८६/२२	नीलकंठ स्तोत्र			दे० का०	दे०
५५८	६०७८/५	नीलकंठ स्तोत्र			दे० का०	दे०
५५९	५८३६	नृसिंहअष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
५६०	२७९६	नृसिंहमंत्रकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९·५ × ११·२ सें० मी०	१	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री शुकेंद्र विरचितं निर्गुणाष्टक स्तोत्रं संपूर्णं ॥
३१·८ × १०.९ सें० मी०	१	२४	१५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं निर्वाण षट्कम् संपूर्णम् ॥ हरि ॐ तत्तसत्त
२०·५ × ९·२ सें० मी०	१	९	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री शुकयोगी विरचितं निर्वाणाष्टकं स्तोत्रं संपूर्णं ॥ श्री सच्चिदानंद गणेश्वरार्पणमस्तु ॥
१२·७ × ९·४ सें० मी०	३	९	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री अमरतंत्रे नीलकंठ स्तोत्र समाप्तं सुभमस्तु राम राम ॥ राम ॥
२९·२ × १४·१ सें० मी०	१	१५	४७	अपू०	प्राचीन (खंडित)	इति श्री नीलकंठ स्तोत्र संपूर्णं ॥
११·६ × ७·२ सें० मी०	२	७	१२	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × ११ सें० मी०	१	१०	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८१९	इति श्री नृसिंहाष्टोत्तर सतंनाम स्तोत्रं संपूर्णं शुभमस्तु संमत १८१९ चत्रशुक्ल तीतीआ गुरवासरे•••
१९·४ × ९·६ सें० मी०	२ (१–२)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री नृसिंह पुराणे ब्रह्माशावीति संवादे नृसिंह मंत्रकवचं संपूर्णम् ॥ श्री रामायनमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६१	३३४८ / ४६	नृसिंहसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
५६२	१८८२	नृसिंहसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
५६३	५७०२	नृसिंहस्तोत्र			दे० का०	दे०
५६४	१३०३ / ४	पंचमुखीवीरहनुमानकवच			दे० का०	दे०
५६५	१५२८ / ६	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
५६६	२८६८	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
५६७	११४७	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
५६८	४०१४ / ६	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२.५ × ८.२ सें० मी०	५२ (१–५२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे नृसिंह सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२१.८ × ८.४ सें० मी०	२१ (४-१६,२० २२-२३,२५, २७)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीनृसिंह प्रड़र्माव मार्कंडेयदिष्टं श्री लक्ष्मी नृसिंह सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्ण राम राम राम । श्री ब्रह्मोवाच···
३०.५ × १५.५ सें० मी०	३ (१–३)	९	३१	अपू०	प्राचीन	
१०.८ × ८ सें० मी०	१० (३९–४८)	५	९	पू०	प्राचीन सं० १८९१	इति श्रीसुदर्शन संहितायां श्री रामचंद्र सीता मनोहर पंचमुखी वीर हनुमान कवच संपूर्णम् ॥ शुभमस्तू ॥ श्रीरस्तू ॥ सं० १८९१ ज्येष्ट शुदि ९ चंद्रवार का लिखितं मिश्र हरनंदलाल मुजफ-वाली ब्राह्मण श्रीराम ।
१४.८ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन संहितायां श्री रामचंद्र सीता प्रोक्तं पंचमुखी हनुमत्कवच संपूणम् ॥ समाप्तम् ॥
२१ × ११.५ सें० मी०	३ (१-३)	१२	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदशन संहीतायां पंचमुखी हनुमान कवच संपूर्ण ॥
१५.२ × ८.५ सें० मी०	८	५	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदस्यन संहितायां श्रीरामचंद्रसीता प्रोक्तं ममोहरं पंचमुखी हनुमति कवच समायतं ॥ श्री श्री······
१८.१ × १६.१ सें० मी०	५ (१–५)	१४	११	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्माड पुराणे सीता रघुनाथ संवादे पंचमुखी हन्मत्कवचसंपूर्ण समाप्तं ॥ ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६९	१८१३	पंचमुखीहनुमत्कवच			दे० का०	दे०
५७०	६८५५	पंचमुखीहनुमानस्तोत्र			दे० का०	दे०
५७१	६१०३	पंचरत्नस्तोत्र	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
५७२	५७२३	पंचरत्नस्तोत्र			दे० का०	दे०
५७३	६३८/३	पंचरत्नस्तोत्र			दे० का०	दे०
५७४	१९८६/२२	पंचरत्नस्तोत्र			दे० का०	दे०
५७५	२५४१/२५	पंचाक्षरस्तोत्र	हरिदास		दे० का०	दे०
५७६	४८५२	पंचाक्षरस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९.९ × १४.१ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	१९	अपू०	प्राचीन	
२२.३ × १०.९ सें० मी०	२ (२–३)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन संहितायां श्रीरामचंद्र-सीता मनोहरण पंचमखी हनुमान स्तोत्र संपूर्ण शुभंमस्तु ।। इदं लिखितं मिश्र तेजरामः ।।
१७.५ × १८ सें० मी०	१	१३	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं पंचरत्नं समाप्तम् ।।
२१.५ × ९.४ सें० मी०	१	९	३३	पू०	प्राचीन	इति पंचरत्न ।।
१४.९ × १२.२ सें० मी०	२	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री वद्रिनाथ जी के पंचरत्न समाप्तंम् शुभमस्तु ।
२९.२ × १४.१ सें० मी०	१/२	८ १/२		पू०	प्राचीन	इति पंचरत्नस्तोत्र सं०
१६.३ × १५.८ सें० मी०	१	१६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिदासोक्तं पंचाक्षरस्तोत्र संपूर्णं ।।
२५.६ × ११ सें० मी० (सं०सू०४-१९)	३ (१–३)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पंचाक्षर स्तोत्र संपूर्णं ।। शुभंमस्तू ।। सिविरस्तू ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७७	१९८६/२२	पंचाक्षर स्तोत्र			दे० का०	दे०
५७८	५६५०	परमहंसः सहस्रनाम			दे० का०	दे०
५७९	६०६६	परमानंद स्तोत्र			दे० का०	दे०
५८०	५१८१	पशुपतिस्तोत्र			दे० का०	दे०
५८१	२१६७/२	पांडवगीता स्तोत्र			दे० का०	दे०
५८२	६१०१	पांडवगीता स्तोत्र			दे० का०	दे०
५८३	५९९६/२	पार्श्वनाथ स्तुति			दे० का०	दे०
५८४	६३१२/७	पार्श्वनाथ स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·२ × १४·१ सें० मी०	१/२	७ १/२		अ१० खंडित	प्राचीन	इति श्री पंचाक्षर स्तोत्र संपूर्णं ॥
२३·३ × १०·५ सें० मी०	२० (२-४,६-२२)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०·७ सें० मी०	१	१५	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री परमानंद स्तोत्रम् ।
१६·७ × १०·३ सें० मी०	१	६	१७	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × १०·३ सें० मी०	९ (१–९)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु ॥
१६·४ × १२·३ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	१८	पू०	प्राचीन सं० १९१३	ईती श्री पांडवगीतं सपूर्णम् ॥ लिषतं पडे विधिचंद ॥ मसोतमसे वैसाषसुदि ॥७॥ रवौ ॥ संवातु ॥ १९१३ ॥ साके १७७८ ॥
२४·८ × १०·८ सें० मी०	१/२	१६	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री पार्श्वनाथ स्तुति समाप्तम् ॥
२०·८ × १४·२ सें० मी०	३ (८–१०)	१५	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रं समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८५	२१८०	पितृस्तोत्र			दे० का०	दे०
५८६	३२८९	पीताम्बरासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
५८७	४४००	पीतांवरीस्तोत्र			दे० का०	दे०
५८८	७१०८	पीतासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
५८९	२९३६/१२	पुष्पांजलि स्तोत्र			दे० का०	दे०
५९०	२९३७/१२	पुष्पांजलि			दे० का०	दे०
५९१	२५४१/२५	पुरूषोत्तम सहस्रनाम	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
५९२	१५९५	प्रज्ञाविवर्द्धन स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·४ × १३·४ सें० मी०	५ (१-३,४-६)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणे पितृस्तोत्रं समाप्तम् ॥
१५·८ × ९·८ सें० मी०	१२	१८	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री…षोडश सहस्त्रे विष्णु शंकर सम्वादे पीताम्बरा सहस्त्र नाम स्तोत्रं संपूर्णं शुभमस्तु ॥
१७·४ × ११·५ सें० मी०	९ (१–९)	७	३०	पू०	प्राचीन सं०१९१९	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे उमामहेश्वर संवादे पीतांवरीस्तोत्रं समाप्तम् ॥श्रीस्तु॥ संवत् १९१९ शके १७८४ ॥
२६ × ११·३ सें० मी०	३	१२	३७	अपू०	प्राचीन	
२४·३ × १३·१ सें० मी०	४	२२	२४	पू० (खंडित)	प्राचीन	
१३·१ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पांजली समाप्तम् ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२०	१३	१८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद् भागवत् सार समुच्चये श्री पुरुषोत्तम सहेस्रनाम संपुर्णं ॥
१३·५ × १०·५ सें० मी०	३	११	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रज्ञा विवर्द्धन स्तोत्रं स्कंद कृत संपूर्णंम् ॥ लिखितं देवदत्त ब्रह्मचारी भीखारी राम ब्राह्मण पठनार्थं शुभमस्तु ॥६॥६॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किसर वस्तुलि प है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६३	४११२	प्रत्यंगिरास्तवराज			दे० का०	दे०
५६४	६०६२	प्रत्यंगिरास्तोत्र			दे० का०	दे०
५६५	४१३८	प्रत्यंगिरास्तोत्र			दे० का०	दे०
५६६	२३१५	प्रत्यंगिरास्तोत्र			दे० का०	दे०
५६७	५४२४	प्रत्यंगिरास्तोत्र			दे० का०	दे०
५६८	४१५०	प्रदोषस्तोत्र			दे० का०	दे०
५६९	३१२४	प्रदोषस्तोत्र			दे० का०	दे०
६००	३००१/३	प्रेमरामायणस्तोत्र	वाल्मीकि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·५ सें० मी०	१	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्र जामले तंत्रे दश विद्या रहस्ये प्रत्यंगिरा स्तवराजं संपूर्णं ॥ सुभमस्तु ॥
१७·२ × १०·८ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं० १९०७	समाप्तंम् ॥ संवत् १९०७ ॥···
१३·१ × ८·४ सें० मी०	१२ (१,६-१६)	७	१७	अपू०	प्राचीन सं० १९२४	इति चण्डोग्रशूल पाणिस्तच्चर्मिज्ज प्रत्यंगिरा सिद्ध मंत्रोद्धार समाप्तम् शुभमस्तु···संवत् १९२४ के भाद्रवदि ७ गुरौक लिपितं ॥
१८·६ × ९·६ सें० मी०	८	८	२०	अपू०	प्राचीन सं० १८९४	इति प्रत्यंगिरास्तोत्रं समाप्तं शुभंमस्तु । संवत् १८९४ मिति श्रावण सुदि १० दशम्यां सुक्रवासरेलिषतं मिश्रधनसिंह ॥
१३ × ८·४ सें० मी०	३ (३–५)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१०·९ × ५·८ सें० मी०	३ (१–३)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १९०५	इति श्री ब्रह्मोत्तर खंडे प्रदोष स्तोत्रं शिवार्पणं शुभमस्तु ॥ संवत् १९०५ ॥
१४·८ × १०·३ सें० मी०	२ (१–२)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मोत्तर खंडे प्रदोष स्तोत्र सपूर्णं ॥
२१·३ × ८·१ सें० मी०	१२	७	३९	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे कौशलखण्डे प्रेमरामायणे वाल्मीकि कृतं स्तोत्रं नाम द्वादसोध्याय: ॥ संपूर्ण समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८८४ कैसाल मिती पौ सुदि ष्टमीकां······

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०१	५६४४/१७	प्रेमविलासस्तव			दे० का०	दे०
६०२	७८००	बगलामुखीस्तोत्र			दे० का०	दे०
६०३	२६४८	बगलामुखीस्तोत्र			दे० का०	दे०
६०४	७४१६	बगलासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६०५	३०५५	बटुकभैरवसहस्रनाम-स्तोत्र			दे० का०	दे०
६०६	७३०४	बटुकभैरवसहस्रनाम-स्तोत्र			दे० का०	दे०
६०७	६०१०/४	बटुकभैरवस्तराज			दे० का०	दे०
६०८	४३९९/४	बटुकभैरवस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३ × ८·५ सें० मी०	१६ (१–१६)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रवोधानंद वोधोद्धृत प्रेमविलासाख्यस्तव समाप्तः ॥ शुभं भूयात्
१६·८ × ८·४ सें० मी०	५ (१–५)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले ब्रह्म विद्यया वगला मुखी स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥ श्री रामकृष्णायनम ॥
१७·२ × ८ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१७	पू०	प्राचीन	
२६ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं० १९१३	इति श्री उत्काटवशंबरे नगन्द्र प्रयाण तंत्रे षोडस विकला विष्णु महेश्वर संवादे पीताम्बरी बगला सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम्... सं० १९१३ मि० मा० व० ७ मं० लि० ॥
२३·५ × ११·२ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामलीये रहस्यखंडे क्षिप्रस्रददातुः श्री बटुकभैरव सहस्रनामाख्य स्तोत्रः संपूर्णः ॥ शुभंभवतु ॥ श्री ॥
१५·६ × ७·७ सें० मी०	६ (४-७, १२-१३)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
१५·९ × १२·१ सें० मी०	१६ (५३–६९)	९	१७	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति श्री रुद्रयामले आपदुद्धार वटुकभैरव स्तवराज समाप्तः संपूर्णलिष्यतं परमानंद मिश्रपठनार्थ सुभं मीती आसोज वदी ६ वुधवास १९२१ ॥
१६ × ९·८ सें० मी०	१७ (१–१७)	५	१९	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे इश्वरपार्वति संवादे विश्वसारोद्धारे आपदुद्धार बटुक भैरवस्तवराजः संपूर्ण शुभमस्तु सिद्धरस्तु ॥ श्री संवत् १८८५॥ मांशानां उत्तम मांसे पुषमांसे कृष्णपक्षे तिथौऽमावश्यां ॥

(सं०सू०४-२०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
६०६	४३५८	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१०	५८३५	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६११	२२३१	बटुकभैरव स्तोत्र (प्रश्नोत्तररत्नमाला)			दे० का०	दे०
६१२	६४०६	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१३	४६५८	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१४	४६२४	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१५	३३८१	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	
६१६	८८५८	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२३·५ × १०·३ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन सं० १७८२	इति श्री रुद्रयामले आपदुद्धारणं वटुक भैरवस्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु सम्वत् १७८२ अगहन वदि२ गुरुवासरे ॥राम॥
२२·७ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति विश्वसारोद्धारे वटुकभैरव स्तोत्रं समाप्तं।···
२४·५ × ११ सें० मी०	३ (२–४)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इतिश्री रुद्रयामले. . .। इतिश्री मच्छंकराचार्य कृता प्रश्नोत्तराख्य रत्नमाला समाप्ताः। श्रीगुरवेनमः। श्री हरयेनमः। श्रीहरायनमः, श्री रामाय नमः ॥
२१·३ × १०·८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२४	पू०	प्राचीन सं० १८४९	इति श्री विश्वसारोधारे रुद्रयामले तंत्रे वटुकभैरव स्तोत्रं संपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८४९ ॥ भाद्रवदि १ कः, भृगु वासरे शुभंभवः॥
१६·८ × ८·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वसारे···उमामहेश्वर संवादे आपदुधार वटुकभैरव स्तोत्र संपुर्णम् आश्विनमासेते पक्षे × × ×॥
२०·२ × ९·३ सें० मी०	५ (१–५)	९	३४	पू०	प्राचीन	इति वटुकम्······
२०· × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री रूद्रजाभले श्रीवटुकभैरवस्यापादुद्धारणाख्यं स्तोत्रं संपूर्णं ॥
१९·७ × १०·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२३	पू०	प्राचीन सं० १९२७	इति श्रीरुद्रयाम तंत्रे हरगौरी संवादे अपदुद्धारण वटुक भैरव स्तोत्रं संपूर्णं संपूर्णं ॥ ···सं० १९-७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१७	१६६५	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१८	३१६८	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१९	४६८६	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२०	१६४२	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२१	६०७८/५	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२२	२८०९	बटुकभैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२३	३८३२	बटुकस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२४	७३०९	बटुकहृदय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४ × ८·७ सें० मी०	११	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे विश्वसारोद्धारे आपदुद्धारक वटुकभैरव स्तोत्रं संपूर्णं ।। शुभमस्तु ।। सिद्धरस्तु ।। ।। मंगलंवास्तु ।।
१६·५ × ८·२ सें० मी०	३ (४–६)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे आपदुद्धार वटुकभैरव स्तोत्रं संपूर्णम् ।। श्री ।। श्री परदेवतायैनमः ।। श्री गुरु-भ्योनमः ।।
१६·५ × ११·१ सें० मी०	२	१५	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले देवीस्वर सम्वांदे आपदुद्धारकं स्तोत्रं समाप्तम् ।।···
२०·८ × १२ सें० मी०	८ (२–९)	११	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री रुद्रजामले उमामहेश्वर संवादे ··· वटुकभैरव स्तोत्र सम्पूर्ण ··· संवत् १९०२ साके १७६७ चैत्र सुक्ल १३···।।
११·६ × ७·२ सें० मी०	२४	५	१३	अपू०	प्राचीन सं० १९३८	इति श्री रुद्रयामले विश्वंसारोद्धारे आप-दुद्धारक वटुकभैरव स्तोत्र सम्पूर्णम् ।। सम्वत् १९३८ ।। साके कार्तिकमासे शिते पक्षे त्रैयोदस्यां शुक्रवासरे लिखीत्वा राम प्रगास्य × × × ।।
१३·७ × १०·२ सें० मी०	८ (१–८)	११	१७	अपू०	प्राचीन	
१४·७ × ८·८ सें० मी०	८ (३,१०,१२-१६,१८)	५	१७	अपू०	प्राचीन	इति विश्वभरोद्धारोवटुकस्तोत्र समाप्तं शुभमस्तु ।।···
१८·५ × ११·४ सें० मी०	२	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वसारोद्धारे रुद्रयामले तंत्रे उमामहेश्वर संवादे वटुकहृदयं समाप्तम्।

और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
६२५	४१८१	बद्रीनाथ स्तोत्र			दे० का०	दे०
६२६	१८६१/५	बद्रीनाथ स्तोत्र			दे० का०	दे०
६२७	७२४०	बलभद्रसहस्रनाम (द्वादशअध्याय)			दे० का०	दे०
६२८	४५०६	बालकृष्णाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६२९	३७८१	बालकृष्णाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६३०	७७२२	बालात्रिपुरसुंदरीस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३१	१०५७	बालात्रिपुरास्तोत्र			दे० का०	दे०
६३२	४५३०/३	बालासुंदरीसहस्रनाम-स्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·८ × १३·२ सें० मी०	२	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री वद्रिनाथस्तोत्र संपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥
२८·४ × १४ सें० मी०	१	६	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री वद्रीनाथ स्तोत्रं समाप्त: ॥
२६·८ × ११·३ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्री वलभद्रखंडे × × × वलभद्र सहस्रनाम वर्णनं नाम द्वादशोध्याय: ॥१२॥
१६·६ × ९·२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितायां वाल कृष्णाष्टकं संपूर्णं श्रीराम···
१६·४ × १०·१ सें० मी०	२ (१–२)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं वालकृष्णाष्टकं संपूर्णं ॥
१६·४ × ९·७ सें० मी०	२ (१–२)	७	१७	पू०	प्राचीन सं०१८९२	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे श्रीवालात्रिपुर सुंदरी स्तोत्रं समाप्तम् । श्रीगुरु देवतार्थनमस्तु वैशाखजेष्ट वदी ११ मंदवासरे संवत् १८९२ उ०
१९·५ × १०·५ सें० मी०	२	११	२८	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री मज्ञानार्णवे श्री वाला त्रिपुरास्तोत्र संपूर्णं ॥ समाप्तं ॥ श्री संवत् १८९८ मिती ज्येष्ट शुक्ल १४ बुधवासरे ह० गंगाधर ॥श्री
१०·१ × ६·८ सें० मी०	४१ (१–४१)	५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्रीवामकेश्वर तंत्रे हरकुमारसंवादे श्री वालासुंदरी सहस्रनाम स्तवराज संपूर्णं समाप्तम् ॥ शुभं

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३३	६३१२/७	भक्तामर स्तोत्र			मि० का०	दे०
६३४	३४७३/२	भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगआचार्य		दे० का०	दे०
६३५	२५४१/२५	भक्तिवर्द्धनी	वल्लभाचार्य		मि० का०	दे०
६३६	५७६२	भगवतीकीलकस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३७	५०६६	भगवतीकीलकस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३८	६३५	भगवतीकीलकस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३९	४६६६	भगवतीपुष्पांजलि			दे० का०	दे०
६४०	५५०६	भगवतीपुष्पांजलि स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२०·८ × १४·२ सें० मी०	५ (१७–२१)	१४	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री भक्तामर स्तोत्रं संपूर्ण ॥
३१ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	७	३६	पू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री मानतुंगआचार्य्य कृत भक्तामरस्तोत्र संपूर्ण ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२	१३	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरचितं भक्तिवर्द्धनी संपूर्णं ॥
२२ × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवत्यास्तुति कीलकं नाम स्तोत्रं समाप्तं ॥
१८·५ × ६·५ सें० मी०	३ (१–३)	५	२१	पू०	प्राचीन सं०१६२५	इति भगवत्याकीलकस्तोत्रं समाप्तम् कार्तिकमासे शुक्लपक्षे तिथौ त्रयोदश्यां गुरुवासरे श्रीसम्वत् १६२५ श्रीगंगाजी
२१·६ × ११·५ सें० मी०	६ (४–१२)	६	१६	अपू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति कीलकं समाप्तं संपूर्णं ॥
१५·३ × ६·१ सें० मी०	२ (२,४)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१५·१ × ८ सें० मी०	५ (४–८)	७	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८५४	इति श्री भागवति पुष्पांजलि स्तोत्रं संपूर्ण सुभमस्तु ॥ सिद्धिरस्तु ॥ संवत् १८५४ समै कार्तिक सुक्लाष्टम्यां···।
(सं०सू०४-२१)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४१	१८५३	भगवतीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४२	१५०६	भगवतीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४३	७५६५	भगवद्सिद्धांतसंग्रह			दे० का०	दे०
६४४	२९८६	भजगोविंदं स्तोत्र			दे० का०	दे०
६४५	२८०५	भजगोविंदस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६४६	५०७०	भजगोविंदं स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६४७	२८०२/६	भवानीअष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६४८	१५४७	भवानीकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × ११ सें० मी०	९ (१०–१८)	६	१७	अपू०	प्राचीन	
१८·५ × ८·५ सें० मी०	६ (११–१६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
१९·७ × ९·६ सें० मी०	७ (५–११)	७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्म संहितायां भगवत् सिद्धांत संग्रह मूल सूत्राक्ष: पंचमोऽध्याय: ···
१२·८ × ७.८ सें० मी०	४ (१–४)	८	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं भजगोविंद स्तोत्रं सपूर्णं सम्वत्···।
१५·२ × ७·६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकराचार्य विरचित भजगोविंद स्तोत्र समाप्तम् ॥
१४·८ × ८ सें० मी०	२ (२–३)	७	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं भजगोविंद स्तोत्र समाप्तम् ॥ शुभं ॥
२० × ११·७ सें० मी०	१/२	१४	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य्य कृत भवान्याष्टकं समाप्तं ॥
१४·४ × ६·७ सें० मी०	४	७	१६	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री रुद्रयामिले ईश्वर संवादे भवानी कवच संपूर्णम शुभमस्तु ॥ इदं लिखितं गौरीदत्त शुभ संवत् १९२२ चैत्र कृष्ण-चतुर्दशी १४ व्रहस्पतवासरे शुभमंगलं ददातु शिव*

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४६	६२५	भवानीछंदतोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६५०	३३४२	भवानी पंचरत्न स्तोत्र			दे० का०	दे०
६५१	४६१२	भवानीसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६५२	२१४६	भवानीसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६५३	४६३६	भवानीसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६५४	३१६८	भवानीसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
६५५	१२१३	भवानीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६५६	५४३६	भवानीस्तोत्र (पुष्पांजलि)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२ × ११·५ सें० मी०	४	११	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं भवानी-छंदा स्तोत्रं संपूर्णं । श्री गणेशायनमः सरस्वत्यै नमः श्री गुरुभ्यो० ।
१२·५ × ७ सें० मी०	३ (१–३)	४	१६	अपू०	प्राचीन	
२०·४ × १०·४ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	२८	पू०	प्राचीन सं० १८४८	इति श्री रुद्रयामले ईश्वर तंत्रे नंदिकेश्वर संवादे महाप्रभावे भवनीनामसहस्र स्तवराजः समाप्तः × × × × संवत् १८४८ मार्ग शीर्षवदि १० ॥
२०·५ × ८ सें० मी०	२२ (६–२७)	७	२२	अपू०	प्राचीन सं० १७७६	इति श्री रुद्रयामले नंदिकेस्वर संवादे श्री भवानीसहस्रनाम समाप्तं ॥ संवत् १७७६ शाके १६४४... ॥
१६·७ × ८·८ सें० मी०	२७ (१–२७)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२१·३ × ८·६ सें० मी०	१५ (४–१८)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
१८·५ × ८·५ सें० मी०	६ (३–९)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × ८·५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५७	४३७१	भवानीस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६५८	१८५५	भवानीस्तोत्र			दे० का०	दे०
६५९	९५२	भवानीस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६०	७७१८	भागवताष्टक	सिकानं दगोस्वामी		दे० का०	दे०
६६१	५४१२/५	भीष्मस्तव			दे० का०	दे०
६६२	७२५७	भीष्मस्तव			दे० का०	दे०
६६३	५५१०/३	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६६४	५५२०/५	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·२ × ९·३ सें० मी०	३ (१–३)	८	१६	पू०	प्राचीन सं०१९३६	इति श्री शंकराचार्य विरचिते भवानी स्तोत्रं संपूर्णम् × × × संवत् १९३६ शाके १८०१ श्रीराम ॥
१८·५ × ८·५ सें० मी०	४	८	२६	पू०	प्राचीन	इति भवानी स्तोत्र संपूर्णः ॥ लिषतं साहिराम जी ॥ शुभमस्तु ॥
१३·५ × १० सें० मी०	१९	१०	१८	अपू०	प्राचीन	
२१·६ × ९·३ सें० मी०	३	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्रसिकानंद गोस्वामिना विरचितं श्रीमद्भागवताष्टकं समाप्तं ॥ श्री कृष्णचैतंन्यचंद्रायनमः—
१४·१ × ७·९ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्रयां भीष्म स्तवः संपूर्णं ॥
१५ × ८·६ सें० मी०	१२ (२-७, १४-१९)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१६·९ × ९·६ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां भीष्म स्तवराजः समाप्तः ॥
१३·६ × ७·९ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	१३	पू०	आधुनिक	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६५	१५४२	भीष्मस्तवराज	व्यासजी		दे० का०	दे०
६६६	७१८२/५	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६६७	४०७८	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६६८	५७७७	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६६९	१९९५/२	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६७०	९६१/५	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६७१	१०६/(स)	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६७२	६३४७/२	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·७ × १०.६ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्त्र्यां संहितायां वैय्या शक्यां शांति पर्वणि भीष्म स्तवराज संपूर्ण ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥६॥६॥
१६·६ × ६·३ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत सहस्त्रां संहिताँ वैय्यानिक्यांमुत्र भीष्म स्तवराज समाप्तः ॥
१६·२ × १०·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारत संहितायां शांत पर्वणि युधष्टेषु भीष्मस्यतोक्तः-स्तवराजसंपूर्ण शुभं ॥
१६·५ × १०·४ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शांत पर्वणिराजधर्मे ॥ भीष्मस्तवराज समाप्तं ॥
१५·५ × १० सें० मी०	१६	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते भिषम स्तवराजसंपूरणं ॥
१२·६ × ७·१ सें० मी०	२०	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसाहस्त्रा संहितायां शांति पर्वणि राजधर्मेषु भीष्मपितामह प्रोक्तः स्तवराजः संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
१२·५ × ७·५ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्त्रां संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्णि राजधर्मेषु भीष्मपितामह उक्तः स्तवराजः सम्पूर्ण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सर्वजगतः ॥
११·२ × ८ सें० मी०	२० (२-१६, २२२३)	१०	८	अपू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री महाभारते शत सहश्र संहितायां शांतिपर्वणि राजधर्मेषु भीष्मपितामह प्रोक्तः स्तऽस्तव राज समाप्तं...कार्तिक मासे शुभे शुक्ल पक्षे ...संवत् १८८१ मुः खानगर

(सं०सू०-४-२२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७३	२६३३/५	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६७४	४६४८/२	भीष्मस्तवराज			का०	दे०
६७५	६०४५/३	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६७६	१३६८/५	भीष्मस्तवराज			दे० का०	दे०
६७७	४२४३/४	भीष्मस्तवराज			मि० का०	दे०
६७८	३२१८	भीष्मस्तवराज			दे० का०	
६७९	७४७७/३	भीष्मस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६८०	६०७६/५	भीष्मस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मेंअक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·७ × १०·६ सें० मी०	१४	७	२३	अपू०	प्राचीन सं० १९०८	इति श्री महाभारते शत सहस्र्यां शांति पर्वणि दानधर्मे भीष्मस्तवराज संपूर्णम् संवत् १९०८ चैत्र कृष्ण त्रयोदश्यां गुरूदिने ·····
१७·२ × ८·३ सें० मी०	२ (८–९)	१२	२७	अपू०	प्राचीन	इति महाभारते शतसाहस्यां संहितायां वैयासिक्यां शापर्वणि राजधर्मेषु भीष्मस्तवराज: समाप्तः ॥··· (पृ० सं०-९)
१३·१ × ७·५ सें० मी०	२० (४–२३)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि राजधर्मोत्तरे श्रीभीष्म प्रोक्तं भीष्मस्तवराज: समाप्तं ॥शुं० ॥
१५·७ × ७·८ सें० मी०	२२ (२–२३)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति महारतेशत सहस्र संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि भीष्मस्तवराज: सपूर्णम् । शुभ मस्तु ॥
२६·५ × १४·२ सें० मी०	४	१५	४०	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्रीभीष्मस्तवराज संपूर्ण ।
१५·५ × ९ सें० मी०	७ (८-१३,२०)	७	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहाभारते सतसहस्र संहितायां वैयाशिसिक्यांशांतिपर्वणिराज धर्मेबु-भीष्मस्तवराज समाप्तं ॥
१२·६ × ८·१	२२ (१–२२)	६	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु सहितायां वैय्यासिक्यां शांति पर्वणि भीष्मप्रोक्तं भीष्म स्तवराज स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१५·४ × ९·५ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैय्यासिक्यां शांति पर्वणि राजधर्मोत्तरेषु श्रीभीष्मप्राक्तं भीस्तवराज स्तोत्र संपूर्णम् ॥ शुभं

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८१	५ ७९ / ६	भीष्मस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६८२	५४२०	भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६८३	३८७४	भैरवअष्टोत्तरशतनामस्तोत्र			मि० का०	दे०
६८४	१३८६	भैरवकवचम्			दे० का०	दे०
६८५	३५००	भैरवस्तवराज			दे० का०	दे०
६८६	१५७४	भैरवस्तवराज			दे० का०	दे०
६८७	३२३५	भैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६८८	५००६	भैरवस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१०·८ × ६·७ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणिराज धर्मोत्तरेषु भीष्मस्तवराजस्तोत्रं संपूर्णं ॥
२१·७ × ८ ६ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति कुल सर्वस्वेहरगौरी सम्वादे भुवनेश्वरी सहस्त्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२० २ × ११ सें० मी०	८ (१–८)	८	२१	अपू०	आधुनिक	
१७ × ११ सें० मी०	४	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १९३८	इति श्रीरुद्रयामले स्वर्णाकर्षण भैरव कवचं समाप्तं कातिक वदि २ रविवार संवत् १९३८ ।
२४·२ × ११·३ सें० मी०	९ (१–९)	७	२१	पू०	प्राचीन सं० १९३४	इति विश्वसारोद्धारे आपदुद्धार कल्पे भैरवस्तवराजः समाप्तः शुभमस्तुमंगलं ददातु श्रीरामजीं सदासहाय श्री सम्वत् १९३४ शाके १७८८ वैशाखमासे शुक्ल पक्षे ३ तृतीया चंद्रवासरे लिपिकृता ॥
१७ × ९ सें० मी०	५	८	२६	पू०	प्राचीन	इति विश्व सारोद्धारे आपद द्धारकल्पे भैरवस्तवराजः समाप्तः ॥ ....
१०·५ × ५·७ सें० मी०	८ (१–८)	६	१३	पू०	प्राचीन श० १६७१	इति भैरवतंत्रे आपदुद्धार स्वर्णाकर्शण भैरवस्तोत्रं संपूर्णं ॥ शके १६७१ शुक्ल पौश शु ९ रौ कोडभटेन लिखितं ॥ राजश्री चूडामणिस्येदं पुस्तक ॥ शुभंमस्तु ॥
१७·२ × ९·९ सें० मी०	५ (१–५)	८	२३	पू०	प्राचीन सं० १९५९	इति श्री रुद्रयामलतंत्रे स्वर्णाकषर्णभैरव स्तोत्रं समाप्तमगमत् ॥ लिपिकृतंगोपीरामशर्मणा मी० फा० कृ० २ सं० १९-५९ श्री भैरवार्पणमस्तु शुभम् ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८६	७०२५/२	भैरवस्तोत्र			का०	दे०
६६०	११११/६	भैरवाष्टक			दे० का०	दे०
६६१	३११३/२	भैरवाष्टक			दे० का०	दे०
६६२	७७८४	भैरवाष्टक			दे० का०	दे०
६६३	२८६१	भौमस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६४	४६५२	भौमस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६५	५५४१	भौमस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६६	६११६/७	मंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·८ × १०·६ सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन सं० १९२५	संपूर्ण संम्त १९२५ मीती फालगुन वदि ५ मंगलवर:··· ॥
१९ × १३ सें० मी०	३	१७	२३	पू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	इति श्रीस्कंधपुराणे काशीखंडे अष्टत्रैदवाष्टकस्तोत्र संपूर्ण ॥ सुभंमस्तु ॥
१६·१ × १२·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	१७	पू०	प्राचीन	इति भैरवाष्टक संपूर्ण ॥ श्रीहरी ॥ मिश्रवारीदा लिषतं हलदौमधे शुभं ॥
१६·८ × १०·५ सें० मी०	२ (१–२)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणोक्त भैरवाष्टकं समाप्तः ॥
१६·५ × ८·५ सें० मी०	२ (१–२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे भौमस्तोत्रम् ॥ शुभमस्तु श्रीधन दार्णमस्तु ॥
१५·७ × ७·७ सें० मी०	२ (१–२)	५	१८	अपू०	प्राचीन	·· ॐ अस्य श्री भौम स्तोत्रस्य विरूपाक्ष ऋषि: अनुष्टुप् छंदः ॥··· (-प्रारंभ)
१७·१ × ८·६ सें० मी०	११ (१,१०-१९)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे भार्गव प्रोक्तम् संपूर्णमिदं मंगलस्तोत्रम् ॥
१४·७ × ९·९ सें० मी०	४ (४३–४७)	६	१५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६९७	२४८० / ३	मंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०
६९८	७४५५ / २	मंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०
६९९	२९३७ / १२	मंगलस्तोत्र			मि० का०	दे०
७००	५५३८	मंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०
७०१	२३३३ / ४	मंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०
७०२	१५९१ / ५	मंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०
७०३	६११९ / ७	मंगलाष्टक	कालिदास		दे० का०	दे०
७०४	७२२३	मंगलाष्टक	कालिदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १२ सें० मी०	२½	१४	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे मंगल स्तोत्र संपूर्णम् ॥
१३ × ९·५ सें० मी०	३	७	१२	पू०	प्राचीन	इति मंगल स्तोत्र समाप्तम॥
१३·१ × ८ सें० मी०	२	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदान्ताचार्य मंगलस्तोत्र संपूर्णं ॥
१५ × ७·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे मंगल स्तोत्रं समाप्तम् शुभमस्तु: ॥ संवत् १९०० के: जेष्टसुदि १४ क: लिषितं श्री वैष्णव मंगलदास पैषरा वैठे ॥
२८·२ × १३·२ सें० मी०	१½	१८	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे मंगलस्तोत्रं समाप्तम् ॥
१६·२ × १०·१ सें० मी०	१	८	१९	पू०	प्राचीन	
१४·७ × ९·९ सें० मी०	३ (४१–४३)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री कविकालदास कृतं मंगलाष्टकं संपूर्णं ॥ (पृ० ४३)
१८·८ × १३·३ सें० मी० (सं०सू०४-२३)	३ (१–३)	१२	२०	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री कविकालिदास विरचितं मगलाष्टक संपूर्ण: ।। संवत् १८७१ मिति माघ ५ मंगलवासरे: ॥ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०५	२६०६	मंगलाष्टक	कालिदास		दे० का०	दे०
७०६	२३६६	मंगलाष्टक	कालिदास		दे० का०	दे०
७०७	४३३७/८	मंगलाष्टक	कालिदास		दे० का०	दे०
७०८	४२८१	मंगलाष्टक			दे० का०	दे०
७०९	२७०८/३	मंगलाष्टक			दे० का०	दे०
७१०	११९४/२	मंगलाष्टक स्तोत्र			दे० का०	दे०
७११	१४७७	मंत्रराजगणपतिस्तवम्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७१२	७१६२	मणिकर्णिकाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३ × ८ सें० मी०	७	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १९०७	इति कालिदास कृत मंगलाष्टम १७ व्यलेषिपुस्तकमिदं राम सवन चौवेन-आषाढ़कृष्ण ३० संवत् १९०७ शाल शुभमस्तु ।।
१८ × १२ सें० मी०	६	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री कालदास कृत मंगलाष्टकं समाप्तम् ।।
१९ × १३·३ सें० मी०	४ (३१–३४)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री कवि कालदाश कृतं मंगलाष्टक शंपूर्णः ।। (पृ० ३२)
२१·२ × ६·५ सें० मी०	९ (१–९)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
१६ × १० सें० मी०	८ (३–१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति कविवे कालिदास कृतं मंगलाष्टक-संपूर्णम् ।।
१५·२ × १२·४ सें० मी०	३	९	१५	पू०	प्राचीन सं० १९५६	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितंनित्य मंगलाष्टक स्तोत्र संपूर्णं लिखितं श्रद्धा रामहर प्रसाद का पुत्र सं० १९५६ वैशाख शुदि ४ शनिवार राम राम ।
२०·१ × १०·९ सें० मी०	३	११	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य कृतं मंत्रराज गण-पति स्तव संपुर्णम् ।।
१७·१ × ८·५ सें० मी०	४ (१–४)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १९२५	इति श्री शंकराचार्यं विरचितं मणि-कर्णिकाष्टकं संपूर्णं ।। संवत् १९२५ मिति माघ शुक्ल ५ वारं आदित्य ।। × × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१३	५६११	मणिकर्णिकास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७१४	५८७३	मणिकर्णिकास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७१५	६४०	मणिकर्णिकाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
७१६	२७९३	मणिरत्नमाला			दे० का०	दे०
७१७	७६५१	मदनाष्टक			दे० का०	दे०
७१८	२५४१/२५	मधुराष्टक	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
७१९	४८९५	मल्लारिसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
७२०	३२५८	मल्लारिसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ म	८ द	९	१०	११
१५·९ × ७·८ सें० मी०	१	७	२५	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य विरचितं मणिकर्णिका स्तोत्रं ॥
२३·५ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	८	२९	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छंकराचार्य्य विरचितं मणिकर्णिकं स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२२·२ × ११·८ सें० मी०	४	९	२६	अपू०	प्राचीन	इति मणिरत्नमाला समाप्तं ।···
१०·८ × ७·६ सें० मी०	३	८	१३	अपू०	प्राचीन	इती श्री मदनाष्टक संपूरणं ।···
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२	१३	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभार्यं विरंचितं मधुराष्क संपुर्ण ॥
१६·७ × ८·५ सें० मी०	४ (१–४)	५	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं मनिकर्णिकाष्टक संपूर्णम् ॥
२४·३ × १२·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे शिवोव्याख्याने मल्लारि प्रस्तावे मल्लारि प्रकृति भावे शिवपार्वती संवादे श्री मल्लारि सहस्रनाम स्तोत्रसंपूर्णम् ॥
१२·८ × ७ सें० मी०	३० (१-२८,३८-३९)	६	१५	अपू०	प्राचीन श०१६९३	इति श्री पद्मपुराणे शिवोपाख्याने मल्लारी प्रवृतिभावे शिवपार्वती संवादे मल्लारी सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ श्री मार्तण्डभैरवार्पणमस्तु ॥ श्रीशके १६९३ वर्षे नंदनाब्दे श्रावणमासः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७२१	४२१२	महाकालस्तोत्र			दे० का०	दे०
७२२	३०४६/७	महाकालाष्टक			मि० का०	दे०
७२३	६३९७	महाकालीस्तोत्र			दे० का०	दे०
७२४	४६७९	महागणपतिगकारादि-सहस्रनाममालामंत्र			दे० का०	दे०
७२५	१४७०	महागणपतिस्तुति			दे० का०	दे०
७२६	३०८६	महागणपतिस्तोत्र	व्यास		दे० का०	दे०
७२७	१४९२	महागणपतिस्तोत्र			दे० का०	दे०
७२८	२७१९	महागणपतिस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·४ × ११·३ सें० मी०	२	८	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाकाल स्तोत्रं समाप्तं ॥···
१७·७ × ११ सें० मी०	१½	८	२१	पू०	प्राचीन	इति महाकालाष्टकं समाप्तम् ॥
१९·७ × ७·९ सें० मी०	४ (१–४)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाकाल संहितायां महाकालेनोक्तं महाकाली स्तोत्रं समाप्तम् × ॥
१५·२ × १०·३ सें० मी०	६	९	२०	पू०	प्राचीन	श्री महागणपतिगकारादि सहस्रनाम माला मंत्र। पृ० (२)
११·५ × ६·७ सें० मी०	६५	६	१३	अपू०	प्राचीन	इति श्री महागणपते स्तुति समाप्तः ॥ (पृ० २०४)
२३·९ × १०·२ सें० मी०	१	८	४१	पू०	प्राचीन	इति व्यास विरचितं महागणपति स्तोत्रं संपूर्णं ॥··· ···
१७·५ × ११ सें० मी०	२	९	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद विरचितं श्री महागणपतिस्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१६·२ × ६·७ सें० मी०	६ (१–६)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्णयुधिष्ठर संवादे महागणपति अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७२९	५९४४/१७	महागूढध्यान	वृंदावनदास		दे० का०	दे०
७३०	४९३३	महात्रिपुरसुंदरीस्तोत्र			दे० का०	दे०
७३१	४९१६	महानारायणस्तोत्र			दे० का०	दे०
७३२	५७५३	महावटूकसहस्त्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
७३३	२७३३	महामारीस्तोत्र			दे० का०	दे०
७३४	३५९१/५	महामृत्युंजयजपस्तव			दे० का०	दे०
७३५	४५३८/३	महालक्ष्मीअष्टकं			दे० का०	दे०
७३६	७६५०	महालक्ष्मीस्तोत्र	श्रीरामचंद्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३ × ८·५ सें० मी०	५ (८६–९०)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री गोस्वामि वृंदावनदासेन विरचितं महागूढध्यान समाप्तं ।।···
२३·६ × ७·८ सें० मी०	३ (१–३)	५	२७	अपू०	प्राचीन	
१३·५ × ६·४ सें० मी०	१२ (२-५,७-१४)	९	१५	अपू०	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री वाराहपुराने स्यामवेद विद्या वाराह धरनी संवादे महानारायनस्तोत्र संपूर्नमस्तु मंगलं × × सं० १८६०
२७·७ × १४·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	१२	३६	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री भैरवयामलतंत्रे देवीईश्वर संवादे महावट्का राघ सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्ण समाप्तं ।। इति कातिकवदि १४ का संवत १९२६ के ।।
१७·४ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	५	१८	पू०	प्राचीन सं० १९६६	इति श्री महाभैरवी तंत्रे महामारीस्तोत्रं समाप्तम् लिखित मिदं शिवनारायणेन मिती मार्गशीर्ष वदि ९ नवमी सोमेका सं० १९६६ करीमा ग्रामवासी मो० लिपनिया ।
१७ × १०·५ सें० मी०	३ (१–३)	८	१९	पू०	प्राचीन	
१०·१ × ६·८ सें० मी०	४ (१–४)	५	१४	पू०	प्राचीन	इ तींद्रकृत: श्री महालक्ष्म्यष्टक स्तव: संपूर्ण: ।। शुभं । चैत्रमाशे कृष्णपक्षे कादसी भूमवार शुभं ।।
१६·२ × ९ सें० मी० (सं०सू०४–२४)	६ (१–६)	७	१८	पू०	प्राचीन सं० १९१०	इति श्री रामचंद्रेण विरचितं महालक्ष्मी स्तोत्रं संपूर्णं श्रीमतेरामानुजायनम: संवत १९१० मासोत्तमे मासे शुक्ल पक्षेतिथौ वर्तमान काले × × ×।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३७	२७५६	महालक्ष्मीकवच			दे० का०	दे०
७३८	४२९८/२	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
७३९	१५३४	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
७४०	७७८	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
७४१	४३७६	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
७४२	४३३१	महाविद्यास्तोत्र			दे० का०	दे०
७४३	१४६४	महाविद्यास्तोत्र			दे० का०	दे०
७४४	३२२६	महाविष्णुस्तवराज	भीष्म		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·२ × ८·४ सें० मी०	२	८	१९	पू०	प्राचीन	इत्यथवर्णं रहस्ये महालक्ष्मी कवचं संपूर्ण ॥
२० × १०·५ सें० मी०	२ (८–९)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणरहस्ये उत्तर कांडे आ-द्यादि श्री महालक्ष्मी हृदयं संपूर्णम् ॥
३०·४ × १२·५ सें० मी०	११ (१–११)	७	३४	पू०	प्राचीन	श्री महालक्ष्मी हृदयस्तोत्रं संपूर्णं ॥··· ···सकलजननी विष्णुवामांक संस्थां ॥
१३·५ × ११ सें० मी०	२१	१०	१३	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इतित्थर्वण रहस्ये आद्यादि श्री महा-लक्ष्मी हृदयस्तोत्र सपूर्णम्: संवत् १९२६ अषाढ़ शुक्ल २ रविवार लिखतं मिश्र गूलजारि राम शुभमस्तु, मंगलं दद्यात॥
१५·९ × १२·१ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	१६	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ८·७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३४	पू०	प्राचीन	ईति श्री शिवप्रोक्तं महाविद्याऽस्तोत्र संमात्यम् ॥
१६·१ × ९ ३ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	१७	पू०	प्राचीन सं० १९३२	इति श्री शिवेन प्रोक्तं महाविद्यास्तोत्र संपूर्णं ॥···लिपि देवदत्तेन सं० १९३२ मार्ग शु० ११।गुरु ॥
१५ × ७.७ सें० मी०	१४ (२–१५)	७	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शांतिपर्वणि श्री भीष्मकृत श्री महा विष्णुस्तवराज समाप्तः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७४५	४४७५	महिम्न स्तव (कल्पलताटीका)	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७४६	४५५७	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७४७	५०७४	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		मि० का०	दे०
७४८	४६१५	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७४९	७२१२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७५०	५६७१/६	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंत		दे० का०	दे०
७५१	५६७२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंत		दे० का०	दे०
७५२	२४६०	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंत		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द		१०	११
१७·४ × १७·४ सें० मी०	२० (१–२०)	२०	२६	पू०	प्राचीन सं०१९ ९	इति श्री विश्वेश्वरचरणारभजनैकमिधानेन केन विद्विदुषा विरचिता महिम्नस्तव कल्पलताख्या टीका समाप्तिमगात् श्री भाद्र तृतीयमासे कृष्णपक्षे ९ तिथौ गुरुवासरे श्री संवत् १९०९…।
२४·३ × १०·८ सें० मी०	७ (१–७)	७	३०	पू०	प्राचीन	समाप्तोयं समेस्तोत्रं सर्वमीश्नर वर्णनं।।
२२.१ × १२·३ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२५	पू०	प्राचीन सं०१९३७	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिमन स्तोत्र संपूरनं ।। संवदि १९३७ ।। मासे अस्वन मासि शुक्लपक्षे तिथौ + + ।।
२२·६ × १०·९ सें० मी०	६ (१–६)	८	३४	पू० (जीर्ण)	प्राचीन	इति श्री गंधर्वराज पुष्पदंत विरचितं महिम्नस्तोत्रं संपूर्णम् ।। श्री
१५·८ × ८·८ सें० मी०	१० (१–१०)	८	२१	पू०	प्राचीन सं०१९०५	इति श्री पुष्पदन्ताचार्य्य विरंचितं महिम्नाख्यं स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु सं० १९०५ के सालमिती ।।
१०·८ × ६·७ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंत विरचितं महिम्नस्तोत्रं संपूर्ण समाप्तम् ।। शुभमस्तु।।
१६·६ × ९·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंता: चार्य विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्र समाप्तं संवत् १८७४ श्रावण मेसि गु० ।।
१२.५ × ९·९ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिनाख्य स्तोत्रं संपूरणं शीवायनमोनमः।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५३	२७९	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७५४	२८०	महिम्नस्तोत्र	श्रीपुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७५५	५८८२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७५६	५९०३	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७५७	५९२३	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७५८	१९२५/३	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७५९	९२४	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७६०	७०९७	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८×१०.५ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंतचार्य विर्चतं महिम्नस्तव संपूर्ण समाप्तं लिखितं बस्तीराम ॥
१५.१×८.७ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पादंताचार्थ बिरचितं महिम्नः पार स्तोत्रं संपूर्णं ॥
१०×६.५ सें० मी०	७ (१–७)	९	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंतविरचितं महिम्न स्तोत्रं समाप्तं ॥
२३.७×९.६ सें० मी०	८ (१–८)	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १९०२	श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नाख्य स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥...पोथि लीषतं सदन सिंह ब्राह्मण संवत १९०२ ॥...
२४×१०.३ सें० मी०	६ (१–६)	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १८४४	इति श्री पुष्पदंताचार्यं विरंचितं महिम्नाख्यं स्तोत्रं संपूर्णं ॥ शुभंस्तात्सर्वं जगतां ॥ सम्वप् १८४४ ॥
१७.८×८.९ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इती श्री पुष्पदंताचार्य विरंचतं महिमन स्तोत्र संपूर्णं...संवत् १९२६ ॥
१७.३×१२.८ सें० मी०	९ (१–९)	१४	१३	पू०	प्राचीन सं० १९३६	इति श्री पुष्पदंतागण विरचितं महिम्नस्तोत्रं संपूर्णं ··ममदोषो न दीयते ॥ मुकाम साहनगर ॥शिव॥
१५.५×१०.१ सें० मी०	९ (१–९)	९	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदन्ताचार्य विरचितं महिम्नाख्येऽस्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु रामायनमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६१	२०६२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदताचार्य		दे० का०	दे०
७६२	४३३७/८	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७६३	४४४६/२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		मि० का०	दे०
७६४	३८५२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७६५	४३६९	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७६६	१९१६	महिम्नस्तोत्र (संस्कृतटीका)	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७६७	४२७/४	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७६८	१३६९/२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों । आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	ह	९	१०	११
१४·६×६·८ सें० मी०	१ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्रं संपूर्णं । लिषतं मिश्र रामपती पजि ॥
१६×१३·३ सें० मी०	६ (७८–८३)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्प दतगंधर्वराज विरचितं महिम्नस्तोत्र संपुर्ण शुभमस्तु ॥
१४×१०·५ सें० मी०	२० (१–२०)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य गंधर्वराज विरचितं महिमनाख्यं स्तोत्रं संपूर्णं ॥
१३·६×७·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	१७	पू०	प्राचीन सं०१६३५	इति श्री पुष्पदंतगंधर्वराज विरंचितं महिम्नस्तोत्रं समाप्तं संवत् १६३५ निति श्रावणस्यसिते पक्षे पंच •
१६·४×६·७ सें० मी०	७ (१–७)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१६५८	इति श्री पुष्पदंत विरचितं शिवमहिमाख्यस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभंभवतु ॥ मिती शुद्धश्रावणवदी १३ शनौ संवत् १६५८ हस्ताक्षरयं श्री पं०भगवानदास पुरेहतके॥
२६×१०·८ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	४३	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री पुष्पदंताचार्य्य विरचितं महिम्नाख्यस्तोत्र संपूर्णम् ॥ संवत् १८६६ तत्रमासो ज्येष्टतस्तत्र तिथि तृतीया तस्यां शुक्रवासरे लिखितमिदं पुस्तकं लक्ष्मणाभिधानेन······॥
१४·५×१० सें मी०	१४ (१–१४)	७	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदन्ताचार्य विरचिते महिम्न स्तोत्रं संपूर्णम् समाप्तम् ॥ शिव ॥ जयनारायण॥
११·६×८·५ सें० मी०	२३	६	१०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्पुष्पदंत गंधर्वराज विरचितं महाप्रभाव श्री महिम्नः स्तोत्र संपूर्णं ॥
(सं०सू०४-२५)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय के क्रमसंख्या या हस्तलिखित की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६९	१३६२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७०	१७६०	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७१	१८४६	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७२	२७८१	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७३	२६००	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७४	२७०७	महिम्नस्तोत्र (संस्कृत टीका सहित)	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७५	१२०३	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७६	३४८७	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·७ × १० सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री गंधर्वराज पुष्पादताचार्य विरचित महिम्नः स्तोत्र समाप्तम्'''संवत् १९२२ ॥
२५·२ × ९·८ सें० मी०	९ (१–९)	७	३१	पू०	प्राचीन सं० १९१३	इति श्री महिम्न स्तोत्र समाप्तं सम्वत् १९१३ ॥
१६·४ × ९·३ सें० मी०	१२	७	१८	पू०	प्राचीन सं० १९१०	इति श्री पुष्पदन्ताचार्येण विरचितं महिम्नाख्य स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥ श्रीशिवः॥ सम्वत् १९१० मिति आश्विन शुदि त्रयोदश्यां शुक्रवारान्वितायां लिखितमिदं महेश्चन्देन ॥'''
१५·६ × ९ ९ सें० मी०	१२	६	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नख्यं स्तोत्रं समाप्तं ॥
११ ७ × ९·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णु विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्र समाप्त संपूर्ण शुभमस्तु ॥
२२·४ × १०·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदन्ताचार्य्य विरचितं महिम्नाख्य स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥
१५·७ × १० सें० मी०	११ (१–११)	७	१९	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री गंधर्वराज पुष्पदंताचार्यविरचितं महीम्नः स्तोत्र समाप्तम् ॥ ''' संवत् १९ २ अस्थित ॥
१५·८ × ९·४ सें० मी०	१० (१–१०)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्न स्तोत्र संपूर्ण शुभमस्तु संवत् १८८४ शाके १७४९ फाल्गुण वदि ८ भृगौ शिवाय नमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की सूचना	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस रवस्तु लिपि पर है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७७	७३५७	महिम्नस्तोत्र (सटीक)	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७ ८	७८६३	महिम्नस्तोत्र (सटीक)	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७७९	७८११	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७८०	७३६५	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७ १	.५६७	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७ २	१००१	महिम्नस्तोत्र (विवृत्तिसहित)	पुष्पदंताचार्य	शंकराचार्य	दे० का०	दे०
७८३	२ ५१	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे
७८४	१.५८	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × ११·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	३५	पू०	प्राचीन सं०१ १९	इति श्री महिम्न सटीक स्तोत्रं संपूर्णं ॥ × × × सवत् १८१६ वैशाख कृष्ण ५ गुरुवासरे ॥
३८ × १३ २ से० मी०	११ (१–११)	१०	४८	पू०	प्राचीन सं०१९१८	इति महिम्नः समाप्त. । सम्वत १९१४ मासानांमासोत्तमे श्रावण मासे शुक्लपक्षे षष्ट्यां सोमवाशरे लिखितं रामभरोस पंडित ॥
१५ × ९·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदन्त (चार्य) विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्र समाप्तं सुभमस्तु × ×
१९·८ × १०·९ से० मी०	७ १–७	८	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नाख्यः स्तात्रं संपूर्णम् × × × ॥
१६ × ७·८ सें० मी०	४ (३–६)	८	२३	अ॰पू॰	प्राचीन	
३ ·२ × १२·· सें० मा०	१६ (१,३-१७)	९	४१	अ॰पू॰	प्राचीन	इति श्री महेश्वर पादाब्जोपजीवि पुष्पदंताभिधान विरचिते महिम्नः पारस्तोत्रे शंकराचार्य विरचिता विवृत्ति समाप्ता ॥
२० × ११ ३ सें० मी०	३ (१,५-६)	१०	३१	अ॰पू॰	प्राचीन	इति श्री पुष्पदत्ताचार्य विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्र संपूर्णम् ॥
२३·५ × १० २ सें० मी०	४ (२-३,६-७)	७	३४	अ॰पू॰	प्राचीन सं०१९२३	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नः स्तोत्रं संपूर्णं समाप्तम् शुभं मंगलददात् भाद्रपद शुक्ल अष्टम्यां चंद्रवासरे संवत् १९२३···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालयकी आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८५	१३०३/४	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७८६	२०१८	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७८७	५६१८	महिम्नस्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
७८८	२३२०/२	महिम्नस्तोत्र	,,		दे० का०	[illegible]
७८९	१६८२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७९०	५०७२	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७९१	५२३५	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		[illegible] का०	दे०
७९२	७७४/४	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१०·८ × ८ सें० मी०	२५ (२-७,९-२६)	५	११	अपू०	प्राचीन सं०१८९०	इति श्री पुष्पदंत विरचितं महिम्न पाठ समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सं० १८९० कार्त्तिक वदी ७ चंद्रवासरे लिखंत मिश्र हरनंद लाल ब्राह्मण ।
१७·२ × १० सें० मी०	१० (१-३-११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य्य विचितं महिम्नाप्यं स्तोत्र संपणं ॥ ४० ॥
१६·७ × १०·४ सें० मी०	८ (१–८)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
१६·२ × १०·४ सें० मी०	८ (२-७,१०, ११)	९	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्र संपूर्णं ॥ समाप्त ॥
१६ × ९·९ सें० मी०	१० (२९-३८)	७	१८	अपूर्ण	प्राचीन	
१५·५ × १०·३ सें० मी०	९ (२–१०)	१०	१८	अपू० (खंडित)	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नख्य स्तोत्र संपूर्णं शुभंचैत्र कृष्ण २ चंद्रवासरे संवत् १८९८··· ॥
१६·९ × १०·७ सें० मी०	९ (१–९)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
१४·६ × ९·३ सें० मी०	५ (११–१५)	७	१३	अपू०	प्राचीन	इति श्री पुष्पदंताचार्य्य विरचितं महिम्नाख्यं पार स्तोत्रं संपूर्णम समाप्तम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७९३	३०४१	महिम्नस्तोत्र (सटीक)	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७९४	२८५	महिम्नस्तोत्र (संस्कृत टीका)	पुष्पादंताचार्य		दे० का०	दे०
७९५	६०९	महिम्नस्तोत्र			दे० का०	दे०
७९६	२७	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७९७	६५८	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
७९८	९२२	महिषमर्दिनीस्तोत्र			दे० का०	दे०
७९९	७०२	महिषोप्रार्थनं			दे० का०	दे०
८००	५५९२	मारुतिनन्दनस्तव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × ११ सें० मी०	३ (१-२,४)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × १८·४ सें० मी०	१५ (२-१२, १४-१७)	१२	३२	अपू०	प्राचीन सं०१८६९	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्न स्तोत्र संपूर्ण।। संवत् १८६९ ।।
१८·५ × ९ सें० मी०	६ (१-४,७-८)	८	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८९५	इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्न स्तोत्र समाप्तम् संवत् १८९५ ।।
२० × ९ सें० मी०	६ (६-११)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८९४	इति श्री पुष्पादंताचार्य विरंचितं महिम्न स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १८९४ फाल्गुणवदि ५ शुभंभूयात् ।
१९ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	१६	४८	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ८·८ सें० मी०	३	८	३२	पू०	प्राचीन	इति कुल चूड़ा मणी महिष मर्दिनी स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु ।। श्री रस्तु अस्तु श्री: गौरीशंकराभ्यां नम: ।।
२२·२ × १२·४ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
१८·८ × १० सें० मी०	१	६	३६	पू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री मन्मारुतं नन्दन स्तवं समाप्तम् ।।

(सं०सू०४-२६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०१	२६४६	मिथुन स्तोत्र			दे० का०	दे०
८०२	१३८८	मुक्तिधारास्तोत्रम्			दे० का०	दे०
८०३	३४६१	मृत्युंजयसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
८०४	२१३३	मृत्युंजयस्तव			दे० का०	दे०
८०५	७८०८	मृत्युंजयस्तवराज			दे० का०	दे०
८०६	३५९५	मृत्युंजयस्तोत्र			दे० का०	दे०
८०७	१२४८	(महा) मृत्युंजयस्तोत्र			दे० का०	दे०
८०८	२८१६	मृत्युंजयस्तोत्र	अगस्त्यमुनि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२१·५ × ८·३ सें० मी०	६ (१–६)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले त्रिभुवन मिथुन स्तोत्रं सपूर्ण ।।
१७·९ × १३ सें० मी०	८	७	१३	पू०	प्राचीन सं०१९८२	इति श्री कृष्न नारद संवादे मुक्तिद्वारा स्तोत्र संपूर्ण सं० १९२२ श्रा०
१७·५ × ८·७ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	२२	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति श्री रुद्रयामले देवीरहस्ये मृत्युंजय सहस्त्रनाम स्तोत्रं सपूर्णं ।। शुभमवतु ।। संवत् १९२५ मार्गशीर्ष कृष्ण
१५ × १०.५ सें० मी०	६	९	१५	पू०	प्राचीन सं०१९२०	इति श्री परमेश्वर चतुर्विन्शति साहस्त्रे शिवभाषिते नंदिकेश्वर संवादे शिव ब्रह्मा सवादे मृत्युंजय स्तव. समाप्तं संपूर्णं ।। शुभमस्तु ।। फाल्गुण वदी १२ सनौ सवत् १९२० ......
१७·६ × ८·९ सें० मी०	६ (१–६)	६	२१	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति श्री परमेश्वर चतुर्विशति साहस्त्रे शिव भाषितेनंदिकेश्वर संवादे शिवब्रह्मा संवादे मृत्युंजयस्तवराजः समाप्तः ।। शुभ भवतु ।। सवत् १९२५ ।। मार्गशीर्ष कृष्ण १० ।।
१८·२ × ९·४ सें० मी०	५ (१–५)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे वसिष्ठदिलीप संवादे माघमहात्म्ये मार्कंडेयजन्माख्याने षोडशोध्यायः ।
१६ × ८·४ स० मी०	८ (१–८)	८	१९	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति मृत्युंजय स्तोत्र संपूर्णम् सं० १९०९ वैशाष शुदि तृयादस्यां १३ सूर्यतिमजवासरे श्री शिव पहा मृत्युंजय मंत्र ।। ...
१२·५ × ८ सें० मी०	४	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे अगस्त्यकृतमृत्युंजय स्तोत्र सम्पूर्णम् ।। श्री मृत्युंजय सदा शिवार्पणमस्तु ।। शुभंभवतु ।।

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०९	२८५६	मृत्युंजयस्तोत्र			दे० का०	दे०
८१०	७६५८	मृत्युञ्जयस्तोत्र			दे० का०	दे०
८११	६४३	मृत्युंजयस्तोत्र	मार्कण्डेय		दे० का०	दे०
८१२	२१ ८	मृत्युंजयस्तोत्र			दे० का०	दे०
८१३	३९६०	मृत्युंजयस्तोत्र			दे० का०	दे०
८१४	३८९० / २	यमुनाकवच			दे० का०	दे०
८१५	५६४८ / १७	यमुनाष्टक	गो० हित हरिवंश		दे० का०	दे०
८१६	७८२० / ७	यमुनाष्टक	रूपगोस्वामी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९.८ × ११.८ सें० मी०	३ (१–३)	९	२२	पू०	प्राचीन	चंद्रशेखर माश्रे मम किंकरिष्यति वैयम. संपूर्ण शुभमस्तु मंगलं दादातु श्रीशिवायनमः। श्रीरामायनमः। श्री कृष्णाय नमः पूषे कृष्णे पक्षे शनिवारे कौ ९३ सम्यां लिखतयं श्री दाऊ जू लिखतंमया ममदोषो नदीयते ॥ श्री कृदम वासदेव कीजै।
१६.३ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२३	पू०	प्राचीन सं० १९३५	इति श्री मृत्यंजय स्तोत्र संपूर्णं ··· संवत् १९३५···
२५.५ × ११.५ सें० मी०	३ (२–४)	८	२९	अपू०	प्राचीन सं० १९४१	इति मार्कंडे विरचितं मृत्युंजय स्तोत्र समाप्तम् लिषत मिश्र भिषम सैनस्वात्मपठनार्थ सं : १९४१ माघ कृष्णाबुधवासरे
२२.३ × १०.२ सें० मी०	१	९	३१	अपू०	प्राचीन सं० ९२५	इति मार्कंडेयः कृतं मृत्युंज्जय स्तोत्रं संपूर्णम् संवत् १९२५ मासोत्तमे कार्तिक मासे··· ॥
१२ × ७ सें० मी०	२	७	१६	पू०	प्राचीन	
१८.८ × १०.५ सें० मी०	२ (१–२)	८	१९	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्ये संहितायां यमुनाकवचं समाप्त।
१३ × ८.५ सें० मी०	५ (११५-११९)	६	१२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्वितहरिवंशचंद्र गोस्वामिना विरचितः श्री यमुनाष्टक संपूरण॥···
१३.५ × ९.५ सें० मी०	३ (२४–२६)	८	१५	पू०	आधुनिक	इति श्रीमद्रूपगोस्वामि विरचितं यमुनाष्टक संपूर्णम···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१७	२७८	यमुनाष्टक	श्रीपूर्णानंदस्वामी		दे० का०	दे०
८१८	१०३५	यमुनाष्टक			दे० का०	दे०
८१९	२१४१/२५	यमुनाष्टक	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
८२०	४२९९	युगलकिशोरसहस्रनाम			दे० का०	दे०
८२१	४२८५	रंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
८२२	५६२७	रकारादिराम सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
८२३	५५८९	रकारादिराम सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
८२४	२६८३	रक्तचामुंडास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२७·५ × ११·७ सें० मी०	२ (१–२)	६	३३	पू०	प्राचीन सं० १६४६	इति श्री पूर्णानंद स्वामि विरचितं यमुनाष्टकं संपूर्णं श्री यमुनायैनमः आश्विन मासे कृष्ण पक्षे १० गुरुवासरे सं० १६४६ लिखतं मिश्रभीकम सैन शुभम्।
१५·६ × १२·२ सें० मी०	४ (१–४)	८	१५	पू०	प्राचीन सं० १६३४	यमुनाष्टकं समाप्तं १६३४ ज्येष्ठशुल्का चतुर्दस्यां शुभमस्तु मंगलं ददाती।
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरंचितं श्री यमुनाष्टक संपूर्णम् ॥
१७·७ × १०·३ सें० मी०	२७ (१–२७)	७	२३	पू०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री नारदीय पुराणे श्री कृष्णोक्तं युगलकिशोर सहस्रनाम समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६१७ पौषमासे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थी ४ भौमवासरे लिष्यतंपंश्रीदुवेराधेकृष्ण पठनार्थं लाला रघुनाथ सिंह जू
२५·३ × १०·६ सें० मी०	२ (१–२)	६	२८	पू०	प्राचीन सं० १६३०	इति श्री मत्छंकराचार्य विरचिते रंगाष्टक समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ रामकृष्ण॥ कार्तिक्यां कृष्णपक्षस्य दशम्यां सौम्य वासरे ॥ खरामग्रह चन्द्रब्दे रंगाष्टक लिख्यते मिदं ॥
२७ × ११·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	३१	पू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री रकारादि श्रीरामसहस्रनामस्तोत्र मंत्रस्य श्री भगवान्नारायण ऋषि ॥ श्री देवीगायत्री छंदः (पत्रसंख्या २)
१६·२ × ६ सें० मी०	३४ (१–३४)	६	२१	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री रकारादि श्रीरामसहस्रनाम स्तोत्र मंत्रस्य श्री भगवान् नारायणऋषिः··· (पत्र सं०-२)
२० × ८ सें० मी०	१	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति रक्त चामुंडा स्तोत्रम-संपूर्णम ॥ शुभं शुभ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२५	५८१२	रघुनाथाष्टक	रघुनाथशर्मा		दे० का०	दे०
८२६	१४८२/२	रहस्वलास्तोत्र			दे० का०	दे०
८२७	३२१५	रहस्यनामसहस्रविवृति	वृद्धिराजदीक्षित		दे० का०	दे०
८२८	५६४४/१७	रहस्यात्मकध्यान	वृंदावनदास		दे० का०	दे०
८२९	६१२	राघवेंद्रस्तोत्र	अपर्णाचार्य		दे० का०	
८३०	१६५६	(मंत्र) राजात्मकस्तवं			दे० का०	दे०
८३१	४२१३	राधाकवच			दे० का०	दे०
८३२	७६३०	राधाकुंडाष्टक	रघुनाथदास गोस्वामी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × ११·४ सें० मी०	१	११	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्रघुनाथशर्म्मणा विरचिता रघुनाथाष्टकपदी समाप्ता ॥ शम् ॥
२१·८ × ८·४ सें० मी०	१	१५	३६	पू०	प्राचीन	इति कालिमस्थाने ईश्वर पार्वती संवादे रजस्वलास्तव समाप्तः सं० ५१ फाल्गुन शुक्ल ६ शनौ लिखितं श्यमपंडितेन् ॥
१६ × ६·७ सें० मी०	२७ (१–२७)	८	२४	पू०	प्राचीन सं०१८४७	इति बुद्धिराज दीक्षित विरचिता रहस्यनाम सहस्रविवृतिः संपूर्णम् शुभसंवत् १८४७ चैत्रशुक्ल ८ बुधे लिपि समाप्ता शुभम् ।
१३ × ८·५ सें० मी०	६ (८०-८५)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री गोस्वामिहितवृंदावनदासेन विरचितं रहस्यात्मकं ध्यानंसमाप्तः ॥ . .
६·८ × ६·३ सें० मी०	५	१०	२०	पू०	प्राचीन सं०१९३७	इति श्री अपर्णाचार्यविरचितंराघवेंद्र स्तोत्रं संपूर्णम ॥ श्री कृष्णार्पमस्तु ॥ संवत् १९३७ ॥ पौस्ये सितेराकायां वटुक नाथेन लिखितं ॥
२५ × १०·८ सें० मी०	१	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहितायां मंत्र राजात्मक स्तोत्रं संपूर्णं ॥
२७·६ × ११·३ सें० मी०	३ (१,३-४)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीनारद पंचरात्रे शिवनारद संवादे राधा कवच संपूर्णम् ॥
१५·२ × ६·७ सें० मी०	४ (५२-५५)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री रघुनाथदास गोस्वामि विरचितं श्री राधा कुंडाष्टक संपूर्णं ॥ ·· संवत् १९३२···

(सं०सू०४-२७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३४	५०६२	राधाकृपाकटाक्षस्तोत्र			दे० का०	दे०
८३५	७६३० / ८	राधाकृष्णरास स्तोत्र (राधाकृष्णराससंकीर्तन)			दे० का०	दे०
८३६	४२६४	राधाकृष्णस्तवराज (वृंदावनचरित्र)			दे० का०	दे०
८३७	६६७७	राधारससुधानिधि	हरिवंश गोस्वामी		दे० का०	दे०
८३८	७६३० / ८	राधारससुधानिधिस्तव	हितहरिवंश गोस्वामी		दे० का०	दे०
८३९	७३३८	राधाष्टक			दे० का०	दे०
८४०	३५४३	राधासहस्रनाम			दे० का०	दे०
८४१	२४३६ / २	(१) राधासहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·३ × १०·४ सें० मी०	२ (१–२)	८	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री राधाकृपाकटाक्षस्तोत्रं संपूर्णम् शुभमस्तु
१५·२ × ९·७ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति रासोल्लासतंत्रे राधाकृष्णयोः रास क्रांत स्तोत्र गीतां च सपूर्ण ॥ श्री शुभ ॥
१४·६ × ८·७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री राधिकानाम स्तवराज मनुत्तमं × × (पत्र नं० ५ से) इति श्री वृहद्ब्रह्मसंहितायां द्वितीयपादे भूलोकवर्णन श्रीवृंदावन चरित्रे मंत्रद्वयाराधन निरूपनो नामषष्टोध्यायः श्री कृष्णायनमोनमः
१८·१ × १३·७ सें० मी०	६१ (१–६१)	७	१७	पू०	प्राचीन ७०१.६१	इति श्री वृंदावनेश्वरी चरणकृपामात्र विजृंभित श्री राधारस सुधानिधिःस्तव श्री हितहरिवंश गोस्वामिना विरचितं समाप्ताः " सम्वत् १९६१ ॥ "।
१५·२ × ९·७ सें० मी०	१२३ (१–१२३)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री हितहरिवंश गोस्वामि श्रीवृंदावनेश्वरी चरण कृपापात्र विज्जंभित श्री राधा रस सुधानिधि स्तवना बिरत समाप्तं ॥ शुभंभवतु ॥
१८·८ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री राधाष्टक सपुरणम् ॥
१२ × ८ सें० मी०	४५ (१–४५)	५	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रजामले सदाशिवनारद संवादे राधा सहस्रः संपूर्ण
१६ × १०·७ सें० मी०	१७	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वायंभुवागमे श्री रुद्रनारद संवादे श्रीमद्राधा सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
८४२	७६३०	राधास्तव			दे० का०	दे०
८४३	५५७६	राधास्तत्र			दे० का०	दे०
८४४	२८०६	राधास्तोत्र			दे० का०	दे०
८४५	२५३५	राधास्तोत्ररत्नावली	प्रियादासाचार्य्य		दे० का०	दे०
८४६	५४८५	राधिकासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
८४७	७६३०	राधिकास्तवराज			दे० का०	दे०
८४८	६४५०	रामअनुस्मृति			दे० का०	दे०
८४९	३१५८	रामकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१५·२ × ९·७ सें० मी०	११ (४१–५१)	५	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले हर गौरी संवादे राधा स्तव वर्णन पंचम समाप्त: ॥
१८·३ × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	९	२०	पू०	प्राचीन सं० १८९	इति श्री ब्रह्मवैवर्त्ते महापुराणे नारायण नारद संवादे कृष्ण जन्मखंडे उद्धवकृतं राधा स्तोत्र संपूर्ण ॥ आशुनशुदि ॥ ५॥ सं० १८९३ ॥
१३·६ × ९·९ सें० मी०	३ (१–३)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे श्री राधास्तोत्र सपूर्ण शुभंमस्तु लिषतं मिश्र राधिका दास संबत्…॥
१६ × ९·४ सें० मी०	६ (१–६)	५	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रियादासाचार्य्य विरचिता स्तोत्र रत्नावली संपूर्णा ।
१४·२ × १०·४ सें० मी०	२१ (२-११, १३-१८-२७)	९	१८	अपू०	प्राचीन	
१५·२ × ९·७ सें० मी०	९ (२७–३५)	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री सर्वोत्तममाहात्म्य तंत्रे रूद्रयामले उद्धम्नाये श्री राधिका स्तवराज संपूर्ण ॥
१७·१ × ८·८ सें० मी०	२ (२–३)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति रामानुस्मृति ॥ श्री सीताराम ॥
२०·५ × ७·७ सें० मी०	४ (१–४)	७	३५	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे कौशल खंडे प्रेमरामायणे श्री राम कवच वर्णनंषष्टो अध्याय: समाप्त । शुभमस्तु-संवत् १८८४ ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५०	४०७२	रामकवच			दे० का०	दे०
८५१	३५३९	रामकवच			दे० का०	दे०
८५२	१२३६	रामकवच			दे० का०	दे०
८५३	२७४२	रामचंद्रशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
८५४	४९२० / ३	रामचंद्रस्तवराज	नारद		दे० का०	दे०
८५५	२५३६	रामचंद्रस्तवराज			दे० का०	दे०
८५६	२५५२ / ५	रामचंद्रस्तवराज			दे० का०	दे०
८५७	३३३०	रामचंद्रस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६·१ × ८ सें० मी०	६ (१–६)	६	२२	पू०	प्राचीन सं० १८८७	इति श्री रामकवच संपर्ण समाप्तं ।। कातिकवदि ७ ।। सं० १८८७'''।।
१८·१ × १०·७ सें० मी०	३ (१–३)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति पद्मपुराणे श्री रामकवचं समाप्तं।। श्रीरामायनमः ।।
१४·५ × १० सें० मी०	४	७	११	अपू०	प्राचीन	इति ब्रह्मणा बिरचितं रामाकवच संपूर्णम् ।।
१२·४ × ७·८ सें० मी०	७ (१–७)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे वृषशयोगीश्वर संवादे श्री रामचंद्रशत नामस्तोत्रं संपूर्णं ।।
१७·४ × ८·६ सें० मी०	११ (१–११)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदकृत श्री रामचंद्रस्तवराजं संपूर्णं ।।
२३·५ × ९·६ सें० मी०	११ (१–११)	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १८९४	इति श्री सेनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामचंद्र स्तनराज संपूर्णं संवत १८९६ ।।
१६·१ × ११ सें० मी०	१३ (२–१४)	८	१७	अपू०	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारद उक्तं श्री रामचंद्र स्तवराज स्तोत्रमंत्र संपूर्णं शुभभवतु'''संवत् १८६८ शाके १७३३ ।।
१३·८ × ९·४ सें० मी०	८ (५-६,८,११,-१४,१६)	७	१९	अपू०	प्राचीन सं० १९१२	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामचंद्र स्तवराज संपूर्णं । माघशुक्ल १० भृगुवासरे संवत १९१२ ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५८	४२४३/४	रामचंद्रस्तवराज			मि० का०	दे०
८५९	४५४८	रामचंद्रस्तवराज			दे० का०	दे०
८६०	५४२३	रामचंद्रस्तवराज			मि० का०	दे०
८६१	२६४६	रामचंद्रस्तवराज			दे० का०	दे०
८६२	३४५७/२	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८६३	१२८५/८	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८६४	२३१६	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८६५	५६५६	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × १४·२ सें० मी०	३	१५	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारद··· श्रीरामचद्रस्तवराज संपूर्णम् ।।
१५·६ × १४· सें० मी० ४	८ (२–९)	१३	२०	अपू०	प्राचीन सं०१९१	इती श्री स्तकुमार संहितायां नारदोतं श्री रामचंद्रस्तवराज सपुर्न सूभमस्तु मिती अगहन वदि ७ संवद १९१४ की माल पोथी है उतारी मिती माहांग्वदि २ संवद १९१८ सीताराम ।
१७·८ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	७	१८	अपू०	प्राचीन	अस्य श्री रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र मंत्रस्य (प्रारंभ)
१७·१ × ९·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·१ सें० मी०	२५ (४७–८४)	५	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहित यां नारदोक्तं श्री रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र स·पूर्ण ।।
१७·५ × ९·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	२१	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री सनतकुमार संहितायां नारद प्रोक्तं श्री राचन्द्रस्तवराज स्तोत्रं संपूर्णं शुभंभवतु ।। श्री कल्याणमस्तु ।। श्री रस्तु ।। समत् ।। १८९८।। मागसर मासे कृष्न पक्षे ।।१४।। श्रोमवसोमवासरे । अक्षरबतीसाप्रमाणं श्लोक । १२६।। श्री रामायनमः श्रीकृष्णायनमः।। श्री रामचन्द्रायनमः । श्री राम राम ···
१५·८ × ९·१ सें० मी०	२०	६	१९	पू०	प्राचीन सं०१९४२	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामचंद्रस्तवराज स्तोत्रं समाप्तं ।। संवत १९४२ केसाल लिषायं श्री तिवारी···।।
२६ × १०·८ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२९	पू०	प्राचीन सं०१९००	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र संपूर्णं । सुभमस्तु संवत १९०० ।।··
(सं०सू०४-२८)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६६	२५७५	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८६७	४६०३	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८६८	४३१	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			मि० का०	दे०
८६९	६४०३	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८७०	६५३६	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८७१	४९९९	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८७२	२५२७	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८७३	७८२	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४७ × १०.९ सें० मी०	१० (१–१०)	११	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार••• श्रीरामचंद्रस्तवराज स्तोत्रसंपूरण शुभमस्तु ॥
१६.२ × ९.६ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	१८	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारद प्रोक्तं श्री रामचंद्रस्तवराज स्तोत्र संपूर्ण समाप्तं शुभमस्तु ॥ सवत् १८६१ रुद्रनामावत्सर × × × ॥
१३.९ × ६.१ सें० मी०	२८ (१–२८)	५	१५	पू०	प्राचीन सं० १९०८	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्त श्री रामस्तवराज स्तोत्रसंपूर्ण मितिचैत्र ब० सौम्यवासरे सं० १९०८ लिखितं नारगपुर प्रगणे थाना पडानामध्ये ब्राह्मण पुरुषोत्तम ज्ञाति गुजराती परोकारार्थं कानकुब्ज वालादीन पठनार्थं शुभंभूयात् श्री।वाह रहयपति श्रीजगदम्बा प्रेशत:श्री।
१६.६ × १०.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	२२	पू०	प्राचीन सं० १९०४	इति श्री सनत्कुमार संहिता नारदोक्तं श्री रामचंद्र स्तोत्रं समाप्तम् ॥ शुमस्तू । राम संवत् १९०४ × × × ॥
३०.४ × १२.५ सें० मी०	६ (१–६)	९	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्त श्रीरामचन्द्र स्तवराज स्तोत्र संपूर्ण ॥ श्री रामकृष्णायनमः ॥
२०.२ × १०.८ सें० मी०	७ (१-३,९-१२)	७	२५	अ०पू०	प्राचीन सं० १९१४	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्रीरामचंद्रस्तव राज स्तोत्र संपूर्ण॥संवत् १९१४॥ मिति भाद्रपद × × ॥
१७.१ × ८.७ सें० मी०	१९ (१-,७९,११-२१)	५	१७	अ०पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदो• ••• ॥
२०.१ × ९ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२८	अ०पू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७४	७.०२	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			का०	दे०
८ ५	१५०१	रामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
८७६	६.७	रामचंद्रस्तोत्र			दे० का०	दे०
८७७	१४३२	रामचंद्रकृत हनुमत्कवचं			दे० का०	दे०
८७८	२८६६	रामचंद्राष्टक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
८७९	३२२१	रामदशक	महेश्वराचार्य		दे० का०	दे०
८८०	१०२६	रामदशक	महेश्वराचार्य		दे० का०	दे०
८८१	३४७०	रामदशक	महेश्वराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × १०·४ से० मी०	९ (३-१०,१२)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री शानत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र सपूर्ण ।।
११ ६ × ६·२ से० मी०	२५ (२–२६)	५	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र ।
२१·७ × ११·३ सें० मी०	२ (२–३)	६	३:	अपू०	प्राचीन	इति श्री भरद्वाज ऋषिप्रणीत वेद पदाभिधं श्री रामचद्र स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु ।
१५·३ × ५·८ से० मी०	१३ (१–१३)	५	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे नारदागस्ति संवादे श्री राम चन्द्रयो प्रोक्त हनुमत् कवच स्तोत्र समाप्तम् ।। सम्वत् १८-८८ ।। समेनाम ।।
१३ × ७·८ से० मी०	४ (१–४)	६	१६	अपू०	प्राचीन सं०१८०१	इति श्री वाल्मिकिना विरचितं श्री रामचद्राष्टक संपूर्ण ।। शुभमस्तु ।। संवत् १८०१ कातिक कृष्ण ३ बुधवासरे लिखितं जन विश्वनाथेन विजयरामस्य पठनार्थम् ।। श्री राम ।। श्री रामश्री
२४ × १०·३ से० मी०	४ (१-४)	११	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री महेश्वराचार्य्य विरिचितां इदं रामदशकं समाप्तं ।।
२७·२ × ११·३ से० मी०	१	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री महेश्वराचार्य्यकृतं श्रीरामदशकं संपूर्णम् शुभंभूयात् शिवायन
१६ ३ × ७ से० मी०	१	७	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री महेश्वराचार्य्यकृतं रामदशक सपूर्ण समाप्तः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८८२	१५६७	रामदुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०
८८३	४८२१	रामनामप्रतापप्रकाश	युगलानन्यशरण		दे० का०	दे०
८८४	३०६८	रामपंचरत्न	शिवगोविंद		दे० का०	दे०
८८५	५१७४	रामपंचरत्नस्तोत्र	राममिश्र		दे० का०	दे०
८८६	३३६२/२	रामपंचांग			दे० का०	दे०
८८७	४९९६	राममहिम्नस्तोत्र	चतुर्भुजाचार्य		मि० का०	
८८८	१४२८	राममहिम्नस्तोत्र	विजयरामाचार्य		दे० का०	दे०
८८९	२६०७	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × ८·७ सें० मी०	१	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामदुर्गाश्च स्तोत्र समाप्त शुभमस्तु राम ।।
२५·७ × ११·७ सें० मी०	५२ (१-१०,१४-२८,३०-४६, ५१-५५)	६	४४	अपू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	इति श्रीरामनाम प्रताप प्रकाशे प्रमोद निवासे श्री युगलानन्य शरण संगृहीते श्रीरामायणवाक्य निरूपणं नाम नवमः प्रमोदः ९ (पत्रसंख्या ५४) ×
१४·४ × ११·१ सें० मी०	३ (१–३)	९	१६	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति श्री सिवगोविंदकृत राम पंचरत्न समाप्त सुभमस्तु सं० १९१६ के साल पौषसुदि··· लिषो मयाराम अपने अ.
१६·७ × ९·७ सें० मी०	१	९	२३	पू०	प्राचीन सं०१९९२	इति श्रीमद्राम मिश्र विरचितं रामपंचरत्न स्तोत्रम सर्व्वत्सरेऽङ्क युग्माङ्कचन्द्रे लक्ष्मी निवासकः शर्माऽलिखादिदंस्तोत्रं गुर्बर्थम्पञ्च रत्नकम १=······
१२ × ७·५ सें० मी०	३ (१७–१९)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री रामपंचाङ्ग समाप्तम् ।
२१ × १०·८ सें० मी०	११ (१–११)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्चतुर्भुजाचार्य विरचितं राम महिम्न स्तोत्र संपूर्णं ।।
२०·५ × ११·५	५ (३-४-६-८, ९)	९	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मच्चतुर्भुजाचार्यचरण सरोजनिवसित मेनश्चंचरीकास्वादित चिन्मकरंद श्रीमद्विजयरामाचार्य विरचितं श्रीराम महिम्नः स्तोत्रं संपूर्णं ।। श्री रामजीस्तव राजमह ।
१९·५ × ९·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं०१८६९	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा अस्तोत्र समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८६९ क शाके १७३४ वैशाखमासे कृष्णपक्षे शनिवासरे···शुभमस्तु ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९०	३४३२	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
८९१	६५२० / १६	रामरक्षा स्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
८९२	७१७८ / ७	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
८९३	५४१९	रामरक्षास्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
८९४	२०५९	रामरक्षास्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
८९५	६०९३	रामरक्षास्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
८९६	११९६	रामरक्षास्तोत्र	बुधकौशिक		दे० का०	दे०
८९७	३१५७	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·५ × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १९२०	इति श्री विश्वामित्र विरंचितं रामरक्षा स्तोत्र संपूर्ण सुभमास्तु रा संवत् १९२० के भाद्रवदी ३··· ॥
९·९ × ९·५ सें० मी०	८ (२१–२८)	१०	१२	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री विस्वामित्र बिरचितं रामरक्ष्या स्तोत्र समाप्तम् शुभमस्तू सम्वत् १८६७ के साल–
१६·६ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचितं श्री राम रक्षास्तोत्रं संपूर्णम् ॥······
१७·९ × ११·२ सें० मी०	५ (१–५)	९	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ शुभंभूयात् ॥
१६·४ × १०·३ सें० मी०	८ (१–८)	६	१६	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री विस्वामित्र ऋषि: विरंचते श्री रामरक्षा स्तोत्र संपूर्ण···संवत् १९२६
१६·७ × १४ सें० मी०	६ (१–६)	१०	१८	पू०	प्राचीन	रामरक्षा समाप्तं शुभं भूयात्
१२·८ × ६·५ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१५	पू०	प्राचीन सं० १८७८	इति श्री बुद्धि कौशिक विरचितायां राम रक्षा स्तोत्र संपूर्ण शुभ मस्तु मंगलं ददाति श्री राम चंद्रं तुभ्यं समर्पयामि वैशाख शुक्ल चतुर्थीयां परिसमाप्तः सं० १८७८
२१·२ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	८	४२	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा स्तोत्र समाप्तं···सं० १८८४।

(सं०सू०-४-२९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	
८९६	३३४८/४६	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
८९७	२६२३	रामरक्षास्तोत्र	बुधकौशिक		दे० का०	दे०
८९८	२६४७	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
८९९	४१०४	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
९००	४३९९/४	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
९०१	१८०२/२	(१) रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
९०२	१६९७	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
९०३	२७६०	रामरक्षास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × ८·२ सें० मी०	९ (१–९)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्ष्या स्तोत्र सपूर्णम् ।
१७·८ × ८·२ सें० मी०	४	५	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वृद्धकौशिक विरचितं श्री राम-रक्षा स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ श्री सीताराम चन्द्रार्पणमस्तु ॥
१५·५ × ९·४ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन सं० १६९८	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा संपूर्ण शुभमस्तू: ॥ सवत् १६९८ ? ॥
१६·९ × ९ सें० मी०	५ (१–५)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा स्तोत्रं समाप्तम् ॥
१६ × ९·८ सें० मी०	९ (१–९)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचिते रामरक्षा स्तोत्र संपूर्ण. ॥
१६·५ × १२ सें० मी०	८	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा संपूर्णं ॥
१५ × ९·५ सें० मी०	२	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा स्तोत्रसंपूर्णं ॥ श्री रामचंद्राय नम:॥ इदं पुस्तकं मोरेश्वर साठे इत्युपनामक ॥
१५·५ × ७·५ सें० मी०	११	४	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामरक्षा स्तोत्रं संपूर्णं, शुभ-मस्तु ॥ श्री

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०४	३४४०	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
६०५	२६४६	रामरक्षास्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
६०६	३५१०	रामरक्षास्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
६०७	१४७५	रामरक्षास्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
६०८	३३३१	रामरक्षास्तोत्र	कौशिकऋषि		दे० का०	दे०
६०९	३११५	रामरक्षास्तोत्र			दे० का०	दे०
६१०	५४६१	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
६११	४६१२	रामरक्षास्तोत्र	,,		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × १०·८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं० १९१३	इति श्री विश्वामित्र ऋषि: विचितंराम रक्षा स्तोत्र समाप्तंन सुभमस्तु श्रावन मासे सुक्लपक्षे ·········॥
२३·६ × १०·२ सें० मी०	३ (२-३,५)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८९४	इति श्री विश्वामित्र विरचितं रामरक्षा स्तोत्र समाप्तम् ॥ शुभमस्तु···संवत् १८९४ के कार्तिक कृष्णपक्षे···॥
१६·५ × ११·७ सें० मी०	२	९	१७	अपू०	प्राचीन	
२१·६ × ९·९ सें० मी०	३ (१-२,४)	९	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८४४	इति श्री रामरक्षा हनुमतस्तोत्र समाप्तं ॥ संवत् १८४४ अत्रभाद्रपद कृष्णा४शनि-दिने···श्री हनुमतेनम: ॥
१२·३ × ८·८ सें० मी०	४ (५–८)	७	१२	अपू०	प्राचीन सं० १९२०	इति श्री स्कंदपुराणे कौशिक ऋषि संवादे राम रक्षास्तोत्र संपूर्णं समाप्तं शुभमस्तु मिति कार्त्तिक शुदि ३ संवत् १९२० राम । श्री राम ॥
१६·८ × ९·४ सें० मी०	६ (१–६)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१५·९ × ७·६ सें० मी०	२ (७–८)	५	२१	अपू०	प्राचीन सं० १८४६	इति श्री विस्वामित्र विरंचितायां श्री रामरक्षा स्तोत्र संपूनं स्माप्तं सुभमस्तू॥ फगुन वदि ९ चंद्रवासरक: पुस्तकं समाप्तं सुभमस्तू मंगलंददाति ॥ संवत १८४६ ॥
१५·७ × ८·३ सें० मी०	६ (१–६)	६	२१	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री रामरछ्या स्तोत्र मंत्रस्य ······ (प्रारम्भ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१२	३००१ / २	रामषडक्षरस्तोत्र			दे० का०	दे०
६१३	४३८६	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६१४	६७६६	रामसहस्रनाम			मि० का०	दे०
६१५	६५२० / १६	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६१६	२०४३	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६१७	६५२० / १६	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६१८	५०००	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६१९	४८६७	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द		१०	११
२१·३ × ८·१ सें० मी०	½	६½	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री पोडरस पुराणे अगस्तनारद संवादे श्रीरामषडक्षरस्तोत्र समाप्तं ॥
२२·७ × १० सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३४	पू०	प्राचीन सं० १८८७	इति श्री ब्रह्मयामिले सृष्टिसंशायां उमा महेश्वर संवदे श्रीरामसहस्त्रनाम संपूर्णं॥ समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८८७ आषाढ़ वदि पंचमी शुक्रवासरे ॥ श्री लिखितं श्री चित्रकूट कामतामध्ये ॥
२२.६ × ११·५ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२७	पू०	प्राचीन सं० १६८?	इति श्री रुद्रजामले तंत्रे पारवतीहर संवादे मकारादि श्रीरामसहस्त्रनाम संपूर्णं शुभमस्तू ॥ संवत १६८ के साल समए नाममिति माघ सुदि त्रयोदशी भौमे का लिपितेयेंमिदं पुस्तकं श्री गौतम वालगोविन्द आत्म पाठार्थ सौभाग्यपुरे। शुभस्थाने। श्रीराम॥
६·६ × ६·५ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री लिंगपुराने श्री रामसहस्त्रनाम समाप्तं सुभमस्तु श्री शिवाय हरये नमः॥
१६·८ × ६·४ सें० मी०	३७	८	३४	पू०	प्राचीन सं० १७६२	श्री लिंग पुराणे उत्तरखंडे उमामहेश्वरसंवादे श्रीराम सहस्रनामानि समाप्त॥ शालिवाहण शके १६२७ पार्थिवनाम संवत्सरे विक्रमशके १७६२ मन्मथनाम संवत्सरे वैशाख शुद्ध नवम्यामंदवासरे···
६·६ × ६·५ सें० मी०	२२	१०	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मजामले श्रृष्टप्रस्ताय उमामहेश्वर संवादे रकारादि श्री रामसहस्रनाम संपूर्न सुभमस्तूः॥
३१·४ × १२·५ सें० मी०	३ (२,४,७)	११	३७	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १२·१ सें० मी०	८ (२-६,८, १०-११)	८	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२०	२६१५	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६२१	८६३	रामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
६२२	६१८३	रामसहस्रनाम			मि० का०	दे०
६२३	४२७३	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२४	३१५६	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२५	१५०२/३	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२६	६७६०	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२७	७१०६	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१०·७ × ७·२ सें० मी०	३९ (१–३९)	७	१२	अपू०	प्राचीन	
१८·५ × १०·७ सें० मी०	२८ (२-२२, २४-३०)	७	१५	अपू०	प्राचीन सं० १९४१	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे सृष्टि प्रसंसायां उमामहेश्वर संवादे रकारादि सहस्रनाम समाप्नम् ।। शुभंभवतु ।। मगलंददातु ।। पुस्तकस्य लिपितं ।। लालजी दीक्षीत।। फाल्गुन वद य १२ संवत् १९४१ के ।
३२·१ × ९·८ सें० मी०	५ (१–५)	९	३८	अपू०	प्राचीन	
१६ × ७·८ सें० मी०	२६ (१–२६)	७	२१	पू०	प्राचीन सं० १८७७	इति श्री ब्रह्मयामले सृष्टि प्रशंसायां उमामहेश्वर संवादे···श्री रामसहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ।। संवत् १८७७ के सालु वैसाष सुदि ३ सनिवासरे
२१·२ × ८ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३१	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री·······श्री रामसहस्रनामस्तोत्र समाप्तं । शुभमस्तु संवत–१८८४ ।·· लिष्यते लक्षमन दूबे अपनेअर्थ ।
१४ × १० सें० मी०	४८ (१–४८)	७	१२	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति श्री ब्रह्मयामले सृष्टी प्रसंसायां उमामहेश्वर संवादे रकारादि रामसहस्रनाम समाप्तं । संवत १९२१ अश्वन वदी १४ गुरुवासरे यथानाम जोग··· ···
२१·१ × ८·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	२९	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे सृष्टि प्रसंसानां उमामहेश्वर संवादे रकारादि श्री रामसहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् चैत्रेमासिसिते पक्षे प्रतिपदासोमवासरे लिखितं माधवरामेण रकारादि शुभंभवेत । संवत् १८८८ के श्री रामायनमः ।।
१४·८ × ९·९ सें० मी०	२९ (१,२,४-३०)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
(सं०सू०४–३०)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२८	६ ६८	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६२९	२८८९	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३०	१६३५	रामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३१	४५०१	रामस्तवराज			दे० का०	दे०
६३२	१७६१	रामस्तवराज (सभाष्य)			दे० का०	दे०
६३३	४०१४/६	रामस्तवराज			दे० का०	दे०
६३४	५८०७	रामस्तवराज			दे० का०	दे०
६३५	५४४१	रामस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·३ × ७·४ सें० मी०	४१ (१-३४, ३६-४२)	५	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे उमामहेश्वर संवादे श्री रामसहस्त्रनाम स्तोत्र सपूर्ण समाप्तं शुभमस्तु ॥ सम्वत् १९४ (?) के सा० लिखितं श्रीमिश्र लक्ष्मी प्रसादेन सौभाग्य × × × ॥
१५·६ × ७·८ सें० मी०	२८ (१-२,४-२०, २२-२६,३१)	६	१९	अपू०	प्राचीन सं० १८९५	इती श्री ब्रह्मयामले तंत्रे सृष्टि…श्री रामसहस्त्रनाम स्तोत्रसमाप्तम सुभंभूयात् कार्तिक सुदि…सं० १८९५ ॥
३४·१ × १६·७ सें० मी०	१२ (२–१३)	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं० १९१५	इति श्री रुद्रयामले तंत्रे…श्री रामसहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्णम् ॥ शुभमस्तुः ॥ संवत् १९१५ के शाल…॥
१६·१ × ९·१ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री रामस्तवराजस्तोत्र श्री सनत्कुमार संहितायां समाप्तं ॥ संवत् १९०२ वैशाखमासे शुक्लपक्षे ॥ तिथौनौम्यां ॥ ९ ॥ गुरवासरे ॥ लिष्यतं पं० श्री राजौयासव…॥
३०·५ × १५·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	१६	५१	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति श्री रामस्तवराजभाष्यं सम्पूर्णम् सम्वत् १८६७
१८·१ × १६·१ सें० मी०	२	१०	११	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्रीरामचंद्रस्तवराज स्तोत्र मंत्रस्य सनत्कुमार रिषिः रष्टुप छंदः ॥ (प्रारभं का पत्र)
१५·७ × ८ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	१७	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इतिश्री सनत्कुमार सिहितायां नारदोक्त श्रीराम स्तवराज संपूर्ण समाप्तं ॥ कातिकवदि १० संवत् १८८३ मुकाम वलदेवुग ३ ॥
१८·५ × ९.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	२१	अपू०	प्राचीन	श्री राम स्तवराज प्रारम्भः (आदि) ; इति श्रीघुनाथस्य स्तवराज मनुतमं (पत्र सं० १४) ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३६	२४५७	रामस्तवराज-भाष्य			दे० का०	दे०
६३७	४×४० / १०	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३८	७५२६	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६३९	७७४७	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४०	३३४८ / ४६	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४१	३३३८	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४२	३५६३	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४३	५४६४	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
२८·६ × १४·९ सें० मी०	२३ (१–२३)	१३	३७	पू०	प्राचीन सं० १९१५	इति श्री रामस्तवराज स्तोत्र सम्पूर्णम् संवत् १९१५ आषाढे कृष्णे ... लाला-श्यालग्रामाय निवेदितं मयाशुभम् ॥
१२·४ × ९·१ सें० मी०	१७	९	१४	पू०	प्राचीन सं० १८९८	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामस्तवराज स्तोत्र सपूर्णं शुभं-मस्तू ॥ संवत् १८९८ ॥
१५ × ९·९ सें० मी०	१८ (१-१६, १८-१९)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां श्रीनार-दोक्तं रामस्तवराज स्तोत्र संपूर्णं समाप्तं ॥ × × × × × ।
२१·५ × ९·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १८२०	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामस्तवराज स्तोत्र संपूर्णं समाप्त संवत।।१८२०।। आषाढ़ वदि २ चंद-वासरे · · · ·
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१८	पू०	प्राचीन (खंडित)	इति श्री सनत्कुमार संहि · · · श्री राम स्तवराज स्तोत्र समाप्तम् ॥
१० × ७·३ सें० मी०	३४ (१–३४)	५	१२	पू०	प्राचीन सं० १९१४	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्त श्री रामस्तवराज स्तोत्र समाप्तम् ॥ संवत् १९१४ अस्वनमासे । शुभेशुक्ल पक्ष तिथौ त्रतीयायां सोमवासरं स्थित टटम ॥ लिष्यतं पं० श्री चौबेऽपूरे ।
१८ × ८·८ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १९२४	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामस्तवराज स्तोत्र संपूर्णं संवत् १९२४ ॥
२०·३ × १३ सें० मी०	९ (१–९)	११	२०	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामस्वराज अस्तोत्र संपूर्णं × संमत् १८८६ वैसाख मासे कृष्णपक्षे सोम्वारे चतुरदस्यां ॥ · · · ·

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेषं की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४४	५४६३	रामस्तवराजस्तोत्र			मि० का०	दे०
६४५	४६५५	रामस्तवराजस्तोत्र			मि० का०	दे०
६४६	१६८४	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४७	६११०	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४८	२०६३	रामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
६४६	२८८२	रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६५०	१८०२/२	(२) रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
६५१	६७७५	रामहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·८ × ११·४ सें० मी०	१२ (१-११, पृ० ७२)	७	२६	पू०	आधुनिक	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्त श्री रामस्तवराज संपूर्णम् ॥
२१ × ८·१ सें० मी०	११ (१–११)	७	३१	पू०	प्राचीन सं०१८८४	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्त श्री रामस्तवराज स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ संवत् १८।८४। पौष मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां शनीवासरे × × × ॥
१४·८ × ८·३ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	१७	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इति श्री सनत्कुमार संहितायां श्रीराम माहात्म्ये श्रीनारद प्रोक्ते श्रीरामस्तवराजः समाप्तः सम्वत् १८२८ ॥…श्री कृष्णायनमः। श्री रामायनमः ॥
१८·७ × ११·२ सें० मी०	१३ (१-३,७-१६)	७	१९	अपू०	प्राचीन सं०१८९४	ईति श्री सनतकुमार संहितायां ॥नरदोक्त ॥ श्री रामस्तवराज अस्तोत्रमंत्र संपूर्ण ॥ संनकातागभास्ये ॥ संवत १८९४ साल ॥ कृष्ण पक्षे ॥ भाद्रवासु सुभस्थान ॥…
१७·२ × ९·४ सें० मी०	१२ (२,५-७, ९-१६)	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्त श्री रामस्तवराज स्तोत्रं सपूर्णं।
१४·८ × ९ सें० मी०	२१ (३–२३)	९	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले हरगौरी संवादे श्री राम स्तोत्रं समाप्तां ॥ लिषो लालपांडे।
१६·५ × १२ सें० मी०	२	८	१३	अपू०	प्राचीन	
११·६ × ८·१ सें० मी०	६ (१–६)	८	२०	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे उत्तरखंडे श्रीमद ध्यातमरामायणे उमामहेश्वर संवादे वालकांडे श्रीरामहृदये द्वितीयोध्यायः ॥ संवत् १८८६ के कार्त्तिके शुक्लपक्षस्यमेकादश्यां शनिवाशरे इदं पुस्तकं मधुकर रामेण × × × × ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९५२	९४५	रामहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
९५३	६३३६	रामहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
९५४	३९७४	रामहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
९५५	५८९४	रामहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
९५६	३१६५	रामहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
९५७	२९५०	रामहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
९५८	६११३/१०	रामानुजस्वामिस्तुति	श्रीमद्वेदांताचार्य		दे० का०	दे०
९५९	४७८६	रामाष्टक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १०·५ सें० मी०	११ (१–११)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री रामहृदय समाप्तः ॥
१६·३ × १२·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	१४	१०	पू०	प्राचीन	इति श्री अध्यात्म रामायणे ऊमामहेश्वर संवादो श्री रामहृदयं नाम प्रथम सर्गः ॥
१७·५ × १२·२ सें० मी०	७	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१५·६ × ९·४ सें० मी०	३ (३–५)	८	२०	अपू०	प्राचीन सं० १८९६	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे उत्तरखंडे श्री मदध्यातम रामायणे उमामहेश्वर संवादे वालकांडे श्री रामहृदये द्वितीयोध्यायः संवत् १८९६ माघ सुदि २ लिषा मंगलदास ॥
१५·७ × ८ सें० मी०	६ (१–६)	७	२२	पू०	प्राचीन सं० १८८७	इनि श्री ब्रह्मांड पुराणे उत्तरषंडे उमा-महेश्वर संवादे श्री रामहृदय समाप्तं पूर्ण शुभंमस्तू । ......
१५·९ × ९·४ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२२	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मांड पुराणे उत्तरखंडे उमामहे-श्वर संवादे अध्यातम रामायणे अयो-ध्याकांडे रामहृदय समाप्तः ॥
१६·५ × १३ सें० मी०	४ (७–१०)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्वेदांताचार्य्य विरचितं श्री रामानुजस्वामि स्तुति संपूर्णम् ॥
२०·५ × ३·३ सें० मी० (सं०सू०४-३१)	४ (१–४)	६	२२	पू०	प्राचीन सं० १९५८	इति रामाष्टकंसम्पूर्णम् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस रवस्तु लि प है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६०	४६४५/५	रामाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६६१	५१६३	रामाष्टक	शुक		दे० का०	दे०
६६२	२१४५/७	रामाष्टक			दे० का०	दे०
६६३	१२८५/८	रामाष्टक			दे० का०	दे०
६६४	२७८६	रामाष्टक	विश्वामित्र		दे० का०	दे०
६६५	३१६६	रामाष्टोत्तरशतनाम			दे० का०	दे०
६६६	४३६६/४	रुद्रचंडी			दे० का०	दे०
६६७	५४	रुद्राष्टक	तुलसीदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११·२ × ८·५ सें० मी०	४ (५–८)	५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री मतसंकराचार्य विरचितं रामाप्टंक संपूर्ण ॥····
१२.८ × १० ६ सें० मी०	२ (१–२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री शुक कृतं रामाष्टकं समाप्तम्··· ॥
१६·५ × १२·८ सें० मी०	१½	२८	२३	पू०	प्राचीन	इति रामाप्टकं समाप्ताम् ॥
१७.५ × ६·५ सें० मी०	३ (१–३)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री यमुना चावरचितरामाष्टक संपूर्णनमस्तू ॥ ६ ॥
६·८ × ६·८ सें० मी०	३ (१–३)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री विस्वामित्र विरचितरामाप्टक संपूर्ण शुभमस्तू मंगलं दास्तू श्री रामयनमो नमः श्री रामजू सहाई ॥ १ ॥
२१·५ × ७ सें० मी०	४ (१–४)	७	४०	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति रामअष्टोत्तर शत नामं ॥
१६ × ९·८ सें मी०	११ (१–११)	६	१९	पू०	प्राचीन सं० १९२७	इति श्री रुद्रजामले हरगौरी संवादे श्री रूद्रचंडी समाप्तं ॥ सम्वत् १९२७ गुरुवासरे तिथौ नवम्या ९ मासा न मासोत्तमे मासे श्रावणे मांसे समांप्तं ॥
२२ × १०·५ सें० मी०	२	७	२५	पूर्ण	प्राचीन	इति रुद्राष्टकं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९६८	४३९७	रुद्राष्टकस्तोत्रम्			दे० का०	दे०
९६९	४५३१	रूपचिंतामणिस्तोत्र	विश्वनाथचक्रवर्ती		दे० का०	दे०
९७०	४०७५	लक्ष्मणकवच			दे० का०	दे०
९७१	३१६०	लक्ष्मणकवच			दे० का०	दे०
९७२	३३४८/४६	लक्ष्मणकवच			दे० का०	दे०
९७३	३३४८/४६	लक्ष्मणसहस्रनाम			दे० का०	दे०
९७४	३३४८/४६	लक्ष्मणस्तवराज			दे० का०	दे०
९७५	५९५३	लक्ष्मणस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·३ × ९·९ सें० मी०	२ (१–२)	७	२६	पू०	प्राचीन	रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ये पठंति सदा भक्त्या तेषां शंभु प्रसीदति × × × × ॥
१७·२ × १०·१ सें० मी०	७ (१–७)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वनाथ चक्रवर्तिनाविरचितं रूपचितामणिस्तोत्र समाप्तं ॥
१५·९ × ८·२ सें० मी०	३ (१–३)	५	१५	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री लक्ष्मण स्तोत्र संपूर्ण संवत् १९२२ कार्तिक वदि २ भृगुवार॥
१५·५ × ६·४ सें० मी०	३	७	२५	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री नारदीय तंत्रे लक्ष्मण कवचं सम्पूर्ण समाप्तम्। सम्वत १८८४······।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री लक्ष्मणं कवचं समाप्तम् शुभमस्तु श्रीराम॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदादिरामायणे ब्रह्माभुसुंडिसंवादे श्री लक्ष्मणसहस्रनाम चतुर्दशो अध्यायः संपूर्णम् ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	६ (१–६)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्य पुराणे शिवपार्वती संवादे लक्ष्मण स्तवराज संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीरामः ॥
२३·९ × ८·८ सें० मी०	६ (१–६)	६	२८	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री लक्ष्मणस्तोत्र संपूर्ण सुभं भवतु मंगलं ददात् पौष सुदि ७ सं: १८८१।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालयकी आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७६	१०४६	लक्ष्मीनारायण-स्तवा ख्यानम्			दे० का०	दे०
९७७	२३८८	लक्ष्मीनारायण स्तोत्र			दे० का०	दे०
९७८	४२७५	लक्ष्मीनारायणहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९७९	१३०३/४	लक्ष्मीनृसिंहमंत्र कवच			दे० का०	दे०
९८०	६३७/१२	लक्ष्मी स्तव			दे० का०	दे०
९८१	३५२६	लक्ष्मी स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
९८२	३४६१	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
९८३	५४७३/२	लक्ष्मी स्तोत्र	मानतुंगआचार्य		दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालयकी आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७६	१०४६	लक्ष्मीनारायण-स्तवा ख्यानम्			दे० का०	दे०
९७७	२३८८	लक्ष्मीनारायण स्तोत्र			दे० का०	दे०
९७८	४२७५	लक्ष्मीनारायण हृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
९७९	१३०३/४	लक्ष्मीनृसिंहमंत्र कवच			दे० का०	दे०
९८०	६३७/१२	लक्ष्मी स्तव			दे० का०	दे०
९८१	३५२६	लक्ष्मी स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
९८२	३४९१	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
९८३	१४७३/२	लक्ष्मी स्तोत्र	मानतुंगआचार्य		दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८४	२८६०	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
६८५	४०३६	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
६८६	२०५८	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
६८७	५४६१	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
६८८	७८१	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
६८९	२१५	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
६९०	६४६	लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
६९१	५६१०	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७×९.७ सें० मी०	३ (१–३)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे सिंधुमथने विष्णु शंकर संवादे श्री सिदृ लक्ष्मी स्तोत्र सं० ॥
१५.१×८.८ सें० मी०	३ (१–३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति काशिषड लक्ष्मी टक सपूर्णं ॥ चितामण दिक्षकस्य पूस्तक संपूर्णं ॥ ... .
१८.३×९.७ सें० मी०	३ (१–३)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे उत्तरखंडे सिंधुमथनेहरिहर ब्रह्म विरचितं सिद्धि लक्ष्मी स्तोत्रं संपूर्णं ॥
२१.७×२५.३ सें० मी०	१ (खर्रा)	१५	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे काशीखंडे लक्ष्मी स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१९.५×६ सें० मी०	४	७	१७	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र प्रोत दारिद्र हरण स्तोत्र समाप्तम् संवत् १९२२ वैशाख मासे शुक्ले पक्षे नवम्यां गुरूवासरे अलेखि राम सरणेन ॥
२७.७×११.८ सें० मी०	४	१४	४६	अपू०	प्राचीन	
२१.५×८ सें० मी०	१०	८	३०	अपू०	प्राचीन	
१६×१० सें० मी० (सं०सू०४-३२)	१३ (१–१३)	७	२५	पू	प्राचीन सं० १८२५	इत्यथर्वण रहस्ये उत्तरभागे लक्ष्मीहृदय स्तोत्रं संपूर्णं संवतु १८२५ कार्तिकवदि बुधवासरे लिखितं श्री प्रधान भावसिंघ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६२	१३८३	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६३	४६७२	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६४	३०४६/७	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र			मि० का०	दे०
६६५	२५६२	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६६	४२००/५	लघुस्तवस्तोत्र	लघ्वाचार्य		दे० का०	दे०
६६७	१३२६/२	लघुस्तवस्तोत्र			दे० का०	दे०
६६८	५३६१	लघुस्तोत्र	लघ्वाचार्य		दे० का०	दे०
६६९	६६८६	ललितात्रिशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·२ × ९·१ सें० मी०	१२	७	२९	पू०	प्राचीन	इत्याथर्वण शिरसि शूक्राचार्य कृतं लक्ष्मी हृदयस्तोत्र संपूर्ण ॥
२५·५ × १३·४ सें० मी०	९ (१–९)	११	३६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वण रहस्यै उत्तरभागे आद्यादि श्री महाल्क्ष्मी हृदयस्तोत्रं संपूर्णम् रामानुजोविजपते यतिराज राजः ॥
१७·७ × ११ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	२१	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वण रहस्ये लक्ष्मी हृदयस्तोत्रं समाप्तं संपूर्णम् ॥
१५·८ × ८·३ सें० मी०	१७ (१-३, ३-१४, २२-२३)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री अथर्व रहस्ये अद्यादि श्री महा लक्ष्मी हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धरस्तु ॥
१३·८ × ८·९ सें० मी०	८१/२	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री लघ्वाचार्य विरचितं लघुस्तव सपूर्णं ॥
२३·८ × १२ सें० मी०	७ (१–७)	६	१[illegible]	पू०	प्राचीन	इति लघुस्तवंम समाप्तम ॥
२०·५ × ११·१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री लघ्वाचार्य्य विरचितं लघुस्तोत्रं संपूर्णं श्री रस्तुः ॥
२६·५ × ११·४ सें० मी०	७ (१–७)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं० १९३८	इति श्री ब्रह्माडण पुराण उत्तरखंडे हयग्रीवागस्त्य संवादे ललितोपाख्याने त्रिशतीस्तोत्रं संपूर्णं ॥···मिति श्रावण वद्य १४ भानुवार संवत् १९३८ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०००	६३१६	ललितासहस्रनाम			दे० का०	दे०
१००१	४४६४	ललितासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१००२	१५८७	ललितासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१००३	५६३८	ललितासहस्रनामावलि			दे० का०	दे०
१००४	३६१४	ललितास्तोत्र			दे० का०	दे०
१००५	४८८६	ललितोपाख्यानस्तोत्र			दे० का०	दे०
१००६	७८२०	लिंगाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१००७	५१३०	लिंगाष्टक	,,		बाँ० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × १०·६ सें० मी०	११	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × ६·१ सें० मी०	४२ (१–४२)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडोत्तर पुराणे ललिता-सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तं ।। शुभंभवतु श्री कृष्ण र्पणमस्तु ।।
१३ × ८·५ सें० मी०	३५ (११-२५२८ ४६,४९)	८	१५	अपू०	प्राचीन	
१५·३ × ११ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	१६	पू०	प्राचीन स०१८५०	इति श्री सहस्र नामावलि संपुर्ण लिखितं पड्या गंगा राम:······समत् १८५० शके १७१५ ।।······
२०·६ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२३·७ × ६·१ सें० मी०	४	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे उत्तरखंडेहयग्री-वागस्त्य संवादे ललितोपाख्याने त्रिंशतो नाम स्तोत्र संपूर्ण संवत् १९०८ मि० श्रा० कृ० आ······।।
१३·५ × ६·५ सें० मी०	२ (१२–१३)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं····।।
११·२ × ६·७ सें० मी०	३ (१–३)	५	१६	पू०	आधुनिक	इति लि० ष्ट० सं० एम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००८	७७४६	वदरीनाथस्तोत्र	वासुदेव		मि० का०	दे०
१००६	६२३	वरदराजस्तोत्र			मि० का०	दे०
१०१०	४६५७	वरदायसरस्वतीस्तोत्र	वृहस्पति		दे० का०	दे०
१०११	२५४१/२५	वल्लभशरणाष्टक	हरिदास		दे० का०	दे०
१०१२	२५४१/२५	वल्लभाष्टक	विट्ठलेश्वर		दे० का०	दे०
१०१३	६७७१	वसुदेवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०१४	२८७२	वायुस्तुति	त्रिविक्रमाचार्य		दे० का०	दे०
१०१५	२२७	वायुस्तुति	त्रिविक्रमाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·६ × ६·९ सें० मी०	२ (१–२)	७	३३	पू०	प्राचीन	इति बदरिनाथ स्तोत्रं वासुदेवेन कृतं संपूर्ण ॥
३० × १०·५ सें० मी०	१	८	३४	पू०	प्राचीन	इति वरदराज स्तोत्रं संपूर्ण ॥
१३·७ × १२ सें० मी०	१	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १९४३	इति बृहस्पति कृत वरदाय सरस्वती स्तोत्र संपूर्ण यादृशं पुस्तकंदिस्वा ... ... संवत् १९४३ ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१	२०	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभसरणाष्टक श्री हरिदास जी कृत संपूर्ण ॥
१६·३ × १५·८ सें० मी०	२½	१३	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री विठलेश्वर विरंचितं वल्लभाष्टक संपूर्ण ॥
२३ × १०·३ सें० मी०	१	७	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मवैर्त्ते वसुदेव स्तोत्रं संपूर्ण॥
१६·२ × ७·९ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिविक्रम पंडिताचार्य विरता वायु स्तुति समाप्तः ॥
२५·५ × १०·८ सें० मी०	८ (१–८)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिविक्रम पंडिताचार्य विरचिते वायु स्तुतीयस्य फलस्तुति समाप्तः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१६	१४६७	वाराह्यावश्यस्तोत्रम्			दे० का०	दे०
१०१७	१८३१	वासुदेवसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०१८	३०४३	वासुदेवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०१९	१९८६/२२	विज्ञाननौकास्तोत्र			दे० का०	दे०
१०२०	२८६२	विद्यापंचमीस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०२१	१५०२/३	विभूतिस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०२२	६११३	विमलविनयस्तुति	राघवाचार्यगंधर्व		दे० का०	दे०
१०२३	३८५८	विरेश्वराष्टक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·२ × ९·५ सें० मी०	३	६	१६	पू०	प्राचीन	इति वाराह्यावश्यस्तोत्रम् ।। लि० राधाकृष्णेन···
१९·३ × ९·३ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उमामहेश्वरसंवादे श्री मह्वासुदेव दिव्यसहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णं श्री कृष्णार्पणमस्तु ।।
२६·५ × १३·४ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
२९·२ × १४·१ सें० मी०	१/२	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति विज्ञाननौका स्तोत्र संपूर्णम् ।।
२३ × ९·८ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामलेशत सहस्र कोटि विस्तारे श्री पंचमी स्तवराजः समाप्तः ।।
१४ × १० सें० मी०	४	७	११	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वर संवादे विभूति स्तोत्र संपूर्णं ।
१६·५ × १३ सें० मी०	७ (१–७)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्भगवच्चरणारविंदमकरंद लुब्ध,चित्तेन श्री राघवाचार्य्येण गंधर्व राजेन विरचितायां विमल विनयनाम स्तुति संपूर्णम् ।।···
१९·५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति विरेश्वराष्टकः समाप्तः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या व। संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०२४	४६१७/२	विल्वपत्राष्टक			दे० का०	दे०
१०२५	७१६१	विल्वमंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०२६	१६५७	विल्वमंगलस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०२७	२५४१/२५	विवेकधैर्याश्रय	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
१०२८	१६४५	विश्वनाथाष्टक			दे० का०	दे०
१०२९	१६०५	विश्ववासुस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०३०	५१७२	विषमोक्तिस्तवराज	रमणपति		दे० का०	दे०
१०३१	४१७४	विष्णुअपराजितास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·१ × ९·९ सें० मी०	४	८	१६	पू०	प्राचीन सं०१९३:	इति विल्वपत्राष्टक् संपूर्ण समाप्तं भाद्र शुक्ल १२ गुरुवासरे सम्वत् १९३६ × × × ×
२५·५ × ११·१ सें० मी०	८ (१–८)	६	२२	पू०	प्राचीन सं०१८३२	इति श्री विल्वमंगल संपूर्ण ।। संवत १८३२ मिती कातिकवदी ।। × × ।।
१८ × १०·५ सें० मी०	५ (१,३-६)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१½	१३	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरंचितं विवेकधैर्याश्रय संपूर्ण ।।
१९·८ × ५ सें० मी०	३	५	३४	पू०	प्राचीन	इति विश्वनाथाष्टक समाप्तं ।। लिखित मि दुर्गा दत्तेन महादेवस्य पाठनार्थं ।। शुभभूयात ।।
१४·५ × ८ ८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं०१९९५	इति सं० १९९५ ।
२८·१ × १० सें० मी०	६ (१–६)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्गौर्य्स्वानन्दनाथ चरणान्तेवासिर रमणपति प्रणीतः श्रीमदार्य भास्कराचार्य चरणयोर्विषमोक्तिस्तवराजश्चरमवणाध्व समायत्त ।। श्रीः
२१ ५ × ११ सें० मी०	९ (१–९)	९	२७	पू०	प्राचीन (खंडित) सं०१८९८	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे महामोधा पठित सिद्धि-वोपदशित विष्णु कर्णोपरम वैष्णावी अपराजितामहाविद्यासमा-शुभमस्तु···संवत् १८९८ के सालमाघमासे कृष्णेपक्षे प्रतिपदायां गुरुवासरे लिखितमिदंस्तोत्रं हरिदत्त रामेण इहिकाख्य ग्राम···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३२	५४५१	विष्णुअपराजितास्तोत्र			मि० का०	दे०
१०३३	६२२६	विष्णुअपामार्जनस्त त्र			दे० का०	दे०
१०३४	३३४८/४६	विष्णुअपामार्जनस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०३५	२७६३	विष्णुदुसतसंवादस्तुति			दे० का०	दे०
१०३६	६०७६/५	विष्णुदिव्यसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०३७	४४४०/१०	विष्णुदिव्यसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०३८	४६२०/३	विष्णुदिव्यसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०३९	७५१५	विष्णुदिव्यसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११·२ × ८ सें० मी०	८ (२–९)	७	३९	अपू०	आधुनिक	इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे महामायापठित सिद्ध निर्देशित विष्णुकर्णेव परम वैष्णवी अपराजिता महाविद्या समाप्ता शुभमस्तु ।।
१४·६ × ८·६ सें० मी०	२ (१–२०)	९	२५	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति श्री विष्णुधर्मोत्तरे विष्णोरपामार्जन स्तोत्र संपूर्णम् शुभंभूयात् संवत् १९१६ माग सुदि १२ सोमको श्री महाराजाधिराजा श्रीराजा साहेब राघवेंद्र सिंह राज्यन उत्तहरानग्रे लिखितम्पुस्तक मिद प० श्री अमठा······ ।
१२.५ × ८·२ सें० मी०	३८ (१–३८)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णु धर्मोत्तरे विष्णु रपामार्जन स्तोत्रं संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीरामः ।
१६·९ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति स्कंद पुराणे काशीखंडे विष्णुदूसत संवादे अष्टाध्याय: शुभभवतु ८ श्री रामचंद्र प्रसन्नं मस्तु
१५·४ × ९.५ सें० मी०	३३ (१–३३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैयासिक्या शांत पर्वाणि उत्तमानुशासने दान धर्मोत्तरेषु श्री विष्णोर्दिव्य सहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ।। शुभम्
१२·४ × ९·१ सें० मी०	२३ (१–२३)	९	१६	पू०	प्राचीन सं०१८९८	इति श्री महाभारते सतसहस्रसंहितायां वैयाशिक्या शांति पर्वणि दानधर्मेषु श्री विष्णुदिव्य सहस्रनाम संपूर्ण ।। संवत् १८॥९८ प्रयागमध्ये लिपत × × ।।
१७·४ × ८·६ सें० मी०	१२ (१५-१६,१६-१९,२१-२६)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां शांतिपर्वाणि दानधर्मे भीष्म युधिष्ठिर संवादे विष्णोर्दिव्य सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णं ।। (ग्रंथपूर्ण है-पत्रसंख्या देने में भूल है)
१६.७ × १०·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	८	२३	अपू०	प्राचीन	इतिश्री मन्महाभारते शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां मानुशासनिकंपर्वाणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठिर संवादे विष्णोर्दिव्यसहस्र नाम स्तोत्रं संपूर्णं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०४०	६०१०/४	विष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४१	७४७७/३	विष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४२	७१८२/५	विष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४३	३८४१	विष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४४	४६१६/२	विष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	
१०४५	२६१४	विष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४६	७८६६/४	विष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४७	३७१/२	विष्णुसहस्रनाम	व्यास		दे० का०	दे०

त्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.९ × १२.१ सें० मी०	१९ (५–२४)	१०	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसस्त्रां संहितायां वैयासिक्यां सांति पर्वणी नुत्तमानुशासने धदानधर्मोत्तर श्री विष्णोदिव्य सहस्त्र-नामस्तोत्र संपूर्ण समाप्तातां ॥
१२.६ × ८.१ सें० मी०	३१ (१–३१)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्याय्या मिक्यां शांति पर्वणि उत्तमान शासने दानधर्मोत्तरेषु श्री विष्णु दिव्य सहस्त्रनाम सपूर्ण ॥
१६.६ × ९.३ सें० मी०	३१ (१–३१)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्यां संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि दानधर्मोत्तरे श्री विष्णोर्दिव्य सहस्यां स्तोत्रं समाप्तम् ॥
१५.४ × ७.८ सें० मी०	३ (१२-१४)	१०	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८५०	इति श्री महाभारते शतसाहस्त्रसंहितायां वैयाशिक्यां शांति पर्वणि दानधर्मे भीष्म युधिष्ठिर संवादे विष्णोर्दिव्यनामामृतं स्तोत्रं संपूर्णम् संवत् १८५० आषाढ कृष्ण ५ शुक्रे लिखितमिदं काश्याम् ॥
९.६ × ६.७ सें० मी०	६५ (५-९,१२-५३,५६-७३)	५	९	अपू०	प्राचीन	इति श्रीहरि महाभारते शत सहस्त्रां संहितायां वैयाशिक्यां शांति पर्वणिउत्त-मानुशासने दानधर्मोत्तरे श्रीविष्णो दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्णं ॥
१९.९ × ९.४ सें० मी०	८ (३-५,७-९,११-१२)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
१०.५ × ७.७ सें० मी०	२२ (१४४-१६१,१६५-१७१)	७	१२	अपू०	प्राचीन	
१६ × १४.७ सें० मी०	१४ (२६-३२,३४-३९)	११	१९	अपू० (कृमिकृंतित)	आधुनिक सं०१८८७	इति श्री महाभारते शत साहस्त्रं संहितायां वैशायिक्यां शांतिपर्वणि उत्तमानुशासने दानधर्मोत्तरे विष्णोर्नाम सहस्त्रं समाप्तं ॥ सं० १८८७ चैत्र शुदि द्वितीया-वार भृगु ॥ शुभं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०४८	५६७१ / ६	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०४९	५१७१	विष्णुनामावली			दे० का०	दे०
१०५०	६०७८ / ५	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५१	३०५८	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५२	२६३६	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५३	४०७७	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५४	७३७६	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५५	५६६६	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१०·८ × ६·७ सें० मी०	३१ (१-३१)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि दानधर्मोत्तरे श्रीविष्णोर्नाम स्तोत्रं संपूर्णं समाप्तम्।। शुभमस्तु सर्वजगताम् ।।
५६·४ × २०·८ सें० मी०	२ (खर्रा)	५८	१४	अपू०	प्राचीन	
११·६ × ७·२ सें० मी०	१० (१–१०)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णुपंजर सम्पूर्णम् ।। × ×
२१·३ × ९·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे इंद्रईश्वरसंवादे विष्णुपंजर स्तोत्र संपूर्ण समाप्तं शुभमस्तु ।। ज्येष्टमास सिते पक्षे तृतीयां भृगुवासरे ।। तद्दिने लिखितंयेन काशीनाथेन शर्मणा ।।
२६·१ × ११·३ सें० मी०	२ (१–२)	७	३९	पू०	प्राचीन सं० १९१०	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णुपंजर स्तोत्रं समाप्तम् संवत् १९१० ।।
१५·८ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	८	२४	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णु पंजरस्तोत्र संपूर्ण ।। संवत् १८७२ फालगुण वदि ३ ।।
१२·५ × ७·३ सें० मी०	८ (१–८)	६	१३	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णु पंजरस्तोत्रं संपूर्णं ।। संवत् १८७५ शुक्रवार सूभंभू ।।
१५ × ९·७ सें० मी०	५ (१–५)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १८९५	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे इंदुनारद संवादे श्रीविष्णुपजर अस्तोत्र संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८९५ केसाल मिति श्रावन सुदि ४ का लिखा श्री तिवारी दीनदयाल राम रघुनाथ पुर वैठें राम राम ।।
(सं०सू०४-३४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५६	३१६१	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५७	१३५०	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५८	१४४४/५	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०५९	३१७१	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६०	१११६/४	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६१	७१६६	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६२	७१७८/७	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६३	७०९२	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१६ × ७·५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इन्द्र नारदसंवादे विष्णु पंजर स्तोत्र संपूर्ण। ······ संवत् १८६६।
२२·५ × १०·५ सें० मी०	३	८	२५	पू०	प्राचीन	
१८·७ × १२·७ सें० मी०	३	१९	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे नारदोक्तं विष्णु पंजर स्तोत्र समाप्तं शुभ राम राम
१५·५ × ८·५ सें० मी०	४ (१–४)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १७४२	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णुपंजर स्तोत्रं समाप्तं ॥···पुस्तक लिषा ॥ संवत् १७४२ फाल्गुनवदि ११ एकादसी कहलिखब्धिकाति ॥···
२९ × १४·१ सें० मी०	२ (२–३)	१५	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णुपंजर स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु भवेत्।
१७·५ × ९·२ सें० मी०	५ (१–५)	७	१९	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे श्री विष्णु पिंजर स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु श्री ॥ फाल्गुणमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ प्रतिपदायां शनिवासरे संवत् १९११॥
१९·६ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	५	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री इंद्रनारद संवादे श्री विष्णु-पंजर। स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥···
१०·३ × ६·८ सें० मी०	६ (१–६)	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णुपंजर स्तोत्र संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६४	६७८६	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६५	७२११	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६६	२४८६	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६७	२३६/१२	विष्णुपंजरस्तोत्र	व्यास		दे० का०	दे०
१०६८	६६६२	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०६९	५७४२	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०७०	३	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०७१	७६१७	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति न अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·१ × ७·५ सें० मी०	५ (१–५)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे इंद्रनारद सम्वादे विष्णुपंजर स्तोत्रं सम्पूर्णम् रामचन्द्रायनमः × × ॥
१६·२ × ६·८ सें० मी०	६ (१–६)	५	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे इंद्रईश्वर संवादे विष्णुपंजर संपूरनं ॥
१५ × १०·७ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णु पंजरस्तोत्रं समाप्त मिति भद्रोम् : शुभभवतु सर्वत्रः ॥
१६ × १०.५ सें० मी०	३ (५४–५६)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे श्री विष्णुपंजर स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२२·६ × ८·५ सें० मी०	४ (१-३,५)	६	२२	अ॒पू०	प्राचीन	
१६·२ × ७·३ सें० मी०	२ (१–५)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८२६	इति श्रीब्रह्मांडपुराणे इंद्रनारद संवादे श्री विष्णुपंजर स्तोत्रं संपूर्ण समाप्ताः ॥ संवत् १८२६ केशाल × × × ॥
१५ × १० सें० मी०	३ (२–५)	९	१९	अपू०	प्राचीन सं० १८७८	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे इंद्रनार्द संवादे श्री व्रिष्णुपंजर स्तोत्र संपूर्ण संवत १८७८ मासे शुदी वैशाख षष्टि ६ शनिवार लिषितं अजनेतेवारिपुत्र मनिरामके कुरक्षेत्रां तरगति उश्रर्णोश्वैमध्ये शुभंमस्तु ॥
१३·६ × ८·९ सें० मी०	५ (२–६)	७	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८४७	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे इंद्रणारदशंवादे विष्णुपंजर स्तोत्र शंपूर्ण समापता अगहन वदी ११ गुरौ संवत् १८४७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७२	७८६६/४	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०७३	१७२६	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०७४	४४६५	विष्णुपंजरस्तोत्र			मि० का०	दे०
१०७५	२७०१	विष्णुपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०७६	५१६७	विष्णुप्रातःस्मरणस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०७७	३०४७	विष्णुभुजंगप्रयातस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१०७८	७८३१	विष्णुमहिम्नस्तोत्र (शिवविष्णुपरक)			दे० का०	दे०
१०७९	४८४२	विष्णुरहस्यस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१०.५ × ७.७ सें० मी०	६ (८८–९३)	७	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णु पंजर स्तोत्र संपूर्ण श्री सिताराम जी को अर्पणं—
१०.५ × ५.५ सें० मी०	३ (१–३)	६	१५	अपू०	प्राचीन	
१५.७ × १०.३ सें० मी०	४ (१–४)	१६	१८	अपू०	प्राचीन	···ॐ अस्यं श्री विष्णु पंजर स्तोत्र मंत्रस्य··· ···
१५.६ × ९.३ सें० मी०	५ (१–५)	७	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मपुराणे इंद्रनारद संवादे विष्णुपंजर स्तोत्रं संपूर्णं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ।
१६.५ × ९.५ सें० मी०	२ (१–२)			पू०	प्राचीन	
२२.९ × ४.९ सें० मी०	११ (१–११)	४	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं विष्णु भुजंग प्रयम्त स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु ॥
१६.९ × १०.२ सें० मी०	९ (१–९)	७	२३	अपू०	प्राचीन	
२३.४ × ७.२ सें० मी०	९ (१–९)	६	३३	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री विष्णु रहस्ये विरचितं स्तोत्रं संपुर्णं समाप्तम् ॥ सम्वत् १८८३ समयनाम × × × ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८०	५८६७	विष्णुशतक			का०	दे०
१०८१	५८९६/२	विष्णुशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०८२	७३५	विष्णुशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०८३	१८६१/५	विष्णुशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०८४	३२१७	विष्णुषोडशनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०८५	६११३/१०	विष्णुशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०८६	६११३/१०	विष्णुशतनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१०८७	२३९/१२	विष्णुसहस्रनाम	व्यास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ७·५ सें० मी०	२० (१–२०)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
१४·३ × १०·६ सें० मी०	३ (१–३)	८	१७	अपू०	प्राचीन सं० १८९६	इति श्री विष्णु पुराणे विष्णु शतनाम संपूर्णम् ॥ मिती ज्येष्ट सुदि ॥१४॥ संवत् ॥१८॥९६॥ शुभंभूयात् ॥
१७·४ × ७·९ सें० मी०	४ (१–४)	४	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णु पुराणे नारदोक्तं विष्णु शतनाम स्तोत्र संपूर्णम् ॥
२८·४ × १४ सें० मी०	१	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णु पुराणे विष्णुसतनाम स्तोत्र संपुर्णम् ॥
१७ × ९ सें० मी०	१	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे श्री विष्णुः षोडशनाम स्तोत्रं संपूर्ण ।
१६·५ × १३ सें० मी०	५ (४३-४७)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मंगलकरण विष्णु सतनाम स्तोत्र संपूर्ण ॥······
१६·५ × १३ सें० मी०	३ (३९–४१)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री विष्णु पुराणे विष्णुसतस्तोत्र संपूर्णं
१६ × १०·५ सें० मी० (सं० सू० ४-३५)	१८ (३४–५३)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां शांतिपर्वणी मोक्षधर्मभीष्म युधिष्ठिर संवादे भगवतोवासु देवस्यनाम्नांसहस्रं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८८	४२०	विष्णुसहस्रनाम	व्यास		दे० का०	दे०
१०८९	४२४	विष्णुसहस्रनाम	व्यास		दे० का०	दे०
१०९०	६	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०९१	२८६	विष्णुसहस्रनाम	व्यास		दे० का०	दे०
१०९२	८१५	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०९३	४८०१	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	
१०९४	५१२७	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०९५	७०८४	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·५ × १२ सें० मी०	१७	८	२२	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति श्री महाभारते शत साहस्त्र संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि उत्तमान शासनेदानधर्मोत्तरे विस्पोनामसहस्त्र स्तोत्र संपूर्ण समाप्तम् ॥ संवत् १८८० सहजराम लिखितं ॥ ॥ शम ॥ राम ॥
१७·१ × १२·५ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	२०	पू०	प्राचीन सं० १९३	इति श्री महाभारते विष्णोर्दिव्य महस्त्र नाम स्तोत्र संपूर्णम् । सं० १९३२ मासोत्तमे मासे कातिक मासे कृष्ण पक्षे शुभतिथौ चतुर्दश्यां १४ शुक्रवासरान्विनायां लिखतं बनवारी लाल पठनार्थ शुभमस्तु मगल ददातु । याद्संपुस्तक दृष्टा तादृसं लिखितं मया यदि सुद्म मुद्धवामम दोपो नदियतां ॥ श्री रामायननः० श्री राधायैनमः । श्री हर
१६ × १२ सें० मी०	१७	८	२३	पू०	प्राचीन सं० १९२५	इति श्रीमहाभारतेशतसहस्त्र्यासंहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्व्वणि उत्तमानुशाशनेदानधर्म्मोत्तरे विश्नःर्नाम महस्रं संपूर्णं शुभं शुभं संवत् १९२५ ॥ तत्रवर्षेमाध मासे क्रुस्न पक्षे तिथौ बुधवासरे ।
१५·७ × ११ सें० मी०	१७ (१-४,४-१६)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं० १८१२	शांति पर्वणे श्री विष्णोर्दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्ण ॥ संवत् १८१२ ॥
२२·६ × ११·२ सें० मी०	२० (१–२०)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १७५६	इति श्री महाभारते ''''''साहस्त्र संहितायां वैयासिवचक्यानुशासने शांत'' ।
२७·६ × ११·८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं० १९४५	इति श्री मन्महाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायां वैयासिक्यांमानुशासनिके पर्वणि दानधर्मेषु भीष्म युधिष्ठिर संवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्ण ॥''' संवत् १९४५ शके १८१० '''
१२ × ६ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्त्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शाति पर्वण्यु च मानुशासने विष्णोर्णाम सहस्त्र समाप्तं शुभमस्तु ॥
२५·७ × १२·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२८	पू०	प्राचीन सं० १९३५	इति श्री महाभारते शतसहस्त्रसंहितायां वैयाशिक्यां शांतिपर्वणि उत्तमानुशासने दनधर्मोत्तरे विष्णोर्नाम सहस्त्रं संपूर्णम् १९३५ तत्राषाढ कृष्णा ४ भौमे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०९६	५४१२/५	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०९७	५५२०/५	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०९८	७४५७	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१०९९	३३१३	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११००	१३६९/३	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११०१	१३६८/५	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११०२	३२४८	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११०३	११११/६	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·१ × ७·९ सें० मी०	३१ (१–३१)	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र्यां संहितायां वैयाशिक्यां शांति पूर्वणि उत्तमानुशासने दानधर्मे विष्णोर्नाम सहस्रसंपूर्ण समाप्त ॥
१३·६ × ७·६ सें० म.०	३५ (१–३५)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते सत साहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वाणि उत्तमानशासनदानधर्मेषु विष्णोर्नामसहस्रं संपूर्णं शुभं ॥
१३ × ७·६ सें० मी०	३५ (१–३५)	७	१२	पू०	प्राचीन सं०१९३६	इति श्री महाभारते सांतिपपर्वणि सत सहस्रसंहितायां वैयासीक्यां दानधर्मेष्टत मानुसास विष्णोर्नाम सहस्रसमाप्तः ॥ संवत १९३६ ॥ श्रावणवदी १० चंद्रवासरे × × × ×
१ ·५ × ८ सें० मी०	३२ (१–३२)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योतर पुराणे विष्णोर्नाम सहस्रं संपूर्ण ॥
११·६ × ८·५ सें० मी०	५०	६	११	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि दानधर्मोतरे श्री श्रीभगवत: विष्णोर्नाम सहस्रं समाप्तम् ॥
१५·७ × ७·८ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैय्यासिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानशासने दानधर्मोत्तरे विष्णोर्नाम सहस्त्रं संपूर्णं शुभम् ॥
२२·५ × १० सें० मी०	९	९	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशतसाहस्र्यासंहितायांवैयासिक्यो शांति पर्वणिदानधर्म उत्तमानुशासने भीष्मयुधिष्ठिर संवादे श्रीविष्णोर्नाम्नां सहस्रं सम्पूर्णम्।···
१६ × १३ सें० मी०	१५$\frac{१}{२}$	११	२३	पू० (कृमिकृतित)	प्राचीन	इतिश्रीमहाभारतेशतशहस्रसंहितायांवैया शिक्यां शांतिपार्वणी उत्तमानशाशने दानधर्मेतरे वीष्णोनाम सहस्र संपुर्ण ॥ श्री, श्री

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०४	१३४७	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११०५	१४७३	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११०६	४४४६/२	विष्णुसहस्रनाम			दे का०	दे०
११०७	१५४८/२	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११०८	३४५७/२	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११०९	१४२५	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११०	१४५१	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११११	७३९९	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·८ × ९·५ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	१६	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री महाभारते शतसहस्र्यां संहीतायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानशासने दानधर्मोत्तरे श्री विष्णु दिससहस्त्रं नाम संपूर्णम् राम शुभ मस्तु सर्व जगतां ॥ सं० १८८८ ॥
२३·३ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसाहस्त्रं संहितायां श्री विष्णु नाम सहस्त्रं समाप्तं ॥ शुभमस्तू लिष्यतं गंगाराम ...... ॥
१४ × १०·५ सें० मी०	४५ (२१–६५)	८	१२	पू०	प्राचीन सं० १९०१	इति श्री महाभारते शत सहस्त्रां संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दान धर्मोत्तरे श्री विष्णो सहस्त्रनाम संपूर्णम् संवत् १९०१तत्र वर्षे ...
१० × ७·१ सें० मी०	१२	७	१३	पू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·१ सें० मी०	४६ (१–४६)	५	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्त्रसंहितायां वैयाशिक्यां शांति पर्वणी दान धर्मोत्तरे श्री विष्णोर्दिव्य सहस्त्रनाम शुभमस्तू ।
१६·५ × ७ सें० मी०	२८	५	२०	अपू०	प्राचीन सं० १९०४	अश्वन धर्मोत्तरे भीष्म युधिष्ठिर संवादे श्री विष्णो दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्रं समाप्तः॥ संवत् १९०४ मासानांम मासोत्तमे मासे जेष्ठ मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थ्यां गुरुवासरे लिषिंत कोमल मिश्र वीप्रोहं शुभं भूयात् । राम.........
१९·४ × १०·७ सें० मी०	२६ (२–२७)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × ८·९ सें० मी०	२७ (२से३२तक स्फुट पत्र)	५	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१११२	१६६७	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११३	२३११	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११४	२३२० / २	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११५	७१४८	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११६	७१००	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११७	७०६६	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११८	५०४६	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१११९	२९३३ / ५	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·२ × ८·३ सें० मी०	२० (१–२०)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × ८·१ सें० मी०	२३ (५–२७)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१९३०	इति श्री महाभारते शतसहस्रं संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि दानधर्मोत्तरे उत्तमानुशासने श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्र-नामस्तोत्रंसंपूर्णं । संवत् १९३० पौष मासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां शुक्रवासरे ••
१६ × ९·९ सें० मी०	२५ (३–२८)	७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते सतसहस्र संहितायां वैयासिकयां शांति पर्वणि उत्तमानुशासन धर्मेषु श्रीविष्णुनाम सहस्रसंपूर्णम् ॥
१६·५ × ७·५ सें० मी०	२९	६	१५	अपू०	प्राचीन सं०१८९१	इति श्री विष्णु सहस्रनाम मंत्र विभाग समाप्तं । × × संवत् १८९१ । राधाकृष्ण
१४·३ × ९·१ सें० मी०	१९ (१,३-१८, २१-२२)	६	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८५२	इति श्री विष्णु सहस्रनाम समाप्तः ॥ कार्तिक वदि १४ सं ॥ १८५२ कृष्णा
१५·२ × ७·९ सें० मी०	११ (१–११)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ८·२ सें० मी०	२० (१-६,६-७,९, १३,१५,१६, १८-२४)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१५·७ × १०·६ सें० मी०	१८	७	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२०	४६५०	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११२१	३०७०	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११२२	३६२४	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११२३	३३७८	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११२४	२८७	विष्णुसहस्रनाम	व्यास		दे० का०	दे०
११२५	२४३	विष्णुसहस्रनाम (संस्कृत टीका)	व्यास		दे० का०	दे०
११२६	२	विष्णुसहस्रनाम			दे० का०	दे०
११२७	४३५२	विष्णुसहस्रनामभाष्य-विवृति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूरा है? अपूर्ण है तो किन अंशों का अभाव है विवरण	[illegible]	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	८स	८द	९	१०	११
१३·७ × १०·१ सें० मी०	६ (४,७,६-१०, १२,२०-२२)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१५·७ × १०·५ सें० मी०	१७ (१-१६,१८)	१०	१७	अपू०	प्राचीन सं० १८८८	इति श्री महाभारते पर्वणि उत्तमानुशासने श्री विष्णो: सहस्रनाम स्तोत्रसंपुरणं शुभमस्तु. सवत १८८८ लिपतं साहाबादमध्ये परगणे चयनपुरग्राम श्लोका······
११·८ × ७·८ सें० मी०	२६ (२-१४,१६, २०-३३)	६	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते सतसहस्र संहितायां शांति पर्वणि ···दानधर्मोत्तरे भीष्मप्रोक्त श्री विष्णोर्नाम सहस्र संपूर्ण ।।
१४ × ६·५ सें० मी०	१५ (४-१३,१५-१६,१६,२२-२३)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × १०·७ सें० मी०	२० (१-१४,१६-२१)	६	१७	अपू०	प्राचीन सं० १८५०	शांति पर्वणिदाधर्मेषु श्री विश्नोर्नाम सहस्र समाप्त ।।
३३ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	१४	५३	अपू०	प्राचीन	
१३·५ × ११ सें० मी०	३४ (२–३४)	८	१३	अपू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री महाभारते शतसहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि उत्तमसासने दानधर्मोत्तरे श्री विष्णो दिव्यसहस्रनाम संपूरणम् शुभमस्त मंगलं ददात् संवत् १८६६ चैत्रशुदी द्वितीया।
३२·७ × १५·८ सें० मी०	३३ १-६,११-२४	१८	४७	अपू०	प्राचीन सं० १८६२	इति श्री गोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य-शंकरभगवत् कृतौ श्री सहस्रनामभाष्य विवृत समाप्तं संवत् १८६२ ।। श्री रामायनमः ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२८	४३५४	विष्णुसहस्रनामभाष्य-विवृति		शंकर भगवान	दे० का०	दे०
११२९	२०६३	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११३०	४०७/८	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	व्यास		दे० का०	दे०
११३१	१०६ (ब)	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	व्यास		दे० का०	दे०
११३२	४६२१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११३३	६६७०/३	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११३४	६६८६/३	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११३५	७६६४	विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५·४ × ११·८ सें० मी०	५३ (१–५३)	१२	४३	पू०	प्राचीन सं०१९२०	इति श्री गोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्य शंकर भगवत् कृत । श्री सहस्रनाम भाष्य विवृत समाप्तं शुभं भूयात् श्री सम्वत् १९२० ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद गुरु वासरे सद्‌ग्रंथ [illegible] विष्णु नाम सहस्रकं लिखित [illegible] श्रीगणेशाय नमः ।
२९·४ × १३·७ सें० मी०	५६ (१–५६)	१४	३९	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र्या संहिताया वैयासिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दान धर्मेषु श्री विष्णो नामसहस्र स्तोत्रं संपूर्ण ।
१४·५ × १० सें० मी०	३४ (१-१८,१८-३३)	७	१४	पू०	प्राचीन सं० १९३४	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्व्वणि दानधर्मोत्तम.नुशासने श्री विष्णोर्दिव्य सहस्र नाम स्तोत्रं संपूर्णम् । सं०१९३४ मिति कर्ति वदि ४ व० शु०
१२·५ × ७·५ सें० मी०	३० (१–३०)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र्यां संहिताय वैयासिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दान धर्मेतरे श्री विष्णोर्नाम सहस्रस्तोत्रं संपूर्ण समाप्तम् ॥
१७·३ × १३·५ सें० मी०	२० (१–२०)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र्यां वैयासिक्यां शांति पर्व × × × श्री विष्णोर्दिव्य सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्ण ॥ लेखक पंडो भैरव × × × × ॥
१५·१ × ११ सें० मी०	३४ (१–३४)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्रसंहितायां वैयाशिक्यां शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दान धर्मोत्तरे श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्ण शुभमस्तु ॥ श्री०
१७ × १५·७ सें० मी०	१४ (३२–४५)	१२	२१	पू०	प्राचीन सं०१८९६	इति श्री महाभारते शांति पर्वणे उत्तमानुशासने दानधर्मोत्तरे ॥ विष्णोर्नाम सहस्रं संपूर्ण समाप्तं ॥ शुभं भवतु ॥ संवत् १८९६ शाके १७६१ ………
१८·६ × ९·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र संहितायां वैयाशक्यां शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दान धर्मेषुश्री विष्णोर्नाम सहस्रं संपूर्ण॥

[illegible]	पुस्तकालय की [illegible] [illegible] संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
११३६	७[illegible]३	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११३७	६०९४	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			[illegible] का०	दे०
११३८	३३४८ / ४६	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११३९	४८००	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र (सटीक)			दे० का०	दे०
११४०	७[illegible]२४	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११४१	४३२७	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			मि० का०	दे०
११४२	१५४३	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	
११४३	२८९६	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२३·५ × १०·८ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्त्रां संहितायां शांति पर्वण्युत्तमानुशासने दानधर्मोत्तरे विष्णोर्दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्णम्।।
१३·८ × १०·२ सें० मी०	२५ (१–२५)	१०	११	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्त्रं संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि दानधर्मोत्तरे श्रीविष्णोर्दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्रं संपूर्ण ······ ।।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	३६ (१–३६)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारथे शतसहस्त्रसंहितायां वैयाशिक्यां शांतिपर्वणि उत्तमानुशासने दानधम्मोंतरे श्री विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीराम कृष्णायनमः ।।
३०.५ × ११·८ सें० मी०	४७ (१–४७)	१०	४६	पू०	प्राचीन	
१६ × १० सें० मी०	२४ (१–२४)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतिशाहास्स्यां संहितायां वैयासिक्यां शांत पर्वउत्तमानुशासने दानधर्मोतरे श्री विष्णोर्दिव्य सहस्त्रनाम संपूर्णम्······ ।।
२०·८ × १०·२ सें० मी०	९ (१–९)	८	२८	पू०	प्राचीन	अस्य श्री विष्णोर्दिव्यसहस्त्रनामस्तोत्रस्य महामंत्रस्य ······ (प्रारंभ) ।
१६·७ × १०·६ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मन्महाभारते शतसहस्त्र संहितायां वय्या शकयामानुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठर संवादे श्रीविष्णोर्दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्रं संपूर्ण ।। श्री कृष्णार्पण मस्तु ।।
१३·३ × ७·८ सें० मी०	२३ (२–४२)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री महाभारते अनुशाशनिके पर्व: निदान धर्मपुत्तर सातानें विस्मो सहश्र नामस्तोत्र संपूर्ण शुभमस्तु श्रावन वदि ४ सं० नौशंवतु १८७० मुकामुजैतपुर लिषतं प्रधानहीरालालु जोवा चैसुनैता कौदंड व नयरनाम श्री श्री श्रो ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रह-विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११४४	२८३५/२	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			मि० का०	दे०
११४५	४४४४	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११४६	४०६६	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			मि० का०	दे०
११४७	३३५४	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११४८	३२७६	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११४९	५५४२	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५०	२२९१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५१	७१७८/७	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४·२ × ८·७ सें० मी०	२८ (१-२०, २२-२९)	६	१४	अपू०	प्राचीन	
२२·५ × ९·५ सें० मी०	१५ (२-४,६-१०, १५-२१)	५	२६	अपू०	प्राचीन	······विष्णो सहस्रनाम समाप्तं··· संवत्··· (अस्पष्ट)
८·५ × ५·६ सें० मी०	३२	६	१२	अपू०	प्राचीन सं० १९३४	इती श्री महाभारते शतसहस्रसंहीतायां वैयासिक्यां शांतीपर्वणीदान धर्मोत्तरेषु श्री भगवत विष्णुर्नाम सहस्र संपूर्णम् संवत १९३४··॥
१७·३ × ११ सें० मी०	२६	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × ८·५ सें० मी०	१४ (२-५,२१, २६-३४)	५	१५	अपू०	प्राचीन सं० १७४०	इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां शांति पर्वणि श्री विष्णोः सहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णं समाप्तं ॥ संवत् १७४० पौ० शु १२ गुरौ लि० चौ० जगदीश ठा०···
१७·२ × ८·१० सें० मी०	२१ (२-१५,१८, २०,२१-२३, २६-२७)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × ८·४ सें० मी०	४ (१–४)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
१६·६ × १० सें० मी०	४५ (२–४६)	५	१२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि उतमशासने धनदर्मांतरे विष्णसहस्र नाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तुपर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५२	७०५७	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५३	६९७२	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५४	५२६८	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५५	४५६८	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५६	६६१/५	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५७	७७४/४	विष्णुसस्रहनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११५८	५१०६	विष्णुसहस्रनामावली			दे० का०	दे०
११५९	७२४२	विष्णुसहस्रनामावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११·३ × ८·३ सें० मी०	६ (६,१८,-२०, २२-२५ २८)	७	१३	अपू०	प्राचीन	इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मन: नाम्नां सहस्र दिव्यानांमशेषेण प्रकीर्त्तनं ॥२१॥······ (पत्र-संख्या-२८)
८·६ × ६·१ सें० मी०	३२ (१३,१६,२१-३०,३२-३६, ४१-५०,५२, ५८)	५	६	अपू०	प्राचीन	
२१ × १०·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	
१७.४ × १३·१ सें० मी०	१० (२,६,६,१२, १४,१५,१७-२०)	११	१६	अपू०	प्राचीन सं० १६३५	इति श्री महाभारते शत सहस्रनाम संपूर्णम् माघमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां रविवासरे लिपिकृतं रिषी रामेण पुस्तकं शुभदायकं सम्वत् १६३५ पत्राणि संख्या २१···
१२·६ × ७·१ सें० मी०	२५ (३–२७)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमहाभारते शांति पर्वणिदान धर्मेष्ठत्तरशासने श्री विष्नु सहस्रनाम संपूर्ण शुभमस्तु ॥
१४·६ × ६·३ सें० मी०	२५ (४-७,११-२६,३२-३४)	७	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्त्रां संहितायां वय्यासिक्यां शांति परवनेउत्तमाश्वास्वने ध्यान धर्मोत्तार श्री विष्णोर्दिव्य सहस्त्रदाम समाप्तम् ।
२७·८ × १२·२ सें मी०	१० (१–१०)	१२	४५	पू०	प्राचीन सं० १६४५	इदं पुस्तकं पंडितोपनामक रघुनाथात्मज रामचन्द्रेण लिखितं मिति आषाढ़ कृष्ण १० गुरौ संवत् १६४५ शालिवाहन शके १८१० मुकाम श्री क्षेत्र काशी ॥
१७·६ × ११ सें० मी०	१२ (३,१८,२२-३१)	८	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री सहस्रनाम्नांनामावली समाप्ता + + + + + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालयकी आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६०	३३४८/४८	विष्णुस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
११६१	४२२१	विष्णुस्तोत्र			दे० का०	दे०
११६२	८७५६	विष्णुहृदय			दे० का०	दे०
११६३	१११६/४	विष्णुहृदयस्तोत्र	संकर्षण		दे० का०	दे०
११६४	३८७६	विष्णुहृदय स्तोत्र			दे० का०	दे०
११६५	५६३१	वीरेश्वर स्तोत्र			मि० का०	दे०
११६६	६०४०	वृहस्पति स्तोत्र			दे० का०	दे०
११६७	६०३२/२	वृहस्पति स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१·'५ × ८'२ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसाहस्यां संहि॰ तायां वैयासक्यां शांति पर्वणि राजधर्मेषु श्री भीष्म प्रोक्त विष्णुस्तव राज स्तोत्रं संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीरामः
१४·१ × ८·५ सें० मी०	२ (१–२)	६	१७	पू०	प्राचीन	श्री नारदः स्तोत्रमेतत्त्रिसंध्ययः॥ पठेदेकाग्रामानसः ॥ दारिद्र मोह दुःखानि न कदाचित्स्पृशंतितम् ॥
२१·८ × १२·७ सें० मी०	३ (१–३)	७	३०	पू०	प्राचीन	
२९ × १४·१ सें० मी०	२ (१–२)	१५	४७	पू०	प्राचीन	इति संकर्षण विरचितं श्री हृदय स्तोत्र संपूर्णम् शुभंमस्तु ।
१३·८ × ७.१ सें० मी०	८ (२–९)	५	१६	अपू०	प्राचीन सं०१९३५	इति श्री ब्रह्मपुराणे विष्णुहृदय स्तोत्रं समाप्तम् सवत् १९३५ श्रवन कृष्ण१०॥
१६·३ × ९·६ सें० मी०	१	८	२४	पू०	प्राचीन सं०१९४६	इति श्री वीरेश्वर स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥ १९४६ ज्ये० शु० १५ शुक्रे ॥
२१·९ × १०·६ सें० मी०	१	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंधपुराणे बृहस्पति स्तोत्रं संपूर्णः ॥ श्री रस्तु ॥
२५·१ × ११·२ सें० मी०	२	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री बृहस्पति स्तोत्रं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६८	६५६	वेंकटास्तोत्र			दे० का०	दे०
११६९	६४८६	वेंकटेशस्तवन			दे० का०	दे०
११७०	४८९२	वेंकटेशाष्टक	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
११७१	६४५१	वेदस्तुति आदि			दे० का०	दे०
११७२	२९३७/१२	वेदांताचार्यस्तोत्रम्			दे० का०	दे०
११७३	३१६४	व्यंकटेशसहस्रनामस्तोत्रं			दे० का०	दे०
११७४	३२५४	व्यंकटेशसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
११७५	३२५३	व्यंकटेशसहस्रनामावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·८ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री कवि तार्किकसिंहस्य रार्वतंत्रस्य श्री मठेंकनाथ ······
१२ × ८·२ सें० मी०	१० (२–११)	६	१०	अपू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·५ सें० मी०	१	७	४८	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य्य विरचितं वेकटेशाष्टकं संपूर्णम् ॥
१४·८ × ६·८ सें० मी०	२५	१५	१२	अपू०	प्राचीन	
१३·१ × ८ सें० मी०	३	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदांताचार्य स्तोत्र संपूर्ण ॥
१५·५ × १० सें० मी०	२५	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पराणे ······ नारद संवादे श्री व्यंकटेश सहस्त्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णं ।
१८·२ × ११·२ सें० मी०	१३ (११–२३)	६	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे ईश्वरपार्वती संवादे श्री वेंकटश सहस्त्रनामस्तोत्रं संपूर्णं ॥ श्री वेंकटेशार्पणमस्तु ॥ श्रीशुभं ···
१८·५ × ११·२ सें० मी०	१५ (१-५,५-१४)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १८१३	श्री वेंकटेश सहस्त्रनामावली समाप्तं ॥ संवत १८१३ मीती फालगुण शुक्ल ७ सुक्रवासरे ॥ श्री वंकटेशायते श्री सीद्धरस्तु ॥ शूभंभयतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११७६	६११३/१०	व्कयंटेशस्तोत्र			का०	दे०
११७७	७८०६	व्यंकटेशस्तोत्र	×	×	दे० का०	दे०
११७८	७०४५	व्यंकटेश्वरसहस्रनाम-मालामंत्रस्तोत्र			दे० का०	दे०
११७९	७७८७	व्यंकटेश्वरस्तोत्र			दे० का०	दे०
११८०	६५२०/१६	शंकरस्तोत्र	भगीरथ		दे० का०	दे०
११८१	४१६५/८	शंभुअष्टोत्तरशतनाम			दे० का०	दे०
११८२	२८०४	शत्रुविध्वंसनस्तोत्र	महेश्वर		दे० का०	दे०
११८३	२१६	शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × १३ सें० मी०	२ (३७–३८)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १९२१	इति श्री व्यंकटेश स्तोत्र संपूर्णम् ॥ संवत् । १९२१ ॥ प्रतिलिखितं डालचंद०
११·१ × ६·७ सें० मी०	२९ (१,३–३०)	७	९	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०·५ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्दत्तात्रेय संहितायां चित्रसिखंडि दत्तात्रेय संवादे परमरहस्ये श्री व्यंटेस सहस्रनाम मालामंत्रस्तोत्र संपूर्ण शुभं × × × × संवत् १८९७ शाके १७६२ श्रीमते रामानुजायनमः
१६·७ × १०·३ सें० मी०	९ (१–९)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्वंकटेश स्तोत्रं संपूर्ण श्री व्यंकटेशार्यणःमस्तु ॥
२·९ × ९·५ सें० मी०	६ (१–६)	१०	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री वृहन्नारदीये भगीरथ कृत संकर स्तोत्र समाप्तं सुभमस्तू श्रीरस्तू सिवायनमः ॥
३०·१ × १२·५ सें० मी०	३/२	१६	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे हरि पार्वती संवादे शंभोरष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥
२१·५ × ९·८ सें० मी०	२ (१–२)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री महेश्वर विरंचिते शत्रुविध्वंसन स्तोत्र संपूर्णम् ॥
१५·२ × ९·५ सें० मी०	२	७	१७	पू०	प्राचीन	इति शत्रु विध्वंसिनी स्तोत्रं समाप्तं ॥

(सं०सू०४-३८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	
११८४	७६७२	शनिमंगलस्तोत्र	व्यास		दे० का०	दे०
११८५	७८०४	शनिस्तोत्र	दशरथ		दे० का०	दे०
११८६	४०७६	शनिस्तोत्र	दशरथ		दे० का०	दे०
११८७	२६२५	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११८८	५६१७	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११८९	२२३८	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११९०	१५२८/६	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११९१	१३८०	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१३·५ × ७·२ सें० मी०	२	७	१८	अ·पू०	प्राचीन सं० १७२५	इति व्यास कृतं शनिस्तोत्रं × × × × × संवत् १७२५ × ×
२५ २ × ११ ३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री दशरथकृतं शनिस्तोत्रं संपूर्णम्।।
१५·६ × ८·२ सें० मी०	११ (१–११)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अग्निपुराणे दशरथ कृतंशनि स्तोत्र संपूर्ण··· ···।।
११·८ × ८·३ सें० मी०	१२	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री अग्निपुराणे राजा दशरथेन-कृतं शनैः स्तोत्रं समाप्तं ।।
११ × ५ २ सें० मी०	१६ (१–१६)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे प्रभासक्षेत्र महा-त्म्ये शनि स्तोत्रं संपूर्णं ।।
१८ ८ × १०·१ सें० मी०	७ (१–७)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री दशरथ प्रोक्तं शनि स्तोत्रं संपूर्ण ।। श्री गुरवे नमोनमः ।।
१४·८ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१५	पू०	प्राचीन	इति स्कंद पुराणे शनिस्तोत्रं संपूर्णम् ।।
१४ × ६·५ सें० मी०	५	१०	२२	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति स्कंद पुराने दशरथ कृतौ शनिस्तोत्रं संपूर्णं समाप्तं, शुभमस्तु संवत् १८४७ द्वितीय आषाढ़ वदि १० दशमी भौमे लिष्यतं इदं स्तोत्रं ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११९२	२४६५	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११९३	६७५	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११९४	७७४/४	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११९५	४९५६	शनिस्तोत्र			दे० का०	दे०
११९६	२४९१	शनिस्तोत्र	दशरथ		दे० का०	दे०
११९७	३५५२	शनिस्तोत्र	दशरथ		दे० का०	दे०
११९८	५४२७	शनिस्तोत्रपूजाविधि			दे० का०	दे०
११९९	३३९४/२	शनैश्चरकथास्तोत्र	दशरथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·७ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे दशरथ प्रोक्तशनि स्तोत्र संपूर्णम् ॥
२३ × १० सें० मी०	५ (१–५)	९	३५	पू०	प्राचीन सं० १९१४	इति श्री स्कंद पुराणे उमा महेश्वर संवादे राजादशरथ कृतं शनैश्चर स्तोत्रं संपूर्णम् संवत् १९१४ चैत्र वदि ११
१४·६ × ९·३ सें० मी०	२	८	१४	पू०	प्राचीन	इति शनैश्चर स्तोत्र संपूर्णम् ।
१७·१ × १०·४ सें० मी०	२ (१–२)	१२	२५	पू०	प्राचीन सं० १९५३	इति शनैश्चर स्तोत्र संपूर्णम संवत् १९५३··· ।
१५·३ × ८·३ सें० मी०	६ (१–५,७)	८	१८	अ०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे राजादशरथ कृतं शनि स्तोत्रं समाप्तं ॥
१६.५ × ११ स० मी०	६ (३-८)	७	१६	अ०	प्राचीन सं० १९४१	इति श्री स्कंधपुराने: दशरथ कृत सनैश्वर: स्तोत्र समांप्तसुभंम सवत् १९०१ मासे फलागोने मासे कृष्णपक्षे अमवस्या ३. बुद्धवासरे लिषातं···
१७ × १०·९ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री शनिस्तोत्र पूजाविधि संपूर्णम् ॥
१२ × १०·२ से० मी०	६ (१–६)	१२	९	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे पार्वती स्कंद संवादे शनैश्चर कथा स्तोत्रं संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२००	६६८०	शनैश्चरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२०१	४२७७	शनैश्चरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२०२	५७२२	शनैश्चरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२०३	६०६१	शनैश्चरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२०४	६०३२/२	शनैश्चरस्तोत्र			दे० का०	"
१२०५	३३६४/२	(शनि) शन्यष्टकस्तोत्र	दशरथ		दे० का०	
१२०६	७५१४	शन्यष्टकस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२०७	७२४४	शरभसाल्वपक्षिराजाष्टकस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·६ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	३५	पू०	प्राचीन	
२६·७ × १०·५ सें० मी०	२ (१–२)	७	३४	पू०	प्राचीन सं० १९४८	इति श्री शनैश्वर स्तोत्रं सम्पूर्णम् लिखितं कृष्णादत्तेनकचूर स्थिनेन संवत् १९४४ जेष्ठे कृष्णात्रयोदश्याम् ॥
२४·६ × १०·५ सें० मी०	१	१०	३५	पू०	प्राचीन	इति शनि स्तोत्रं सपूर्णम् शुभम्
१६·५ × ११·७ सें० मी०	४ (१–४)	१३	२६	पू०	प्राचीन सं० १८६७	इति स्कंध पुराणे दसरथतृताचिनेस्तोत्रं संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८६७···
२५·१ × ११·२ सें० मी०	१/२	११	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री शनैश्चर स्तोत्रं लिखितं संतोष चंद्रर्षिपठनाय ॥······· इति श्री त्रिह-स्पति स्तोत्रं ।
१२ × १०·२ सें० मी०	२ (७–८)	१२	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री दशरथकृतंशन्यष्टक स्तोत्रं संपूर्णं ।
११·४ × ६·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	१३	पू०	प्राचीन	इति दशरथ प्रोक्तं शन्यष्टक स्तोत्रंसंपूर्णं मस्तु ॥श्री॥ श्रीविश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥
२६·१ × ११·३ सं० मी०	१	१४	४८	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदाकाशकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर संवादे शरभसालुवपाक्षि-राजाष्टकं स्तोत्रं संपूर्णं शुभमस्तु श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०८	३६०३	शरभाष्टक स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२०९	५९९६/२	शांत्यष्टक			दे० का०	दे०
१२१०	४३८१	शारदा अष्टक			दे० का०	दे०
१२११	६४५६	शालग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२१२	४४४०/१०	शालग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२१३	५०६८	शालग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२१४	५८७४	शालग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२१५	५९७९	शालग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·२ × ८·८ सें० मी०	४	१०	२०	पू०	प्राचीन	इत्याकाश भैरव कल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर संवादे शरभाष्टकं स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥ ॥
२४·८ × १०·८ सें० मी०	३	१६	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री शांत्यष्टकं ॥ समाप्त ॥ शुलं-लवतु श्री ॥
१७·५ × १०·२ सें० मी०	२ (१–२)	८	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री मदादिरामायणोक्त सरद्याष्टकं समाप्तंम् ॥
१०·७ × ८·९ सें० मी०	४ (१–४)	९	१७	पू०	प्राचीन	इति शालग्राम स्तोत्र × × × ॥
१२·४ × ९·१ सें० मी०	४	९	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे गंडक्या शिला माहात्म्ये श्री कृष्ण युधिष्टिर संवादे शालग्राम स्तोत्र समाप्तं ॥
१६·५ × ११·८ सें० मी०	४ (१–४)	९	२०	पू०	प्राचीन सं० १८९५	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण युधिष्टिर संवादे शालग्राम स्तोत्रं संपूर्णं शुभं भवत् संवत् १८९५ मासोत्तमे मासे × × × ॥
२३·६ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे गंडकीशिला महात्म श्री शालग्राम स्तोत्र संपूर्ण ॥
१३·५ × १० सें० मी०	१८ (१–१८)	६	९	पू०	प्राचीन सं० १८३२	इति श्री भविष्यतर पुराणे शालग्राम शिला स्तोत्रं संपुर्ण...... संवत् १८३२ ......॥

(सं-सू: ४–३९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२१६	३३४८/४६	शालिग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२१७	२१४२/६	शालिग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२१८	२१७७	शालिग्रामस्तोत्र	कृष्णद्वैपायन		दे० का०	दे०
१२१९	३०८२	शालिग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२२०	२१८७	शालिग्रामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२२१	२८२४	शालिग्राम स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२२२	४०५३	शिवअष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२२३	५१५७	शिवअष्टोत्तरशतनाम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·५ × ८·२ सें० मी०	८ (१–८)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योउत्तर पुराणे गंडकी शिला महात्म्ये कृष्ण जुधिष्टिर संवादे सालिग्राम स्तोत्र संपूर्णम्
१८·५ × १६ सें० मी०	३ (६–८)	१०	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण युधिष्टर सवादे शालिगराम स्तोत्र संपूर्णम ॥ ३ ॥
२०·८ × ८·५ सें० मी०	२	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णद्वीपायन विरचितंशालग्राम स्तोत्रं संपूर्णम्··· ॥
२०·५ × ७·५ सें० मी०	३	७	२९	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री भविस्योत्तर पुराणे गण्डकी महात्म्ये श्री कृष्ण युधिष्टिर संवादे शालि ग्राम स्तोत्रं समाप्तं शुभंभूयात संवत् १८८४ के साल चैत्रमासेकृष्णपक्षे पंचमी बुद्धवासरे शालिग्राम स्तोत्र लिष्यते दासलक्ष्णो ॥ १ ॥···
२१·५ × ८·५ सें० मी०	२	८	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविस्योत्तर पुराणे गंडकीशिला महात्मने श्री कृष्ण युधिस्टिर संवादे शालिग्राम स्तोत्र संपूर्ण ॥
१६·८ × ७ सें० मी०	४ (१–४)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
८·३ × ६·१ सें० मी०	६ (१–६)	६	७	पू०	प्राचीन सं० १९२२	इति श्री संकराचार्ज विरंचतं मिवअस्टः संपूर्ण । २ । गुनसुभ ४ संवद १९२२ ॥
१७·२ × ९·२ सें० मी०	२ (१–२)	८	२४	पू०	प्राचीन	ग्रेवगष्टोत्तर शतं नाम्नां मांन्माय संमितः शंकरस्य प्रियं गौरी जप्त्वातै कालमन्वहे (पत्र–संख्या–२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२२४	६११/२	शिव आरती	स्वामीमानगिरि		दे० का०	दे०
१२२५	५१२४	शिव आरती			दे० का०	दे०
१२२६	२८०२/६	शिवकवच			दे० का०	दे०
१२२७	१५०	शिवकवच			दे० का०	दे०
१२२८	२७४५	शिवकवच			दे० का०	दे०
१२२९	८६०	शिवकवच			दे० का०	दे०
१२३०	१४८५	शिवकवच			दे० का०	दे०
१२३१	५२७६	शिवगौरीस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९ × ९.४ सें० मी०	१	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वामि सानगिरी विरचिता शिव आरती लिख्यते
२५.९ × १८.५ सें० मी०	१ (खर्रा)	२२	२३	पू०	प्राचीन	इति शिव कि आर्ति संपूर्ण शुभ भूयात् ।।१।।
२० × ११.७ सें० मी०	५½	११	२७	पू०	प्राचीन	इति शैव कवचं संपूर्णम् ।।
२७.७ × १२.२ सें० मी०	४ (१–४)	११	३६	पू०	प्राचीन	इनि भद्रायुषंसम्यगनुशास्य समातृकं ।। ताभ्यां सपूजित सोयय गीश्वरगांतिययौ।। इति श्री स्कंदपुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शिव कवचं समाप्तं ।।
१६.४ × १०.२ सें० मी०	३ (१–३)	९	२५	पू०	प्राचीन	इनि श्री रुद्रयामले ईश्वर पार्वती संवादे शिवकवच संपूर्ण ।
२४.६ × १०.६ सें० मी०	९ (१–९)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंधपुराणे ब्रह्मोत्तार खंडेशिव वर्मकमस्तु ।। आश्विन कृष्ण अमा १५ शनौ संवत् ।।
१४.३ × ९.५ सें० मी०	६ (१–६)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री भैरव तंत्रे सदा शिवकवचं समाप्तं संपूर्ण शुभमस्तु ।।
१९ × ११.९ सें० मी०	१	१४	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२३२	१९५३/२	शिवतांडव			दे० का०	दे०
१२३३	५५२७	शिवतांडवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२३४	४१३	शिवद्वादशनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२३५	४०९२	शिवनामस्तव			दे० का०	दे०
१२३६	५१७९	शिवनामस्तोत्र	शकराचार्य		दे० का०	दे०
१२३७	१९८६/२२	शिवनामस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२३८	७१६३	शिवनामावलीस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२३९	७३९५	शिवनामावलीस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१७·६ × ८·८ सें० मी०	४ (१–४)	६	२२	पू०	प्राचीन सं०१८५५	इति दशवदन कृत शिवताण्डवम् संवत १९२४ फा० कृ० ७ लिखतं मिश्र दलिपचंद चर्तर्थजाम्ये
२२·८ × ९·६ सें० मी०	२ (१–३)	५	२८	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १०·३ सें० मी०	२ (१–२)	७	३१	पू०	प्राचीन	
१७ × ९ सें० मी०	२ (१–२)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री शिवद्वादशनाम स्तोत्रं समाप्तं।। सं० १८५५ ।।श्री.।
१३·७ × ९·७ सें० मी०	२ (१–२)	१२	९	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं शिवनामस्तोत्र संपूर्णं ।।
२९·२ × १४·१ सें० मी०	१/२	१०	४७	अपू० (खंडित)	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य कृतं शिवनामस्तोत्र संपूर्णं ?
१२·७ × ९·१ सें० मी०	२ (१–२)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१९२४	इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं शिवनामावली स्तोत्र समाप्तम् रामकृष्ण शिव० ।।
१४ × ८·७ सें० मी०	८ (१-२,८,१५, १७,२०-२१, २३)	८	१४	अपू०	प्राचीन सं०१९४०	इति क० ब्रह्मोक्त कामदंस्तवं समाप्तं इति श्री मच्छंकराचार्य्य विरचितं शिवनामावली स्तोत्र सम्पूर्णम् ।। सं०१९४० जे कृ० शनि: ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४०	६६६५	शिवपंचरत्नस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२४१	२७०८ / ३	शिवपंचरात्नमालिका-पंचक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२४२		शिवपंचाक्षरस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२४३	७६७३	शिवपंचाक्षरस्तोत्र			दे० का	दे०
१२४४	१६२५ / ३	शिवपंचाक्षरीस्तोत्र			दे० का०	
१२४५	३४६७	शिवपूजास्तोत्र			का०	
१२४६	२५३३ / ३	शिवभुजंगप्रयात			दे० का०	दे०
१२४७	७१७६	शिवमहिम्नस्तोत्र	पुष्पदंत		मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·६ × १०·६ सें० मी०	१	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री सर्वदेवकृतं शिव पंचरत्न स्तोत्र सम्पूर्णम् ।···
१६ × १० सें० मी०	३	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं शिवपंचरात्र मालिका पंचीक ।।
१३·५ × ६·५ सें० मी०	३ (१३–१५)	७	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री पंचाक्षरी मंत्र संपुर्णं··· ···
१७·३ × ७·१ सें० मी०	१८ (२-७,१०, १२-२०,२२, २४)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
१७·८ × ८·६ सें० मी०	२ (१–२)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति पंचाछिरी स्तोत्र संपूर्णं सुभंमस्तु:।।
२१·२ × १० सें० मी०	५ (१–५)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × १३·५ सें० मी०	१	८	१९	पू०	प्राचीन	इति शिवभुजंग प्रयात संपूर्णं ।।
१३·६ × ७·६ सें० मी०	५ (१–५)	५	१९	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०४–४०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४८	५२११	शिवमहिम्नस्तोत्र (सटीक)	पुष्पदंताचार्य		दे० का०	दे०
१२४९	३५५७	शिवमहिम्नस्तोत्र	,,		दे० का०	दे०
१२५०	६१३४	शिवरहस्य (शिवस्वरूपवर्णन)			दे० का०	दे०
१२५१	७२५५	शिवरामस्तोत्र	रामानंदसरस्वती		दे० का०	दे०
१२५२	७८२० / ७	शिवरामस्तोत्र	रामानंदसरस्वती		दे० का०	दे०
१२५३	४०४१	शिवरामस्तोत्र	रामानंदसरस्वती		दे० का०	दे०
१२५४	१९८६ / २२	शिवरामस्तोत्र	आनंदसरस्वती		दे० का०	दे०
१२५५	११११ / ६	शिवरामस्तोत्र	आनंदसरस्वती		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × १०·६ सें० मी०	१४ (३–१६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२१ × ११·५ सें० मी०	१७ (३,५-७,९-१२-१४-१६)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२३.७ × ९ सें० मी०	२ (१–२)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२४·९ × १०·२ सें० मी०	२ (१–२)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री रामानंद सरस्वती विरचिते शिवरामस्तोत्र समाप्तम् सुभमस्तु ॥
१३ ५ × ९ ५ सें० मी०	३ (१७–१९)	७	१५	पू०	प्राचीन	इिति श्रीमद्रामानंद सरस्वति विरच्चितं शिवराम स्तोत्रं समाप्तम् ॥···
१३·३ × १०·८ सें० मी०	३ (१–३)	९	१९	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्रामानंद सर्स्वति विरचितं शिवराम स्तोत्र संपुर्णं समाप्तम् ॥
२९·२ × १४·१ सें० मी०	१/२	१३	४९	पू०	प्राचीन	इति मद्रानंद विरचिते शिवरामस्तोत्र संपूर्णम् ॥
१९ × १३ सें० मी०	२	१२	२३	पू० (कृमिकृंतित)	प्राचीन	इति श्रीमदमनंदरस्वती वीरंचीतं सीवराम स्तोत्र संपुर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२५६	४५७० / ४	शिवलिङ्गाष्टक			दे० का०	दे०
१२५७	५४२८	शिववर्म			दे० का०	दे०
१२५८	२१३६	शिवशिवानामावलो			दे० का०	दे०
१२५९	७८७६	शिवसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१२६०	४३६६ / ४	शिवसहस्रनाम			दे० का०	
१२६१	५८१७	शिवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	
१२६२	७४६४	शिवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	
१२६३	४१६५ / २	शिवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.५ × १३.२ सें० मी०	२	१४	११	पू०	प्राचीन	लिङ्गंष्टकमीद पुन्यंय पठेच्छीव शंनीधौ शिव लोकेमवाप्नोती शिवेलशह मोदते समाप्त ॥
१२ × ७.४ सें० मी०	१०	५	१५	अपू०	प्राचीन	शिववर्म संपूर्ण ॥
२१ × १० सें० मी०	१	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२४.५ × ११.१ सें० मी०	११ (१–११)	१२	३९	पू०	प्राचीन सं० १८२३	इति श्री शिव पुराणे शिवसहस्रनाम समाप्तम् ॥ •••॥संवत् १८२३ ॥
१६ × ९.८ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	१७	अपू०	प्राचीन सं० १९३१	इति श्री रुद्रयामल परमरहस्ये देवीईश्वर शिवसहस्रनाम समाप्तः श्रावणेमासे कृष्णपक्षे १० चन्द्रवासरे संवत् १९३१ ••• •••॥
२७.१ × ११.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	४०	पू०	प्राचीन सं० १९२४	इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखंडे कृष्ण मार्कंडेय संवादे शिवसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्ण ॥ शुभंभवतु ॥ × × संवत् १९२४ ॥ लिखितं रावजी मोघे स्वार्थं परार्थं च ॥ × × × × ॥
२१.८ × १०.५ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२३	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति श्री रुद्रयामले पार्वती शिव संवादे शिवसहेस्रनाम समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ संवत ॥ १८८५ चैत्रशुदि ५ ॥•••
३०.१ × १२.५ सें० मी०	४½	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मजामले शिवपार्वती संवादे शिवसहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२६४	४४८०	शिवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२६५	२७७९	शिवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२६६	७४९७	शिवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२६७	७५००	शिवसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२६८	५६५७	शिवस्तव			दे० का०	दे०
१२६९	५५५२	शिवस्तुति			दे० का०	दे०
१२७०	१९२५/२	शिवस्तुति			दे० का०	दे०
१२७१	४२१७	शिवस्तुति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·७ × ९·५ सें० मी०	७ (१–७)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १८४५	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे मारणवीय संहितायां शिव सहस्रनामस्तोत्रं संपूर्ण शुभमस्तु संवत् १८४५ के साल साके सालिवाहणाम्य १७१० समय नाम भाद्रपदे मासे सुक्ल पक्षे ७. × × × ×
१५·८ × ८·४ सें० मी०	४६ (१–४६)	५	२१	पू०	प्राचीन सं० १८२२	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर पंडे कृष्ण मार्कंडेय संवादे एकोनविंशत्तमोध्याय: समाप्तेदं शिव महस्रनाम स्तोत्र शंपूर्णं स० १८२२ ॥ श्री राम जी सहाय ॥
२५ × ११ सें० मी०	८ (११–१८)	७	२१	अपू०	प्राचीन सं० १९१२	इति श्री अनुशासने शिव सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्ण ··· संवत् १९१२ मुकांम ढहरौली ····
२४·५ × १०·८ सें० मी०	७ (४–१०)	७	२३	अपू०	प्राचीन	
२०·५ × १२·६ सें० मी०	७ (३–९)	११	२०	अपू०	प्राचीन सं० १८९७	इति श्री महाभारते शांतिक पर्वणि मोक्ष धर्म्मेषु दक्षप्रोक्तः शिव स्तव: समाप्त: ·· सं १८९७ आश्विन शुक्ला ११ शे ··· ··
२१ × १० सें० मी०	२ (१–२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	
१७·८ × ८·६ सें० मी०	१	६	१६	पू०	प्राचीन	श्री महादेव अस्तुत संपूर्न ॥
३३·५ × १३ सें० मी०	६ (१–६)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति हरिवंशे पारिजात हरणे समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७२	७७२९	शिवस्तुति			दे० का०	दे०
१२७३	७१२७/३	शिवस्तुति			दे० का०	दे०
१२७४	२१५७	शिवस्तुति			मि० का०	दे०
१२७५	२९२५	शिवस्तुति			दे० का०	दे०
१२७६	२९१९	शिवस्तुति			दे० का०	दे०
१२७७	६३५७	शिवस्तोत्र	रावण		दे० का०	दे०
१२७८	५६१२	शिवस्तोत्र	रावण		दे० का०	दे०
१२७९	६०५८	शिवस्तोत्र	उपमन्यु		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३·३ × ८·३ सें० मी०	१० (१२–२१)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१७ × १०·६ सें० मी०	३	१४	१२	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × १२·२ सें० मी०	३ (१–३)	९	१८	अपू०	प्राचीन	
१४·५ × ८·१ सें० मी०	३	६	१५	अपू०	प्राचीन	
१५·३ × ७·८ सें० मी०	५ (१–५)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२३·४ × १०·४ सें० मी०	२ (१–२)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति रावन कृतशिवस्तोत्रम संपूर्ण—
१६·४ × ८·२ सें० मी०	६ (१–६)	५	१८	पू०	प्राचीन	इति रावण कृतं शिवस्तोत्रं समत्यं० ॥
२१·६ × १०·३ सें० मी० (सं०सू०४-४१)	३ (१–३)	९	२९	पू०	प्राचीन सं० १८२७	इत्युपमन्यु कृत शिवस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ संवत् ॥१८२७॥ वैशाष कृष्ण ॥५॥ शनिदिने लिषतं हरनाथेन शुभंभूयात् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२८०	५४१६	शिवस्तोत्र	रावण		दे० का०	दे०
१२८१	५६६५	शिवस्तोत्र	उपमन्यु		दे० का०	दे०
१२८२	१३६६	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२८३	२३७३	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२८४	२२२०	शिवस्तोत्र	आनन्दसरस्वती		दे० का०	दे०
१२८५	२२३४	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२८६	४६२६	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२८७	५१३०	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.२ × ७.६ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री रावण कृतं शिवस्तोत्रं समाप्तं धनंजय देवेनलिखितं ॥
१२.१ × १०.९ सें० मी०	२ (१–२)	९	३५	पू०	प्राचीन	इत्युपमन्युकृतंशिवस्तोत्रं संपूर्ण ॥ शुभम् ॥
१६ × ९.५ सें० मी०	६	५	१५	अ पू०	प्राचीन सं० १९२३	इते श्री सानंद कृतं शिव स्तोत्र संपूर्ण शुभमस्तु मंगल ददातुदु इती वैशाख सुदी १० संवत् १९२३ लिषत पं श्री तिवारी महादेव ॥
१६.२ × ७.९ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री शिवपुराणे रहस्ये महालिंगार्चन विवरणे षड्विंशोध्यायः ॥
२९.८ × ११ सें० मी०	१	२६	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री आनंद सरस्वती विरचितंशिव स्तोत्र संपूर्ण ॥
२५ × १०.४ सें० मी०	२ (१–२)	६	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं शिवनामावलि स्तोत्र संपूर्ण ॥
१२.२ × ७.५ सें० मी०	१	९	१७	पू०	प्राचीन	इति षडक्षर शिव स्तोत्र समाप्त शुभमस्तु ॥ श्री शिवौजयत ॥ श्री शंभवेनमः ॥
१५ × ८ सें० मी०	३	८	१८	पू०	प्राचीन	इति शिव स्तोत्र संपूर्णम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२८८	२१४५/७	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२८९	१५८७/२	शिवस्तोत्र	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
१२९०	१२४७	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२९१	७३२५	शिवस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२९२	१५१६	शिवापराधक्षमापनस्तोत्र			दे० का०	दे०
१२९३	५५७७	शिवावलिप्रकार			दे० का०	दे०
१२९४	५०१०	शिवाष्टक	काशीनाथ		दे० का०	दे०
१२९५	७८२०/७	शिवाष्टक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.५ × १२.८ सें० मी०	१½	२२	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले शिवस्तोत्रं स'तम् ॥
१४ × १०.५ सें० मी०	१२ (२७–३८)	५	१०	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरिचितं शिवस्तोत्रं समा'तं ॥
१५.५ ६.५ सें० मी०	४ (१–४)	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री भैरव तंत्रे सदा शिवस्तोत्रं समाप्तम् ।
१५.४ × ८.१ सें० मी०	२ (२–३)	५	१७	अपू०	प्राचीन	इति शिवस्तोत्र समाप्तं
१५ × ११ सें० मी०	४	६	१३	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १८ सें० मी०	३ (१–३)	११	११	पू०	प्राचीन	इति महाकाल सहितोक्त शिवावलि विधि ॥......
२७.६ × ११.६ सें० मी०	१	९	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री कासिनाथ विरचितं शिवाष्टकं संपूर्ण ॥
१३.५ × ९.५ सें० मी०	३ (१५–१७)	७	१४	पू०	प्राचीन	इतिवाष्टक......

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९६	२१३५	शिवाष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२९७	११.१/३	शिवाष्टक			दे० का०	दे०
१२९८	३२४७	शिवष्टोत्तरसहस्रनाम-स्तोत्र			दे० का०	दे०
१२९९	३०६१	शीतलामृतस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३००	७६७६	शीतलष्टक			दे० का०	दे०
१३०१	५८५३	शीतलाष्टक			दे० का०	दे०
१३०२	५८७८	शीतलाष्टक			दे० का०	दे०
१३०३	५७०९	शीतलाष्टक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·० × १२·८ सें० मी०	१	२१	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री नचकंकनाचार्य विरचितं शिवाष्टकं संपूर्णम् १० शिवविष्णावलभायनमः ॥
१९ × १३ सें० मी०	४	११	२१	अपू०	प्राचीन (कृमिकृंतित)	
२३·५ × १०.२ सें० मी०	१२	१०	३४	पूर्ण	प्राचीन	इति श्री शिवरहस्ये समस्यांशेषण्मुखसदाशिव संवादे शिवाष्टोत्तर सहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्णम ॥ श्री सांवसदाशिवायनमः । श्रावण कृष्ण पक्षे द्वादस्यां मंदवासरे लिपितं उमादत्ते दीक्षित् मडलेकर ॥ शुभमस्तु ॥ ······
२५·२ × १०·६ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२८	पू०	प्राचीन	श्री शीतलामृत स्तोत्रं श्लोकाष्टक सम्मितं ॥ पठताश्रृण्वतानृणां शीतला दर्शन प्रदं ॥ २ ॥
२७ × ११·३ सें० मी०	१	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे शीतलाष्टकं × ×
१२· × ५·७ सें० मी०	१ (१–६)	५	१०	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे श्री सीलाष्टक संपूर्णम् ॥
१०·७ × ५·६ सें० मी०	४ (१–४)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराने शीतलाष्टक संपूर्णं॥
१३·४ × ८·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे श्री शीतलाष्टकं संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३०४	३०१३	शीतलाष्टक			दे० का०	दे०
१३०५	५५०४	शीतलास्तव			दे० का०	दे०
१३०६	१६६१	शीतलास्तव			दे० का०	दे०
१३०७	७४५६	शीतलास्तोत्र			दे० का०	दे०
१३०८	४७२७	शीतलास्तोत्र			दे० का०	दे०
१३०९	२०४०	शीतलास्तोत्र			दे० का०	दे०
१३१०	१५८४	शीतलास्तोत्र			दे० का०	दे०
१३११	३०७१	शीतलास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·९ × ११·१ सें० मी०	३	९	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे शीतलाष्टकं संपूर्ण सुभमस्तु ॥
१७ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	९	२३	पू०	प्राचीन	
१५ × ८ सें० मी०	२	८	१८	पू०	प्राचीन	
१७·३ × ८·८ सें० मी०	७ (१–७)	५	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराणे ईश्वर कार्तिकेय संवादे शीतलास्तोत्रं संपूर्ण ॥ श्री रामायनमोनमः ॥
१३·२ × १०·७ सें० मी०	५ (१–५)	६	११	पू०	प्राचीन	इति शीतलाजपं
२२·७ × १०·७ सें० मी०	४ (१–४)	९	२३	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे सूतशौनकसंवादे शीतला स्तोत्र संपूर्णम् ॥ संवत् १८८६ वैशाष मासे कृष्णो त्रयोदशी भृगुवारे ॥
२०·१ × ९·६ सें० मी०	४ (१–४)	८	२४	पू०	प्राचीन सं०१९०९	इति श्री शीतला स्तोत्र संपूर्ण ... ... ॥
१२ × १०·५ सें० मी०	३	८	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंदपुराने शीत...

(सं०सू०४-४२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
१३१२	७७२१	शीतलास्तोत्र			दे० का०	दे०
१३१३	७६७१	शीतलास्तोत्र			दे० का०	दे०
१३१४	६४४३	शुकाष्टक			दे० का०	दे०
१३१५	१४३५/५	शुकाष्टक			दे० का०	दे०
१३१६	४६६७	शैवापामार्जनस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३१७	२६३५/७	श्यामाआरात्रिका	लक्ष्मीनाथ		मि० का०	दे०
१३१८	७४३७	श्यामाअष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र			दे० का०	
१३१९	२८०२/६	श्यामास्तव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
१६·३ × १०·५ से० मी०	४	७	१८	अपू०	प्राचीन सं० १६३४	इति श्री ब्रह्मड पुराणे शिव शीतलास्तोत्र संपूर्णम् × × × संवत् १६३४ शाके १७६६ × × × ॥
१०·२ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	५	१०	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री शुकाष्टकं समाप्तम् शुभंभूयात् संवत् १८८३ के मि० मा० सु १५ × ॥
२२·५ × १० सें० मी०	२	६	२६	पू०	प्राचीन	इति शुकास्टकं संपुर्ण ॥
१४·६ × ८·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	१५	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनमः । अथ शैवापामार्जनं ॥ (प्रारंभ)
२४·५ × १४·५ सें० मी०	१½	२०	१४	पू०	प्राचीन	इति श्यामाआरात्रिका लक्ष्मीनाथकृता समाप्तः ॥......
१६·१ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रजामले भैरवी भैरव संवादे श्यामाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥
२० × ११·७ सें० मी०	२½	११	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री श्यामास्तव समाप्तं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३२०	३६	श्रीभवानीदेबीसहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३२१	१९८६/२२	श्रीरंगाष्टकस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१३२२	५९८४/१७	श्रीराधासुधानिधि	गोस्वामी हितहरिवंश		दे० का०	दे०
१३२३	७२०४	श्रीरामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३२४	३३७६	श्रीरामचंद्रस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३२५	७२२१	श्रीरामसहस्रनाम	×	×	मि० का०	दे०
१३२६	६४४२	श्रीरामसहस्रनाम			दे० का०	दे०
१३२७	७५२२	श्रीरामहसस्रनामस्तोत्र			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × १०·७ सें० मी०	१ (१-१६,१७)	८	२८	अ ०	प्राचीन सं० १९१६	देव्य सहस्रनामनि सामाप्तानि। वैशाख माशे शुभे शुभे कृष्ण पक्षे तिथौ नवमी भौम वासरे संवत् १९१६, साके १७-८१। लिःपतं पं श्री अवस्थी गंगा प्रसाद जू ॥ इस्थान रामपुर ॥
२६·२ × १४·१ सें० मी०	१	१३		पू०	प्राचीन	इतिमत्संकराचार्य्य विरचितं श्री रंगाष्टक स्तोत्र सपूर्णम् ॥
१३ × ८·५ सें० मी०	११५ (१-११५)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री वृंदावनेश्वरी चरण कृपापात्र विजृंभित श्रीमप्राधा सुधानिधि स्तव श्रीमद्धित हरिवंश गोस्वामिना विरचितः समाप्तः ॥
१७ × ८ सें० मी०	६ (१-६)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
१७ × १२ सें० मी०	१० (१-१०)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२१·५ × १०·६ सें० मी०	२० (१-२०)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामल तंत्रे पार्वतीहर संवादे मंकारादि श्री रामसहस्रनाम संपूर्णं ॥ श्री सुभमस्तु ॥ श्रीराम ॥
१६ × ९·६ सें० मी०	१९ (२-५,८-२१)	८	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे सृष्टि प्रशंसायां उमामहेश्वर संवादे रकारादि श्रीराम सहस्रनाम संपूर्ण शुभमस्तुः सं. १९२६ के श्री पंडित राम गरीब लिषाः श्री रामचंद्र निमित्याः ॥
१६·३ × १० सें० मी०	१५ (१-१५)	९	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे सृष्टि प्रशसयां उमामहेश्वर संवादे रकारादि श्री राम सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्णं ॥ श्री रामदाशरथाय सीतायाः पतयेनमोनमः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगमसंख्या या ग्रन्थविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	
१३२८	७०१[illegible]	श्रीरामसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	[illegible]
१३२९	४९१७	श्रीरामसहस्रनामस्तोत्र (सटीक)			दे० का०	दे०
१३३०	६५२० १६	श्रीरामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३३१	४६११	श्रीरामस्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३३२	३१८५	षट्चक्रस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३३३	५१७५	षट्पदी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१३३४	३४९६	षट्पदीविवरण	,,	श्रीरामभद्र मिश्र	दे० का०	दे०
१३३५	३३८	षट्पदीविवरण (संस्कृतटीका)	शंकराचार्य	रामभद्रमिश्र	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? यदि नहीं तो लुप्त अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.४ × १०.६ सें० मी०	२६ (१-६,८-२६, २९-३०)	७	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले सृष्टि प्रसंगाया उमामहेश्वर संवादे मकारादि श्रीराम सहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्णं ।। श्री शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ।।
२३.८ × ११.४ सें० मी०	६ (१-२,५-६,९ १०)	१२	३२	अपू०	प्राचीन सं० १८७८	श्री रामसहस्त्रनाम स्तोत्रं संपूर्णं सुभमस्तु मंगलं दद्यात् संवत् १८७८ ज्येष्ट कृष्ण ९ शुक्रवासरे इदं पुस्तकं लिखितं गिछारिया जुगलदास ।
९.९ × ९.५ सें० मी०	१८	६	१०	पू०	प्राचीन	इती श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्रीरामस्तवराजस्तोत्र समाप्तं सुभं-संवत १८६९ के पौषसुदि ४ ।।
२५.५ × ११.३ सें० मी०	१४ (१-१४)	९	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री रामस्तव राज संपूर्णं ।।
१३.४ × ११.३ सें० मी०	४ (१-४)	७	१२	पू०	प्राचीन सं० १९४६	इति षट्चक्र स्तोत्रं संपूर्णम् संवत् १९४६ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ ।।
१५.६ × ९.४ सें० मी०	१	१२	२४	पू०	प्राचीन	इति षट्पदि मदिये वदन सरोजे सदा वसतु ।।
२४ × ११.५ सें० मी०	५ (१-५)	९	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री सर्वविद्यापारदृश्वनाकाशी बासिना श्री राम भद्र मिश्रेण विरचितं षट्पदी विवरणं समाप्तं ।
२९ × १०.५ सें० मी०	५	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १८५०	इति सर्वविद्या नरबना काशी वासिना श्रीरामभद्र मिश्रेण विरचितं षटपदी विवरणं शुभम संवत् १८५० वैशाख वदि तृतीया शनि दिने लिखितं इदं लक्ष्मण ।। शुभमस्तु ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालयकी आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३३६	१८६१/३	षट्पदी स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१३३७	१४४२/२	संकठागौरीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३३८	२६०५	संकठासहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३३९	४०३७	संकठा स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३४०	१५४६	संकठा स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३४१	६३८/३	संकठा स्तोत्र			मि० का०	दे०
१३४२	४३७२	संकठा स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१३४३	४४३२	संकष्ट नाशनहरणस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·४ × १४ सें० मी०	१	३	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजका विरचितं शंकराचार्यः षटपदी स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२१·८ × ८·४ सें० मी०	१	१५	४०	पू०	प्राचीन	इति पद्मपुराणे संकटा गौरी स्तोत्रं संपूर्ण ॥
२५ × ९·२ सें० मी०	५ (१–५)	१४	४६	पू०	प्राचीन सं० १८५७	इति श्री महाकाल संहितायां चतुर्थी-कल्पपटले संकटासहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णमगात् ॥ संवत् १८५७ •••
१०·२ × ७·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	१४	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री संकटास्तोत्र संपूर्णम् संवत् १९११ जेष्ठमासे शुक्लपक्षे••• ।
१७ × ९·८ सें० मी०	२ (१–२)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री संकटा स्तोत्रं समाप्तं ॥
१४·९ × १२·२ सें० मी०	२	११	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री काशीषंडे संकठा स्तोत्र संपूर्ण श्री ज्वालाजि सहाय ॥ मंगलं ।
२२·६ × ८·४ सें० मी०	१	६	२८	पू०	प्राचीन सं० १८५७	इति श्री मत्संकराचार्य विरचितं संकठा स्तोत्र समाप्त ॥ संवत् १८५७ श्री रामजिसहाय नमः ॥
१५·५ × ११·५ सें० मी० (सं० सू० ४-४२)	४ (१–४)	११	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं श्री सङ्कष्ट हरण स्तोत्र संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४४	५७४४/२	संकष्ठनाशनस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३४५	५१७३	संका ठनाशनतोत्र			दे० का०	दे०
१३४६	२५७३	संतानगोपाल			मि० का०	दे०
१३४७	५०५६	संतानगोपालस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३४८	८८२७/५	सद्यःप्रीतिकरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३४९	७८०३	सप्तशतीमालामंत्र, लक्ष्मीस्तोत्रआदि			दे० का०	दे०
१३५०	२२९३	सप्तशतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३५१	७६५३	सप्तश्लोकीरामायणस्तुति	वाल्मीकि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४.२ × ८.१ सें० मी०	२ (१–२)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे कार्तिक माहात्म्ये संकष्ठनाशनं स्तोत्रं संपूर्णं ॥शुभमस्तु।
२३ × ९.४ सें० मी०	१	१०	२८	पू०	प्राचीन सं० १८८२	संकष्ठनाशनंस्तोत्रमेनद्यस्तु पठेन्नरः ॥ स कदा विघ्न संकष्ठैः पीड्यते कृपया हरे.। (श्लोक संख्या-५) ··· इति पद्मपुराणे पृथु नारद संवादे संकठमोचन समप्तं शुभमस्तु मितिकार्तिक सुदि २ सर्न का संवत् १८८२ के ·····
२७.३ × ९.७ सें० मी०	९ (१–९)	५	२८	पू०	प्राचीन	इति सनत्कुमारीयोक्त प्रकारेण सन्तान गोपाल मन्त्रस्य पूजादि । लक्षंजयोयुतं होमस्तिलैर्मधुर संल्लैः अर्च्चापूर्वोदिता चैवम्मन्त्रः पुत्र प्रदो भवेत् (१।··· ··
२९.५ × १४.३ सें० मी०	४१ (१–४१)	४	११	पू०	प्राचीन सं० १९६८	इति लक्ष्मी केशव संवादे संतानगोपाल स्तोत्र संपूर्णम् संवत् १९६८ कार्तिक शुदि १० दिन बुध का शुभमस्तु ।।श्री
१५.८ × ९.२ सें० मी०	२½	७	१९	पू०	प्राचीन	इति सद्यः प्रतिकरं स्तोत्रंमाप्तं ॥
११.३ × ५.८ सें० मी०	९	६	१२	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे सिंधुमथने ईश्वर विष्णु सवादे सिद्धलक्ष्मी स्तोत्र संपूर्णं × × सवत् १८५३ मार्ग शिर्शशुक्ल प्रतिपदा × × × ॥
१४ × ९.५ सें० मी०	४३	१०	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री शप्तसतीका स्तोत्रं समाप्तं।
१५.४ × ९ सें० मी०	२ (१–२)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १९१०	इति श्री वाल्मीक विरचितायां सप्त-श्लोकी रामायण सामाप्त सुभमस्तु संवत् १.१० ····

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तुपरलिखाहै	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३५२	२९४५	सरस्वती अष्टक			दे० का०	दे०
१३५३	७८२०/५	सरस्वती द्वादशनामस्तोत्र दशश्लोकासरस्वती स्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का	दे०
१३५४	६०८७	सरस्वती स्तोत्र			दे० का०	दे०
	७७८१	सरस्वती स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३५६	७८१२	सरस्वती स्तोत्र	हरिहरब्रह्म		दे० का०	दे०
१३५७	१६०	सरस्वती स्तोत्र	व्यासजी		दे० का०	दे०
१३५८	६४४९	सरस्वती स्तोत्र			दे० का	दे०
१३५९	८६१९	सरस्वती स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१.६ × ८·३ सें० मी०	२ (१–२)	७	३५	पू०	प्राचीन	इति समाप्तम् ॥
१३·५ × ६·५ सें० मी०	२ (१६–२४)	७	१३	अ०	प्राचीन	इति श्री संकराचाय विरचितं सरस्वती द्वादशनामस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ......
२२·३ × ४·२ सें० मी०	२ (१–२)	४	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री वृहस्पति विरचितयां सरस्वतो स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
१६ × ६·१ सें० मी०	५ (१–५)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां सिद्ध-सरस्वती स्तोत्रं संपूर्णम् । संवत् १६-०६ ......
१६·६ × ११·६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२०	पू० (जीर्णशीर्ण)	प्राचीन सं० १६४८	इति श्री हरिहर ब्रह्म विरचितं सरस्वती स्तोत्र संपूर्ण ॥ सम्वत् १६४ अषाड मासे शुक्ल पक्षे द्वितियां बुधवासरे लिषत राम प्रसाद × × × ×
१६·८ × १२·५ सें० मी०	१	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री भविस्योत्तर पुराणे सरस्वती स्तोत्र २ संपुराणं श्री राम जो साह श्री श्री राम जी श्री राम जी ।
११·२ × ७·१ सें मी०	२ (१–२)	६	८	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री रुद्रजामले सरस्वतीऽस्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु कार्तिसुदि ६ गुरु वासरे संवत् १८८१ ॥
१६·३ × १०·२ सें० मी०	४ (१–४)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १६.०	इति श्री ब्रह्माडपुराणे सरस्वती स्तोत्र समाप्तम् जेष्ठकृष्ण तिथौ १० बुद्धे संवत् १६५० स्थि० बलदेव पठनार्थं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६०	४५८३	सरस्वतीस्तोत्र			मि० का०	दे०
१३६१	६६७८	सरस्वतीस्तोत्र	हरिहरब्रह्म		दे० का०	दे०
१३६२	७२३३	सरस्वतीस्तोत्र			मि० का०	दे०
१३६३	५१७७/२	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६४	४६५८	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६५	४८८८	सरस्वतीस्तोत्र	आश्वलायन		दे० का०	दे०
१३६६	४८८७	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६७	५२७४	सरस्वतीस्तोत्र	वृहस्पति		मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·१ × १२·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति वृहत्त प्रोक्तं सरस्वती समाप्तम् ॥
१२·५ × ६·६ सें० मी०	४ (१–४)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिहर ब्रह्मा विरचितं सरस्वती स्तोत्रं संपूर्णः···सं० १६२ (?)
१३·८ × ६·१ सें० मी०	११ (१–११)	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सनतकमार संहितायां सरस्वति स्तोत्र संपूर्णम् ॥
१६·५ × ११·८ सें० मी०	४ (४–७)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मा प्रोक्त सरस्वती समापता इती संपूर्णं ॥
१४·३ × ६ सें० मी०	३ (१–३)	७	१४	पू०	प्राचीन	
२५ × ६·६ सें० मी०	३ (१–३)	१३	५०	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायन प्रणीतं सरस्वती स्तोत्रं संपूर्ण ॥··· ··
२८·७ × १३·१ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति सरस्वती स्तोत्रं समाप्तं ॥
१७·८ × ७·२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२२	पू०	आधुनिक	इति श्री वृहस्पति कृतं सरस्वती स्तोत्रं संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६८	५३५९	सरस्वतीस्तोत्र			का०	दे०
१३६९	४६१६	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३७०	४६५७	सरस्वतीस्तोत्र			मि० का०	दे०
१३७१	५७४४/२	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३७२	६१४०	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३७३	६१४७	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३७४	६१४३	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३७५	५८७१	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ९·५ सें० मी०	४ (१–४)	९	२१	पू०	प्राचीन	इत्ती श्री सनत्कुमार संहीतायां ब्रह्मणा प्रोक्तं सरस्वती स्तोत्रं संपुर्णं सुभमस्तु स्विद्धिरस्तु ॥
२३·७ × ११·३ सें० मी०	१	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १९३३	इति श्री विष्णुपुराणे वृहस्पति प्रोक्त सरस्वति स्तोत्र संपूर्णम् ॥ संवत् १९३३ ॥ × ×
१५·४ × ८·७ सें० मी०	५ (१–५)			पू०	प्राचीन सं० १९३५	इति सरस्वती स्तोत्रं संपूर्णम्। सम्वत्॥ १९३५ ॥ साके १८०० लिषित्वागौरि सर्मणे सूपपूरा वसिन्दराम ॥
१४·२ × ८·१ सें० मी०	१	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री लिंगपुराणोक्तं सरस्वतीस्तोत्र सपूरणं । शुभमस्तु × × × ॥
२४ × ११·५ सें० मी०	२ (१–२)	१२	४४	पू०	प्राचीन सं० १ ८४	इति श्री रुद्रयामले नारायण नारद संवादे सरस्वता स्तोत्रम् ॥...सवत् १८।८४ ॥......
२३ × ९·९ सें० मी०	२ (१–२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराने वृहस्पति प्रोक्तं सरति स्तोत्रं सपुर्नम् शुभमस्तु। संक्षिप्त मस्तु। संवत् १८४३। शाके १७८(?)। मिति फाल्गुण शुदि ८ । रविवार लिखितं भैरोनाथ उपाध्या कास्यां मध्ये रामघाटतटे गोपाल मंदिलशमिपेपठनस्य
२३·२ × ८·४ सें० मी०	२	७	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री शिवागमे आनूढा सरस्वती स्तोत्रं संपूर्णम् ॥
२१ × ९·८ सें० मी०	३ (१–३)	८	२७	पू०	प्राचीन	

(सं०सू०४-४४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३७६	१८०६	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३७७	१७९६	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३७८	१७९५	सरस्वतीस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१३७९	१२३४	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८०	६११	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८१	३७९८	सरस्वतीस्तोत्र	आश्वलायन		दे० का०	दे०
१३८२	३८६५	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८३	३८७० / २	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१२ × ७·५ सें० मी०	५ (१-५)	११	१७	अ० पू०	प्राचीन सं० १६७५	इति श्री वृहस्पति सरस्वती स्तोत्रं संपूर्णम् ··· ·· सपत् १६७५ ·· ॥
१६ × ७ ५ सें० मी०	४	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १६०३	इति सरस्वती स्तोत्रं संपूर्ण ॥ संवत्- १६०३ शाके १७६८ मीती पौष वदी ५ चंद्रकौ ॥
१३ × ८·३ सें० मी०	३	७	१५	पू०	प्राचीन सं० १६३४	इति शंकराचार्य विरचितं सरस्वती स्तोत्र समाप्त ॥ संवत् १६३४ फाल्गुन कृष्ण २···
२३ ४ × १०·३ सें० मी०	१	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री लिंग पुराणे सरस्वती स्तोत्रं संपूर्ण ।
१३ ५ × ७·५ सें० मी०	५	५	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मपुराणे सरसस्वती संपूर्ण, शुभमस्तू ॥
१६·२ × ७·६ सें० मी०	५ (१-५)	६	२४	पू०	प्राचीन	इत्य।श्वलायन विरचितं सरस्वती स्तोत्रं संपूर्णम् गमत् ॥ ज्येष्ठे मासेसिते पक्षे पंचम्यां बुधवासरे कृष्ण रामेण लिखितं रामचंद्रस्य तुष्टये ॥
२४.७ × १०·८ सें० मी०	२ (१-२)	६	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री सनत्कुमार संहितायां सरस्वती स्तोत्रं संपूर्ण ॥
१८·८ × १०·५ सें० मी०	१ (१-३)	८	३२	पू०	प्राचीन सं० १६२६	इति नारदोक्तः सरस्वती स्तोत्र संपूर्णम् सं० १६२६ लिखितं तुलसी रामपंडितेन गंगा सहायस्य पठनार्थम् ········

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३८४	२ ३/४	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८५	४५५६	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८६	४१६६	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८७	४ ११	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८८	२३३३	सरस्वतीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३८९	५३५७	सर्वमंत्रोत्कीलननामस्तोत्र			दे० का०	
१३९०	३६८५	सर्वमंत्रोत्कीलनस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३९१	५८५०	सारस्वतस्तवराज			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८·२ × १३·८ सें० मी०	½	१०	३	पू०	प्राचीन दि० २६-६-१८८० ई०	इति श्री लिंगपुराणे सरस्वती स्तोत्र समाप्तम् २६-६-१८८०
१५·३ × ८·६ सें० मी०	५ (१–५)	८	१६	अपू०	प्राचीन	
१७·४ × ८·६ सें० मी०	१ (१–५)	५	१८	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री सरस्वती स्तोत्र मंत्रस्य मार्कण्डेयाश्वलायनावृषी ··· (प्रारंभ)
२७·३ × ११·८ सें० मी०	२	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इत्याश्वलायन ऋषि कृतं सरस्वती स्तोत्रं संपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु लेखक पाठकयोः ।।
२८·२ × १३·२ सें० मी०	१½	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्माविरचितं सरस्वती स्तोत्र संपुर्ण शुभम्भूयात ।।
१७·५ × १०·४ सें० मी०	२	१२	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव रहस्ये पंचरात्रे मच्छंद्र संहितायां शिव पार्वती संवादे शैवशाक्त वैष्णवोधगणपत्य मंत्र संस्कार सर्व मंत्रोत्कीलननाम स्तोत्र सपूर्ण ।।
२५·४ × १०·६ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव रहस्ये पंचराज मछंद्र संहितायां शिव पार्वती संवादे शैव वैष्णव शाक्तसौरगाणपत्य सर्व मंत्र संस्कारे मंत्रोत्कीलनं स्तोत्रं संपूर्णं ।।
२१ × १०·३ स० मी०	२ (१–२)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १७६३	इति सारस्वत कल्पे सारस्वत स्तवराज समाप्त ।। शुभमस्त ··· संवत् १७६३ वर्षे फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ १२ भोमवासरे लिषंत मयाराम आत्मार्थं

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा संग्रहविशष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६२	१७७६	सिद्धलक्ष्मीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६३	३३२१	सिद्धलक्ष्मीस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६४	५००१	सिद्ध लक्ष्मी स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६५	२५४१ / २५	सिद्धांत रहस्य	वल्लभाचार्य		दे० का०	दे०
१३६६	२५२३	सिद्धांतविंदु नामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६७	१६८६ / २२	सिद्धांतविंदु स्तोत्र			दे० का०	दे०
१३६८	६०४१	सिद्धांतवेदांतस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१३६९	२४५८	सीताकवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
३४ × १३ सें० मी०	१ खर्रा	३५	२२	पू०	प्राचीन सं०१९३५	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे समुद्र थने ईश्वर विस्णु संवादे सिद्ध लक्ष्मी समाप्तम् सं० १९३५ ज्येष्ठे कृष्ण चतुदस्यां
१५·७ × १०·८ सें० मी०	१	८	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे सिंधु मथने ईश्वर विष्णु संवादे सिद्ध लक्ष्मी स्तोत्र संपूर्ण श्री रामानुजायनमः ॥
१६·२ × ११·३ सें० मी०	३ (१–३)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × १५·८ सें० मी०	१	१३	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री वल्लभाचार्य विरंचितं सिद्धांत रहस्य संपूर्णं ॥
२२·९ × १०·६ सें० मी०	२ (१–२)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सिद्धांत विंदु नाम स्तोत्रम् संपूर्णं ॥
२९·२ × १४·१ सें० मी०	१½	२८	४९	पू०	प्राचीन	इति सिद्धांतविंदु स्तोत्र सपूर्णम् ॥
२१·३ × १०·१ सें० मी०	२	९	२९	पू०	प्राचीन सं०१६४७	इति श्री मत्संकरार्य विरतंसिद्धात वेदोत स्तोत्रं संपूर्णं ॥ शुभ मस्तु ॥ लिषंत्तंध-नंतब्रह्मा शुभमस्तु ॥ संवत् १६४७ भाद्र × × × × ॥
२७·१ × १३·७ सें० मी०	२ (१–२)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे धरणीशेष-संवादे श्री सीता कवचं सपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४००	३३४८/४६	सीताकवच			दे० का०	दे०
१४०१	५८४६	सीताकवच			मि० का०	दे०
१४०२	६५२०/१६	सीताकवच			दे० का०	दे०
१४०३	४०१४/२	सीताकवच			दे० का०	दे०
१४०४	३३६२/२	सीतारामजुगलशतनाम			दे० का०	दे०
१४०५	३३४८/४९	सीतास्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४०६	२७६५	सुदर्शनकवच			दे० का०	दे०
१४०७	२६८४	सुदर्शनशतक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
१२·५ × ८·२ सें० मी०	५ (१–५)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणेधरनी सेष संवादे सीता कवच संपूर्णम् शुभमस्तु
१६·४ × १०·२ सें० मी०	३ (३–४,६)	५	५७	अपू०	आधुनिक	
९·६ × ९·५ सें० मी०	४ (१–४)	६	१२	पू०	प्राचीन	ईती श्री ब्रह्मांडपुराने धराशेपसंवादे श्री सीताकवचं समाप्त सुभमस्तू श्री सीताननो नमः ॥
१८·१ × १६·१ सें० मी०	३	१४	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री बृह्मांड शेष पुराणे धरणींश संवादे श्री सीता कवच संपूर्ण।
१२ × ७·५ सें० मी०	१३ (२०–३२)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री रामचरणे वृह्मशूक्ते त्रिलोकमोहन गौरी तंत्रे अगस्ति सुतीक्ष्ण संवादे श्री सीता राम जुगलशतनाम समाप्तः ॥
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहितायां श्रीसीतास्तवराज स्तोत्रं समाप्तम् शुभमस्तू श्री राम ॥
२२·५ × १०·२ सें० मी०	१० (१–१०)	५	२३	पू०	प्राचीन सं० १९६९	इति श्री विहग्रेंद्र संहितायां तार्क्ष नारद संवादे अगस्त प्रोक्त श्री सुदर्शन कवच संपूर्णं। शुभं भूयात् ॥ चैत्रस्य शुक्लपक्षेतु द्वादश्यां शनिवासरे संवतम् उनविंसे चवार्षिकं उवहत्तरिम् ॥१॥
२७ × १४·२ सें० मी०	१६	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन शतक समाप्तं ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०८	७६१४	सुदर्शनशतक	कूरनारायण		दे० का०	दे०
१४०९	३०२५	सुदर्शनस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४१०	६२०	सुप्रभातस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४११	२३३२	सुमुखीसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४१२	४२९५/३	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
१४१३	१८३८/२	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
१४१४	१४६१	सूर्यकवच			दे० का०	दे०
१४१५	६०२२	सूर्यनामावली			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·१ × १२·५ सें० मी०	११	११	४०	अपू०	प्राचीन सं०१८४	इति श्री मत्कृन्नारायण विरचितं सुदर्शन शतकं सपूर्ण शुभमस्तु श्री संवत् १८४२ × × +
१६ × ९·८ सें० मी०	२ (४–५)	५	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री वानपुराणे वलिप्रल्हार संवादे सुदर्शन स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु ॥
३० × १०·५ सें० मी०	३	८	३४	पू०	प्राचीन	इति सुप्रभात स्तोत्रं संपूर्णं । शुभं ।
३०·२ × १२·६ सें० मी०	६ (१-५,७)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री नंद्यावर्त्तेउत्तर खंडेत्वरिता फलदायिनी श्री मुमुर्खी सहस्त्रनामस्तोत्रं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तू ॥ मंगलाचास्तू ॥
१५·५ × १०·८ सें० मी०	३ (१–३)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामलके त्रैलोक्य मंगलं नाम श्री सूर्यकवच संपूर्णम् ॥
१६·७ × १०·४ सें० मी०	४ (१–४)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति बृह्मयामले त्रैलोक्य मंगलं नाम श्री सूर्यकवचं सम्पूर्णम् ।
१८·५ × ८ सें० मी०	१०	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२१·६ × १०·६ सें० मी०	५ (१–५)	७	२८	पू०	प्राचीन सं०१६३२	लिखतं रामनारायण ब्रह्मण संवत् १६३२ मीती ज्येष्ट कृष्ण २ प०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१६	५६८	सूर्यशतक (सटीक)			दे० का०	दे०
१४१७	३३४८/४६	सूर्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४१८	२२४६	सूर्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४१९	५८०७	सूर्यसहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२०	६४००	सूर्यस्तवराज			मि० का०	दे०
१४२१	६५२०/१६	सूर्यस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२२	६००१	सूर्यस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२३	३७६	सूर्यस्तोत्र	व्यास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	९	१०	११
२८·२ × १०·८ सें० मी०	३७ (१–३७)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२३ (१–२३)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री स्कंद पुराणे सुमंत शतानिक संवादे श्री सूर्य सहस्रनाम स्तोत्र समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८८१ के पौष सुदी २क ।।
१३·८ × १०·३ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे शीतानीक सुमंत संवादे श्री सूर्य सहस्रनाम स्तोत्र संपूर्ण श्री सविता सूर्य नारायण प्रियतां नवम: ।।
१२·६ × ८·८ सें० मी०	६	८	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८२२	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे सप्तमीकल्पे भगत: सूर्य्यस्य नाम्नां सहस्रं सम्पूर्णम् शुभमस्तु लिखिता × × × १८२२ श्रावणद्वितीयायां
२०·८ × ७·६ सें० मी०	४ (१–४)	४	२५	पू०	आधुनिक	इत्यार्षे शास्त्र पुराणे भागवत: श्री सूर्य्यस्य स्तवराज समाप्त: शुभमस्तु संपूर्ण ४१८६ मास ११ श्री सूरर्य्यायनम: रामायनम: × × ।।
९·९ × ९·५ सें० मी०	३	१०	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्म पुराणे सूर्य स्तोत्र समाप्तम् शुभमस्तू मंगल लेखकानांतु पाठकानां च मंगलम् मंगलसर्व लोकानां भूमी भूपति मंगलम् ।।
१९·८ × ११.१ सें० मी०	१	८	२९	पू०	प्राचीन	इत्याकाशांत्पतितं शांव पुरदेशे सूर्य्य स्तोत्रं समाप्त मगमत् ।।
१५ ५ × ८ सें० मी०	४	७	१८	पू०	प्राचीन सं० १९२७	इति श्री मार्कंडेय पुराणें सूर्य स्तोत्र संपूर्णम् श्री कृष्णाय लिखतं विद्यार्थि बनवारि सं० १९२७ राम श्री

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४२४	२३३३/४	सूर्यस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२५	३३४८/४६	सूर्यस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२६	३३४८/४६	सूर्यस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२७	४०१४/६	सूर्यस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२८	३३८८	सूर्यहृदयस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४२९	४२६५/३	सूर्याष्टक			दे० का०	दे०
१४३०	२७५८	सूर्याष्टक	जनार्दन सिंह		दे० का०	दे०
१४३१	३६४३	सूर्याष्टक	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
२८·२ × १३·२ सें० मी०	१	११	३८	पू०	प्राचीन	इति सूर्य स्तोत्र संपूर्णम् ।।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२½	६	१६	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री वराह पुराणे कपालमोचनंनाम सूर्य स्तोत्रं समाप्तं ।। शुभमस्तु ।।संवत् १८८१ ।। के पौष सुदि ।।४।। कः समाप्तं ।। शुभमस्तु ।।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२½	६	१८	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री सूर्यस्तोत्रं संपूर्ण ॥ समाप्तं ॥ संवत् १८८१ के पौष सुदि ॥ ७ कः सुभमस्तु ॥
१८·१ × १६·१ सें० मी०	३	२५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री मार्कंडेय पुराणे सूर्यस्तोत्र संपूर्ण समाप्तं
२० × १० सें० मी०	१६ (१–१६)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पूराणे कृष्णार्जुन संवादे सूर्यहृदयस्तोत्रं समाप्तम शुभं ॥
१५·५ × १०·२ सें० मी०	२ (४१–४२)	७	१४	पू०	प्राचीन सं० १९७०	इति श्री शिवप्रोक्तं सूर्याष्टकं समाप्तम्॥ मार्गशिरसुदि २ शनिवार सम्वत् १९७० हर्षसीद लिपि कृतं करहडाग्रामनिवासि शूभम्भूयात् मंगलददातु ॥
१६·३ × ८ सें० मी०	२	५	२३	पू०	प्राचीन	श्री महाराजकुमार श्री लाल अजमेर-सिंहजू देवात्मज श्री लाल जनार्दन सिंह विरचितं श्री सूर्य्याष्टक ॥ समाप्त शुभमभूयात ॥
१५·५ × ६·९ सें० मी०	२ (४८–४९)	५	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकराचार्य्यं विरचिते सूर्यष्टक समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४३२	२४०	सौंदर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४३३	३४३७	सौंदर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४३४	२५१	सौंदर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	,,
१४३५	४२०६	सौंदर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का	
१४३६	६४४	सौंदर्यलहरी	शंकराचार्य		दे० का०	
१४३७	७०१	सौदर्यलहरी	शंकराचार्य		,, का०	
१४३८	३२८२	स्तवराजस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४३९	५१८६	स्तुतिसूभाषितसंग्रह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२·८ × ११·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितायां सौंदर्य लहरी स्तोत्र समाप्तं ।। श्री गजाननाय-नम: लिखितं रत्नेश्वर ब्राह्मण देशवालि ।।
१६ × ६·७ सें० मी०	२५ (१–२५)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचिते सुंदर-लहरी स्तोत्रे संपूर्ण ।।
२७ × ११·४ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचितं सौंदर्य्य लहरी स्तोत्रं सम्पूर्ण मिति शिवम् । श्री त्रिपुरसुंदर्यै नमः ।।
२४·४ × १२·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विरचितं श्री मच्छंकराचार्य विरचिंत सौंदर्य लहरी स्तोत्रं समाप्तं ।।शुभभवः।।
२० × १० सें० मी०	१४ (१–१४)	६	३२	पू०	प्राचीन सं० १८६६	इति श्री मत्संकराचार्य कृतं सौंदर्य लहरी संपूर्णम् समाप्तम् ।। श्रीरामयः संवत् १८६६ । मासोत्मेमासे । वसाषमासे । कृष्ण पक्षे । शुभतिथौ त्रियोदस्यां तथापि शुक्रवासराणताया ।....
१७·३ × ६·६ सें० मी०	२२ (२–२३)	७	२२	अपू०	प्राचीन शके १६०६	इति श्री शंकराचार्य विरचितं सौंदर्य लहरी स्तोत्रं संपूर्णं ।...शके १६०६ रक्ताक्षी नाम संवत्सरे अषाढ़वदि त्रयोदशी इंदुवासरे इंदं पुस्तकं शंकरभट्टेन लिखितं आउजी पंतस्य पठनार्थं ।।
१२·५ × ६·४ सें० मी०	२० (१–२०)	७	१७	पू०	प्राचीन	ॐ तसदिति श्री महाभारतेशत साहस्रचो संहितायां शांति पर्वणि राजधर्मस्तव-राज स्तोत्रं समाप्तं ।।
२७·८ × ११·७ सें० मी०	१	६	४६	अपू०	प्राचीन	

(स०सू. ४–४६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४४०	७३६१	स्तोत्र संग्रह			मि० का०	दे०
१४४१	७६६४	स्तोत्रसंग्रह			दे० का०	दे०
१४४२	२१४५/७	हनुमत्अष्टक	रामचंद्र		दे० का०	दे०
१४४३	४०६०	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४४४	३६८८	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४४५	३३४८/४६	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४४६	१२२४	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४४७	४३६४	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१६ × १०·२ सें० मी०	६	१३	९	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × १० सें० मी०	३	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × १२·८ सें० मी०	२	२६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री रामचंद्र विरचितं हनुमताष्टकं समाप्तम् ॥
१६ × ११ सें० मी०	७ (१–७)	९	१७	पू०	प्राचीन सं० १९३९	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे श्री हनुमतकवच संपूर्ण समप्तं कार्तिक शुक्ल षष्टि ६ गुरौ संवत् १९३९···।
२४.६ × १०·१ सं० मी०	५ (१-५)	१०	३४	पू०	प्राचीन सं० १८२१	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे नारद आगस्ति संवादे श्री रामचंद्रप्रोक्तं हनुमत् कवच समाप्तं ॥ संवत् १८२१ माघशुदि द्वादशि १२ शनिवारे लिषतं मिश्र सहय राम पठनार्थं ॥······
१२·५ × ८·२ सें० मी०	७ (१–७)	६	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन संहितायां श्री रामोक्तं हनुमतकवचं समाप्तम् ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हुं हनुमते नमः श्री
२२.८ × १०·५ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति श्री हनुमानकवचं समप्तं: सुभमस्तु ॥
१६·१ × ८·२ सें० मी०	६ (१–६)	७	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्रयामले श्री रामचंद्रोक्तं श्री हनुमत्कवचं संपूर्ण शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४४८	१०३०	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४४९	१४१६	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५०	३११४	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५१	९५०	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५२	२९०७	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५३	६९७० / ३	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५४	७१५३	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५५	५७७३	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·१ × ·८ सें० मी०	६ (२–७)	५	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शण संहितायां श्रीरामचंद्र सीता मनोहर पंचमुखी हनुमत्कवचं सपूर्ण ··· ··· ···श्रीरामायनमः ॥
१६ × ८ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२१·१ × ८ सें० मी०	५ (१–५)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ६·५ सें० मी०	६	५	१३	अपू०	प्राचीन	
११·२ × ७ स० मी०	६	८	१६	पू०	प्राचीन सं० १८४४	इति श्री ब्रम्हांड पुराणे नारद अंगस्ति संवादे हनुमत कवच स्तोत्र संपूरण समाप्तः ॥······भादोवदि ५ रवौ संवत् १८४४ श्रीरस्तु ॥
१५·१ × ११ स० मी०	१७ (१–१७)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे नारद अगस्त संवादे श्री रामचंद्र प्रोक्त हनुमत्कवचं समाप्तम् ॥
१५·१ × १०·५ सें० मा०	२ (१–२)	८	१९	अपू०	प्राचीन	
१२·५ × ७·४ स० मी०	१२ (४–१५)	६	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे अगस्ति नारद संवादे हनुत्कवचं समाप्तं शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४५६	२११५/७	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५७	१६५३/२	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५८	६०६५	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४५९	५६५२	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४६०	५६११	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४६१	६७६७	हनुमत्कवच			दे० का०	
१४६२	४६४७	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४६३	५६१८	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × १२·८ सें० मी०	३½	१२	२३	पू०	प्राचीन	इतिहनुमतएकमुखीकवचं संपूर्ण ॥
१७·६ × ८·८ सें० मी०	६	६	१६	पू०	प्राचीन सं० १६२६	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणेऽगरूपनारद संवादे हनुमत्कवचं समाप्तं संवत् १६२६ पौष कृ० ४ लिखतं मिश्र दलिपचंद···
२१·४ × ६·८ सें० मी०	५ (१–५)	६	३२	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति श्री पद्मपुराने पाताल खंडे विघ्नहर भूत प्रेत सांकिनी डांकिनी विद्रावकं श्रीहनुमत्कवच संपूर्ण समाप्त लिखितं पं श्री तिवारी प्रसाद रामपठनार्थं भाद्र सुदि १५ का संवत १८७३ के लिखो उमेदकायथ ॥
१७·१ × १०.५ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२३	पू०	प्राचीन सं० १६४०	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे अगस्त्य नारद संवादे श्री रामचंद्रप्रोक्तं श्री हनुमत्कवच संपूर्ण शुभंभवत् १६४० वैशाख वदि ३० ॥
१८·३ × ११·४ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२०·३ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांडपुराणे नारदागस्त्य संवादे श्रीराम प्रोक्तं हनुमत॰ वचं एक मुषीसंपूर्णम ॥
१५·७ × ६·५ सें० मी०	२ (१–२)	६	२०	अपू०	प्राचीन	ॐ अस्य श्री हनुमत्कवचस्य श्री राम चंद्र ऋषि: महावीरो हनुमान देवता··· (पत्र-सं० २)
२०·२ × १०·२ स० मी०	४ (१–४)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणेनारद अगस्ति संवादे श्री रामद्रंप्रोक्तं हनुमत्कवचं ॥ संपूर्णं ॥···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४६४	५४६८	हनुमत्कवच			दे० का०	दे०
१४६५	४६०६	हनुमत्कवचस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४६६	४७५८	हनुमत्कवचस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४६७	७७९९	हनमत् दुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०
१४६८	४४०३	हनुमत्दुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०
१४६९	४१९८	हनुमत्प्रातःस्मरणस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४७०	६०७८/५	हनुमत्वाडवानलस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४७१	५९५४	हनुमत्सहस्रनाम स्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्यआवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८ × ९·२ सें० मी०	८ (१–८)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे नारद अगस्त्य सम्वादे श्री रामचन्द्रप्रोक्त हनुमत्कवच स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥
१६·१ × ८ सें० मी०	३ (२–४)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२२·८ × १०·६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२०	पू०	प्राचीन	…ॐ अस्य श्री हनुमत्कवच स्तोत्र मंत्रस्य……(प्रारंभ)
१२ × ८·३ सें० मी०	४ (६३,६५-६७)	५	१६	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × ११·७ सें० मी०	५ (२–६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वण वेदरहस्ये श्री हनुमत दुर्गा सम्पूर्णम् ॥
२१ × ९·९ सें० मी०	३ (१–३)	४	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री हनुमत् प्रातः स्मरण स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु ॥ राम
११·६ × ७·२ सें० मी०	८	५	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री शुदर्शन संहितायां हनुमतवाड़वानल स्तोत्र सम्पूर्ण शुभमस्तू ॥
१६·२ × ७·९ सें० मी० (सं०सू०४-४७)	२१ (१–२१)	७	२४	पू०	प्राचीन	हनुमत्सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्ण शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४७२	३६६०	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४७३	५४६०	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४७४	७७६१	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४७५	१६४१	हनुमत्स्तवराज			दे० का०	दे०
१४७६	३०६१	हनुमत्स्तोत्र	विभीषण		दे० का०	दे०
१४७७	५५२१	हनुमत्स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४७८	५५६८	हनुमत्स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४७९	५४१७	हनुमत्स्तोत्र	विभीषण		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·१ × ८·५ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	२२	पू०	प्राचीन सं० १६१८	श्री हनुमत्सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णं ।।शुभं भूयात् संवत १६१८ चैत्र शुक्ल १२ सोमवार ।।
२०·७ × ९·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२७·५ × ११·५ सें० मी०	८ (२–९)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
१९·४ × ९·८ सें० मी०	३ (१–३)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन संहितायां तार्क्ष्य विभीषण संवादे श्री हनुत्स्तवराज समाप्तः।।
२०·३ × ७·५ सें० मी०	१	६	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शन संहितायां विभीषन कृतहनुमत्स्तोत्रं समाप्तं राम राम म्म ...
१५·९ × ११·६ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १६७१	इति श्री सुदर्शन संहिताम्वशिष्ट नारद सम्वादे शत्रुंजयनाम श्री हनुमत्स्तोत्र समाप्तम् ।। शुभम्भूयात् दः रामअधीन दुबे मि० पू० सु० १२ सं: १६७१.
२३·३ × १०·७ सें० मी०	३ (१–३)	९	२६	पू०	प्राचीन सं० १९०१	इति श्री सुदर्शन संहितायां तार्क्ष्य विभीषण संवादे हनुमत्स्तोत्र समाप्तम् १ ।। लिख्यतं हरिभक्त आत्मपठनार्थं संवत १९०१क आश्विन शुक्ला१५शनिवारे।।
१२·१ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	९	१५	पू०	प्राचीन	विभीषणकृत हनुमत स्तोत्र पूर्णम् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्यां	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८०	३३४८/५६	हनुमत्स्तोत्र	विभीषण		दे० का०	दे०
१४८१	२१४१	हनुमत्स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४८२	७११०	हनुमत्स्तोत्र			दे० का०	दे०
१४८३	४०८४/२	हनुमदष्टादशनाम			दे० का०	दे०
१४८४	३८७७	हनुमदष्टक	रामचंद्र		दे० का०	दे०
१४८५	४१६६	हनुमद्वडवानलकवच	विभीषण		दे० का०	दे०
१४८६	६३८/३	हनुमानअष्टक			दे० का०	दे०
१४८७	४०१४/६	हनुमानदुर्गास्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·५ × ८·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री सुदर्शनसंहितायां विभीषण कृतं हनुमत्स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीरामजू श्री रामः
१६·३ × १·५ सें० मी०	१	८	१४	अपू०	प्राचीन	
९ × १४ सें० मी०	४९	५	१२	अपू०	प्राचीन	
१६ × ८·३ सें० मी०	२ (१०–११)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति रेवा महात्म्ये युधिष्ठिर मार्कंडेय संवादे हनुमदष्टादश नाम ॥
१३·२ × ७·९ सें० मी०	७ (२–८)	४	१२	अपू०	प्राचीन सं० १९१६	इति श्री हनुमदाष्टकं श्री रमचंद्रः विरचितं संपूर्णम संवत् १९१६ वैषाख सुक्ल नवमीयां ९ बुधेः ॥
१२ × ८ सें० मी०	५ (१–५)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री विभिषण कृते हनुमद्वडवानल कवचं संपूर्णम् ॥
१४·९ × १२·· सें० मी०	२	११	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री हनुमान अष्टक संपूर्ण ॥
१८·१ × १६·१ सें० मी०	१०	१३	१०	पू०	प्राचीन सं० १९४५	···हनुमान दुर्ग संपूर्ण समान्य······ हनुमान दुर्ग के अश्लोक संख्या वाउन ५२ लिखितं वावा जुगलदासमुः··· सं: १९४५ महीना कुवार

क्रमांक श्रो॰ विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८८	३०६०	हनुमानवडवानलस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४८९	३१४२	हनुमानवडवानलस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४९०	६५२० / १६	हनुमानस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४९१	६११३ / १०	हयग्रीवदिव्यनामावली			दे० का०	दे०
१४९२	७२६८	हयग्रीवपंजरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१४९३	७२८२	हयग्रीवस्तोत्र	वेंकटनाथ		दे० का०	दे०
१४९४	२८१४	हरनाममालास्तोत्र			दे० का०	दे०
१४९५	५५१९	हरिनाममाला	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
२४·६ × ९·६ सें० मी०	३ (१–३)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री सुदर्शन संहितायां हनुमान वडवानल स्तोत्र संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत् १९११ ॥ ...
१५·२ × १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	९	२४	पू०	प्राचीन सं० १९३८	इति श्री सुदर्शन संहितायां हनुमान वडवानल स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु अ० सु० ४ सं० १९३६
९·९ × ९·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	११	पू०	प्राचीन	ईती श्री सुंदरसन संगिता हनुमानअस्तोत्र सपूर्न सुभमस्तू श्री महावीर हनुमान जू सहाइ सदा ॥
१६·५ × १३ सें० मी०	३ (४१–४३)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री महेश्वर पुराणे हयग्रीव दिव्य नामावली संपूर्णम्
२२·१ × ९·४ सें० मी०	१८ (२–१८)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री हयग्रीव कल्पे व्यास नारद संवादे नारदप्रोक्तं हयग्रीव पंजर संपूर्णम् ? शुभं भूयात् ॥
१५·२ × ८ सें० मी०	२	६	२२	अपू०	प्राचीन सं० १८१०	इति श्री कवितार्किक सिंहस्य सर्वतंत्रस्वतंत्रस्य श्री मद्वेंकट नाथस्य वेदांताचार्यस्य कृतिषु हयग्रीव स्तोत्रं समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ सं० १८१० फाल्गुन वदि ७ रवौ श्रीः ॥
११·६ × ६·७ सें० मी०	२४	८	६	पू०	प्राचीन सं० १८९७	इति श्री शंकराचार्य विरंचिते हरनाम माला अस्तोत्र मंत्र संपूरनं समापतं । लिषतं जवाहर...भादों चौदस संवत १८९७ संतानवै ॥
१७·२ × ८·४ सें० मी०	२ (१–२)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्संकराचार्य्य विरंचितं हरी नाम माला संपुर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४९६	२६३२	हरिनाममालास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४९७	५९६८/२	हरिनाममालास्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४९८	७२५८	हरिनाममालास्तोत्र			दे० का०	दे०
१४९९	१९८६/१२	हरिमीडेस्तोत्र			दे० का०	दे०
१५००	५९७५	हरिर्मीडेस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१५०१	३२४१	हरिस्तोत्र (सटीक)	,,	यतिराय	दे० का०	दे०
१५०२	८८२	हरिहरनामावली			दे० का०	दे०
१५०३	५२७३	हरिहरस्तव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·३ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	७	२६	पू०	प्राचीन सं० १८२५	इति श्री शंकराचार्य विरचितं हरिनाम माला संपुर्ण ।। शुभमस्तु समाप्तं चईत्र सुदी १० तारखौ संवत १८२५ के साल योस्त कूं लिषितं ।। येम दास वैरागी ।।
१९·२ × १३·३ सें० मी०	२ (३–४)	८	२२	पू०	प्राचीन सं० १८९७	इति श्री शंकराचार्य विरचिता हरिनाम माला स्तोत्र संपूर्णम् ।। मिती माघवदि ।।४।। सवत् १८९७ ।। श्री गोपीजन-वल्लभायनमः ।।
१५·३ × ७·८ सें० मी०	३ (१–३)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
२९·२ × १४·१ सें० मी०	२	१५	४८	पू०	प्राचीन	इतिहरिमीडे स्तोत्र संपूर्णम् ।।
१३·७ × ७·७ सें० मी०	१० (१-५,७-११)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंम परिव्राजकाचार्य श्री मछंकराचार्य विरचितं हरिमीडे स्तोत्र संपूरण ।।
१६ × ११ सें० मी०	४७ (५–५१)	१२	३०	अपू०	प्राचीन	कृतिराचार्य वर्यस्य स्तोत्ररूपांहरेरियं यादादि केशपर्यंत स्तोत्र नाम्नीयथा मति । व्याख्यातायतिनाराय नाम्नो प्रेमातिशालित ।। अनेन प्रीयंतांसाक्षात्पुराणपुरूषोहरिः
२३·५ × ८·३ सें० मी०	२ (१–२)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री स्कन्दपुराणे काशी खण्डं हरिहरनामावली समाप्त ।। संवत् १८८३ ।
२३·४ × ११·२ सें० मी०	२ (१–२)	७	३९	पू०	प्राचीन	श्री हरी हरात्मकं स्तवं समाप्तं ।।
(सं०सू०४–४८)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५०४	६४८	हरिहरस्तोत्र			दे० का०	दे०
१५०५	५६१४	हरिहरात्मकस्तव			दे० का०	दे०
१५०६	२६०८	हरिहरात्मकस्तव			दे० का०	दे०
१५०७	३७८०	हरिहरात्मकस्तव			दे० का०	दे०
१५०८	४०००/३	हरिहरात्मकस्तोत्र			दे० का०	
१५०९	१६५२	हरिहरात्मकस्तोत्र			दे० का०	दे०
१५१०	२८५७	हस्तामलकस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१५११	४८३६	हस्तामलकस्तोत्र	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७·५ × १०·५ सें० मी०	३	७	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कंद पुराणे काशी खंडे धर्मराज विरचिते हरिहरात्मक स्तोत्रसंपूर्णं शुभमस्तु ।। श्री राम रामः
३२·२ × १३·१ सें० मी०	७ (–७)	६	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिवंशे हरिहरात्मकस्तवः समाप्तः ।।
११·५ × ६·५ सें० मी०	५ (·–६)	८	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री हरिवंशे हरिहरात्मकः स्तव संपूर्णम् ।। शुभमस्तु श्रीरस्तु, कल्यानं ददातु ।।
१५·४ × ९·५ सें० मी०	७ (१–७)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिवंशे बाणयुद्धे हरिहरात्मकस्तवः समाप्तः ।। श्री हरिहरार्पणमस्तु।।
१८·७ × १५·४ सें० मी०	३ (१–३)	१४	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री हरिवंशे वाणासुरस्योपाख्याने ब्रह्मामार्कडेय संवादे हरिहरहिरात्मक स्तोत्रम् ।
१०·५ × १०·५ सें० मी०	८ (२-४, ६-७, ९-११)	५	१३	अपू०	प्राचीन	इति श्री हरिवंशे हरिहरात्मकं संपूर्णं समाप्तम् ओम्नमो
११·५ × ९·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	११	पू०	प्राचीन सं० १८८९	इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री शंकराचार्य विरचितायां संपूर्णं । लिखितं मया–सं० १८८९ शा० ११५५ प्र० ।। आश्वन कृष्ण ३ लगुः ।।•••
२४·८ × ९·६ सें० मी०	२ (१–२)	८	२९	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री मच्छंकराचार्य्य विरचितं हस्तामलक ग्रंथ समाप्तम् ।। श्री रामायनमः शुभशभ्वत् १८८१••••••

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय का आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५१२	१६८६ / २९	हस्तामलक स्तोत्र			दे० का०	दे०
१५१३	५६४४ / १७	हितहरिवंशाष्टक	गोस्वामीकृष्णचंद्र		दे० का०	दे०
१५१४	५६४४ / १७	हितहरिवंशाष्टक	प्रबोधानंद		दे० का०	दे०
१५१५	५६४४ / १७	हितहरिवंशाष्टक	भागवतावतंश		दे० का०	दे०
१५१६	५६४४ / १७	हितहरिवंशाष्टक	शिवप्रसाद		दे० का०	दे०
१५१७	५६४४ / १७	हिताष्टक			दे० का०	दे०
१५१८	११६१	हेरम्बस्तोत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.२ × १४.१ सें० मी०	१	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति हस्तामल संपूर्णम् ॥
१३ × ८.५ सें० मी०	५ (१३ -१८)	६	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्कृष्ण चंद्र गोस्वामिना विरचित: श्री हित जू कौ अष्टक संपूर्ण ॥
१३ × ८.५ सें० मी०	४ (११९-१२२)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री प्रबोधानंद जी कृत श्री हित जू कौ अष्टकं संपूरण ॥......
१३ × ८.५ सें० मी०	४ (९०-९३)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री भागवतावतंश विरचितं श्री हितहरिवंशाष्टकं संपूर्णं ॥......
१३ × ८.५ सें० मी०	३ (९३-९५)	८	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्गोस्वामि हितहरिवंशाष्टकं श्री शिवप्रसाद विरचितं संपूर्णं ॥
१३ × ८.५ सें० मी०	३ (१४१-१४३)	६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री हिताष्टक संपूर्णं ॥ ...
२१.८ × ९.९ सें० मी०	३ (३-४)	५	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
विविध विषय						
१	७ २६	अद्भुतरामायण (उत्तरकांड ७ वाँ सर्ग)			० का०	दे०
२	५२४१	अद्भुतरामायण (उत्तरकांड)			मि० का०	दे०
३	४७१०	अधिकारसंग्रह	वेंकटनाथ वेदांताचार्य		दे० का०	दे०
४	७४८९	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
५	९५८	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
६	७२४१	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
७	२३२४	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
८	७०८०	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·३ × १०·६ सें० मी०	१३ (२,११,१३-२३)	६	३२	अपू०	प्राचीन	इत्यद्भुतोत्तरे सप्तमः सर्गः ॥
२८·३ × १३ ६ सें० मी०	४३ (१–४३)	१२	३२	पू०	प्राचीन सं०१८७८	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकियेशतटो संहितायां सारोद्धर श्रीमद्भुतोत्तर कांडे विंशतिकः सर्ग २० ॥ संवत् १८७८ शाकेस १७४३ वैशाप मासे स्तिते पक्षे चतुर्थ्यं शनिवासरे नथनमिश्रद्विजे···
२८ × ११·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री कवितार्किक सिंहस्य सर्वतंत्र स्वतंत्रस्य श्री मद्वेंकट नाथस्य वेदांताचार्य्यस्य कृतिषु अधिकार संग्रहस्तोत्रं समाप्तं···
२४ × ११·१ सें० मी०	३ (१–३)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
३४·४ × १७·६ सें० मी०	२५६ वा०का० २७ अयो० ,, ४४ अरण्य ,, ३३ किष्किं ,, ३४ सुंदर ,, २० युद्ध ,, ६४ उत्तर ,, ३७	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इती श्री मध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे नवमः सर्गः ॥ श्रीसीतापते रामचंद्रार्पणमस्तु ॥ शभंभव्तु ॥
३२·६ × १७·५ सें० मी०	१०८२	१४	२६	अपू० (उत्तरकांड) जीर्णशीर्ण एवंखंडित	प्राचीन	इति श्री मदध्यत्मरामायणे उत्तरषंटे वालकांडेष अध्यायः × × × × (पत्र सं० १८)
३४ १ × १७·५ सें० मी०	२४ (१–२४)	१४	४०	अपू०	प्राचीन सं०१६२०	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे नवमःसर्गः ······ संवत् १६२० ॥
३२·५ × १५·७ सें० मी०	१०३ (अयोध्याकांड)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे ऽयोध्याकांडे नवमः सर्गः ॥६॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९	४८७५	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१०	५२४८	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
११	११४	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१२	९८	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१३	३५९४	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१४	२७५२	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१५	४१८०	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१६	४४५३	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१·९ × १२ सें० मी०	७५	१३	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामाहेश्वर संवादे युद्धकाण्डे षोडशः सर्ग-स्ततसमाप्तः ॥·········
२७·८ × १४·२ सें० मी०	७ (१–७)	१३	३१	अपू०	प्राचीन	लिखित्वा पुस्तके घ्यात्मरामयणमशेषत्: ॥ (पत्रसंख्या-२)
३०·७ × १४·२ सें० मी०	२२ (१–२२)	१३	३९	अपू०	प्राचीन	
३०·५ × १४·१ सें० मी०	१२८ (२३–१५०)	१२	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यातमरामायणें उमामाहेश्वर संवाः उत्तरकांडेय नवमः सर्गः समाप्त अध्यात्मरामायणं ज्येष्टमासासिते पक्षे चतुर्दश्यांदिने गुरौ भवानी सिंह केनेदं लिखिताध्यातमंमुत्तमं ॥
२८·५ × १३·८ सें० मी०	१५१	१२	४७	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमदध्यात्म रामायणे उत्तरकांडे सप्तमोध्याय (पत्रसंख्या–१८४) ॥
२३ × १४·६ सें० मी०	१५	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२३.२ × १५ सें० मी०	३	११	३१	अपू०	प्राचीन	
३५·१ × १४·१ सें० मी०	१९६ (१-१७३, १७७-१९९)	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं० १८४६	इति श्रीमदध्यात्मरामायने उमामाहेश्वर सवादे उत्तरकाण्डे नवमोध्यायः ॥ समाप्त उत्तरकांडः ॥ ··· ··· संवत् १८-४६ मि० श्रावने मासे कृष्ण क्षे १३ सोमेकः समाप्तं सुभंभूयात्··· ॥

(सं०सू०४–४९।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७	४४२५	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१८	४०६१	अध्यात्मरामायण			दे० का०	दे०
१९	६६६५	अध्यात्मरामायण (१-७कांड)			मि० का०	दे०
२०	४६४१	अध्यात्मरामायण (अयोध्याकांड,बालकांड)			दे० का०	दे०
२१	५०८४	अध्यात्मरामायण (अयोध्याकांड)			दे० का०	दे०
२२	२३३६	अध्यात्मरामायण (अयोध्याकांड)			दे० का०	दे०
२३	४८२६	अध्यात्मरामायण (अरण्यकांड)			दे० का०	दे०
२४	७५४५	अध्यात्मरामायण (अरण्यकांड)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.६ × १६.२ सें० मी०	१३६ (१--३, ४५-१४०)	१६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे नवमः सर्गः ९समाप्तं अध्यात्मरामायणं जेष्ट मासेसिते पक्षे प्रतिपदय्रविवासरे मतावद्विजेनेद लिखिताध्य त्ममुत्तमं यादृशं पुस्तकं दृष्टा तादृशं .... ॥
३२.५ × ११.४ सें० मी०	२९ (१-२४, ३१, ३३-३४, ५५-५६)	८	३१	अपू०	प्राचीन सं० १९०२	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमासंवादे सुंदर कांडे पंचमसर्गः...माघ शुक्लअष्टमीवासर सं: १९०२ के राम सदासुष चाँपधरे रघुनायकसायकपाचहरि ॥
३१.६ × १३.३ सें० मी०	१२६ वा० का० से उ. का. तक क्रमशः १९, १६, ८, ८, ८, ३८, २९	१३	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायण क्षीरोदोन्मथितकार्ष्णिरामायण नवनीते सुमतिकृष्णशर्म्म संवादे उत्तर कांड द्वितायोध्याय. ॥ कांडः समाप्तः ॥ × × ×
२८.२ × १३.४ सें० मी०	२५ (१-२५)	११	३१	अपू०	प्राचीन सं० १८७९	इति श्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वर संवादे बालकांडे सप्तमोसर्गः ॥ बालकांड समाप्तं ॥ सवत् १८७९ मिति ज्येष्ट शुदि द्वितीया गुरुवासरे इदंबालकांड लिखितं नथमल्ल शुभ ॥
३०.५ × १५ सें० मी०	५ (८-१२)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे अयोध्यायाकांडे तृतीयोध्याय ॥३॥ × × × (पू० १०)
३४ × १५.५ सें० मी०	१० (१४-२३)	१७	६२	अपू०	प्राचीन	
३३.३ × १६ सें० मी०	५५ (२२-७६)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री अत्ममपाणे माहेश्वाराण्यडे दसमसर्गः... (पत्रसंख्या ७५) × × ×
३३.५ × १५.२ सें० मी०	१३ (१-१३)	१५	४०	पू० (जीर्ण-शीर्ण)	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे उत्तरखंडे श्री मदध्यात्म रामायनेउमा महेश्वर संवादे आरण्यकांडे दशमोध्यायः १० + ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष का संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	२३२१	अध्यात्मरामायण (अरण्यकाड)			का०	दे०
२६क	४३१७	अध्यात्मरामयण (उत्तरकांडपंचमसर्ग)			दे० का०	दे०
२६ख	३८३७	अध्यात्मरामायण (उत्तरकांड)			मि० का०	दे०
२६ग	२३२६	अध्यात्मरामायण (बा०कां०सप्तमअध्याय)			दे० का०	दे०
२६	३५६३	अध्यात्मरामायण (बालकांड)			दे० का०	दे०
२७	३९६८	अध्यात्मरामायण (बालकांडप्रथमसर्ग)			दे० का०	दे०
२८	४८२५	अध्यात्मरामायण (युद्धकांड)			दे० का०	दे०
२९	२३२३	अध्यात्मरामायण (लकाकांड)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४· × १७·५ सें० मी०	२१ (१-११,१३, १३-२१)	१३	३४	अपू०	प्राचीन सं०१९२०	इति श्रीमदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वरसंवादे आरण्यकांडे दशमः सर्गः । ·· सवत् १९२० मिति माघ कृष्ण ११- वार गुर ॥
२९·७ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	११	३०	पू०	प्राचीन सं०१९१४	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तर कांडे पंचमःसर्गः समाप्तः ५ संवत्१९१४ जेष्ठ मासे सिते पक्षे × × × × × ॥
२८·७ × १३·६ सें० मी०	७	१२	३३	अपू०	प्राचीन सं०१८५४	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तरकांडे नवमोऽध्यायः समाप्तः समाप्तोयं अध्यात्मरामायणः शुभमस्तु संवत्१८५४ नवम्यां शुक्रवासरे रामायनमः ॥
३४·३ × १७·५ सें० मी०	२० (१-१३,१६-१९)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१९१९	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे बालकांडे सप्तमोऽध्यायः ॥ ··संवत् १९१९ चइत्रमासे'सिते पक्षे'···॥
२८·५ × १३·६ सें० मी०	१६ (१०–२५)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे बालकांडे पंचमोध्यायः (पत्रसंख्या १०)
३४·३ × १३ सें० मी०	८ (१–८)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर-संवादे बालकांडे श्रीरामहृदयेनाम-प्रथमः सर्गः ॥(पत्रसंख्या ७) × ×
३१·५ × १५·८ सें० मी०	४४ (१–४४)	११	४१	अपू०	प्राचीन	इतिमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे युद्धकाण्डे द्वादससर्गः ॥······
३४·२ × १७·५ सें० मी०	४३ (१-११,११, १३-४१,४३, ४३)	१३	३६	अपू०	प्राचीन सं०१९१९	इति श्री मदध्यात्मरामायणे श्री ब्राह्माण्ड पुराणे उत्तरखंडे श्रीमदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर संवादे युद्धकाण्डे षाडशः सर्गः ॥ संवत् १९१९ ··· ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०	२३२५	अध्यात्मरामायण (सुंदरकांड)			मि० का०	दे०
३१	७५१०	अध्यात्मरामायण(सटीक)			दे० का०	दे०
३२	६६८१	अध्यात्मरामायण सटीक)			मि का.	दे.
३३	६१६६	अध्यात्मरामायण(सटीक) (कि., अ.,युद्ध., उ.कांड)			दे० का०	दे०
३४	७५६६/२	अन्योक्ति			मि० का०	दे०
३५	४२८२	कलिचरित्र	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०
३६	७०२७	कुंताप ?			दे० का०	दे०
३७	५११६	गणेशनाममाला			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·२ × १७·५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं० १९१९	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे सुंदरकाण्डे पंचमः सर्गः ·· ··· संवत् १९१९ सुभमस्तु ॥
३०·६ × १५·८ सें० मी०	१०५ वा० का० ३६ अरण्य०,, ३१ किष्किं०,, ३६ सुंदर० ,, २१ युद्ध० ,, ७१	१५	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर संवादे युद्धकांडे षोडशः सर्गः १६ युद्धकांडे समाप्तं कांडे युद्धात्मके × × × × ॥
२९·५ × ११·६ सें० मी०	३८१	८	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे नवमः सर्गः··· ······ ···।
३५ × १७·४ सें० मी०	१८६	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × १४·८ सें० मी०	२ (१–२)	१७	२२	अपू०	प्राचीन	
२०·२ × ९·२ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२१	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति श्री मद्रामप्रसाद मिश्र विरचितं कलिचरितं समाप्तम् ॥ सम्वत् १९११ भाद्रकुस्न प्रतिपत् बुधवाशरे ॥
२२·४ × ८·४ सें० मी०	६ (१–६)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति कुंतापः समाप्तः ॥
१०·८ × ७·८ सें० मी०	४ (१–४)	७	१०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तुपर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८	७४१३	गुरुपंरपरा			दे० का०	दे०
३९	६१६९	जैन-गुरुपरंपरा			दे० का०	दे०
४०	७४७८/२	दत्तात्रेयोक्ति			दे० का०	दे०
४१	६२०३	नामावली			दे० का०	दे०
४२	४८५६	प्रशस्तिकापद्धति	बालकृष्णत्रिपाठी		दे० का०	दे०
४३	५३४०	प्रशस्तिसंग्रह			दे० का०	दे०
४४	६५६१	प्रस्तावरत्नाकर	हरिदास		दे० का०	दे०
४५	७६५६	बादशाही समयं?			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	[illegible]	[illegible]
१५·८ × ९·७ सें० मी०	६ (१–६)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री गुरुपरम्परा × × × ×॥
२९·५ × १२·१ सें० मी०	२ (२–३)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
१६·३ × ९·९ सें० मी०	२ (३५–३६)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं०१८७५	इति दत्तात्रयोक्ति संपूर्ण ॥ सं०१८७५ साके १७४० ॥
२६·२ × १४·७ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२८	पू०	प्राचीन	
२७ × ११·३ सें० मी०	२० (१–२०)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१९१३	इयंप्रशास्तिकाशिका समस्तदुखःखनाशिका रसज्ञतुष्टयेकृतात्रिपाठिबालकृष्णकैः ·········इदिप्रशास्तिकापद्धति समाप्तिमगमत् ········ संवत् १९१३ आषाढ कृष्णअमावस्यां सौम्यवासरे तद्दिने विश्वनाथे दंने लिखितम् ॥शुभम्॥
२५·२ × १०·३ सें० मी०	११ (५–१५)	९	४०	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १०·४ सें मी०	२३ (१–२३)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं०१८७५ सं०१८४५	इति श्री हरिदास विरचिते प्रस्तावरत्नाकरे अन्यापदेशः परिच्छेदः······· संवत् १८७५ (पृ०-१२) इति श्री प्रस्ताव रत्नाकरे हरिदास विरचित समाप्तमगमत् सं० १८४५ भाद्रपद कृष्ण ११ रवौ (–उपसंहार)।
९·८ × ११·१ सें० मी० (सं०सू०४-५०)	३ (७–९)	७	२०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६	६२०१	भक्तिरत्नावली	विष्णुपुरी		दे० का०	दे०
४७	६६८४	भक्तिरत्नावली	विष्णुपुरी		दे० का०	दे०
४८	७०४९	भक्तिरत्नावली (सिद्धांत संहिता हिंदीटीका)	परमहंसविष्णुपुरी		दे० का०	दे०
४९	६०४९	भगवद्भक्तिविवेक (द्वितीयप्रकरण)	अनंतदेव		दे० का०	दे०
५०	६३०८	भागवतटिप्पणी			दे० का०	दे०
५१	५८६६	भागवतामृत	विष्णुपुरी		दे० का०	दे०
५२	५६०१	महारासउत्सव			दे० का०	दे०
५३	७११७	मोक्षधर्मसंग्रह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १३·६ सें० मी०	३० (१–३०)	११	३०	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति श्री मत्पुरुषोत्तम चरणारविंद कृपा मकरदविद प्रान्मीलितविवेकतैर भुक्त परमहंस विष्णुपुरी ग्रथीतायां श्री मद्-भागवतामृताब्धिलब्ध भगवद्भक्ति रत्नावली त्रयोदश विरंचनं १३ संपूर्ण संवत् १८८१ × × ॥
१६ × १० सें० मी०	१८ (१से२०तक स्फुट पत्र	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पुरुषोत्तमचरणारविंदकृपा मकरंद विदुप्रोन्मीलित विवेक तैरभुक्त परमहंस विष्णुपुरी ग्रथितायां श्रीभगवता मृताब्धि लब्ध श्री भगवद्भक्ति रत्नावल्यां द्वितीयं विरंचनं ॥२॥ ······ (पत्र सं० २०)
२१ × १०·६ सें० मी०	१०१ (२-९७,१०० १०४)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पुरुषोत्तमचरणारविंदकृपा-मकरंदप्रोन्मीलितविवेकतैरभुक्त पर-महंस विष्णुपुरी ग्रंथिनायां श्रीभागतामृताब्धिलब्धिश्रीभगवद्भक्तिरत्नावल्यां प्रथमं विरंचनं × × (पृ० ३३)
२५·६ × १२·४ सें० मी०	१६ (१–१६	११	८	पू०	प्राचीन	इति श्री मदापदेव सूनुना अनंतदेवेन कृते भगवद्भक्ति विवेके हरिभक्ति फल निरुपणं नाम द्वितीय प्रकरणं ॥
३८ × १५·८ सें० मी०	२० (१–२०)	१५	४६	अपू०	प्राचीन	इति दशमें टिप्पण्यां सप्तचत्वारिंशः ॥ ४७ ॥
३२·२ × १०·७ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	५८	पू०	प्राचीन	इति श्री पुरुषोत्तमचरणाविंद विष्णुपुरी ग्रंथितायां श्री भगवतामृताब्धिलब्ध त्रयोदश विरचनं ।। शुभमस्तु ।। ··· ···
२७ × १३· सें० मी०	१६ (१–१६)	६	३६	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री मद्धनुमत्संहितायां परमरहस्ये महारासोत्सवे श्री हनुमदगस्त्य संवादे पंचमोध्यायः ॥ ॥ सवत् १८७२ ॥
३६·२ × १६·८ सें० मी०	१ खर्रा	४३	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	तिथि
१	२	३	४	५	६	७
५४	४६३५	रचनाविधान (कुशल लेखन प्रकार)			दे० का०	दे०
५५	७०६६	राधामाधवसेवा पद्धति (सटीक)	जगन्नाथ	गोविंद	दे० का०	दे०
५६	५६८८	रामतत्वार्थदीपिका			दे० का०	दे०
५७	६१४४	रेखागणित	द्विजसम्राट् जगन्नाथ		दे० का०	दे०
५८	६०८१	लघुभागवत	मधुसूदन		दे० का०	दे०
५९	२५२०	वालमीकिरामायण			मि० का०	दे०
६०	११५	वाल्मीकिरामायण			दे० का०	
६१	१७२७	वाल्मीकि रामायण (१–बालकांड) (२–अयोध्याकांड) (३–आरण्यकांड) (४–किष्किंधाकांड) (५–युद्धकांड) (६उत्तरकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·७ × ११·० सें० मी०	८ (१–८)	१३	४०	पू०	प्राचीन	अथ कुशल लेखन प्रकार. ॥ ··· ··· ··· (पत्र संख्या ७)
२२ × १२·८ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री वंश्यालीप्रसादाप्तनिकुंज स्वामिनी चरण सरोरुह चिन्मकरंदलुब्ध सच्चंचरीक जगन्नाथ कृत सेवापद्धतिः पूर्तिमगात् । पूजा पद्धति सटीक संपूर्णम् ॥ ···
२९ × १३·५ सें० मी०	७ (१–७)	९	२७	पू०	प्राचीन सं० १८९२	इति श्री तत्वार्थ दीपिका समाप्ता शुभ मस्तु मंगल ददातु संवत १८९२ मुकाम श्री चित्रकूट··· ···
१८·६ × १३·५ सें० मी०	३४	११	१३	अपू०	प्राचीन	तस्य श्री जयसिंहस्य तुष्टैचर चयति स्फुटं द्विज सम्राट् जगन्नाथो रेखागणित मुत्तमं ६··· (पत्रसंख्या–२)
२३·३ × १२·४ सें० मी०	४३ (१–४३)	५	१८	पू०	प्राचीन	हरिलीला विवेकोयं रामराजस्य वेशमनि कटके रवयांचक्रे तुष्टेयें हेमाद्रिणासतां ॥ ॥ सरस्वती श्री मधुसूदनेन निव्यूँढ मेतद्बुधमोदनेन जतः समस्तोपि रसादनेन ब्रजेशभक्ति ब्रजतादनेन ॥५॥ ···
३० × १४ सें० मी०	५ (१-२,५-७)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	इति श्री हरिवर्मा वेशया द्वादशः ॥
३३·६ × १४ सें० मी०	११ (१–११)	१२	५८	अपू०	प्राचीन	
३०·४ × १३·५ सें० मी०	७७३ (१–८४) (२–१६४) (३–८३) (४–९४) (५–२०७) (६–१३९)	११	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या हस्तलेख की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२	२७ . ३	वाल्मीकिरामायण (संस्कृतटीकासहित) (१ बालकाण्ड २ अयोध्याकाण्ड ३ किष्किन्धाकाण्ड ४ सुन्दरकाण्ड ५. युद्धकाण्ड ६ उत्तरकाण्ड)	वाल्मीकि	देवरामभट्ट	दे० का०	दे०
६३	३७०६	वाल्मीकिरामायण (१–७ कांड)			दे० का०	दे०
६४	२२७६	वाल्मीकिरामायण			दे० का	दे०
६५	१ , १	वाल्मीकीरामायण (तिलकटीकायुक्त)	वाल्मीकि	नागेशभट्ट	दे० का०	दे०
६६	५६१८	वाल्मीकिरामायण (उत्तरकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
६७	५९ ५	वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकांड सटीक)	वाल्मीकि		मि० का०	दे०
६८	२२६१	वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकांड (संस्कृतटीका सहित)			दे० का०	दे०
६९	६२६०	वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकांड सटीक)	वाल्मीकि		मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५·२ × १३ सें० मी०	१३.१ १; १८३; १-३१३; १-१५७; १-१८४; १-३५०; १-२२०	१२	४९	अपू०	प्राचीन सं०१.१५	इति श्री मज्जानकीरमणपदपंकज परिचरणपरायण शिलालपाठकपादानुपायि भट्टदेवरामसंगृहीते श्रीमद्रामायणीय विषमपद व्याख्याने उत्तरकांड समाप्तिमगत् ।। शुभमस्तु संवत् १९१५ मंगल ।।
२५·५ × ११·७ सें० मी०	८८८	१५	४१	पू०	प्राचीन सं०१७९८	इत्यार्षे श्रीरामायणे आदिकाव्ये श्री वाल्मीकीये चतुर्विंशति साहस्त्रिकायां संहितायां श्रीमदुत्तरकांडे स्वर्गारोहणंनाम दशोत्तर शततम: सर्ग: ।। ११० × × संवत् १७९८ शाके १६६३ प्रजापतिनाम संवत्से आश्विन शुद्ध सप्तम्यां इंदुवासरे···
२१·४ × ९·५ सें० मी०	१७ (१-१७)	४	२४	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षेरामायणे वाल्मीकिकीये प्रथम सर्ग: ।। श्री रामायनम: ।।
३४·३ × १६·१ सें० मी०	वा.१७७; अ १८६; कि० ६० (१-५८, ६१-६१; यु० ३८३ (१०८, १०८) (४३–६७)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
३३ × १८·४ सें० मी०	२५ (१–२५)	१४	४७	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीयेशत कोटि संहितायां अद्भुतोत्तरकांडे श्री रामकृत सीता सहस्त्रनामकथनमष्टादश सर्ग:
३४·३ × १६·८ सें० मी०	३४२ (१-३३७ + ५)	१०	३५	पू०	प्राचीन	इत्यार्ष रामायणे वाल्मीकीये अयोध्या कांडे एकोनत्रिंशाधिकशततम: सर्ग: ।। ११९ ।। अयोध्याकांडे समाप्त: ।।
३३·८ × १६·१ सें० मी०	२६० (१–२६०)	१४	३५	अपू०	प्राचीन	
३३ × १६·५ सें० मी०	२१७ (१-२१६, २२०)	१०	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८९८	इत्यार्षे श्रीमद्रारामायणे वाल्मीकीये अयोध्याकांडे पंचाश: सर्ग: ।। (पत्रसं०-२१६) मिती ववार वदि ।३०।।संवतु १८।।९३।। मुकाम श्री चित्रकूट-(पत्र-सं० २२०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालयकी आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०	६२६१	वाल्मीकि रामायण अयोध्याकांड, उत्तरार्द्ध, सटीक (पितांम्बर टीका)	वाल्मीकि	कौशिक गोविंदराज	दे० का०	दे०
७१	७२७४	वाल्मीकिरामायण (अयोध्याकांड)			दे० का०	दे०
७२	२६६०	वाल्मीकि रामायण किष्किंधाकांड (संस्कृत टीकासरित)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
७३	२६६१	वाल्मीकिरामायण-अरण्य कांड (सटीक)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
७४	५७०६	वाल्मीकि रामायण अरण्यकांड (सटीक)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
७५	५५५५	वाल्मीकि रामायण (अरण्यकांड)	वाल्मीकि		·· का०	दे०
७६	६१९७	वाल्मीकिरामाण (अरण्यकांड, सटीक)			दे० का०	दे०
७७	४२४४	वाल्मीकि रामायण उत्तरकांड			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	*अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३ × १६·५ सें० मी०	२३६ (१–२३६)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१८९२	इति श्री कौशिक गोविंदराज विरचिते श्री रामायण व्याख्याने अयोध्याकांड व्याख्या समाप्तं संवत् १८९२ पु: श्री वैष्णव आत्माराम जी की······
३३·५ × १५·८ सें० मी०	७ (२५,५८-६०, ८०-८२)	१६	४०	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्रीमद्रामा० वाल्मी० अयो० एकोन अष्टतितम: सर्गा:······
३४·२ × १७·३ सें० मी०	१७० (१–१७०)	१३	५१	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये किष्किधाकांडे सप्तषष्टित्तम: सर्ग: ॥६७॥ समाप्त:
३४·२ × १७·३ सें० मी०	१८७ (१–१८७)	१२	५०	पू०	प्राचीन सं०१९३०	इतिमणिमेखलायां आरण्यकांडे पच-सप्ततितम: सर्गं ॥७५॥ समाप्त: ॥ ·······संवत् १९३०
३४·४ × १६·७ सें० मी०	१४७	१४	४४	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये आरण्य कांडे पंच सप्ततितम: सर्गः ॥
३०·५ × १३·२ सें० मी०	१० (३,७८,९०-९२,१०१,१०९,११२-११३ १२०)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे रावण भर्त्सनं नाम सर्ग: ॥ ॥ (पत्रसंख्या–७८)
३३·२ × १६·६ सें० मी०	२६३ (१–२६३)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये आरण्यकांडे पंचसप्ततितम: सर्ग: ७५ ॥
३५·७ × १३·८	१५२	१०	४६	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू०४·५१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	२६५८	वाल्मीकिरामायण उत्तरकांड-सटीक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
७८	५५६३	वाल्मीकिरामायण किष्किंधाकांड, सटीक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
७९	५९६६	वाल्मीकिरामायण किष्किंधाकांड, सटीक	वाल्मीकि	गोविंदराज	दे० का०	दे०
८०	७२०५	वाल्मीकिरामायण (किष्किंधाकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
८१	७६३८	वाल्मीकिरामायण (किष्किंधाकाण्ड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
८२	७२५२	वाल्मीकिरामायण (बालकांड-प्रथमसर्ग)			दे० का०	दे०
८३	४६३९	वाल्मीकिरामायण (बालकाण्ड-प्रथमसर्ग)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
८४	४४४०/१०	वाल्मीकिरामायण (बालकांड-प्रथमसर्ग)			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·७ × १५·७ सें० मी०	२०५ (१–२०५)	१२	५६	अपू०	प्राचीन	
३३·५ × १८ सें० मी०	४४ (८४,९८-१४०)	१४	३८	अपू०	प्राचीन सं० १८८५	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये किष्किधाकांडे सप्तषष्टितमः सर्गः ॥··· क्वार सुदी ॥ ६ ॥ संवत् ॥ १८८५ ॥ मुकाम चित्रकूट ॥ लिष्यतं ॥ नारायण दास ॥ पुस्तक व्रंदावनवासी गुसाई व्रंदावनकी ॥
३३ × १६·४ सें० मी०	२१९ (१–२१९)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामायणे किष्किंधाकांडे व्याख्याने मुक्ताहारे सप्तषष्टितमः सर्गः इत्थं शठारि गुरुवर्य्य पदारविंद सेवार-साधिगत सर्व रहस्य वोधः। गोविंदराज विवुधः प्रमुदे वुधाना कैष्किंधकांड विषया विततान टीकां ॥
१७ × ११·६ सें० मी०	५ (१,३-६)	९	३४	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये आदि काव्ये किष्किंधाकांडे सप्तषष्टि-तमः सर्गः ॥
२८·३ × १२·४ सें० मी०	६ (४८-५३, ५५)	१२	३४	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे दिग्विजये दक्षिदिग्व-र्णनं नाम सर्गः ॥ × × (पत्रसं० ५३)
१९·४ × १० सें० मी०	२१ (३-८,१०-२४)	५	१४	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये बालकांडे प्रथमः सर्गः श्री सीताराम चंद्रार्पणमस्तु।
१४ × ८·३ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१८	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे रामायणे आदिकाव्ये श्रीमत् बालकांडे नारदवाक्ये वालिमकिना प्रौक्ते संक्षेपेनाम प्रथमसर्गः समाप्तोय सर्गः···
१२·४ × ९·१ सें० मी०	१६	९	१४	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये नारद वाक्ये वालकाण्डे प्रथम सर्ग समाप्ते श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	४७१०	वाल्मीकिरामायण (बालकांड,प्रथमअध्याय)	वाल्मीकि		मि० का०	दे०
८६	६१९६	वाल्मीकिरामायण (बालकांड-सटीक)			दे० का०	दे०
८७	२३८२	वाल्मीकिरामायण (बालकांड-सटीक)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
८८	६६६८	वाल्मीकीयरामायण (बालकांड-प्रथमसर्ग)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
८९	२३२८	बाल्मीकिरामायण (बालकांड)			दे० का०	दे०
९०	३३४८ / ४६	वाल्मीकिरामायण (बालकांड-प्रथमसर्ग)			दे० का०	दे०
९१	३१६२	वाल्मीकिरामायण (बालकांड-प्रथमसर्ग)			दे० का०	दे०
९२	४४५४	वाल्मीकिरामायण (बालकांड)		महेश्वरतीर्थ	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·५ × १६ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	२६	पू०	आधुनिक	इत्यार्पे श्री मद्रामायणे आदिकाव्ये वाल्मीकीये वालकांडे संक्षेपोनाम प्रथमोध्याय: · · ·।
३२·७ × १६·५ सें० मी०	२८५ (१–२८५)	११	३७	पू०	प्राचीन सं०१८९२	इति श्री वालकांड संपूर्ण सुभमस्तु आपाढ वदि ५ संवतु १८९२ पुस्तक श्री वैष्णव रामजी की लिषित रघुनाथ दासेन सुभस्यान श्री चित्रकूटमध्ये रामधाम ।।
३४ × १७ सें० मी०	२७८ (२–२७८)	११	४६	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्री रामायणभूषणे वालकांड-व्याख्याने मणिमंजिरे सप्तसप्तितम: सर्ग ७७· · · इति वालकांड संपूर्ण सं० १९०४
२८·७ × ११·४ सें० मी०	७ (१–७)	९	३१	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदि काव्ये संक्षेप रामायणं नाम प्रथम सर्ग: ।।
३४·५ × १७·१ सें० मी०	९५ (१-७१,७३-९६)	१२	३१	अपू०	प्राचीन सं०१९३२	इत्नार्षे श्री रामायणे वाल्मीकिये वाल-कांडे · · · · संवत् १९३२ मासोत्तमेमासे फाल्गुन मासे व शुक्लपक्षे · · · · · ·।।
१२·५ × ८·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	१५	पू०	प्राचीन	इत्यार्थे श्रीमद्रामायणे आदि काव्ये वाल्मीकेय बालकांडे शंक्षेपोनाम प्रथम: सर्ग: श्रीराम: ।
२६·४ × ११·६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२८	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये बाल-कांडे संक्षेपोनाम प्रथम: सर्ग: ।।
४०·२ × १६·१ सें० मी०	१०० (१–१००)	१३	५१	अपू०	प्राचीन सं०१८८३	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री नारायण तीर्थ स्वामी शिष्य महेश्वरतीर्थ विरचित श्रीरामयण तत्व दीपिकायां वालकांडे सप्ततितम: सर्ग: संवत् १८८३ कार्तिकसु १ वदि १३ रविवासरे गणेश उपाध्याय लिषित् ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	
१	२	३	४	५	६	७
९३	४०१८ / ६	बाल्मीकिरामायण (संक्षिप्त बालकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
९४	४१५६	वाल्मीकिरामायण (सप्तमसर्ग)			दे० का०	दे०
९५	२६५६	वाल्मीकिरामायण युद्धकाण्ड–सटीक	बाल्मीकि		का०	दे०
९६	७५४४	वाल्मीकिरामायण (युद्धकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
९७	६१९२	वाल्मीकिरामायण (युद्धकांड–सटीक)			दे० का०	दे०
९८	५२५४	बाल्मीकि रामायण (युद्धकांड)	वाल्मीकि		दे० का०	दे०
९९	५७२१	वाल्मीकिरामायण (सटीक)			दे० का०	दे०
१००	२६६२	वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्ड–सटीक	वाल्मीकि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·१ × १६·१ सें० मी०	१३	१३	११	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामाने आदिकावै वाल्मीके वालकांडे छंछेपना सपूरा ॥
१६·४ × ८·५ सें० मी०	४	६	१९	अपू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे युद्धकांडे सप्तमः सर्गः ॥ श्री × × × × ॥
३३·६ × १५·६ सें० मी०	३२६ (१–३२६)	१२	४९	पू०	प्राचीन	... श्री मदवाल्मीकीये आदि काव्ये श्री मद्रामायणे चतुर्विसत्सहस्र संहितायां श्री मद्युद्धकांण्डे पंचविंशोन्हि वर्त्तमान कथाप्रसंगः समाप्त ....
३३·७ × १६ सें० मी०	५६ (१–५६)	१५	४४	अपू० (जीर्णशीर्ण)	प्राचीन	इत्यर्षे रामायणे वाल्भीकीये युद्धकांडे सप्त चत्वारिंशति तमोः सर्गः ...... (पत्रसंख्या-५६)
३३·६ × १६·६ सें० मी०	५२० (२–५२१)	११	३९	अपू०	प्राचीन सं० १८९३	इति श्री गोविंद राज विरचिते रामायण तिलके श्री मद्युद्धकाण्डे व्याख्याने रत्न किरीटे एकत्रिंशोत्तरशततम सर्गः १३१ ॥ युद्धकांड समाप्त सुभमस्तु मिति सावन सुदि ।१५ ॥ संवतु १८९३ लितं रघुनाथदासेन पुस्तकं श्री वैष्णव आत्माराम जीः ॥
२७ × ११·४ सें० मी०	५ (१–५)	६	२३	पू०	प्राचीन	इत्यार्षेरामायणेयुद्धकांडे सप्तोत्तरशततमः सर्ग सप्तोत्तर सप्ततितमः सर्ग १०७ ... ॥
३५·५ × १४ सें० मी०	१३०४ १८०,३१० १४४,१७२ ३१६,१८२	१२	४७	अपू०	प्राचीन	
३४ × १६·२ सें० मी०	१६४ (१–१६४)	१३	५२	पू०	प्राचीन	इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये सुंदरकांडे अष्टषष्टितमः सर्गः ॥६८॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	२३२६	वाल्मीकिरामायण (सुंदरकांड)			दे० का०	दे०
१०२	२३४३	वाल्मीकिरामायण सुंदरकांड-सटीक			दे० का०	दे०
१०३	२६७४	विविधसंग्रह			दे० का०	दे०
१०४	७११३	वैतालपंचविंशत्कथानक	शिवदास		दे० का	दे०
१०५	६७३०	शंकराचार्यप्रादुर्भाव			दे० का०	दे०
१०६	६४७४	शांतिचरित्र			दे० का०	दे०
१०७	५५११	शालिहोत्र			दे० का०	दे०
१०८	५४३५	संस्कृततर्कपरिपाटी			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४·७ × १७·६ सें० मी०	११३ (१-११०, ११२-११४)	१४	३३	अपू०	प्राचीन सं०१६१६	इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये सुंदरकांडे अष्टषष्टितमः सर्गः ॥६८॥ मंदरकांड समाप्त ॥··· संवत् १६१६ ···॥
३३·८ × १६·८ सें० मी०	८२	८	३६	अपू०	प्राचीन	
१५ × १० सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १० सें० मी०	७० (१–७०)	६	३१	पू०	प्राचीन सं०१८१६	इति शिवदास विरचितायां पंचवित्कथानकं समाप्तम् ॥ संवत् १८१६ सके १६८१ जेष्टशुद्ध ५ गुरुवासरे समाप्तः।
२४ × ११·६ सें० मी०	१	६	३९	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य प्रादुर्भावः संपूर्णः ॥
२५·४ × १०·३ सें० मी०	५ (३१–३५)	१५	५०	अपू०	प्राचीन	
१३·७ × १०·१ सें० मी०	११ (५-१२,१०, ११,१२)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	तेजो वाह्यं मृदुगजैः स्वल्पैर्लक्षित लक्षणात् ॥ वीक्ष्य शक्रं जगादेशं शालिहोत्रो महामुनिः ॥२॥
२१·२ × १०·२ सें० मी०	५ (१–५)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति संस्कृत तर्क परिपाटी ॥ ····· (पत्र सं०-४)

(सं०सू०४-५२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	७-२६	꣸ संस्कृतमंजरी			दे० का०	दे०
११०	४५ · ३	꣸ संस्कृतमंजरी	वरदभट्ट		दे० का०	दे०
१११	५४६४	सप्तशतिकास्तोत्र मंत्र-संख्यासूची			दे० का०	दे०
११२	७८३७	स्फुट श्लोकसंग्रह (रामपरक)			दे० का०	दे०
११३	५४४७	स्वरोदय			दे० का०	दे०
११४	५३११	हरिप्रणतपादुकाप्रचार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०·१ × १२·७ सें० मी०	३ (१–३)	१४	४६	पू०	प्राचीन सं० १८३१	इति श्री संस्कृत मंजरी समाप्त संवत् १८३१ मार्ग शीर्षे शुक्लपक्षे तिथौ ८ शनौ शुभं ॥
२२·५ × ९·१ सें० मी०	१९ (१–१९)	९	३१	पू०	प्राचीन सं० १८१९	कृत वरदभट्टेन गीर्वाणपद मंजरी इति श्री संस्कृतमंजरी संपूर्ण शुभस्तु संवत १८१९ लिखितं काश्यां ॥
२६·२ × १२·३ सें० मी०	२ (१–२)	११	३१	पू०	प्राचीन	
१५·९ × ९·२ सें० मी०	७ (१-४, ६-८)	५	१२	अपू०	प्राचीन	
२५·२ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२४·५ × १३ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२९	अपू०	प्राचीन	इति हरिप्रणत पादुका प्रचारे प्रथमो-ल्लास: × × ×

परिशिष्ट

विशिष्ट ग्रंथों का विवरण

(१) आयुर्वेद-अष्टांग हृदय : आधार-देशी कागज, लिपि-देवनागरी, आकार-२५·५ × १०·७ सें०, अपूर्ण, पत्र सं० ३८३, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)-११, अक्षर (प्रति पंक्ति)-३५, परिमाण (अनुष्टुप् में)-२७३६, प्राचीन, प्राप्ति साधन-दान, सं० सं०-४३८।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥ रागादिरोगान्सततानुषक्तानशेष कायप्रसृतानशेषान् । औत्सुक्य-हारतिदान् जघानयो पूर्व वैद्याय नमोस्तुतस्मै । अथातः आयुकामीयमध्यायं व्याख्यास्यामः १ ॥

अंत --- हृदयमिवहृदयमेतत्सर्वागमैंदवाग्मयपयोधेः । दृष्ट्वा यच्छुभमाप्तंशुभमस्तुपरंततो-जगतः । इति वाग्भटतत्वागाग ...... गौमंडस्थ व्यास सूरनंदनेभ्यः साकाशादानीय वाग्भटोयं नाथजित्पाठकेनलिखितः ॥

विषय---(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)---रोगों के लक्षण एवं निदान।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत आयुर्वेद विषयक हस्तलेख अपूर्ण है। दे० सं० सं० ४३= क्र० सं० ८। मध्य के पृष्ठ अप्राप्त हैं। पुस्तक के अंत में एक लंबी अनुक्रमणिका है। इसका लिपिकाल सं० १७०७ एवं लिपिकार नाथजित्पाठक हैं। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं।

गुणरत्नमाला : आधार-देशी कागज, लिपि-देवनागरी, आकार-२३·२ × ६·५ सें०, अपूर्ण, पत्र सं० ७४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)-६, अक्षर (प्रति पंक्ति)-३१, परिमाण (अनुष्टुप् में)-१६०, प्राचीन, प्राप्तिसाधन दान; सं० सं० ४४० ।

आदि--× × ×दीपनीश्वास ज्वर कास क्रिमि प्रणत् ॥ ॥ अथ सेंविद्वय गुणाः ॥ ॥ पुस्तर्शिविस्तुमधुरा रसे पाके हि भा गुरुः । बल्यादाहहरी प्रोक्ता श्लेष्मला वातपित्त-जित् । कोलशिवी समीरघ्नी गुर्युष्मा कफपितकृत । शुक्राग्निसाद कृद्ल्पावद्ध-विद्गुरुः ॥

अंत—इति श्री मन्मिश्र लटकनतनय श्री मिश्रभाव विरचिता गुणरत्नमाला संपूर्णा ॥ ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६४६ समये चैत्र सुदी चतुर्थी रवौ ॥ ॥ श्री मन्जुलाल दीन-च्चत्रधरस्य संवत्सरे चतुस्त्रिशे ॥ ॥ कायस्थ श्री गौड़ाश्रय अचलदासात्मजमुकुंद दासेनलिखिथिराज दुट्ठी पुरे कवूलादेशे पट्टनसकरगंजे ॥ शुभंभवतु ॥

विषय---(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)-विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों एवं जड़ी बूटियों के गुणों का औषधिशास्त्र की दृष्टि से विवेचन । क्षीरदध्यादि के गुणों एवं दिनचर्यादि की भी व्याख्या ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है। प्रारंभ के बहुत से पत्र नहीं हैं, रचना-कार प्रसिद्ध आयुर्वेदग्रंथ 'भावप्रकाश' के प्रणेता श्री भावमिश्र हैं। यह भावप्रकाश का ही एक प्रकरण है। मुकुंददास इसके लिपिकार हैं। लिपिकाल सम्वत् १६४६

है। बीच के पृष्ठ स्याही से पुते हुए तथा सीलन के कारण क्षतिग्रस्त हैं। ग्रंथ बहुत प्राचीन है। दे० सं० सं० ४४०, क्र० सं० २६।

रसिक विनोद : आधार–देशी कागज, लिपि–देव नागरी, आकार–२७·८ × ११·२ सें०मी०, अपूर्ण, पत्र सं०–४५, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, अक्षर (प्रति पंक्ति) ३४, परिमाण (अनुष्टुप् में)–९५६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं० सं०–४२६५, क्र० सं०११६।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ प्रणम्य देव देवादि गणाध्यक्षमुमासुतं। चिकित्सार्णव मुन्मथ्य सारमेवोधृतंपुरा ॥१॥ उदीच्यां दिशि चाश्रित्यनान्मा...भपुरोमहान्। गोपालः क्षत्रियस्तत्र प्रकटो मे हरान्वये ॥२॥ तेन पुष्प समूहेभ्यो मकरंद इवालिना॥ गुरूणां कृपया तद्वन्मयासंचीयतेधुना ॥३॥ विनोदो नाम ग्रंथोयं रसिकेन प्रयोजितः॥ कौतुकं चाद्भुतं चात्र मानं दानं ददायकः ॥४॥

अंत——इति श्री गोपाल दास विरचिते रसिक विनोदे उत्तरषंडे कौतुकादिको नाम अष्टादशोध्यायः॥ । इति उत्तरखंड समाप्तं ॥ ॥ ··· ··· हिताय सर्वलोकानां व्याधीनां नाशनायच। रसिकानां विनोदाय ग्रंथोयंरचितं मया ॥२॥ दृष्ट्वा सुश्रुत वंगसेन चरकान् वृदं तथा वाग्भटं भूपोवापि रसेंद्र मंगलधनुर्द्धारं रसांसो निधि। ग्रंथोसौ सुषदायकः सुमनसां नान्माविनोदो रसो गोपालेन सुबुद्धिना विरचितो दृश्योभिषक् पुंगवैः ३। ··· ··· इति श्री मेहरा वंशावतंस श्री स्वामिदासात्मज गोपालदास विरचितो रसिक विनोद नान्माग्रंथोयं परिसमाप्तः॥ ॥ ··· संवत् १७५८ वरषे पौषवदि पंचमी ५ गुरुवासरे। षुजीनगरे वास्तव्याय श्रीमन्मिश्र जीवराजाय कश्यप गोत्राय तस्यात्मजेन गंगधरेण रसिक विनोदस्य पुस्तकं लिपितं आत्मपठनार्थं परोपकाराय च ॥ ...

विषय (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)——सुश्रुत, चरकादि प्राचीन वैद्यक ग्रंथों से संगृहीत सारभूत रोगनिदान, औषधि एवं रसायनादि निर्माण प्रक्रिया।

विशेष ज्ञातव्य——प्रस्तुत आयुर्वेद विषयक हस्तलेख खंडित है। प्रारंभ से लेकर अंत तक बीच के प्रायः सभी जगह के पत्र अनुपलब्ध हैं। मात्र ४५ पत्र बचे हैं। आदि और अंत सुरक्षित हैं। रचनाकार श्री गोपालदास एवं लिपिकार श्री गंगाधर हैं। लिपिकाल संवत् १७५८ है। यह एक संग्रह ग्रंथ है। लिपिकाल प्राचीन होने से यह महत्वपूर्ण है। दे० सं० सं० ४२६५ और विषय क्र० सं० ४९।

वीरसिंहावलोक : आधार–देशीकागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२४·६ × १० सें० मी०, अपूर्ण, पत्र सं–९५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ८, अक्षर (प्रतिपंक्ति) २९, परिमाण (अनुष्टुप् में) १३७८, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं० ४२६२, क्र० सं० १२३।

आदिः——मंथःषर्जूनमृद्वीकापृक्षाम्लाम्लीकदाडिमैः॥ पत्त्पकै शामलकैः सुप्तोमघविकारनुन्। पत्र संख्या २३ (७२ से ९५ तक)।

अंत——इति श्री तोमर वंशावतंस· · ॥ वीरसिंहदेव विरचिते ग्रंथो वीरसिंहावलोके ज्योतिशास्त्रकर्मविपाकायायुर्वेदोक्त प्रयोगे······। संवत् १५४४ समये भाद्र सुदि २

संख्याभरे ॥ अद्येह कालपी नगरे सुल्तान बहलोल साहिराज्ये ॥ सीमत्सहिजादे आलम पान राज्य प्रवर्तते ॥

विषय---(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)---आयुर्वेदोक्त निदान एवं रोग-चिकित्सा ।

विशेष ज्ञातव्य---यह हस्तलेख अपूर्ण एवं अत्यंत जीर्ण अवस्था में है। रचनाकार श्री वीरसिंह है। लिपिकाल संवत् १५८८ होने से ग्रथ की प्राचीनता एवं महत्ता स्वयंसिद्ध है। ९५ पत्रों के इस ग्रंथ में आदि के ७१ पत्र अनुपलब्ध हैं। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं हैं। दे० संग्रह संख्या ४२६२ और विषय क्रम सं० १२३ ।

शालिहोत्र (तुरग प्रशंसा प्रकरण) : आधार--देशी कागज, लिपि--देवनागरी, आकार २८·५ से० × १२·६ से०, परिमाण (अनुष्टुप् में)--१५५, पूर्ण, पत्र सं०--९, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, अक्षर (प्रति पंक्ति) १६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन-- दान, सं० सं--४५, क्र० सं० १८३ ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥ अथ तुरग प्रशंसा ॥ पुरा सपक्षा हरयो विचेरुः खेचराः किल । गंधर्वेभ्यः समुत्पन्नाः सदा प्रछंद चारिणः ॥१॥ तेजो वाद्यं यु मृगजैः सत्वैर्लक्षित लक्षणान् ॥ वीक्ष्य शक्रो जगादेदं शालिहोत्रं महामुनिं ॥२॥

अंत---विकसद सित नेत्रः स्निग्ध गंभीर हेषश्वरित चतुरगामी वायुवेगः सुसत्वः॥ सघन विपुल कायो भर्त्तुरादेशवर्ती समर विजय संपत्कारकः स्यात्तुरंगः ॥११५॥ शार्ङ्ग-धरस्यैते ॥ इति शार्ङ्गधर विरचितायां पद्धत्यां तुरग प्रशंसा ॥

विषय---(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)--अश्वों के प्रकार, रंग, जन्मस्थान-विशेष की उपयुक्तता, अश्वारोहण एवं अवरोहण, उनकी व्याधि एवं तुरग चिकित्सा आदि विषयों का प्रतिपादन; आयुर्वेदविज्ञान की अत्यावश्यक विधा 'पशु-चिकित्सा' से संबंधित ।

विशेष ज्ञातव्य---यह ग्रंथ आदि से अंत तक पूर्ण है। 'शालिहोत्र' नामक व्याधिविज्ञान-संबंधी ग्रंथ का एक लघु अंश 'तुरग प्रशंसा प्रकरण' के रूप में संगृहीत है। पंक्तियाँ स्पष्ट एवं कागज के एक ही ओर लिखी गई हैं। दे० स० सं० ४५ एवं विषय क्रम सं० १८३ ।

(२) उपनिषद्---बृहदारण्यकोपनिषद् (सटीक) : आधार--देशी कागज, लिपि--देवनागरी, आकार--१८·८ × १०·१ सेमी०, पूर्ण, पत्र सं० ४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, अक्षर (प्रति पंक्ति)--५१, परिमाण (अनुष्टुप् में)--१२८, प्राचीन, प्राप्तिसाधन--दान, सं० सं० ३९५६ क्र० सं० १०३ ।

आदि---श्री रामाय नमः ॥ पूर्वस्मिन्नध्याये जल्प न्यायेन सच्चिदानंदं ब्रह्म निर्धारितं ॥ इदानीं वाद न्यायेनतादवनिर्धारयितुमध्यायांतरमतारभ्यतेनक इति तत्र ब्राह्मणद्वयस्यावांतर संबंध प्रतिजानीतेऽस्यैतितमेव वक्तुं वृत्तं कीर्तयति ।

अंत---इति श्री परिव्राजक शुद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृतायां बृहदारण्यक-

भाष्य टीकायां अष्टमोध्याय: समाप्त: ।। संवत् १६४१ वर्षे आषाढ़ सुदी २ रवौ उदीच्यज्ञतीयनुपाध्याकेशवेनलेखितमिदं पुस्तकं जयतु ।। श्री शुभमस्तु ।।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––
बृहदारण्यकोपनिषदगत दार्शनिक सिद्धांतों का विशद विश्लेषण ।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है । श्री भगवदानंद ज्ञान ने बृहदारण्यकोपनिषद पर अपना विस्तृत भाष्य लिखा है । लिपिकाल संवत् १६४१ तथा लिपिकार श्री केशव हैं । प्राचीन होने से महत्वपूर्ण है । सं० सं० ३१५६ एवं क्रम सं० १०३ ।

अंधयष्टि पद्धति:–आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२७·५ × १०'' सें०, पूर्ण, पत्र स० ७१, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ–१०), अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४३, परिमाण (अनुष्टुप् में)–३८१६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं० सं०–१७६, क्र० सं० २० ।

आदि––अथ दाक्षायण यज्ञ उच्यते । तत्र प्रथम प्रयोगे पौर्णमास्यां मातृपूजाभ्युदयिकंश्राद्धं कृत्वा पंचदशवर्षगुणविक्रुनाभ्यादाक्षायण यज्ञाभिधानाभ्यांदर्शपूर्णमासाभ्यां महंयत्त्य- इति संकल्प: ।।

अंत––सविता पूषा सरस्वती त्वष्टा । इदं हवि: । अजुषं ता वीवृक्षंतमहो ज्याय: अत्रता- देवाइत्यादि सिद्धि मिष्टि: संतिष्टते ।। श्री ।। इत्यंधयष्टिपद्धतौ मित्रविदेष्टि: समाप्ता: ।। ।।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)–दाक्षायण, अवभृत आदि से लेकर पितृयज्ञ पर्यंत अनेकों वैदिक यज्ञों का सकाम अनुष्ठानोचित विवेचन ।

विशेष ज्ञातव्य––हस्तलेख पूर्ण है । मध्य के कुछ पृष्ठों का ऊपरी भाग कृमि-कृन्तित है । लिपिकाल एवं लिपिकार के विवरण अनुपलब्ध हैं । दे० सं० सं० १७६–क्रम- संख्या २० ।

श्राद्ध कांड: आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२१·१ × ६ सें०, पूर्ण, पत्र संख्या–२४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१४, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४३, परिमाण (अनुष्टुप् में)–६०३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–१६७, क्र० सं० १३६ ।

आदि––श्री गणेशाय नम: । श्री सिद्धेश्वर्यैनम: ।। अथ श्राद्ध निरूपणार्थ तृतीयोध्याय आरभ्यते । तत्र प्रेतोद्देशेन श्रद्धया द्रव्य त्याग विशेष: श्राद्धं । तदाहुर्मूले ।। मृतानां तु भवेछ्राद्धं ब्राह्मणैर्वेदपारगै: तथा च ब्रह्मांड पुराणं । देशे काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत् पितृनुद्दिश्यविप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाहृतम् ।।

अंत––इति पदवाक्य प्रमाण श्री लक्ष्मीधर सूरे: सूनुना भट्टोजिदिक्षितेन रचितायां श्री चतुर्विं- शति मुनिमन व्याख्यायां श्राद्ध कांडम् ।। ।। संवत् १६६७ शके १५६२ विरोधिनि संवति माघसित द्वादश्यां प्रयागे याज्ञवल्क्योपेड्भटोपाध्याय सूनुनां भट्टोपाध्यायानंतेना लेखीदम् ।।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–धर्मशास्त्र प्रणेता वशिष्ठ, याज्ञवयल्क्य हारीत आदि महर्षियों एवं ब्रह्मांडादि पुराणों के वचनों से संपुटित, श्राद्धनिर्णय, उसके काल, पात्र, स्थान एवं विधि आदि का विवेचन ।

विशेष ज्ञातव्य——हस्तलेख प्राचीन एवं पूर्ण है। व्याकरण के धुरंधर विद्वान् भट्टोजिदिक्षित, जो अब तक एक-मात्र व्याकरण के ही महापंडित के रूप में विश्रुत है, उनके द्वारा प्रणीत कर्मकांड ग्रंथ इस हस्तलेख की विशेषता है। ग्रंथ का लिपिकाल संवत् १६६७ एवं लिपिकार भट्टोपाध्याय हैं । दे० सं० सं० १६७, क्रम० सं० १३६ ।

स्मार्त पदार्थ संग्रह: आधार——देशी कागज, लिपि–देवनागरी आकार–२५.५ × ११·५ अस पूर्ण, पत्र सं०—५०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ १०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३६, परिमाण-(अनुष्टुप् में)११२५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं० सं०६ ६, क्र० सं०११३७ ।

आदि——श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ गणनाथं नमस्कृत्य शारदां गुरुमेव च । वैकल्पिकानृषीछंदो देवतागृह्यकर्मसु ॥ देवतानामभिध्य नंवक्ष्ये संकल्पपूर्वकं ॥ अग्न्याधानं द्विजेंद्राणां-स्या कृत्तिका विशाखयो ॥

अंत——इति गंगाधरी पुस्तकमिदं सम्पूर्ण ॥ ॥ संवत् १६८४ वर्षे आषाढ़ वदि ५ रवौ लेख : ॥

बिपय——(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक) विभिन्न यज्ञों, अन्नप्राशनादि संस्कारों, प्रायश्चित्त-विधि, आधान एवं होमादि कर्मकांड संबंधी विषयों का प्रतिपादन ।

विशेष ज्ञातव्य——प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है। ग्रंथ की पुष्पिका ४७ वें पत्र पर अंकित है। इसके बाद तीन पत्र होम एवं आधानविधि के हैं । ग्रंथ के अंतिम पत्र पर 'अथ गंगाधरी क्रमः' के नाम विभिन्न पत्रों पर उपस्थित चौदह विषयों की अनुक्रमणिका है। लिपिकाल संवत् १६८४ होने से ग्रंथ की महत्ता सिद्ध है । ग्रंथकार का नाम श्री गंगाधर भट्ट है। प्रथम पत्र का बायाँ किनारा फट गया है । दे० संग्रह सं० ६७६ क्र० सं० ११३७ ।

(३) कोश–अमर कोष——(नाम लिंगानुशासन सटीक) आधार——देशी कागज, लिपि–देव नागरी, पत्र–सं०–९४, पूर्ण पंक्ति(प्रतिपृष्ठ)९, अक्षर (प्रति पंक्ति) ३४ परिमाण (अनुष्टुप् में)१७९८, प्राचीन, प्राप्तिसाधन दान, सं० सं० ४७१ क्र० सं० ३४

आदि——श्री गणपतये नमः ।। श्री सरस्वत्यैनमः यस्य ज्ञान दया सिंधो रागांधस्यानघागुणः । सेव्यतामन्दयोधीराः सश्रियेचामृताय च ।। १ ।। समाहृत्यान्यतंत्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः।। संपूर्णमुच्यतेवर्गैर्नामलिंगानुशासनम् ।। २ ।।

अंत इति लिंगादि संग्रहवर्ग ।। इत्यमरसिंहकृतौनामलिंगानुशासने ।। सामान्यकाण्डे तृतीयः सांग एव समर्थितः ।। शुभमस्तु ।। ······ संवत् १६८० ।। समये अंगिरानाम्नि संवत्सरे माघे मासिसिते पक्षे प्रतिप्रदि रविवासरे लिषितमिदं पुस्तकं घनश्यामेण आत्मपठनार्थं परोपकारार्थं चेति ।।

विषय——(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक) संस्कृत का प्रसिद्ध एवं बहुप्रचलित अभिधान ग्रंथ विभिन्न वर्गों में आनेवाले नामों के पर्याय आदि से युक्त ।

विशेष ज्ञातव्य——प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण होने के साथ-साथ अत्यन्त प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है । इसका लिपिकाल संवत् १६८० है लिपिकार घनश्याम हैं । प्रारंभ के कुछ

पत्रों के निचले हिस्से क्रमिकृतित हैं । ग्रंथ के मूल के साथ एक टीका भी है । टीकाकार का विवरण उपलब्ध नहीं है । दे० सं० सं० ८७१ एवं क्र० सं० ३४ ।

पारसी प्रकाश : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२०.८ × ११ से०, पूर्ण, पत्र सं०–१६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१०, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४२, परिमाण (अनुष्टुप् में)–४६६,–प्राचीन प्राप्तिसाधन–दान; सं० सं० ११११२ क्र० सं० १०३ ।

आदि––श्री गणेशाय नमः । श्री सूर्याय नमो विधाय विधिवत्संवाय चेतो रवौ दिव्यानामिव पारसीकवचसां कुर्वे प्रकाशं नवं ।। सम्राट साह जलालदीद्रसदमि प्राज्ञ प्रमोदप्रदं वाह्य ध्वांतमिवापहं तु पटतां भूषांतरस्थं नमः ।। १ ।। कलिकाले कलामूलं नत्वा माहेश्वरं महः ।। यवनानां प्रमोदाय वक्ष्ये यवनमोदिकां ।।२।। क्रियतां पारसीकानां वचसां संग्रहो मया ।। विधीयते स्ववोधार्थं संस्कृतार्थविवोधनै. ।। ३ ।। येवगाहितु-मिछंति पारसी वाङमहार्णवं तेपामर्थे कृष्णदासो निवध्नाति वचः प्लवं ।। ४ ।। अपठित्वा तु तच्छास्त्रं पृष्टैवेभांकरोम्यहं ।। न्यूनातिरिक्ततामत्र क्षन्तुमर्हंति तद्विदः ।। ५ ।।

अंत––इति श्री महीमहेंद्र श्री मदकधर शाह कारिले जिहारि कृष्णदास मिश्रकृते पारसी प्रकाशे कृतप्रकरणं समाप्तं ।। अग्नि राम वसु भूमि संयुते फाल्गुणेशिवतिथौ सितेतरे ।। सूर्यनंदन दिने हरिवंशो वंशरूपकृतये विलिलेष ।।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक) पारसी के प्रारंभिक ज्ञान के लिये संस्कृत भाषा में व्युत्पत्ति कोश ।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण है । रचनाकार श्री कृष्णदास हैं । लिपिकार हरिवंश और लिपिकाल संवत् १८३३ है । उपर्युक्त रचनाकार की ही 'पारसी प्रकाश' नाम की एक और पुस्तक प्राप्त हुई है, (दे० सं० सं० ६६८ विषयक्रम सं०-१०४) जो पारसी संस्कृत शब्दकोश है । लिपिकाल में वह प्रस्तुत व्याकरण की पुस्तक से एक साल बाद की है । पुस्तक में बीच बीच में लेखककी अपनी संक्षिप्त टिप्पणी भी जुड़ी हुई है । दे० सं० सं० ११११२, विषयक्रम स० १०३ ।

(४) **ज्योतिष–अवजद केवली** : आधार–देशी कागज, लिपि–देव नागरी, आकार–२८.६ × ११.६ सें०, पूर्ण, पत्र सं०–५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–८, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–६०,–प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं०सं० २४६ क्र०सं० ६ ।

आदि––श्री गणेशाय नमः अवजद केवली लिष्यते । संसारपासद्वितथः नत्वा वीर जिनस्वरं आसयावधनं प्राप्तं पासकेवलिकोच्यतेः पासिकं सप्रामिमंत्रतं कृत्वा राकाग्र बित्तेन-पासकं वरतयं विचिंत्यं सर्व कार्यस्य फलाफल प्राप्नभवति···––

अंत––श्लोक संज्ञा चतुषष्टी ६४ ॐ इति श्री अवजद केवली संपूर्णम्, ॐ सुभमस्तु सं १६११ मासो० चैत्र० मा० शु० शुभ० पंचम्यां ५ आदित्य वासरे लिषतं । मुकलप पुरामध्ये लिषि विहारिन :···।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, आरंभ से अंत तक)–

'ॐ विपुल सिहिः अमंतचिरकाईविनवलें श्री महानिशे गुहामंदरेस्वाहा' इस मंत्र के जप के साथ-साथ, 'अवजद' इस शब्द के प्रत्येक अक्षर की प्रारंभ के क्रम से

प्रत्येक अक्षर के साथ पुनरावृत्ति के द्वारा पृच्छक के सकाम प्रश्नों के ज्ञान एवं उनके शुभाशुभों एवं कार्यसिद्धियों का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख पूर्ण है। लिपिकाल संवत् १६११, एवं लिपिकार विहारी हैं। कुल श्लोक संख्या ६८ है। यह जैन ग्रंथ है। विशेष वृत उपलब्ध नहीं। दे० सं० सं० २८६ विषयक्रम सं० ६।

करण कुतूहल : आधार—देशीकागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२३ × ९·३ से० मी०, अपूर्ण, पत्र सं०—१६, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ ९), अक्षर (प्रतिपंक्ति) २६, परिमाण (अनुष्टुप् में) ७४८८, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान; सं० सं०—६४६४, क्र० सं० ३७।

आदि—॥ ॐ नमः श्री सूर्याय ॥ गणेशं शिरं पद्म जन्माकृतेशान् ग्रहान् भास्करो भास्करो भास्करादींश्च नत्वा ॥ लघु प्रक्रियं प्रस्फुटं खेट कर्म प्रवक्ष्याम्यथ ब्रह्म सिद्धान्त तुल्यं ॥१। शकः पंच दिक् चंद्रहीनो ११०५र्क निघ्नो १२ मधोर्याति मासान्वितोधो द्विनिघ्नात् रसांगान्विता ६६ स्वाचरबाकाशहीनात् ९००शरांगै ६५ रवाप्ताधिमा-सैर्युगूर्द्ध्वः ॥२॥

अंत—आसीत्सज्जनधाम्नि विजूल विडेशांडिल्यगोत्रो द्विजः श्रौतस्मार्त्त विचार सार चरतुरः सौजन्य रत्नाकरः । ज्योतिर्वित्तिलको महेश्वर इति क्षातः क्षितौ स्वैर्गुणैस्तत्सूनुः करणं कुतूहलमिदं चक्रेकविर्भास्करः ॥ करणं कुतूहलं समाप्तं ॥ ॥ संवत् १६६२ वर्षे शाके १५२७ प्रवर्तमाने भाद्रपाद शुदि नवम्यां रवौ लिखितमिदं माधव सुत परमानंदेन स्वार्थं परार्थं च ॥ ॥

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)-ग्रहों की गणना की सुगम रीति का दिग्दर्शन।

विशेष ज्ञातव्य—१६ पत्रों के प्रस्तुत हस्तलेख में पत्र-सं० ८' और १७ अप्राप्त हैं। ग्रंथकार भास्कराचार्य तथा लिपिकार माधवसुत श्री परमानंद हैं। लिपिकाल संवत् १६६२ है। लिपिकाल के अत्यंत प्राचीन होने से ग्रंथ महत्वपूर्ण है। दे० सं० सं० ६४६४ विषयक्रम सं० ३७।

चक्ररत्नावली : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२८·५ × १२·५ से० मी०, पूर्ण, पत्र संख्या ४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ५३, परिमाण (अनुष्टुप् में) १३३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं० ४२६७ क्र० सं० १५०।

आदि—॥श्री गणेशाय नमः॥ प्रणम्य परदेवतामखिललोकसंजीवन प्रकाश संभवप्रभवनाश गुप्ति क्षमं ॥ स्वरोदय महोदधोर्विरचयामि संक्षेपतो हिताय पृथिवींभुजां विजय-चक्ररत्नावलीं ॥ १ ॥ द्वंद्वे कोटे चातुरंगेकवौ वा युद्धे राज्ञांवर्ण वीर्याज्जयः स्यात् ॥ यस्मात्तस्मादुच्यते वर्णगादौ वीर्य्यं पश्चाच्चक्रभूयंत्रवीर्यं ॥ २ ॥

अंत—आसीद्वृद्धवरे पुरे सुशासनवरे षट्कर्म्म धम्मान्विते स्तत्वज्ञानभिवारितारिनिचयः श्रीमन्मुकुंदः सुधीः ॥ तत्पुत्रः परमात्मचिंतनपरः श्रीवासुदेवाह्वयश्चक्रे भूमिभृतां हिताय रुचिरा स चक्र रत्नावलीं ॥ ७० ॥ इति श्री वासुदेव कृता चक्ररत्नावली समाप्ता ॥ संवत १७१९ समये जेष्ट सुदि एकादश्यां रविवासरे लिपितं जगजीवन ब्रह्मचारिणा ॥

विषय (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)--ज्योतिषविज्ञान की चक्रीय प्रणाली के द्वारा राजाओं के विजयप्रयाण योगों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत हस्तलेख ४ पत्रों में आद्यंत पूर्ण है । रचनाकार श्री वासुदेव एवं लिपिकार श्री जगजीवन ब्रह्मचारी हैं। लिपिकाल सं० १७१६ होने से ग्रंथ प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। दे० सं० सं० ४२६७, विषयक्रम सं० १५० ।

जन्म समुद्र वृत्ति : आधार देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–३२.५ × १६·४ से० मी० अपूर्ण, पत्र सं०–२८, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १ , अक्षर (प्रतिपंक्ति)–५८, परिमाण (अनुष्टुप् में)–११३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं० सं० ६७१, क्र० सं० १६२ ।

आदि– ''रणौ चतुर्थदशमौ उरू पंचम नवमौ जानुनी षष्टाष्टमौ जंघे सप्तमं पादद्वयं चिंत्यं क्रमाक्रमेणाद्रे; कारण वशादस्य वालस्य तान्यंगानि दक्षिणानि वामानि च ज्ञातव्यानि अर्थवशाद्यत्र पत्रपत्रांगे दीर्घराशिस्तत्पति भवेत्तदंगदीर्घन्तस्य अथ यत्रांगे ह्रस्वराशिस्तत्पतिश्च तदंग ह्रस्वं अथ यत्रांगेह्रस्व राशिदीर्घपतिश्चाथवा विपरीते सति मध्यमांगंवाच्यं ह्रस्वंचद्वाह्यश्चत्वारसिंहावादीर्घमंगगा ये त्वन्ये राशयोमध्यंप्राहुर्वर्ग्ण स्ववर्णतः इति ह्रस्व दीर्घ मध्यराशि स्वरूपमुक्तं ।

अंत–युग्मं श्री मद्विक्रमवत्सराविनयनाद्येदेव वर्षेतपोमासे शुद्ध चतुर्दशी शनि दिने व पावनी पट्टने चैत्येकारि कुमारपाल नृपतेर्वृत्तिच काशहृदोपाध्यायोनरचंद्रइंद्र नृप संपर्यायरूपामिमाम् २४ इति श्रीकाशहृदगछीया श्री सिंह सूरि शिष्यश्चेतावर श्री नरचंद्रोपाध्याय कृतायां वृत्ति वेडायां संज्ञायां जन्म समुद्र प्रश्न शतसर हारारायां जन्म समुद्र वृत्तौ अष्टम कल्लोले नाभसादियोग दीक्षावस्था प्रयोग लक्षणोनामाष्टमः कल्लोलः समाप्तोयं ग्रंथः शुभसंवत्सरे १८४१ शके १७०६ श्रावण शुक्लेकादशी बुधेऽलेखि पुस्तकमिदं द्विनाल्हादेन स्वार्थपरार्थं च ।

विषय (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)--जन्म-प्रत्यय-लक्षण, राजादि विभिन्न योगों की व्याख्या एवं स्त्री-जातक तथा ग्रहों के शुभाशुभादि का निर्णय ।

विशेष ज्ञातव्य–ज्योतिष विषयक प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है । प्रारभ का प्रथम पत्र अप्राप्त है । ग्रंथकार नरचन्द्रोपाध्याय हैं । लिपिकाल संवत १८४१ है। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं। दे० सं० सं० ६७१ विषयक्रम सं० १६२ ।

जातक कर्म पद्धति: आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२४ × १० से० अपूर्ण, पत्र सं०–६६, पंक्ति–(प्रतिपृष्ठ)–११, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१२६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन-दान, सं० सं० ४४१ क्र० सं० १६७ ।

आदि–श्री गणेशाय नमः ।। नत्वा तां श्रुतिदेवतांत्रिसमज्ञानोद्गतेः कारणं तत्पादाम्बुरुह प्रसादविकसद्बोधोबुधः श्रीपतिः ।। शिष्यप्रार्थनया विचार्य सकलान्होरागमार्थान्-मुहुर्वक्ष्ये जातककर्मपद्धतिमहं होराविदांप्रीतये ।। १ ।। व्याख्या ।। अहं श्रीपतिः श्रीपति भट्टनामाआचार्यः शिष्य प्रार्थनया जातककर्म पद्धतिं वक्ष्ये जातस्येदं जातकं जातस्य बालकस्य जन्मान्तरार्जित सदसत्कर्मजनित शुभाशुभ फल निरूपकं शास्त्रं जातकमित्युच्यते । जातकशास्त्रे यानि कर्माणि गणितक्रियास्तेषां पद्धतिं मार्गं क्रमेणनिरूपणमित्यर्थः ।

अंत–अथ ग्रंथ समाप्तौ अलंकारमाह ।। नन्दिग्रामे केशवो विप्र वर्यो योऽभूद्धोराशास्त्र संघं विलोक्य ।। तेनोक्तेयंपद्धतिर्जातकीया चत्वारिंशवृत्तवद्धा सुबोधा ।। ४१ ।। नन्दिग्रामे केशवनामायोविप्रवर्या विप्रश्रेष्ठो बभूव । ... इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते केशव दैवज्ञ विरचिते पद्धत्युदाहरणेअन्तर्दशाध्यायोदाहरणं समाप्तम् ।। गोलग्रामनिवासिभू सुरमणिर्गोदावरी प्राङ्गणे दैवज्ञेषु दिवाकराह्वयमहाज्योतिर्विदासीद्‌बुधः । तत्पुत्रोत्तमविश्वनाथरचितं तत्पूर्णमासीज्जनुः केशव्यागणितं मुबुद्धिभणितं ज्योतिर्विदां सम्मतम् ।। गगन वेद शरेन्दु १५४० मिते शके नभसिशुक्ल बुधे नग कृत्तिथै ।। १ ।। गणपथेहि कृतं सुखदं सतां विततपारमगाद्धरसत्पुरे ।। २ ।। विश्वनाथ रचिता विवृतिर्या साददातु खलुसिद्धिमशेषाम् । विश्वनाथ पदयोर्विनिवेदात्सिद्धिदाभवतु साऽभिविमुक्ते ।। ३ ।। पठिता विधि संयुक्ता गुरुदिष्टेन वर्त्मना ।। सिद्धिदा सर्वकार्याणां कामधेनुरिवापरा ।। ४ ।। इति केशव पद्धतिः सोदाहरण समाप्ता । नव शिखि वसु चंद्रैः १८३९ सम्मिते विक्रमस्य गतवति शरदांवैवृन्दकेवान्धवेशे ।। इष सित हरि १२ तिथ्यां शुक्रवारे प्यजीते समलिखदधिरीवं श्री भवानी प्रसादः ।। १ ।।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––मनुष्य के जन्मान्तरार्जित कर्मों के सदसद्धर्म का ज्योतिश्शास्त्रीय निरूपण विशेषतः गणित की पद्धति से ग्रहों के भुक्त भोग्यादि विषयों की व्याख्या ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख के आदि और अंत सुरक्षित हैं । बीच के कई पत्र अनुपस्थित हैं । कई पत्रों की पुनरावृत्ति हुई है । लिपिकाल सं० १८३९ एवं रचनाकाल संवत् १५४० है । रचनाकाल के अत्यंत प्राचीन होने के कारण ग्रंथ काफी महत्वपूर्ण है । श्रीपति के ग्रंथ पर यह केशव दैवज्ञ की केवल टीका है । इसके लिपिकार श्री भवानीप्रसाद हैं । दे० सं० सं० ४६१, विषयक्रम संख्या १६७ ।

ताजिक नीलकंठी (उत्तरार्ध) : आधार–देशी कागज, लिपि–देव नागरी, आकार–२४·५ × १०·१ से०, पूर्ण, पत्र सं०–७४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१२, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३१, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१७२१, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–१४६, क्र० सं० २६६ ।

आदि––श्री गणेशाय नमः ।। चंडी कुण्डलमाकलय्य कुतुकाद्दण्डाभशुंडाग्रगंकृत्वा ताण्डव डम्बरे पशुपतेः खेलन् खलूच्छृंखलम् ।। चण्डांशोरिवमण्डलं तदपरं संदर्शयन्नम्बरे हेरम्बोजगदम्बिकां विहसयन् वः श्रेयसे गर्जनाम् ।।१।। दिवाकरोनाम बभूव विद्वान् दिवाकराभोगणितेषुचान्यः ।। स्वकल्पितैर्येन निबन्ध वृन्दै बद्धं जगत् दर्शित विश्वरूपम् ।।२।। तस्यात्मजाः पञ्चसमावभूवुः पञ्चेन्द्र कल्पागणिता गमेषु ।। पञ्चाननावादि गजेन्द्र भेदे पञ्चाग्निकल्पा द्विजकर्मणा च ।।३।। अजनिष्ठ कृष्णनामा ज्येष्ठस्तेषां कनिष्ठानां । विद्यानवद्यवाचां प्राचांवेत्ताजगत्‌थातः ।। ४।। × × × आसीद्वेदान्तवेदी स्मृति निगम पटु ग्रामणीगर्वभेत्ता कर्त्ता ग्रन्थान्तराणां फणिपति निगमस्याऽपिवेत्ताऽधिकाशि ।। बक्ता श्री नीलकण्ठात्मज भजनपटुर्नीलकण्ठः स चक्रे, संज्ञा

तन्त्रं दुरुहं सकल शुभ दशादुर्दशाऽऽदर्श भूतम् ।।९।। गोदा तीरस्थगोलाऽभिधपुर वसतिः पार्थ•देशैक भूपा संज्ञा तन्त्रस्य टीकां व्यदधदभिनवी गद्यपद्यानवद्याम् ।। शश्वद्विगोपकृत्यै विशदतर तयादैव विद्विश्वनाथोऽग्रन्थोगग्रन्थि भेत्ता ग्रहग्रणितविदाम-ग्रगण्योऽप्यगर्वः ।।१०।।

••• ••• ••• प्रणम्य हेरम्बमथो दिवाकरं गुरोरनन्तस्य तथा पदाम्बुजम् ।।

श्री नीलकंठो विविनक्ति सूक्तिभिस्तत्ताजिकं सूरिमनः प्रसादकृत् ।।१।।

अंत—श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकण्ठज्योर्वित्कृत संज्ञातन्त्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृतिः समाप्ता ।। ।। अकारि विश्वनाथेन संज्ञा तन्त्र प्रकाशिका ।। टीका टीका कृतां कुर्यात्सज्जा लज्जानुबंधनम् ।।१।। चन्द्रबाणशरचन्द्र १५५१ सम्मिते हायने नृपति शालिवाहने ।। मार्गशीर्ष सित पञ्चमी तिथौ विश्व-नाथ विदुषा समापिता ।।२।। यत्पादपद्मं सुर सिद्ध दैत्या अभीष्टसिद्ध्यै प्रणमन्ति नित्यम् ।। तं विघ्नराजं मनसा स्मरामि भक्तप्रियं नागमुखं गणेशम् ।।३।। गोदावरी तटे भाति गोल ग्रामोऽति सुन्दरः ।।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—ज्योतिषविज्ञान की फलित एवं गणित विधा का सम्यक् विवेचन । राशि स्वरूप, वर्षफल, ग्रहों के स्वरूप, उनके स्थान एवं दृष्टिफल, ग्रहों के शत्रुमित्र भाव, द्वादश भावोक्त फलों की विवेचना, अयनादि निरूपण की गणितप्रक्रिया, तथा कार्यसिद्धर्थ शुभाशुभ निर्णयों जैसी उपयोगी चीजों की संक्षिप्त परंतु सुलझी हुयी व्याख्या ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना की प्रति पूर्ण है । बहुचर्चित एवं प्रशंसित 'ताजिक नीलकंठी' का यह उत्तरार्ध है । लिपिकाल अत्यंत प्राचीन होने से ग्रंथ और महत्वपूर्ण हो गया है । बीच के पृष्टों की लिखावट कुछ धुँधली पड़ गई है। ग्रंथ पर प्रसिद्ध टीकाकार विश्वनाथ की 'संज्ञातन्त्रप्रकाशिका' नामक टीका भी उपलब्ध है। दे० संग्रह सं० १४९, विषय क्रम सं० २९६ ।

त्रिविक्रम शतम्: आधार—देशी कागज, लिपि—देव नागरी, आकार—२६.८ × १०.७ से, पूर्ण, पत्र सं०—५, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, अक्षर (प्रति पंक्ति) ३९, परिमाण—(अनुष्टुप् में)—१४६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं० २४७, क्र० सं० ३१९।

आदि—।। ६० ।। स्वस्त श्री गणेशाय नमः ।। नमस्कृत्य परं ब्रह्म गणकेन्दुस्त्रिविक्रम्ः ।। मुनि प्रणितमषिलं व्यवहारं प्रवक्षिति ।। १ ।।

अथ सिंधु जोग ।। नंदा भद्रा जया रिक्ता पूर्णेतिचपूनपून ।। सूत्रक्षारार्किजीवेषुसिद्धास्यु-तिथिय क्रमात् ।। २ ।।

अंत—नारायणस्य तनयो ज्ञातल्लानुजोद्विजः ।। त्रिविक्रमः सतैश्लोकैर्व्यवहार समं व्यधात् ।। १०० ।। किंचित्कलजुगे जाते ब्रूते ब्रह्म त्रिविक्रमं ।। तव जिह्वापसंस्थाने शास्त्रमतन्मयाकृतं ।। १०१ ।। इति श्री त्रीविक्रमाचार्य विरचितं त्रिविक्रसतं संपूर्ण ।। संवत् ।। १८३७ ।। शाके ।। १७०२ ।। तत्र वर्षे । मासोतंमासे । कातिग मासे । कृष्ण पक्षे । सूभ तिथौ ।। चतुर्दस्यंम्यायां ।। १४ ।। गुरुदिने ।। लिषतं जोतगराय ।। ।।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—नित्यप्रति व्यवहारोपयोगी नक्षत्रों एवं तिथियों आदि का ज्योतिषशास्त्रीय विवेचन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत १०० श्लोकों का हस्तलेख पूर्ण है। रचयिता त्रिविक्रम हैं। लिपिकाल संवत् १८३७ तथा लिपिकार जोतगराय है। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं। दे० सं० सं० २४७, विषय क्रम सं० ३१९

प्रश्न प्रकाश : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी आकार—१३ × ८·६ से०, पूर्ण, पत्र सं०—१२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ८, अक्षर (प्रतिपंक्ति) २६, परिमाण (अनुष्टुप् में) १५६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान; सं० सं० १८३, क्र० सं० ४३९।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। सभा प्रश्नों न वक्तव्यः कुटिलानां तथा निशि ।। नापराह्नेत्व-विश्वस्यत्त्वरितं न वदेत कदा ।। १ ।। फलपुष्पयुतोजोहि दैवज्ञं परिपृछति ।। तस्यैव कथयत्प्रश्नं सत्यं भवति नान्यथा ।। सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं मुधृत्त्यवचउच्यत्ते ।। वेदाच्छास्त्रं परं नास्ति प्रश्नाज्योतिषमुच्यते ।। ३ ।।

अंत—वर्ष द्रष्ट्गुणतैर्भागो १०० शेषेपूर्वोक्तमेवच ।। एवं कालस्य विज्ञानं मया सम्यक् प्रकीर्तितः ।। २५ ।। परिक्षिताय शिष्याय देवं वत्सरवासिने ।। तेन नो कुप्यते वाचां देवी सत्या प्रवर्तते ।। २६ ।। इति श्री ज्योतिश्शास्त्रे सारे प्रश्नशास्त्रे प्रश्नप्रकाश ग्रंथ : समाप्त ।। अयं भावः प्रश्नवर्णांक मात्रांकानपूर्वोक्त चक्रोक्तनेकीकृत्य चतुर्भि-र्भजेत एकं १ द्वि २ त्रि ३ चतु : शून्य शेषानि क्रमेण दिन १ पक्ष २ तथा ३ वर्ष भवति निश्चितम् ।। ततस्तदनंतरम्निश्चित्य संज्ञाज्ञानार्थमुपायः अथ मूलम् ।।····

विषय—(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)—
विभिन्न प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि के लिये पृच्छक के प्रश्नाक्षरों एवं तत्कालीन तिथि, वार, नक्षत्रादि के योगों के द्वारा गुणाभाग की गणितीय विधि से शुभाशुभ का निर्णय।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख पूर्ण है। पत्र अत्यन्त जीर्ण हैं। पुस्तक आद्यन्त शिव-पार्वती—संवाद के रूप में है। लिपिकाल एवं लिपिकार के नाम अनुपलब्ध हैं। दे० सं० सं १८३, विषय क्रम सं० ४३९।

प्रश्न भैरव—आधार-देशी कागज, लिपि—देवनागरी, अपूर्ण, पत्र संख्या—२१, पंक्ति (प्रति-पृष्ठ) ११, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३८, परिमाण (अनुष्टुप् में)—५४६, प्राचीन प्राप्तिसाधन दान। सं० सं०—४४३

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। नीरोद्धभमियविवर्द्धितभानुभालं सर्वस्व भक्त जन विघ्नसमूह कालं। विश्वंभराधरपतेर्दुहितु : वालं वंदे विनायकमहं गुपितेन्द्रजालं।। नरवाग्रैः सदावादयंती स तानैः : स्वरैः पङ्क्काद्यैयुतां तां तांच तंत्री। प्रवृद्धि मतेर्मेसदादेववंद्या सरोजासना वुद्धदेवी करोतु ।। २ ।। समस्तान् शिशून्संविलोक्याल्पवुद्धीन् ब्रुवेयेन पूर्वेप्रबंधे नरेशे ।। अतो भैरवश्यात्मजो वाच्मसम्यक् सतां संमुदे प्रस्फुटं प्रश्नवंधां ।।३।। अशक्यस्तरितुं वालैः प्रश्ननीरधि निर्णयः ।। गंगाधरो गुरुं नत्वा करोति प्रश्न भैरवं ।। ४ ।।

अंत—इति श्री भैरवदैवाज्ञात्मज गंगाधर दैवज्ञ विरचितः प्रश्नभैरवः समाप्ताः ॥ तर्कौघ-सांख्यमीमांसापातंजलि जलाशयः । शिरव्यौघमोह सांत्यर्थ येन वैचुतलकीकृतः ॥३४॥ स श्री कृष्णो द्विजाग्ररायो गोविंद तनयः किल । पृथिव्यां मनितोभूपैः सर्वोत्कर्षेण तिष्टति । १३५ । युग्मं ॥ तत्सूनुर्भैरवोनाम तथैव पृथिवी तले । भूपमंत्री जनैर्नित्यं सेव्यते सुजनैस्तथा ॥ ३६ ॥ आशीत्पुत्रत्रयंतस्यतदा द्योगिर्धरः स्मृतः । ततो गंगाधरो-मानतोगोविंद संज्ञकः ॥ ३७ ॥ तेषां मध्ये स्वबुध्याच वांतातपाद प्रभावतः ॥ प्रश्नचंडेश्वरं दृष्ट्वा प्रश्नवैश्नवमादृतः । १८ । अन्यान्यप निबंधाश्च स्वगुरोरुप-देशतः । गंगाधरः स्वपद्यैश्चचत्रेऽसौ प्रश्न भैरवं ॥ ३९ ॥ विश्वंभराशुगशरभू ˙ ˙ ˙ती १५५१ शते । मासे माघा द्वये नूनं समाप्ति सुतरामगात् । ४० । स्वप्ने दृष्टामया देवी तया प्रोक्तं जनाभुवि । पाठंति पाटयिष्यंति विद्यायुः श्रीर्ददाम्यहं । ४१ । सप्त सप्तति तुल्यानि संति प्रकरणानि च । स्वखलकांग पू० मिति श्लोकाः संतिवैं प्रश्ने भैरवे ॥ । प्रश्न भैरवे ग्रथालंकारः समाप्तः ॥ ॥ श्री ॥ शंभवे गुरवे नमः ॥ ॥ श्री रस्तु ॥ ॥ श्री ॥ संवत् १८२० ज्येष्ट १५ पूर्णमा भृगु० समाप्तम् लिषतं नौवत राय । आत्म पठनार्थं । श्रीं रस्तु ॥ ॥

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—विविध मनोरथों की सिद्धि के लिये किये गये प्रश्नों के समाधानार्थ ज्योतिष शास्त्र के द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के शुभाशुभों के द्वारा प्रश्नों के सिद्धि—असिद्धि की व्याख्या; उलूक, काक श्वान आदि जंतुओं के शब्दों एवं अंग-चेष्टाओं के निरीक्षण के द्वारा शकुननिरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अपूर्ण है । कुल २१ पत्रों में १६ पत्रों तक लगातार प्राप्त है । आगे के पत्रों पर न तो पत्र संस्या ही उद्घृत हैं न उनके श्लोकों का क्रम ही व्यव-स्थित हैं । कुछ पत्र अप्राप्त हैं । इसका रचनाकाल संवत् १५५१ होने से ग्रंथ अत्यन्त प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है । लिपिकाल संवत् १८२० एवंलिपिकार नौवत राय हैं । ग्रथ के श्लोक अत्यन्त ललित हैं । ग्रंथकर्ता का पुरा इतिवृत्त उपलब्ध है । इस हस्तलेख की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें वर्णित किये जाने वाले विषय की एक विस्तृत अनुक्रमणिका प्रारंभ में ही दी गई है जो संख्या में ८२ है । अब तक किसी भी हस्तलेख में ऐसी विषयसूची उपलब्ध नहीं । ग्रंथ कर्ता भैरव दैवज्ञ के पुत्र श्री गंगाधर दैवज्ञ हैं । अपने पिता के नाम पर इन्होंने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया है । दे० सं० सं० ४४३, विषय क्रम सं० ४४७ ।

बीजगणित कुट्टक विवरण :—आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२५˙८ × १०˙६ से० मी०, पूर्ण, पत्र संख्या—२२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप् में)—८२५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान; सं० सं०—६१३५, क्र०सं० ४६४ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ अथ कुट्टकाध्यायो व्याख्यायते ॥ ॥ तत्रादौ तदारंभ प्रयोजनमाह ॥ ॥ प्रायेण यतः प्रश्नाः कुट्टाकाट्ट तेन शक्यंते ॥ ज्ञातुं वक्ष्यामि ततः कुट्टाकारं सहप्रश्नैः ॥१॥ कुट्टक खार्णधना व्यक्तमध्य माहरण वर्ण भाविनकैः । आचार्यस्तंत्रविदां ज्ञातैर्वर्ग प्रकृत्या च ॥२॥

अंत––प्रति सूत्रमयीप्रश्नाः पविनाः सोद्देशकेषु सूत्रेषु ॥ आर्याणां अधिकशतेन कुट्टकोप्टा-दशोध्यायः ॥ ·१॥ अत्र सूत्रार्याः सार्द्धक षष्टिः ॥६१॥ प्रश्नार्याः सार्द्धक चत्वारिं-शत ॥४१॥ इति श्री ब्रह्मगुप्त विरचिते ब्रह्म सिद्धाते बीज गणित कुट्टक विवरण समाप्तं ॥ श्री रस्तु ॥ ······ शके १५३१ सौम्यनाम संवत्सरे ।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–ज्योतिष शास्त्र के गणित सिद्धांत के एक अंश बीजगणितीय कुट्टक का संक्षिप्त विश्लेषण ।

विशेष ज्ञातव्य––यह ग्रंथ पूर्ण है । २२ पत्रों में समाप्त प्रस्तुत ग्रंथ के प्रणेता श्री ब्रह्म-गुप्त हैं । रचनाकाल अज्ञात है । लिपि काल शके १५३१ होने से ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है । विशेष विवरण उपलब्ध नहीं है । दे० संग्रह संख्या ६ ३५, विषयक्रम सं० ४६४ ।

भास्वती–आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२८·२ × ११·५ से०, पूर्ण, पत्र संख्या–८, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ५०, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१२५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं० सं०–१८८६ क्र० सं० ५५० ।

आदि––श्री गुरवे नमः ॥ ॥ नत्वा मुरारेश्चरणारविंदं श्रीमान् शतानंद इव प्रसिद्धः । तां भास्वती शिष्य हितार्थ मादौ शाके विहीने शशिपक्ष रैवकैः १ शाकोनवांद्रीन्दु कृशानु युक्तः ३१७६ कलेर्भवत्यव्दगणस्तुवृत्तः वियन्नभो लोचनवेद हीनः ४२०० शास्त्राब्द पिंडः कथितः स एव ॥२॥ अथ प्रवक्ष्ये मिहिरोपदेशात्तत्सूर्य सिद्धान्त समं समासात् । चंद्राश्वि सून्येंदु १०२१ विहीन शाके शास्त्राब्द पिंडो भवतीहशास्त्रे ॥३॥

अंत––इति श्री सूर्य सिद्धान्त मीमांसायां भास्वत्यां शतानंद विरचितायां परिलेखाधिकारः ॥ ॥ संवतु १६९८ वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ लिषि कृष्णदासेन । पठनार्थं घनस्यामस्य पुस्तकं भास्वत्यायाः ॥

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर के–सूर्य सिद्धांत के आधार पर विरचित ज्योतिष संबंधी गणित ग्रंथ ।

विशेष ज्ञातव्य––८ पत्रों का प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है । रचनाकार शतानंद हैं । वराहमिहिर के सूर्य-सिद्धांत पर आधारित यह ग्रंथ अत्यंत ख्यातिप्राप्त है । लिपिकाल संवत् १६९८ होने से ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है । मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत में इसकी चर्चा की है । दे० संग्रह सं० १८८६ विषयक्रम सं० ५५० ।

मुंक्ता पाश केवलिः–आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, पूर्ण, पत्र संख्या–११, पंक्ति प्रति पृष्ठ)–१०, अक्षर (प्रति पंक्ति) २८, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१६३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं० ८०८ क्र० सं० ५६५ ।

आदि––श्री गणेशाय नमः भव संसार सिद्ध्यर्थं नत्वा विरजितेन्द्रियं आसावासेधने मुक्ता पाश केवलि कोव्यते ? अनत्तमुक्तयर्थे पराशरैक देशे श्री मणिरथीने उत्पन्नेरेमुनि राजस्तुते श्री मद्राजपदे स्थापितं लोकानाज्ञान प्रकारार्थं अतीतानाग वर्त्तमान परिजानीतार्थ चतुरक्षरपूर्वकं लिख्यते

अंत--अथुनातव महद्दुद्वेगोवर्ततेतस्य शांत्यर्थं देवता भक्ति पूजां कुरुनेन सर्वकार्य्य संतोतो भविष्यति १९ इति श्री

विषय--(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक) -- यह अवजद केवली के ढंग का प्रश्न ज्योतिष से संबंधित हस्तलेख । 'अ व य द' इन चार अक्षरों को इन्हीं के साथ एक के बाद एक बैठाते हुये, पुनरुक्ति-विधि से एक निश्चित मंत्र-जप के द्वारा प्रश्न-कथन ।

विशेष ज्ञातव्य--'अवजद केवली' की तरह एक जैन ग्रंथ है। हस्तलेख पूर्ण है। रचनाकार एवं लिपिकालादि के विवरण अनुपलब्ध हैं। कुल ११ पत्र (१--११) हैं। दे० संग्रह सं० ८०८, विषय क्रम सं० ५९५ ।

युद्धोपयोगार्थ संग्रह—आधार-देशी कागज, लिपि-देवनागरी' आकार-२१ × ९·३ से०मी०, पूर्ण, पत्रसंख्या-६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, अक्षर (प्रति पक्ति) ४०, परिमाण (अनुष्टुप् में) २४०, प्राचीन, प्राप्तिसाधन-दान, सं०सं० ६४९२, क्र०सं०७१५

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ उमापति विश्वपतिं प्रणम्य समस्त विद्यार्थमिदं स्वभावतः ॥ बाल प्रबोधाय मया भिधीयते युद्धोपयोगार्थ विशेष संग्रहः ॥१॥ आदित्यो जन्म नक्षत्रे यदा भवति तद्दिने ॥ युद्धादि कार्यं कुर्वाणोप्यवश्यं मरणं व्रजत् ॥२॥

अंत--हिमालयस्य रेखायां यदा याति हिम द्युतिः ॥ हेलामात्रा जुयेद्यापि सूर्येस्दातुर्वधः स्मृतः ॥१५॥ ॥ इति श्री रुद्र विरचितायां कौशलं समाप्तमिति ॥ ॥ संवत् १६६९ शाके १५३४ भाद्रपद वदि ४ गुरौ अश्विन्यामर्गलपुरेऽलिखित् ॥ शुभं भवतु ॥श्रीः ॥

विषय--(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)-युद्धोपयोगी विभिन्न योगों एवं नक्षत्रों का वर्णन । विजयप्राप्तिक्षण का ज्योतिष शास्त्रीय विवेचन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत हस्तलेख आद्यांत पूर्ण है। ग्रंथकार रुद्र हैं। लिपिकाल संवत् १६६९ होने से ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है । दे० संग्रह सं० ६४९२, विषय क्रम सं० ७१५ ।

व्यवहार वृंद--आधार-देशी कागज, लिपि-देवनागरी, आकार-२६·३ × १०·७ से० मी०, पूर्ण, पत्रसंख्या-३२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ९, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३९, परिमाण (अनुष्टुप में) ६७१, प्राचीन, प्राप्तिसाधन-दान, सं० सं० ४२६१ ।

आदि—श्री कृष्णेश गणेश कार्क प्रमुखान्नत्वा पदाब्जं गुरोर्वक्ष्येहं व्यवहार वृंद मगभृशैला-ब्धिजाते कलौ विप्रैर्वंदित गौडवंशप्रवरोदामोदरोवेदवित् । तत्पुत्रः शुकदेवखर्य-मथुरापुर्जांचसद्दैववित् ॥१॥ यस्य ज्योतिः खेगतं संविभीति सूर्यः सोमो खेट तार्क्ष्य चक्रं । तं वै देवं ज्योतिषं कालमीशं ब्रह्मानंदं विश्वमूर्तिं नमामि ॥२॥

अंत--सावत्सरं मासतिथिं च भानिस्यादुगोचरं संस्कृतयो विवाहाः । प्रकीर्ण यात्राविधि वास्तुभेदाः क्रमेण ग्रंथेत्र उदाहृता च ॥२८॥ इति श्रियाद्यं व्यवहार वृंद विलोक्य नाना मुनि प्रोक्त सारं कृतंहि मिश्रेण शुकेन रम्यं वास्तुप्रभेदं च गृह प्रवेशः ॥ इति श्री व्यवहार वृंदे मिश्र शुकदेव विरचिते वास्तुप्रभेदं दशमं । ··· ··· ··· संवत् ॥१७०० । वर्षे बैशाख शुदि द्वितीया सोमवासरे ॥ श्री मथुरामध्ये ॥ लिषितं जटमल गोंड शुभं भवत्

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक) वास्तुप्रकरण, यात्रा विधान, गृह-प्रवेशादि फलित ज्योतिष से संबंधित विषय ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है । विभिन्न फलित ज्योतिष ग्रंथों से संग्रह की मधुकरी वृत्ति अपनाई गई है । रचनाकार श्री शुकदेव मिश्र एवं लिपिकार श्री जटमल गोंड हैं । लिपिकाल सं० १७०० होने से ग्रंथ प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है । दे० संग्रह सं० ४२६१, विषय क्र० सं० ८८२ ।

षट् पंचाशिका (सटीक)—आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२३·७ × ८.८ से० मी०, पूर्ण, पत्रसंख्या ४६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ४६, परिमाण (अनुष्टुप में)—१७३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान; सं० सं०—५२०५ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। प्रणिपत्यरविं मूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन पृथुयशसा ।। प्रश्ने कृतार्थ गेहना परार्थमुद्दिस्य पृथुसद्य शसा ।।१।। च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्चवृद्धिर्मध्योत्प्रवासोस्तमयान्निवृत्ति : ।। वाच्यं ग्रहैः प्रश्न विलग्नकालाद्गृहं प्रविष्टोहिबुके प्रवासी ।।२।।

अंत—भट्टोत्पलेन शिष्यानुकंपयायथालोक्य सर्वशास्त्राणि आद···रा·······।। इति उत्पत सप्तविं० समाप्ता ।। शुभमस्तु ।। संवत् १६३८ समये कार्तिक सुदि १ प्रतिपद सनियासरे भानुकर पुस्तकमिदमलिप्यत्तरहनि नगरे । आत्म पाठार्थ ।।···गज गुण-नृप संज्ञे विक्रमादित्य वर्षे मिहिर तनय पारे शुक्ल उर्ज्जस्यपक्षे ।। अलिषदिदमशेषं पुस्तकं भीमसेनो जलभृदहितसम्मुईस्त्रिस्पृशा याचतस्याम् ।।१।।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—जय-पराजय, शुभाशुभाध्याय, आगमन-विचार, धन-चिन्ता, उच्च-नीचस्थ ग्रह-फल-विवेक तथा अन्य फलित ज्योतिष से सम्बन्धित मिश्रित अध्याय ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आद्यन्त पूर्ण है । रचनाकार पृथुयश हैं, तथा सुविख्यात ज्योतिर्विद भट्टोत्पल टीकाकार हैं । लिपिकार भीमसेन तथा लिपिकाल सं० १६-३८ है । ग्रंथ अत्यंत जीर्ण अवस्था में है तथा लिपिकाल के अति प्राचीन होने से यह बहुत महत्वपूर्ण है । दे० संग्रह संख्या ५२०५ विषय क्रम सं० ६५१ ।

स्वप्न चिंतामणि : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२०.५ × ८.५ से०, पूर्ण, पत्र सं०—३३, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-८ अक्षर (प्रति पंक्ति)-३७, परिमाण (अनुष्टुप् में)-४२६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान; सं० सं०—१५७६ ।

आदि—। ॐ नमः श्री शारदायै ।। कविभिः करकलितमिवि त्रैलोक्यते सद्यः । आसाद्य यत्प्रसादं सा जयति सरस्वती देवी ।। १ ।। कृतिनिकृतानि बहुधा ग्रंथे द्देशास्वप्नलक्षणा न्यग्रेनेन्यैकस्थानिशुभाशुभानि संक्षेपतो वक्ष्ये । २ । धर्मरतः स्थिरचित्तः श्रुत बगुचरणे जितेंद्रियः सदयः । तस्य प्रार्थितमर्थं सर्वे स्वप्नं प्रसाधयति ।। ३ ।।

अंत—···महत्तम दुर्लभराजात्मज जगदेव विरचिते स्वप्नचिंतामणौः स्वप्नाधिकारो द्वितीयः समाप्ता ।। संवत् १५२५ शाके १३६५ विजय संवत्सरे ।। माघ शुद्ध ३ गुरु दिने विदुर नगरे सूरत्तान् माहामदसाध विजय राज्ये । स्वप्नाधाय पुस्तक लिखितं गण

नायक सूत विनायकेन लिखितं परोपकारार्थ ॥ श्री गणेशायनमः । श्री एकवीरार्पण-मस्तु ॥ एवमस्तु ॥

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–विभिन्न प्रकार के स्वप्न-दर्शन से शुभा-शुभ फल-निर्णय ।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण हैं ग्रंथकार जगदेव हैं । लिपिकाल संवत् १५२५ होने से ग्रंथ की प्राचीनता स्वयं सिद्ध है, अतः यह महत्वपूर्ण है । अन्य विवरण उपलब्ध नहीं । दे० सं० सं० १५७६, विषय क्रम सं० १०४४ ।

(५) तंत्र––कालीतंत्र : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२४.५ × १०.से० अपूर्ण पत्र सं०–४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)–४, अक्षर (प्रतिपंक्ति) २१, परिमाण (अनुष्टुप् में) २१, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं० सं०–१२५ ।

आदि–– ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ कैलाश शिखरारूढं देवं जगद्गुरुं ॥ उवाच पार्वती देवी भैरवं परमेश्वरं ॥ १ ॥ श्री पार्वत्युवाच ॥ देव देव महादेव सृष्टि स्थिति लयात्मक ॥ किंतु ब्रह्ममयंधाम श्रोतुमिछामि तत्वतः ॥ २ ॥ कालिकायां महाविद्यां समस्तभेद-संयुतां ॥ सपर्याभेदसहितां चतुर्वर्गफलप्रदां ॥ ३ ॥

अंत––इति व्याप्तं प्रविन्यस्यमूलविद्यां समाचरेत् ॥ १७ ॥ सप्तथाव्यापकं कुर्यात्स्वेन देवी मयो भवेत ॥ व्यापकत्वेन संन्यस्य ततोध्यायेत्परांशिवां ॥ १८ ॥ ध्या····· अपूर्ण

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––भगवती कालिका के गूढ़ तत्वों, काली तत्व के रहस्यों तथा मारण मोहनोच्चाटनादि के अनुरूप अंगन्यास, करन्यास का निरूपण । कवित्व के लिये इसका विनियोग किया जाता है ।

विशेष ज्ञातव्य––हस्तलेख अपूर्ण है । इसमें समस्त ४ पत्र (१-४) हैं । ध्यान एवं न्यास के बाद महत्वपूर्ण स्तोत्र एवं कवचादि के अंश अप्राप्त हैं । ग्रंथ की अवस्था ठीक है । दे० सं० स० १२५, विषय क्रम सं० ६० ।

कुंड सिद्धि : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–३३.४ × १० से०मी०, अपूर्ण, पत्र सं०–२३, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ८, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३२, परिमाण (अनुष्टुप् में)–३६५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–४२६३ ।

आदि—पत्र संख्या १ से १० तक खंडित । मध्यस्तंभ च तुष्टयेत्तु चूडानियमः ॥ यत्यं च रात्रे ॥ सारू दारू भवारूभानुदृढान्कुर्यादृजन्समान् ॥ मंडपार्द्धोछ्रितान्वेद संख्याश्चूडा-न्वितांस्था ॥ (पत्रांक ११ से उद्धृत)) ।

अंत ग्रंथकरण प्रसंगमाह ॥ श्री मङ्गल पु··· धिपेनमहितः······ रामेण कुंडाकृतिः ॥ सुभानुवत्सरे मासे भाद्रेपक्ष च कृयोः ॥ त्रयोदस्या दिवाचाह्नि दामोदरः समालिखेत् । शके १४७१ सुभानु संवत्सरे भाद्रमासे कृष्णपक्षे गुरौ त्रयोदशी तिथौ आश्लेषा नक्षत्रे कर्क स्थिते चंद्रे कर्क स्थिते सूर्ये शेषे कुग्रहषु यथा स्वोषुतद्दिवसेनृसींह क्षेत्रे पयोष्णितीरे इदं ग्रंथ दामोदर भेट भट्टेन लिखितं दत्तात्रयस्य सुतः त्र्यंबक भट्ट सरठेन लिखापितं इदं ग्रंथं समाप्त ॥

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—कुंड सिद्धि का तांत्रिक विधान।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण एवं खंडित है। आदि के दस पत्र तथा पत्र-संख्या १६ अनुपलब्ध हैं। रचनाकाल एवं रचनाकार के विवरण अप्राप्त हैं। लिपिकाल संवत् १५०६ (शक १४७१) तथा लिपिकार श्री दमोदर हैं। विशेष विवरण उपलब्ध नहीं है। दे० सं० सं ४२६३, विषय क्रम संख्या ६४।

क्रमदीपिका : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२७ × ७·८ से०, पूर्ण, पत्र सं० ५०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, अक्षर (प्रतिपंक्ति)—५४, परिमाण (अनुष्टुप् में)—११८१; प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान; सं० सं० ७५५।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ कनांत माया लय कांतमूर्तिः कलक्वणद्वेणु निनादरम्यः ॥ श्रितो हृदि व्याकुलयन्‌स्त्रिलोकीं श्रियेस्तु गोपी जन वल्लभो नः ॥ १ ॥ गुरुचरण सरोरुह द्वयोच्छान्महित रजः कणकान्प्रणम्य मूर्द्धा ॥ गदित मिह विविच्य नारदाद्यैर्गजनविधिं कथयामिशार्ङ्गपाणेः ॥ २ ॥ क्षिति सुर नृप विट् तुरीय जानां मुनि वनवासि गृहस्थ वर्णिनांच ॥ जपहुत यजनादिभिर्मनूनाफलतिहि कश्चन कस्यचित्कथं नत् ॥ ३ ॥ सर्वेषु वर्णेषु तथाश्रमेषु नारीषु नानाह्वय जन्ममेषु ॥ दाता फलानामभिवांछितानांद्रागेव गोपालक मंत्र एषः ॥ ४ ॥

अंत—न्यास जप होम पूजा तर्पण मंत्राभिषेक विनियोगानां दीपिकयेव मयोद्भासते कृष्ण मंत्रगण कथितानां ॥ संशयतिमिरच्छिदुरासैया क्रमदीपिका करेणमहद्भिः। करदीपि केवधार्यासस्नेहमहन्निशं सुखावाप्त्यै ॥ · · · · · · इति श्री केशवाचार्य विरचितायां क्रमदीपिकायामष्टमः पटलः ॥ संवत् १६३८ समये श्रावण सुदि १३ शनौ लिखितमिदं पुस्तकं स्वार्थं गोपालेन तृपाठिना काश्यां ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—श्री कृष्ण के मंत्र-गणों के न्यास, जप, होम, पूजा, तर्पण, मंत्राभिषेक, विनियोगादि की व्याख्या, कृष्णस्तुति।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है। प्रत्येक अध्याय एवं विषय के अंत को पटल शब्द से सूचित करने तथा तंत्र ग्रंथोचित मंत्र, न्यास, विनियोगादि संग्रह प्रक्रियानुसार भागवतादि वैष्णव ग्रंथों से मंत्र—स्तोत्रादि संग्रह किये रहने के कारण यह एक वैष्णव—तंत्र—ग्रंथ है। ग्रंथकार श्री केशवाचार्य हैं। लिपिकार श्री गोपाल त्रिपाठी एवं लिपिकाल संवत १६३८ है। लिपिकाल बहुत प्राचीन होने के कारण ग्रंथ काफी महत्वपूर्ण है। दे० सं० सं० ७५५, विषयक्रम संख्या ७१।

चंडी स्तोत्र प्रयोग विधि : आधार—देशीकागज, लिपि—देवनागरी, आकार—३०·८ × १५·४ से., पूर्ण, पत्र सं०—१८. पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, अक्षर (प्रतिपंक्ति)—३४, परिमाण (अनुष्टुप् में)-१०३३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०—२०२७।

आदि—ॐ नमो गणेशाय नमः ॥ अथ सामविधिः ॥ ब्राह्मणोऽप्ययः कामयेतपुनः प्रत्याजायेय-मितीत्यपुनर्भवमधिकृत्य तदानुसंधेयोऽस्य मंत्र उक्तः रात्रि प्रपद्येपुनर्भूमयो भूकन्यां

शिखंडिनीं पाशहस्तां युवतीं कुमारिणीमादित्य श्चक्षुषैवात: प्राणायमोमो गंधार्याय: स्नेहाय मनोऽनुज्ञाय पृथिव्यै शरीरमिति ।। अस्य रात्रौ जपमात्रात्सिद्धि: ।।

अंत---इति श्रीमदुपाध्यायोपनाम शिवभट्ट सुत सती गर्भज नागोजीय भट्टकृत मार्कंडेय पुराणांतर्गत सप्तशताख्य चंडी स्तोत्र व्याख्याने चंडी स्तोत्र प्रयोग विधि समाप्तम् ।। संवत् १८८१ आश्विन शुदि पूर्णिमा १५ गुरुवा ··· लिखमिदं पुस्तकं चंडी प्रयोगविधानं लक्ष्मणाभिधानेन घृत कौशिक गोत्रेण ··· पुर मध्येवासिना ।। शुभमस्तु ··· ।

विषय---(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)---दुर्गा सप्तशती नाम से विश्रुत चंडी-स्तोत्र की व्याख्या एवं उसकी प्रयोग विधि ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत हस्तलेखपूर्ण है। ग्रंथ के किनारे कृमि-कृंतित हैं। लिपिकार लक्ष्मण एवं लिपिकाल संवत् १८८१ है। दे० सं० सं० २०२७, विषयक्रम सं-११८ ।

तंत्र कौमुदी :---आधार-देशी कागज, लिपि-देवनागरी, आकार-२४·७ × १०·५ से०, अपूर्ण, पत्र सं०-१००, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३८, परिमाण (अनुष्टुप् में)-२३७५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन-दान; सं० सं०-७४३ ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।। आनंदेन त्रिदशतटिनीं मृद्धिविन्यस्य शंभोरर्द्धमध्ये परिजनभंतादवे शूलहस्तं । दृष्ट्वा पीनस्तनमवनतभ्रूनतं वर्द्धमानस्यर्द्धकोपादपरमवतादर्द्धमार्द्धाविकेशं ।। येते तर्कविचार चारु मतयो ये वेद वेदान्तिनो ये केचिद्द्वयोविशुद्धमतयो जानंतितत्वंदते । तत्वं सम्यग् सम्यगेव यदि वा प्रीत्यर्थयेदर्थतितत किंतर्कै रतिपीडनेन गुरुणा पूज्यो गुरुणां क्रमः । वामे मार्गेसरस मतयो दक्षिणो दुर्विलासाः काले काले विदधति मातिं तंत्रमंत्रेषुधीराः । तस्मादस्मिन् सरस विदुषो वेदितुं तंत्र गुप्ता लतान भानतिरधुनातर्क पंचाननस्य ।। गोविंदपंचमसुतो वेदितो जगत्यामत्यादरेणविदिताखिलतंत्रसारः ।। तर्काटवी सरणि संभ्रम साहसिवय पंचाननो विजयते भुविदेवनाथः। राजा गोविंद देवो गजपतिरदिवस्वर्ण सिंहासनार्द्धदत्वा मुद्राः सहपि नव दश वा चारु पट्टांबराणि । अर्वागर्वंतमेकंकविवरमपरं दुर्लभं भूपतीनांपल्यंकंनिः-कलंकं मणि मुकुट वरं तर्क पंचाननेषु ।। दो दर्पेण विजित्य भूपतिभटालभूताधिनाथ विरात्तपोभून्नरनाथ शेष सरणिः श्री विश्वसिंहोमहान् तत् पुत्रो बलवीर्य सौर्यविभवोदार्य्यातिधैर्यादिमानध्यातो चारविचार चारु चरितः श्री मल्लदेवोधुना ।।··· गुरुक्रमेण येत्रेषुपूर्वं सेवासु पूजने । इदानी तंत्र गुप्तानां मंत्राणां विधि रुच्यते ।।

अंत---वर्गाद्यं वह्नियुक्तं विधुरति वलितं तत्रयं कूर्च्चं युग्मं लज्जा द्वद्वं च पश्चात् स्मितमुखितघः ठ द्वयं योजयित्वा । मातर्येये जपंति स्मर हर महिले भावयंतः स्वरूपं ते लक्ष्मी लास्य लीला कमलदल दृशः कामरूपा भवंति ।।५।। प्रत्येकं वा त्रयं वा द्वयमपिचपरंवीजमत्यंतगुह्यं त्व नाम्नायो जपि ····· अपूर्ण ।

विषय---(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)---बाला, ज्ञानार्णव, त्रिपुरा आदि विभिन्न शाक्त तंत्र-ग्रंथों से ग्रहीत भैरवी देवी के मंत्र, जप, न्यास, पूजा, विधान तथा वलि-क्रम का विशद विवेचन ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है। इसका अंत खंडित है। ग्रंथ के बीच में उपस्थित

पुष्पिका में एक जगह "इति महाराजाधिराजमल्लदेवक मतेश्वर नारायण कारितायां महामहोपाध्याय श्री तर्क पंचानन देवनाथ कृतायां तंत्र कौमुद्यां तांत्रिको त्रिपुरा बाला पटल परिछेद: ।।" से ग्रंथकार श्री तर्कपंचानन देवनाथ जान पड़ते हैं। लिपिकाल आदि के विशेष विवरण उपलब्ध नहीं । दे० सं० सं० ७४३, विषय क्रम सं० १३६ ।

तंत्रसार : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२६ × १३से०, अपूर्ण, पत्र संख्या–४१, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, अक्षर (प्रति पंक्ति)–४५, परिमाण (अनुष्टुप् छंद में)–१०८, प्राचीन, प्राप्ति–साधन–दान, सं० सं० ५५२ ।

आदि–श्रीगणेशायनमः ।। अथ प्रकीर्णकं ।। तत्रादौ पूजायां दिग्निधानं । विष्णुविषयेनारदीये । स्नातः शुक्लाम्बरधरः आचांतः पूर्वदिङमुखं शुद्धासनं समासाद्य भूतोत्सारण माचरेत् । अन्यत्रतु निबंधे ।

अंत–इति महामहोपाध्याय श्री कृष्णानंद वागीशभट्टाचार्य विरचिते तंत्रसारे चतुर्थ परिछेदः समाप्तः ।। शुभंभवतु ।।

विषय–(पूर्ण विवरण, साहित, प्रारंभ से अंत तक)–'सार समुच्चय, 'मंत्र-तंत्र–प्रकाश, 'यामल' आदि विभिन्न तंत्र के संकलनों से संपुटित, उग्रताराकवच, त्रैलोक्य मोहन कवच, हनुमत्स्तोत्र, बगलामुखी कवचादि, इंद्राक्षी स्तोत्र, बामाचार, योग–क्रिया आदि का विस्तृत निरूपण ।

विषय ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्लेख अपूर्ण है । प्रारंभ के ८५ पत्र अनुपस्थित हैं । । इसकी एक पूर्ण प्रति भी है । (दे० क्रम सं० १४२ और सं० सं० ३७६४) । कृष्णानंद नाम के एक अन्य संग्राहक की 'संक्षिप्त तंत्रसार' नाम की एक अपूर्ण पुस्तक मिली है । (दे० विषय क्रम सं० ५६६, सं० सं० ३१६६) परंतु दोनों में भिन्नता है । प्रथम में वैष्णव मंत्रों की भी व्याख्या है । इस प्रस्तुत ग्रंथ के संग्राहक श्री महामहोपाध्याय कृष्णानंद वागीश भट्टाचार्य हैं । दे० सं० सं० ५५२ विषय क्रम सं० १४४ ।

तारा पद्धति : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२४ × ६.३ से, अपूर्ण, पत्र सं०–२२, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)–८, अक्षर (प्रतिपंक्ति)– ३१, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं० ६६२ ।

आदि–श्री गणेशाय नम : ।। प्रणम्य तारिणीं नित्यां संसारार्णव तारिणीं ।। संक्षेप पद्धति वक्षे शिवयो : प्रिय सूनुना ।। १ ।।

अंत–निर्माल्यं सिरसिधृत्वा नैवेद्य जातं शिष्टेभ्यः शिष्येभ्यः स्त्रीभ्यश्चदद्यात् ।। स्वयं किंचित स्वीकार्यात् ।। अस्यपुरश्चरणं लक्ष जपः दशाशं श्वेत पद्मैं होमः ।। शुभं· · · ·अपूर्ण

विषय– (पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)–भगवती तारा के पीठस्थापन, मंत्र-जप, न्यासविधि, स्तोत्र एवं सांगोपांग पूजाविधानादि का विवेचन ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है । अंत के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं इसी विषय का एक हस्त लेख तारा देवी पद्धति (पूजा विधान) सं० सं० ७५१८ विषय क्रम सं० १५१

पूर्ण है। रचनाकार लिपिकारादि के विवरण ज्ञात नहीं। दे० सं० सं० ६६२ विषय क्रम सं० १५२।

तारा भक्ति सुधार्णव : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–३०·४ × १२·५ से०, अपूर्ण, पत्र सं०–४४०, पंक्ति–(प्रतिपृष्ठ) ७, अक्षर–(प्रतिपंक्ति) ४१, परिमाण (अनुष्टुप् में)–७८८३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं० ५६१।

आदि–श्री गणेशाय नमः सौनासीरमणिप्रवीण जलद्ग्रामाभिराम छवि नृत्यत्पीटपटद्वयैककपट प्रोद्यत्परागा···वंशी वादन कैतवप्रविलसद् गंभीरधीर ध्वनिं वंदे विद्हंमुदामधुलिहं हृत्पद्म मध्यस्थितं १··· × × नाना तंत्राणि विज्ञाय गदाधर गुरोर्मुखात। करोति नरसिंहोयं ताराभक्तिसुधार्णः ·· ··· × × तंत्र ज्ञान सुधां बुधाम्रि सहजातंदेसतीर्थ्येनि जे सप्रेमा मदयोऽनुक नृपतौ शिष्येऽस्य विज्ञेयत ॥ तस्माद्वा ··· भावासिंहाज्ञया ताराभक्ति सुधार्णव वितनुते धीमान्नृसिंहो द्विजः ॥४॥

अंत—इति श्री महामहोपाध्याय ठक्कुर श्री नरसिंह विरचिते ताराभक्ति सुधार्णवे एकादशस्तरंगः समाप्तमिति ताराखंड :।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–भगवती तारा के रहस्यमय मंत्रों, अमूल्य कवच एवं स्तोत्रों, बलिदान प्रक्रिया, पीठपूजा एवं यंत्रविधानादि की विस्तृत व्याख्या।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख के आदि और अंत सुरक्षित हैं। बीच में कई ग्रंथों के स्फुट पत्र उसमें रखे गये हैं। प्रस्तुत हस्तलेख के भी बीच के कतिपय पत्र अनुपस्थित हैं। रचनाकारने अपना नाम ठक्कुर नरसिंह कहा है। इसी नाम का एक अन्य ग्रंथ भी प्राप्त हुआ है जो अपूर्ण है। वह विभिन्न तंत्रों के ग्रंथों से संग्रहीत स्तोत्रों एवं सहस्रनामों का संग्रह है। प्रस्तुत हस्तलेख के किनारे कृमिकृन्तित हैं। हाशिये पर ग्रन्थ से भिन्न विस्तृत पादटिप्पणी है। रचनाकाल उपलब्ध नहीं। दे० विषय सं० सं० ५६१, क्रम सं० १५३।

ताराभक्ति सुधार्णव : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–३२·२ × १५·५सें० अपूर्ण, पत्र-संख्या–१३०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१०, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–२९२५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०—५५२।

आदि—श्री गणेशाय नमः देव्युवाच ॥ देवेश श्रोतुमिच्छामिरहस्याति रहस्यं कां ॥ तारा विद्या श्रुता देव महाविद्यास्त्वनेकशः ॥१॥ विविधाः साधना देव सर्वभेत्तत्प्रकीर्तितं। उग्रापत्तारिणी देव्यां नाम साहस्रकं शिव ॥२॥ संसूचितं पुरादेव किल मह्यं प्रकीर्तितं। तदेव कथ्यतां देव यद्यहं तव वल्लभा ॥३॥

अंत—इति महातंत्रे मत्स्यसूक्ते तारे कल्पे चतुर्थः पटलः ॥४॥ समाप्तश्चायं ताराभक्ति सुधार्णव पुस्तकं ॥····· संवत् १७४६ समय कार्तिक कृष्णपक्ष त्रयोदश्यां दिने लिखायितं सिद्धिः श्री महाराजाधिराज श्री भावसिंह देवेन लिखितमिदं पुस्तकं रूपणि मिश्रेण वांधव प्रदेशे अमर पट्टने ॥···

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—भगवती तारा के पूजा विधान, तारा सहस्रनाम, स्तोत्र एवं रहस्यमय कवचों एवं मंत्रों का संग्रह।

विशेष ज्ञातव्य –प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है। आदि और अंत के कुछ पत्र क्रम से प्राप्त हैं। बीच के अधिकांश पत्र अनुपस्थित हैं। यह एक तंत्र का संग्रह ग्रंथ है। लिपिकार श्री रूपणि मिश्र हैं। तारा भक्ति सुधार्णव' नाम का एक अन्य वृहद् अपूर्ण ग्रंथ प्राप्त हुआ है, जिसके रचनाकार ठक्कुर श्री नरसिंह हैं। उन्होंने भी महाराजाधिराज भावसिंह की आज्ञा से उस ग्रंथ का प्रणयन किया है। दोनों में साम्य नहीं है। अन्य विशेप वृत्त उपलब्ध नहीं। दे० सं० सं० ५५२, विषय क्रम सं० १५४।

तारा रहस्य : आधार–देशी कागज, लिपि,–देवनागरी, आकार–२३·५ × १०· , अपूर्ण, पत्र सं०–५१, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–९, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–२०, परिमाण (अनुष्टुप् में)–७७५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान; सं०सं०–५५३।

आदि––···दाचार निरतानां चतुर्युजपमानयंति तदुक्तं एक बीरा कल्पे भावनां रहितानां तु क्षुद्रानां क्षुद्र चेतसां चतुर्गुण जपं प्रोक्तः सिद्धये नान्यथाभवेत्····

अंत––कापालिके महावज्र महारावे महास्वने। जाड्यां नाशय देवेशि। कालि। कालि नमस्तुते॥ पिंगाग्रैक जटां नमामि सततं लंबोदरीं त्र्यंबकां विद्युत्पुंजनिभावृतां सुललिताना····अपूर्ण।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––भगवती तारा की पूजनपद्धति, महाचीन क्रम, शिवा–बलि-विधान, कुमारीकल्प, वीरसिद्धिविधान, तारास्वरूप एवं उनके स्तव आदि की सूक्ष्म व्याख्या।

विशेष ज्ञातव्य––हस्तलेख अपूर्ण है। कुल ५१ पत्र (२४-७४) प्राप्त हैं। ग्रंथ के आदि और अंत दोनों खंडित हैं। रचनाकार तथा लिपिकाल आदि के विवरण अनुपलब्ध हैं। दे० सं० सं० ५५३, विषय क्रम सं० १५५।

दक्षिणामूर्ति संहिता : आधार-देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२४·६ × १०·१, सं०, पूर्ण, पत्र सं०–६५, पंक्ति (प्रतपृष्ठ)–९, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४५, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१६४५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं०सं०–६७१।

आदि–– ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥ श्री मच्छ्री कोश हृदयं पंच सिंहासनात्मकं फलं कल्पलतानां तु पंचरत्न स्फुरत्वकलं। १॥ चतुरायतनानंदि चतुराम्नायकोशगांनित्यानंदिपरं ब्रह्मधाम नौमि सुखाप्तये॥ २॥ श्री देव्युवाच॥ कृपां कुरु महादेव कथायानंदिमंदिरां किं तद्ब्रह्म मया धाम श्रोतुमिच्छामि तत्वतः॥ ३॥

अंत––इति श्री दक्षिणामूर्ति संहितायां दमनकारोपण नैमित्तिका विधानं नाम पटल॥॥॥ संवत्स १७२० सतैनामकुअन वादी दुतीआ वान बुधावन के पुस्तक लीप्यते शुभमस्तु सीध्यरस्तो॥

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––महालक्ष्मी, अन्नपूर्णा, भैरवी आदि देवियों का पूजनविधान; आत्मानुसंधान विधि, संजवनी पूजनविधि, तंत्र-यंत्रोद्धार, श्री विद्या आदि विभिन्न पटलों का क्रमबद्ध वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है। लिपिकार का नाम अनुपलब्ध है। एवं लिपिकाल

का निर्देश संवत् १७२० है। प्राचीन होने से ग्रंथ महत्वपूर्ण है। दे० सं०सं० ६७१, विषय क्रम सं० १६७।

शिव तांडव तंत्र : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२६ × १२ से०, पूर्ण, पत्र सं०–२४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१२, अक्षर–(प्रतिपंक्ति)–४८, परिमाण–(अनुष्टुप् में)–१५१८, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–६८६।

आदि–···दे···शिवक्ष्यामि परमाद्भुत कारणं यन्नकस्यचिदाख्यातं तत्ते वक्ष्यामि सांप्रतं १ शृणुष्वैकमनाकांते मत्तमातंग गामिनि–नव्य···तथा २ वश्यार्थं भूर्यपत्रे च मोहने रौप्यपत्रकं मारणे लोह पत्रेतु स्तंभनेपैत्तलंभवेत ३

अंत–इति यंत्र राजाभिधंयत्रं इति श्री शिवतांडवे सर्व तंत्रोत्तमे दक्षिणामूर्तिपार्वती संवादे नागेन्द्र प्रयाणे षोडश कोष्ठयंत्रलिखन प्रकार कथनं नाम त्रयोदशः पटलः १३ समाप्तः––इदं पुस्तकं शीवा रामेण लिखितं

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, विष, भय, लूत, विस्फोटकादि हरण, राजवशीकरण, स्तंभन विद्वेषण, ज्वर हरण आदि विभिन्न अभिलषित वाञ्छाओं की सिद्धि के लिये अनेकों यंत्रों का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण है। लिपिकार एवं लिपिकाल का वर्णन अनुपलब्ध है। ग्रंथ के किनारे कीटों के द्वारा क्षतिग्रस्त हैं। दे० सं० सं० ६८६, विषय क्रम सं० ५५७।

षोडश नित्यातंत्र (कादिमत) : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२७·७ × १०·६ से० अपूर्ण, पत्र सं०–१६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ४४, परिमाण (अनुष्टुप् में)–५२३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–८५०।

आदि––अनाद्यंतोपराधीनः स्वाधीनभुवनत्रयः ॥ जयत्यविरतोव्याप्तः विश्वः कालो विनायकः ॥ १ ॥ भगवन्सर्व तंत्राणि भवतोक्तानि मे परा ॥ नित्यानां षोडशानां च नव तंत्राणि कृत्स्नशः ॥ २ ॥ तेषामन्योन्य सापेक्षाज्जायते मतिविभ्रमः ॥ तत्सात्तुनिरपेक्षं मे तंत्रं तासां वद प्रभो ॥

अंत––भावयेद्वह्नि सूर्येन्दु भूतानिपरमेश्वरि ॥ यपेच्च दशवा········अपूर्ण।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––कादि मत तंत्रानुसार गुरुगरिमा अजपामंत्र 'हंसः' की जपविधि तथा महिमा, तथा षोडशी देवी की पूजा एवं मुद्रा–विधान।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है। आदि के पत्र अप्राप्त हैं। रचनाकालादि के विवरण उपलब्ध नहीं। दे० सं० सं० ८५०, विषयक्रम सं० ५६३। इसी नाम से सुभगानंद रचित एक पुस्तक और है जिसपर 'मनोरमा' नाम की टीका है (दे० सं० सं० १७६२ एवं विषय क्रम सं० ५६४) पर यह भी अपूर्ण और जीर्ण।

संक्षिप्त तंत्रसार : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२५·५ × १२·६ से०, अपूर्ण, पत्र सं०–६१, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) २१, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१६०१, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०३१६६।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। नत्वा कृष्णपदद्वंद्वं ब्रह्मादि सुरवंदितं ।। गुरुं च ज्ञानदातारं कृष्णानंदेन धीमता ।। तत्तद्ग्रंथगताद्वाक्यान्नानार्थं प्रतिपद्य च ।। सौकर्यार्थं च संक्षेपात्तंत्रसारः प्रत्यन्यते। उच्यते प्रथमं तत्र लक्षणं गुरु शिष्ययोः ।। शांतोदांतः कुलीनश्च विनीतः शुद्धवेशवान् ।। शुद्धाचारः सुप्रतिष्ठः शुचिर्दक्षः सुबुद्धिमान् ।। आश्रमी ध्याननिष्ठच मंत्रतंत्र विशारदः ।। निग्रहानुग्रहे शक्तो गुरुरित्यभिधीयते।। इति गुरुलक्षणं ।

अंत—एषा श्रीः परमा परात्परनमासर्वाथसिद्धिप्रदा, सारात् सारतरा समस्त जगतामुत्पत्ति-भूताशिवा । सेयं ब्रह्मस्वरूपा सकलगुणमयी निर्गुणा निष्प्रपंचा, साक्षात्कामदुघा सुरमुनिनिवहैर्वंदितानंदरूपा । अस्यार्थ : स एवां तोपस्पतेन सांतः षकारः स एवां तो ······· अपूर्ण ।

विषय (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—प्रस्तुत हस्तलेख में विभिन्न तंत्र-ग्रंथों से जैसे-गौतमीतंत्र, सारसमुच्चय तन्त्रज्ञानार्णव आदि—से संग्रहीत एवं विवेचित दुर्लभ मंत्रों एवं प्रयोगों का विवरण है। भैरवीमंत्र, दुर्वाषा ऋषि की चतुष्कूटा महाविद्या, लोपामुद्रा देवी की उपासना, कामराजविद्या, श्री विद्या जैसे अलभ्य रहस्यों की वृहद् विवेचना भी है। तंत्र से सम्बन्धित देवीरहस्यों के अतिरिक्त हनुमत्साधना (हनुमत्कल्पान्तर्गत), गारुड़तंत्र, विष्णु, कृष्ण, राम, भैरव आदि देवों के मंत्र एवं उनकी सिद्धिविधि की भी अच्छी व्याख्या है, जिससे ग्रंथ की महत्ता और बढ़ गई है।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अपूर्ण है। यह तंत्र का संग्रह ग्रंथ जान पड़ता है क्योंकि ग्रंथ के मध्य में अनेक ग्रंथों के नाम उल्लिखित हैं। संग्रहकर्ता ने अपना नाम कृष्णानंद दिया है। अन्य वृत्त उपलब्ध नहीं। दे० क्र० सं० ५६६, सं० सं० ३१६६। तंत्रसार नाम की पुस्तक से (दे० सं० सं० ५५२, क्र० सं० १४) जिसके रचयिता कृष्णानंद वागीश-भट्टाचार्य हैं, वह पुस्तक भिन्न है।

(६) दर्शन—अद्वैतामृत : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२२·६ × ५ सें०, पूर्ण, पत्र सं०—२२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १३, अक्षर (प्रति पंक्ति)—४४ परिमाण (अनुष्टुप् में)—८०४, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान; सं० सं० ६१४।

आदि—श्री दक्षिणामूर्तये नमः ।। अविघ्नमस्तु ।। ।। हरिहर सरस्वती यद्गुरुरीड्यः परमहंसानां ।। स जगन्नाथ पदोत्तर सरस्वतीश शब्द संवेद्यः ।।१।। कर्मदिकं वालंकार सारं वेदांत वारिधेः ।। रचयन्त्यमलं ग्रंथं अद्वैतामृत संज्ञकं ।।२।। आसीद्यतिवरः कश्चिद्विवेकाश्रम संज्ञिकः ।। यत्प्रसादेन वहवो मुक्तिमार्गमुपागताः ।।३।।

अंत—इति श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य हरिहर सरस्वती प्रिय शिष्य परमहंस परिव्राजकाचार्य जगनाथ सरस्वती विरचिते अद्वैतामृते पंचमः कबलः ।। समाप्तोयं-ग्रंथः ।। ।। शके ।। १५०३ वृष संवत्सरे फाल्गुण मासे त्रयोदस्यां भौमवासरे स्वति श्रीमद्विष्णु स्वामि चरस्मरण परायण श्रीमनंत देव सूरि सूनुना नरसिंहेन अनंत भटार्थमिदं पुस्तकं लिखितं सुखं चिरं तिष्णतु ।। शुभमस्तु श्लोक संख्या ।।५८११।। ···

विषय––(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–अद्वैतमत का निरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत् हस्तलेख पूर्ण है। रचनाकार श्री जगन्नाथ सरस्वती हैं। लिपिकाल सवत् १६८० होने से पुस्तक अत्यंत प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है। अन्य विशेष वृत्त उपलब्ध नहीं। दे० सं० सं० ६१४, विषय क्रम सं० १३।

आत्मज्ञान : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२३·१×८·६ से० मी०, अपूर्ण, पत्र सं०–२६, पंक्ति–(प्रतिपृष्ठ)–८, अक्षर (प्रति पंक्ति)–३८, परिमाण (अनुष्टुप् में)५७६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–२६११।

आदि––···कृत मंगलाचरणे ग्रंथमारभमाणो विषयाद्यनुबंधनार्थं दर्शन्तुदेशं प्रतिजानीते। आत्मज्ञानेति। आत्मनोनिरूप चरितस्वरूपस्य––प्रतीचोज्ञानमित्युक्ति प्रकरणविषयात्वंसद्योच्यते। तेन विषयविषयिभावः सम्बन्धोपि तस्य सूचितोऽवदितव्यः।

अंत––इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीशुद्धानंदपूज्यपादशिष्य भगवदानंद ज्ञान विरचितात्मज्ञानटीका समाप्ताः ॥ ॥ श्री संवत् १५६४ वर्षे पौष शुदि दशविदिने लिखितमिदं ॥ श्रीः ॥ यादृशं पुस्तके द्रष्टं तादृशं लिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धं वा ममदोषानदीयते ॥ लेखपाठया ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

विषय (पूर्ण विवरण सहित आरंभ से अंत तक)––वेदांत दर्शन की मान्यताओं का निरूपण)

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख १ से ४ खंडों में प्रथम पृष्ठ के अतिरिक्त पूर्ण है। यह मूल ग्रंथ की संस्कृत टीका है। टीकाकार आनंदज्ञान अथवा ज्ञानानंद हैं। लिपिकाल संवत् १५६४ है। प्राचीनता के कारण ग्रंथ महत्वपूर्ण है। सं० सं० २६११, दे०क्र० सं० ५८।

आलोक दर्पण (प्रत्यक्ष खंड) : आधार–देशी, कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२८·४ ×१ ·६ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं० १८१, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, अक्षर (प्रति पंक्ति) ४६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–७२०६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–५१८४।

आदि––॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ शंकर जगदंबिकयोरंके पंकेन खेलंतं। लंबोदरभवलंबे यंवेद न तत्वतो वेदः। अत्र श्लोकानां व्याख्या टीकाकृता सुकरत्वादुपेक्षिता सावै वं प्रारिक्षित विध्न विघातकं पुरभिन्नमस्कार रूपं मंगलं शिष्य शिक्षायै निबध्नाति गुणेति। सत्वरजस्तमो रूपान् गुणानतो गुणातीतः।

अंत––विधाय विदुषीधात्यै प्रत्यक्षालोक दप्पणं। श्री गोपाले महेशेन तस्या कारि समप्पणं ॥ ॥ इति श्री महेश बक्कुर विरचिते आलोक दर्प्पणे प्रत्यक्ष खंडः समाप्तः ॥ ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १६४६ समये कार्तिक वदि १ मंगल वासरे लिषितं वाराणस्यां जगदीस ब्राह्मणेन ॥ श्री विश्वनाथाय नमः ॥ ॥

विषय (पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)––न्याय दर्शन के चार प्रमाणों में से प्रत्यक्ष खंड की विस्तृत विवेचना।

विशेषज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण है और यह 'चिंतामणि' के प्रत्यक्ष खंड का सुव्यस्थित भाष्य है। ग्रंथकार श्री महेशठक्कुर एवं लिपिकार श्री जगदीश हैं। लिपिकाल सं० १६८६ होने से ग्रंथ प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। दे० सं० सं० ५१८४, क्रं० सं० ७४।

कुसुमांजलि विकास : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार— ८·७ × १०·५ से० मी०, अपूर्ण, पत्र सं० १४०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ४५, परिमाण—(अनुष्टुप् में)—३५९४, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं० ५३३३।

आदि— × × × मीचीनत्व परत्वेन नत्र्यास्तात्पर्यग्राहकत्वेन सत्तुल्यमिवार्थकत्वेनबोप × × × × योपि अस्य क्षोणि पतेरित्यादित्वाहुर्यः शाब्दबोधस्तत एव चमत्कारादि + + + ध्य-सिद्धेरभावात्··· (प० सं० १३, इसके पहले का खंडित)।

अंत—तथा च श्रवणं कीर्तनं विष्णो स्मरणंपादसेवनं अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनं इति नवधाविभक्त भक्त्यैक देशो लखो भवित सामान्यं बोधयन भक्ति याचे इत्येवमर्थ प्रतिपादयतीत्यपरस्य। विशिष्ट फलत्वा भावादित्यपरे॥ याम्या इति प्रयोगस्तुयागीपुमाधव इति विग्रहे तत्रसाधु १०॥ इति गोपीनाथ मौनिनः कृतौ कुसुमांजलिविकासे पंचमः संपूर्णः॥ शुभमस्तु॥ संवत १७१० रामयजदी छठी लिषितं अजोध्या कायस्थेन शीवपुर नीवाशीनां विंदुमाधव निकटे गृहे पुस्तकं पठनार्थं·······।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)—न्याय दर्शन के सिद्धांतों का विविध विधि निरूपण।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण नहीं है। पत्र सं० १ से १२ तक अप्राप्त है। ग्रंथकार श्री गोपीनाथ मौनी एवं लिपिकार श्री अयोध्या कायस्थ हैं। लिपिकाल के सं० १७१० होने से ग्रंथ प्राचीन एवं महत्वपर्ण है। पत्र संख्या १३ का दाहिना किनारा जीर्णता के कारण खंडित है। पुस्तक की कुछ अन्य विशेषताओं में से एक यह भी है—कहीं कहीं विशुद्ध साहित्यिक उद्धरणों के द्वारा विषय वस्तुएँ स्पष्ट की गई हैं। दे० क्रम सं० ६६, सं० सं० ५३३३।

तत्वचिंतामणि (अनुमान खंड) : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार— २५·७ × ११·१ से०, पूर्ण, पत्र सं —१५५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, अक्षर प्रति पंक्ति ४६, परिमाण (अनुष्टुप् में)—५३४८, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं० १७५।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः॥ श्री विश्वेशो जयति॥ अमुष्मिन्नेता वत्यरिचित तत्वार्थ गहने प्रसंगेमिथ्यम्यहह परिहासैकफलकः॥ तथापि श्री गौरी परिवृट पदांभोज युगलेन मग्ना भक्तिश्चेत्कथय किमशक्यंत्रिजगति॥ १॥ अनुमान परिछेदेतत्व चिन्तामणेरयं॥ पितृव्य हरिमिश्रोणेदिष्टो भावः प्रकाश्यते॥२॥ प्रत्यक्षानंतर मनु मानस्योद्दिष्टत्वात्तल्लक्षणानंतरमनुमानलक्षणंभियत इत्याह।

अंत—न चैवमव्याप्ति शंका अंत्यदुःख प्रागभावकालीनत्वानुपांत्यस्येति भावः॥ असौ दुःखध्वंसः नत्र प्रकृतः तस्यातीतत्वाभावेन ध्वंसा संभवादित्यवधेयं॥ इति श्री महामहोपाध्याय

जयदेव मिश्र विरचितो अनुमानखंडालोकः संपूर्णः ॥...... संवत १६६६ समए चैत्र सुदि दशमी शुभदिने विश्वेश्वर संनिधाने ग्रंथ समाप्त ॥ शुभमस्तुः ॥

विषय–(पूर्ण विवरण सहित आदि से अंत तक)–न्यायशास्त्र के अनुमान खंड की व्याप्ति, समवेत समवायादि भेदों सहित विस्तृत प्रामाणिक व्याख्या ।

विशेषज्ञातव्य–ग्रंथ बहुत ही प्राचीन है। इसका लिपिकाल संवत् १६६६ है। महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र इसके टीकाकार हैं। रचनाकाल और प्रामाणिकता की दृष्टि से ग्रंथ महत्वपूर्ण है। हस्तलेख पूर्ण है। मध्य के पत्र सील से ग्रस्त हैं। ग्रंथ के प्रणेता पं० गणेश उपाध्याय हैं। दे० क्रम संख्या १३८, सं० सं० १७५।

तत्वदीपिका : आधार–देशीकागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२७ × ७.५ से; अपूर्ण, पत्र सं०–६४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ७, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ५१। परिमाण (अनुष्टुप् में)–२ ६७, प्राचीन प्राप्तिसाधन–दान सं० सं०–१६४८।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ स्तंभाभ्यंतर गर्भभाव निगद व्याख्या तत द्वैभवोयः पांचानन पांचजन्य वपुषा वादि श्रुतिश्चान्यतः प्रल्हादा निहितार्थतत्क्षणमिल दृष्ट प्रमाणं हरिः सोव्याद्वः शरदिन्दु सुन्दर तनु : सिंहाद्रिचूड़ामणिः ॥ १ ॥ ज्योतिर्यद्दाक्षिणा मूर्त व्यास शंकर शब्दितं । ज्ञानोत्तमाख्यं तद्वंदे सत्यानंद यदोदितम् ॥ २ ॥ विप्रतिपत्तिव्रातध्वांतं तध्वं स प्रगद्भमलः ॥ क्रियते चित्सुख मुनिनाप्रत्यक्तत्व प्रदीपिका विदुषां ॥ ३ ॥

अंत—इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य ज्ञानोत्तमाख्य पूज्यपाद शिष्य श्री चित्सुखमुनि विरचितायां तत्वदीपिकायां प्रथम परिच्छेद.......... ॥ संवत १५८१ समये अश्विन प्रथम पक्ष पंचम्यां लिखितमिदं.......

विषय (पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)—न्याय दर्शन के सिद्धांतों का निरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है। रचनाकार श्रीचितसुखमुनि हैं। लिपिकाल संवत् १५८१ है। ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है। (दे० क्र० सं० १४३, सं० सं० १६४८) इसका द्वितीय परिच्छेद भी चित्सुखमुनि जी द्वारा रचित है जो सं० १८४० का है (दे० क्र० सं० १४८), सं० सं० ६७३४। यह ग्रंथ अन्य लेखकों द्वारा भी लिखा गया है जिनमें रामकृष्ण, अखण्डानन्द और जयतीर्थ प्रमुख हैं।

तर्कभाषा :—आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–१८.६ × ८.४ से० मी०, अपूर्ण, पत्र सं०–२६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१२, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३७, परिमाण (अनुष्टुप् में)–७२२, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान,

आदि—श्री मद्रारामाय नमः ॥ श्री जानक्यै नमः ॥ गजाननाय महसे प्रत्यूहतिमिरछिद ॥ अपार करुणापूर तरंगित दृशे नमः ॥ नमामि परमात्मानं स्वतः सर्वाथ... दिनं । विद्यानामादि वक्तारं निमित्तं जगत्तमपि ॥२॥ प्रारिप्सितस्य ग्रंथस्य प्रेक्षावदुपादित्साप्रयोजिकामभिमतफलसाधनतामभिधायश्रोतृबुद्धि मनुकूलयन् वर्तिष्यमाणमवार्थमग्रे दर्शयति ॥ निश्श्रेयस फलं प्राहुर्येषांतचावधारणं प्रमाणादि पदार्थ स्वलक्ष्यंते नाति विस्तरमिति ॥

अंत—दृष्टार्थं · · · उपयुक्तानुरूपभेदाः कथिताः नाननुरूपभेदेन सिद्धान्त प्रतिपानदम् · · · · अयुक्तानां लक्षणानां दोषाय एतावनैव बाल व्युत्पत्तिसिद्धेः । श्रीः।। इति श्री मत्तार्किक चक्र चूड़ामणिश्च केशवमिश्राचार्य विरचिता तर्कभाषा समाप्ता ।।श्री । शके १४८५ वर्षे आषाढ़मासे शुक्ल पक्षे च नवमी तिथौ भृगुवासरे गोविन्देनेदं पुस्तक लिखितां पर पठनायात्मयनार्थं च शुभं भवतु ।।

विषय— (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)— न्याय सिद्धांतों की व्याख्या।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है । १ से ७ पत्रों के बाद मध्य के ८—१५ तक के पत्र अप्राप्त हैं । पूर्णता की दृष्टि से क्रम सं० १८४ एवं इस संग्रह की ग्रंथ संख्या २८३१ दृष्टव्य है किंतु उसमें लिपिकाल का निर्देश नहीं है। इसका लिपिकाल सं० १६२० (शाके १४८५) होने से ग्रंथ प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है । इस ग्रंथ में यद्यपि न्याय एवं वैशेषिक दोनों का मिलाजुला रूप है, फिर भी नव्यन्याय की पृष्टभूमि प्रस्थापन के लिये इसमें प्रचुर सामग्री है, अतः यह नव्य न्याय के ही ग्रंथ के रूप में विख्यात है । इन ग्रंथों के रचयिता केशवभट्ट है ।

द्रव्य किरणावली प्रकाश : आधार—देशी कागज, लिपि-देवनागरी, आकार—२६·४ × ६.३ से०, अपूर्ण, प्राचीन, पत्र सं०—१२०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, अक्षर (प्रतिपंक्ति)—४८, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०—७६०६ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। गण्डाभोगविलोलषट्पदघटा संवारण व्याजतः । शुण्डादण्ड विघट्टनेन परितो विघ्ने विनिघ्नन्ति वा । निर्गच्छन्मदवारिपिच्छलतरे मार्गे मुहुः प्रस्खलन्नारब्धे मम जायतामिह करात्मंम्बाय लंबोदरः। श्री जयदेव गुरोः सम्यगधीत्यमतमुत्तमम् । इत्थं प्रकाश विवृतौ रुचिदत्तः प्रवर्तते । विद्याविद्ययोरिति । इत्यादि · · · · ·

अंत—केचित्तु क्षेत्रं शरीरं । जानातीति ज्ञ आत्मा तदुभया यस्मिन्यो मूर्त संयोग इति योज्यन्तेन शरीरात्मसंयोगे नार्थान्तिरवारणायतदिति ।। इति श्री महामहोपाध्याय श्री रुचिदत्त विरचितो द्रव्यकिरणावलीप्रकाश प्रकाशः समाप्तः । शुभमस्तु संवत् १६४१ समये भाद्रपद द्वितीया रविवासरे लिखितं काश्यां वाशमधुसूदनब्राह्मणेन गोपालभट्टस्य पुस्तकं ।। शुभमस्तु ।।—छ ।। ।। छ ।। छ ।। छ ।। छ ।। छ ।। छ ।। छ ।।

विषय—किरणावाली ग्रंथ के केवल द्रव्यांश को लेकर प्रकाश नामक विवरण का विशेष व्याख्यान पं० रुचिदत्त कृत है । यह ग्रंथ आदि से अंत तक वैशेषिक न्याय, दार्शनिक पृष्ठ भूमि पर विद्याविद्यादि विषयों पर विश्लेषण युक्त है ।

विशेष ज्ञातव्य—न्याय के विशेष पंडित उदयनाचार्य कृत किरणावली ग्रंथ पर पं० जयदेव कृत प्रकाश टीका पर प्रकाशकार के शिष्य पंडित महामहोपाध्याय रुचिदत्त कृत प्रकाश व्याख्या है। इसका लिपिकाल संवत् १६४१ है। ग्रंथ प्रति प्राचीन है। अतः विशेष महत्व पूर्ण है । दे० क्र० सं० ३६, सं० सं० ७६०६ ।

न्याय निबंध प्रकाश : (प्रथम अध्याय) आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२७ × ८·७ सें०, अपूर्ण, पत्र संख्या—१२३, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, अक्षर

(प्रति पंक्ति)–५१, परिमाण (अनुष्टुप् में)–३५२६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, –सं० सं० १६४६ ।

आदि–····ज्ञानस्यापि सूत्रे मोक्षहेतुत्वेनाभिधानादित्यत आह साक्षादिति प्रमाणादितत्व ज्ञानत्वावोपयोगि प्रमेयतत्व ज्ञानं साक्षादित्यर्थः······तु शब्दः

अंत–इति श्री महामहापाध्याय श्री गंगेश्वरात्मज महामहोपाध्याय श्री वर्द्धमान कृते न्याय निबंध प्रकाशे प्रथमोध्यायः समाप्तः ।। संवत् १६३६ समये फाल्गुन शुदि गुरौ दशम्यां लिखितं चेति ।। शुभमस्तु ।।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–न्याय–दर्शन के तत्वों की व्याख्या ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है । लेखक महामहोपाध्याय श्री वर्द्धमान हैं । लिपिकाल संवत् १६३६ होने से ग्रंथ प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है । अन्य **विवरण** उपलब्ध नहीं, दे० क्र० सं० २६३, सं० सं० १६४६ ।

न्याय पंचमाध्याय (परिशिष्ट) : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२६ × ७·७ से० मी०, पूर्ण, पत्र **सं०**–२६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–६, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४५, परिमाण (अनुष्टुप् में)–२२५३, प्राचीन, प्राप्ति साधन– दान, **सं० सं०**–२६५४ ।

आदि–लक्ष्मीकान्ताय नमः ।। भूतभव्यवद्वस्तु निबंधनमबंधनम् ।। तरिं संसार पाथोधे-र्नमामिशिवदं शिवम् । पूर्वेषां वचनादाप्तं चिन्तयामि विवेचितम् । परिशिष्ट प्रकाशेत्र वर्द्धमानेन तन्यते ।। पूर्वाध्यायभेदकमनुगतमध्यायार्थं प्रदर्शयन्नेव संगतिमाह अथेति मंगलार्थः । परीक्षा पूर्वानिन्तर्यार्थो वा······

अंत–कोम्मन्न भट्टात्मजेन भट्टसनचन्द्रेण लेखि ।। छू । छू ।। यस्तर्क्कतंत्रपत्र सहस्त्ररश्मि गंगेश्वरः सुकविकैरवकाननेंदुः ।। तस्यात्मजोति विषमं परिशिष्टमित्थं प्राकाशयत्कृतिमुदे बुधवर्धमानः ।। ।। ।। संवत् १५४३ वर्षे श्रावणवदि अष्टम्यां भानु-वासरान्वितायां ।। गोपाचले ।। श्रीमन्पदवाक्यप्रमाणपारावारपारीण श्रीमत्कूर्म्मभट्टात्मजेनभट्टरामचंद्रेणेदं पुस्तकमलेखि ।। ।। इति महामहोपाध्याय श्रीमद्गंगेश्वरात्मज श्री वर्धमानविरचिते न्यायपचमाध्याय परिशिष्ट प्रकाशे द्वितीय-माह्निकं ।। समाप्तश्चायं ग्रथः ।। ······

विषय–(पूर्ण विवरण सहित आरंभ से अंत तक)–न्यायदर्शन की गुत्थियों को सुलझाने वाले इस ग्रंथ के रचयिता प्रसिद्ध नैयायिक श्री गंगेश्वर के पुत्र श्री वर्द्धमान हैं ।

विशेष ज्ञातव्य–हस्तलेख पूर्ण है । आरंभ के दो पत्र कृमि कृंतित हैं । दे० क्रम **सं०** २६४, सं० सं० २६५४ ।

पदार्थ खंडन टिप्पणम्––आधार–देशी कागज, लिपी–देवनागरी, आकार–२६ × १०·८ से०, अपूर्ण, पत्र सं० २६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१२, अक्षर (प्रति पंक्ति)–४३, परिमाण (अनुष्टुप् में)–८५६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं० १८४ ।

आदि––····दानी मित्यादेश्चप्रत्ययस्यविलक्षणताया वक्तव्यत्वादितिभावः यत्तुकाले दिशीति प्रतीत्योविषय भेदानुभवान्नतयोरभेद इति लीलावतीरीतिरिति । तन्न ।

अंत——एवं यथायथमेकार्थसमवायादिनातादात्म्यादिना च सम्बंधेन दैशिक नियमोपि प्रायश : कारणतामभिशेत इत्यलमति विस्तरेण ॥ ॥ प्राच : कथंचिदपि सचरणे समर्थाना- र्थान भातियदिदीधितिकृद्विवेकः । श्री सार्वभौम कविकल्पितमर्थत त्वेन तर्हिसुधियः परिशीलयंतु ॥ इति श्री महामहोपाध्यायरामभद्रसार्वभौम विरचितं पदार्थखंडन टिप्पणं समाप्तं ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ ... शके १५३६ । विक्रमे १८७४ ॥ श्रीः ॥ ग्रंथा =१८ ॥ छं ॥

विषय —(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)——वैशेषिक दर्शन के पदार्थखंडन की प्रक्रिया के साथ साथ अनुमान, शब्द, उपमानादि न्यायसिद्धांतों का प्रतिष्ठापन ।

विशेष ज्ञातव्य——प्रस्तुत, हस्तलेख अपूर्ण है । प्रारंभ का प्रथमपत्र एवं उसके बाद के प्राप्त पत्र की प्रारंभिक कतिपय पंक्तियाँ क्षतिग्रस्त हैं । रचनाकार एवं टीकाकार श्री रामभद्र सार्वभौम हैं । लिपिकाल संवत् १६७४ है । मध्य में सील के कारण पत्र अत्यंत जीर्ण हो गये हैं । अन्यविवरण उपलब्ध नहीं । दे० सं० स० १८४, क्र० सं० ३०५ ।

मानसोल्लास वृत्तांत विलास :—आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—१८ × ६ से० मी०, अपूर्ण, पत्र सं०—८६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, अक्षर (प्रति पंक्ति)—३४, परिमाण (अनुष्टुप् में) २२६६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०—६८६१ ।

आदि——....प्रणम्य शंकराचार्यमुख्यान् सर्वान्गिरीयस ॥ मानसोल्लासवृत्तांतं वर्णयामि यथामति ॥ २ ॥ इह हि भगवान् भाष्यकारः श्री मच्छंकराचार्यनामा मंदमतींस्तत्व- भिज्ञासू ननुगृहीतुं दक्षिणामूर्ति स्तोत्र व्याजेन समस्त वेदांत रहस्यमाविश्चकार दशभिः पद्यबंधैः ॥ तच्छिष्येण च विश्वरूपाचार्येण सुरेश्वरापरनाम्ना तत्पद्य- प्रबंधार्थतत्वं तात्पर्यतोमानसोल्लासनाम्ना वर्त्तिकात्मना ग्रंथसंक्षेपेणाविष्कृतं ॥ तमिमं ग्रंथं यथाशक्ति विवृणोमि ॥ तत्र शिष्टाचार संरक्षणामकृतं मंगलाचरणं द्योतय यमाद्यश्लोकः ।

अंत —इति श्री मानसोल्लास प्रबंधोयं यथामति ॥ व्याख्यातो रामतीर्थेन गुरुदेव प्रसादः ॥१॥ अनेनभगवान् श्री मद्दक्षिणामूर्तिरीश्वरः ॥ गुर्वात्मप्रीयतांनित्यं तत्वज्ञानप्रदः सतां ॥ २ ॥ इति श्री दक्षिणामूर्ति स्तोत्र व्याख्या प्रबंधमानसोल्लास वृत्तांतविलासः समाप्तः ॥ भगवत्याप्रसादेन भट्ट गणपतिः सुधीः ॥ व्यलिखत्स्वात्मबोधार्थं मानसो- ल्लास संज्ञकं ॥ १ ॥ संवत् ॥ १६५६ समय पौष शुद्ध चतुर्दश्यां बुधवासरे लिखितं परोपकारार्थं अनेन प्रियतां देवो भगवान् परमेश्वरः ॥ भक्त्यानुग्रहणार्थाय सूर्यवंश समुद्भवः ॥ श्री दक्षिणामूर्त्तये नमः ॥

विषय——(पूर्ण विवरण सहित आरंभ से अंत तक)——दक्षिणामूर्तिस्तोत्र का वेदांतपरक व्याख्यान ।

विशेष ज्ञातव्य——आरंभ के प्रथम पृष्ठ के अतिरिक्त प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है । जीर्णता के कारण यत्रतत्र खंडित है । इसमें शंकराचार्य कृत प्रसिद्ध दक्षिणामूर्ति स्तोत्र के

दशश्लोकों की दशउल्लासों में व्याख्या की गई है। टीका का नाम है—'मानसोल्लास वृतांत विलासः। टीकाकार हैं जगद्गुरु शंकराचार्य के शिष्य सुरेश्वर उपनामधारी विश्वरूपाचार्य। अंत से ज्ञात होता है कि रामतीर्थ नामक व्यक्ति ने भी स्तोत्रव्याख्या की है। लिपिकाल संवत् १६५६ है। प्राचीन प्रति होने के कारण ग्रंथ महत्वपूर्ण है। दे० सं० सं० ६८६१, क्र० सं० ३७५।

वेदांत सूत्र (१–४ अध्याय) : [राधा वल्लभीय भाष्य], आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—३२·५ × १३·२ से०, अपूर्ण, पत्र सं–६६७, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–४, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३४, परिमाण (अनुष्टुप् में)–५९२५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०—९५९।

आदि–श्री गणेशाय नमः नित्यानुराग सिन्धूत्थर सचन्द्रस्फुरत्प्रभाम् श्रीमल्लीलादिभिस्तुत्याँ स्तौमि श्री रामवल्लभाम् १

अंत–इति श्री मद्भगदवतार वेदार्थ निर्णायक श्रीमद्वेदवेदान्ताचार्य श्री मद्वेदव्यासकृत वेदांत सूत्राणां सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजाबहादुर श्री साता रामन्द्रकृपा पात्राधिकारि विश्वनाथ सिंह जी देवकृते श्री राधावल्लभीय मत प्रवर्तक भाष्ये चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः चतुर्थाध्यायं च सिद्धः ४······मिति ज्येष्ठे शुक्ल नवमी संवत १९०४ शुभमस्तु···।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–वेदांत सूत्रों का राम-कृष्ण तत्वदर्शन मंडित वैष्णवभाष्य, विशिष्ट रूप से राधावल्लभीय मतयुक्त।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत ग्रंथ के आदि अंत सुरक्षित हैं। बीच के कतिपय पत्र अप्राप्त हैं। यह राधावल्लभीय मतपरक भाष्य है। लिपिकाल संवत् १९०४ है। अन्य विशेष विवरण उपलब्ध नहीं। ग्रंथकार महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव रीवाँ नरेश हैं। दे० सं० सं० ९५९, क्र० सं० ४६३।

शास्त्र दीपिका : आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, अपूर्ण, पत्र सं०—२८, पंक्ति–(प्रतिपृष्ठ)–१२, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४२, परिमाण (अनुष्टुप में)–८ २, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–८१६।

आदि– × × हि देवते। अप्राप्तत्वात्तुवसने यदा क्षौमं विधीयते। वसना वादधीया तामित्येतावनुवादकौ। अनुवादोयथा······सा वस्त्रीपुंसयोर्द्वयो:।

अंत–इत्युनाध्याय श्री पार्थसारथिमिश्र विरचितायां शास्त्र दीपिकायां षष्ठस्याष्टमः पादः ।। शुभमस्तु ।। संवत १६६३ पौष सुदि त्रयोदशी।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–मीमांसा दर्शन के सिद्धांतों की व्याख्या।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है। प्रारंभ के चार पत्र अप्राप्त हैं। इसका लिपिकाल अत्यंत प्राचीन होने के कारण ग्रंथ बहुत महत्वपूर्ण है। लिपिकाल संवत १६६३ है। दे० सं० सं० ८१६, क्रम सं० ४६९।

सप्त पदार्थी : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२२.३ × ६.६ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं० १०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ८, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३२, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१६०, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं० ६७१६ ।

आदि–।।श्री गणेशाय नमः ।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।। हेतवे जगतामेव संसारार्णव सेतवे । प्रभवे सर्व विद्यानां शंभवे गुरवे नमः ।। १ ।। प्रमिति विषयाः पदार्थाः । ते च द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवायाभावाख्याः सप्तैव ।

अंत–अभ्युदयनिःश्रेयसयोः साधनाभिधायकत्वंशास्त्रमिति । सप्त द्वीपा धरायावत्यावत्सप्त धराधराः । तावत्सप्तपदार्थीयमस्तु वस्तु प्रकाशिनी ।। इति शिवादित्य विरचितेयं सप्त पदार्थी समाप्तः ।। शुभमस्तु ।। संवत् १६१० ली० भीषा ।।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–न्याय-वैशेषिक दर्शन–सम्मित तत्वज्ञान का विवेचन ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख १० पत्रों में पूर्ण है । ग्रंथकार श्री शिवादित्य मिश्र हैं । ग्रंथ का लिपिकाल सं० १६२० होने से यह अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है । प्रस्तुत ग्रंथ की विशेषता इसमें भी है कि अन्नंभट्ट के तर्क संग्रह की तरह इसमें न्याय और वैशेषिक दर्शन के सिद्धांतों का परस्पर समन्वय हो गया है । इसका श्रेय सर्वप्रथम इसी ग्रंथ को है । दे० क्रम सं– ५२७, सं० सं० ६७१६ ।

(७) धर्म–दान वाक्यावली–आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२८ × १०.३ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं०–६६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–७, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ५४, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१५५६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–६१३६ ।

आदि–ॐ नमो विघ्नेशाय नमः ।। वन्दे मुकुंदस्य पदारविन्दं वन्दानुवृन्दारक वृन्द वन्द्यम ।। मन्दाकिनीयन्मकरन्दबिन्दुसन्दोहसन्देहधियं दधाति ।। त्रैलोक्याधिपतेः पदत्रय जमुं बंदैत्याधिपं याचते दत्तां सत्वमयेन तेन वसुधामेवायतो गृह्णतः ।। देवार्थे बलिनं वलिं छलयतेप्यस्मै हरे स्तुष्यतः स्वाराज्य प्रति भूम विष्णु सपदि स्वस्त्यक्षरं पातु वः ।। श्री कामेश्वर राज पण्डितकुला लह्वार सार श्रियामावासो नरसिंहदेव मिथिला भूमण्डला खण्डलः । दृप्यद्दुर्द्धर वैरि दर्प दलनो भूदर्पं नारायणो विख्यातः शरदिन्दु कुन्द धवल भ्राम्यद्यशोमण्डलः । तस्योदार गुण श्रयस्ममिथिलक्ष्मापालचूड़ामणेः श्रीमद्धीरमतिः प्रियाविजयते भूमण्डलकृतिः ।। दातेकल्पतेव च चरिते यारुन्वतोवस्थिरा या लक्ष्मीरिवक्यै वे गुणगण गौरीव या गणपते ।।

अंत–निबंधांसम्यगालोक्य श्री विद्यापति सूरिणा दानवाक्यावली देव्याः प्रमाणैर्विमली कृता ।। समस्त प्रक्रिया विराजमान दलित कल्पलताभिमान भवभक्ति भावित वहमान महामहादेवी श्रीधर रमति विरचितां दानवाक्यावली संपूर्णम् ।।समाप्ताः ।। शुभमस्तु ।। श्री ।। ··· लिखितं जयनंद ब्रह्मणे अर्गलापुर मध्ये श्री यमुणा-पश्चिमस्तटे ।। संवत् १६७६ वर्षे मघ कृष्ण द्वादश्यं भृगुवसरे ।।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–विभिन्न पुराणों, उप पुराणों से नाना

प्रकार की वस्तुओं के दान की विधि एवं उनके फल से संबंधित उद्धरणों का संकलन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण है । ग्रंथकार श्रीधर रमति एवं लिपिकार जयनंद ब्राह्मण हैं । लिपिकाल सं०१६७६ होने से ग्रंथ अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है । अन्य विशेष विवरण उपलब्ध नहीं है । दे० सं० सं० ६१३६, क्र० सं० १२६ ।

ज्ञानविवेक—आधार-देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–३१ × १२·५ से० पूर्ण, पत्र सं०–२६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, अक्षर (प्रति पंक्ति) ४६, परिमाण (अनुष्टुप् में) ८६७, प्राचीन, प्राप्ति-साधन–दान, सं०सं० १०८२,

आदि -ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। अथ संक्षेपेण दानान्युच्यंते परस्वत्नोप्तत्यंतो द्रव्यत्या-गोदानं देवतत्वः सदितेपात्रे श्रद्धया प्रतिपादनं दानमित्यभिनिर्दिष्टं व्याख्यातं तस्य कथ्यतेतच्च दानेतदुक्तं गीतासु दातव्यमिति ···· दीयतेनुपकारिणे देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकंस्मृतं २ ।

अंत—सर्वरोगप्रशमनंनित्यं सन्तति वर्धनम् । अश्वस्थरूपीभगवान्प्रीयतां मे जनार्द्दनः ।। इत्युच्चार्य नमस्कृत्य । ····· इति श्रीपदवाक्य प्रमाण श्री भट्टोजिदीक्षित सूरेः सूनुना भानु दीक्षितेन विरचितो दानविवेकः समाप्तः ।

विषय (पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)—दानविधि, दानार्थ पात्रापात्र निर्णय एवं दान योग्य वस्तु तथा कालनिरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आद्यंत पूर्ण है । रचनाकार श्री भानु दीक्षित हैं । लिपिकाल एवं लिपिकारादि के वर्णन अनुपलब्ध हैं । दिवाकर कृत 'दान-चन्द्रिका' से प्रस्तुत लघुकाय ग्रंथ पूर्ण साम्य रखता है । दे० सं० सं० १०८२, क्र० सं० १३० ।

मुक्ताफल : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२७ × १२ से०, पूर्ण, पत्र सं०–५०, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)–१०, अक्षर–(प्रति पंक्ति)–३६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–११९६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–४४८,

आदि—।। श्री गणेशाय नमः ॐ नमः श्री परमात्मने विष्णु पंचात्मकं वंदे भक्तयाष्टादश-भेदया सांगवर्गोनविंशत्या भक्तैर्नवत्रिराश्रितं ? विष्णुप्रीत्यैचतुर्वर्गचिं-तामण्यांमजीगणात् भेदान्व्रतानांदानानां तीर्थानां मोक्षवर्त्मनां २ मूर्त्तिप्र साद पूजानां हेमाद्रिर्गणकाग्रणीः विष्णुभक्त्यंगभक्तानां गणयत्युक्त सारधीः ३ मुक्ताफलेन ग्रंथेन सर्द्धगंवतशुक्तिना भक्ति स्वात्यंबुना मुग्धमार्कंडेय शिशुश्रिता ४ मुक्ताफलं सुखचित स्फुटभक्तिभेद प्रत्यक्षणंनेतलसत्पदपद्मरागं हेमाद्रि संभव सुवर्णनिवेशरम्यं कंटेकुरु-ध्वमवरुंध्यमपूर्व लक्ष्मी ५ ।।

अंत—चतुरेण चतुर्वर्गचिंतामणिवाणकरथेहेमाद्रिणार्जितंमुक्ताफलं पश्यत कौतुकात् ४६ निर्मथ्य पयसाराशिंमंदरः कौस्तुभंव्यधात् हेमाद्रिर्वचसां मुक्ताफलं रत्नं हृदिप्रभोः ४७ हेमाद्रियतएव गुणेनयेनतेनैवशीतमुखेन सुबद्धमेतत् मुक्ताफलं प्रतिफल जगदीशरूपं-यत्कंटकर्ण हृदयं सुषमास्यकांचित् ४८ द्वे एवंचिलेरामस्यसिंधुर्बद्धः पुराधुनाहेमाद्रि-

स्वमुपानीतः सूर्यावृत्तः प्रदक्षिणः ४६ विद्वद्धनेश शिष्येणनिषक्केशव सूनुना हेमाद्रिर्बोपदेवेन मुक्ताफलमचीकरत् ५ इत्याचार्य श्री वोपदेव पंडिते विरचितं मुक्ताफलं समाप्तं ।।

विषय (पूर्ण विरण सहित, आरंभ से अंत तक)—विष्णु-महिमा, उनकी पूजाविधि तथा विष्णु-भक्तों के प्रकार एवं लक्षणों का भागवत आदि विशिष्ट वैष्णव ग्रंथों के मार्मिक स्थल-विशेष से चयन किये गये ललित श्लोकों से संपुटित विस्तृत व्याख्या।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख पूर्ण है। रचनाकार श्री वोपदेवपंडित हैं। रचनाकाल या लिपिकाल का वृत्त उपलब्ध नहीं। दे० सं० सं० ४४८, क्रम सं०—२६०।

(८) पुराणेतिहासः भागवत चतुर्थ स्कंध—आधार-देशी कागज, लिपि—देवनागरी, पूर्ण, पत्र सं०—८८, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, अक्षर (प्रति पंक्ति)—५३, परिमाण (अनुष्टुप् में)—६३२४, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं० ८५६।

आदि—श्री गणेशाय नमः। । श्री भवानी पतये नमः। ······श्री मैत्रेय उवाच ।। मनोस्तु शतरूपायां तिस्रः कन्याश्च जज्ञिरे। आकूतिर्देवहूतिश्च प्रसूतिरिति विश्रुताः ।।

अंत—इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे प्राचेतसोपाख्यानंनाम एकत्रिंशोध्यायः। समाप्तः चतुर्थः ।। ४ ।।··········इति श्री भावार्थ दीपिकायां चतुर्थस्कंध एकत्रिंशोध्यायः ।। ३१ ।।········।। श्री भागवते चतुर्थः समाप्तः। वेदान्ती चिंतामणि भट्टेनलिखितं काश्यां। संवत् १६८४ धातानाम संवत्सरे ।। जेष्ठ शुद्ध दशम्यां।

विशेष (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—भागवत के चतुर्थ स्कंध की कथा।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख पूर्ण है। लिपिकाल संवत् १६८४ होने से ग्रंथ प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है। लिपिकार वेदान्ती चिन्तामणि भट्ट हैं। विशेष विवरण उपलब्ध नहीं। दे० क्र० सं० २०८, सं० सं० ८५६।

भागवत (सप्तम स्कंध—भावार्थ दीपिका टीका): आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—३५.२ × १४.५ से०, पूर्ण, पत्र सं०—६७, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, अक्षर (प्रतिपंक्ति)—५०, परिमाण (अनुष्टुप् में)—४६०६, प्राप्तिसाधन—दान,

आदि—श्री गणेशाय नमः। स्वभक्तपक्षपातेन तद्विपक्ष विदारणं। नृसिंहमद्भुतं वंदे परमानंद विग्रहं ।। १ ।। इतिः पंचादशाध्यायैः सप्तमे वर्ण्यतेधुना। इतिश्च वासना प्रोक्तातत्तत्कर्मानुसारिणी। ······श्री कृष्णाय नमः राजोवाच ।। समः प्रियः। सुहृद्ब्रह्मन् भूतानां भगवान्स्वयं। इंद्रस्यार्थेकथं दैत्यानवधीद्विषमो यथा।। १ ।।

अंत—इति श्री भागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां पारमहंस्यां संहितायां सप्तम स्कंधे प्रह्लाद चरित्रे युधिष्ठिर नारद संवादे शुकपरीक्षित संवादे च नृसिंहावतारवर्णनपूर्वकं सदाचार निरूपणं पंचदशोध्यायः ।।१५।। संवत् १६७६ विभव नाम संवत्सरे श्रावण शुद्ध पंचम्यां लिखितं वेदांती चिंतामणि भट्टेन।

(टी०)–सप्तमस्कंध गूढ़ार्थपदभावार्थदीपिका । संसेव्यता सदां सदा सद्भिर्यति श्रीधर निर्मिता । इति श्री श्रीधर स्वामि विरचितायां श्री भागवते टीकायां भावार्थदीपिकायां सप्तमस्कंधे पंचदशोध्यायः ॥१५॥

श्री रंगनाथ चरणौ तापत्रयनिवारणौ । चिन्तामणेर्विमूढस्य नित्यं ज्ञान प्रकाशकौ ॥

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–सप्तम स्कंधान्तर्गत भागवत की कथा ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है । लिपिकाल संवत् १६७६ एवं लिपिकार श्री वेदांती चिंतामणि भट्ट हैं । लिपिकाल अत्यंत प्राचीन होने के कारण ग्रंथ महत्वपूर्ण है । ग्रंथ के अंतिम आवरण पृष्ठ के ऊपर बीच में निम्नलिखित श्लोक लिपिबद्ध है जो प्रसिद्ध हिंदी कवि संत श्री गोस्वामी तुलसीदास जी की निधन तिथि से संबंधित है । तत्कालीन भक्त के द्वारा विवादास्पद तुलसी-जीवनी के लिये यह एक प्रामाणिक अकाट्य प्रमाण है । ग्रंथ की महत्ता इससे भी बढ़ गई है ।

–आकाशाहि रसक्षपाकरमिते संवत्सरे श्रावणे प्रातर्वासवभूषितेसितदिने कृष्णे तृतीया तिथौ ॥ काश्यां देवनदी जलेतिविगलं लीलाशरीरं मुदा त्यक्त्वा रामपदं जगाम तुलसीदासः कलौदुर्लभं ॥ २ ॥'

भागवत (एकादश स्कंध): आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, पूर्ण, पत्र सं०–१४६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१३, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३८, परिमाण (अनुष्टुप् में)–४५०८, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–८१८ ।

आदि–श्री महागणपतये नमः ॥···श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री वादरायणिरुवाच ॥ कृत्वा दैत्यवधं कृष्णः सरामो यदुभिर्वृतः ॥ भुवोऽवतारयद्भारं जविष्ठं जनयन्कलिं ॥१॥

अंत–इति श्री भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे पारमहंस्यां संहितायां वैयासिक्यांमौशलं नाम एकत्रिंशोध्यायः ॥३१॥···संवत् १६७५ माघशुद्धत्रयोदश्यां लिखितं वेदांती रंगनाथभट्टसुत श्री चिंतामणि भट्टेन लिखितं काश्यां···एवं एकादशस्कंधभावार्थस्य दीपिका । स्वाज्ञानध्वांतभीतेन श्रीधरेणप्रकाशिता । २८ । इत्येकादश स्कंधे भावार्थ दीपिकायां एकत्रिंशोध्यायः ॥ ३१ ॥

विषय–(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)–भागवतांतर्गत एकादश स्कंध की कथा ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है । लिपिकाल संवत् १६७५ है, अतः ग्रंथ महत्व पूर्ण है । लिपिकार वेदांती श्री चिंतामणि भट्ट हैं । दे० क्र० सं० ३४१, सं० सं० ८१६ ॥

वाल्मीकि रामायण (वालकाण्ड): आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–३०·५ × १३·२ से०, अपूर्ण, पत्र-संख्या–६५ (१, ३-८०, ८७–१०२), पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–६, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४३, परिमाण (अनुष्टुप् में)–२३१६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०–३०२ ।

आदि–॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने सर्वज्ञानाधि-वासायवाल्मीकि मुनये नमः ॥ श्री जानकीवल्लभायनमः ॥ श्री रघनाथाय नमः ॥

...र ...ना ... तेन हरिणा लोक धारिणा ॥ अजेन विश्वरूपेण निर्गुणेन ...णा ॥ १ ॥ जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनंदनो रामः ॥ दशवदन-निधनकारी दाशरथिः पुंडरीकाक्षः ॥

अंत- ... वरोचितामा समेथिवानुतम राजकन्यया । अतीव रामः शुभुमेभि-रामया ... दिविदक्ष कन्यया ॥ इत्यार्षे रामायणे महर्षि वालमीकि विरचिते ... पंचपंचाशत्तमः सर्गः ॥५१॥ समाप्तमिद बालकांडं ॥ ...स्तु ॥ ... ॥ संवत ॥ १६५१ ॥ समय पुस ॥

विषय-(पूर्ण विवरण रहित, प्रारंभ से अंत तक)—बालाकांडांतर्गत रामकथा ।

विशेष ज्ञातव्य-हस्तलेख अपूर्ण है। मध्य के पत्र अनुपलब्ध है। केवल ६५ पत्र (१, ३-८०, ८७-१०२) प्राप्त हैं। आद्यंत के पत्र सुरक्षित हैं । लिपिकाल संवत् १६५१ होने से ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है, अतः महत्वपूर्ण है। अंतिम कुछ ... कृमि-क्षतित हैं। दे० सं० सं० ३०२, क्र० सं० ४६ ।

(९) ...ध्यायी—आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—१६·६ × ६·८ से० मी०, अपूर्ण पत्र संख्या—११४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, अक्षर—(प्रतिपंक्ति)—२४, परिमाण (अनुष्टुप् में) ११६७, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०—२६५५ ।

आदि- ॐ नमो ...शाय ॥ संवत्सरो वियज्ञ प्रजापतिः ॥ तस्य— तद्वारं पदमा ॥ वास्या ॥ ...मा॰ ... द्वारपिधानः ॥ १ ॥

अंत-...। १ । चतुर्थ प्रपाठकः समाप्तः । कंडिका ॥ १०२ ॥ ॥ अयं वियज्ञा यो यं ... । ...ध्यायी नामएकादशमं कांडं समाप्तः ॥ अस्मिन्कांडे कंडिका संख्या ॥ ४३७ ॥ संवत् १६६८ वर्षे अधिक आषाड शुद्ध ११ सोमे अद्येह प्रकाशा-स्थाने ...भट्टकेन लिखितम् ॥

विषय—इस ब्राह्मण ग्रंथ में यज्ञवर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख किसी ब्राह्मण ग्रंथ की प्राचीनतम उपलब्ध प्रति है । लिपिकाल संवत् १६६८ है। ग्रंथ के मध्य के पृष्ठ पूर्ण नहीं हैं। दे० क्र० सं० ४, सं० सं० २६५५ ।

(१०) व्याकरण—

जनयते प्रयोग शुद्धि विचार—आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, २२·४ × ९·१ से० मी० पूर्ण, पत्र सं० ४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १३, अक्षर (प्रतिपंक्ति) ३९, परिमाण (अनुष्टुप् में)—४०५६, प्राचीन, सं० सं० ६४९३ ।

आदि— ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जनयते इति प्रयोग शुद्धिर्विचार्यते ॥ ॥ ननु प्रीतिं भक्तजनस्य यो जनयते विघ्नं विनिघ्नन्स्मृत इति ज्योति : शास्त्र लीलाव्युक्त भास्कराचार्य पद्ये जनयते इति प्रयोग : कथं॥ उच्यते ॥ जन जनने इति धातो र्हेतुमतिचेति प्रयोजक व्यापारे णिचिकृते पश्चाद्वर्त्तमानार्थविवक्षायां वर्द्धमाने

लङिति लटि कृते तदादेशोनिचश्चेत्यात्मने पदे कृते तस्मिन्परत : कर्त्तरि शबिति शपि कृते तस्मिन्परतोगो: सार्वधातुकार्द्धधातुकयोरिति गुण : ।। एचोयवायाव इत्ययादेश : ।

अंत–एतत्तु संपूर्ण महाभाष्याभिज्ञानां वय्याकरणानां हृदयंगममित्यलमति प्रसंगेनेतिर्वशवम् ।। इति श्री मत्द्देवद्दैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंदेन विरचिता जनयते इति प्रयोग शुद्धि : समाप्तिमगमत् ।। संवत् १६४७ शके १५१२ पौष शुद्ध श्री नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंदस्येयं कृति : ।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–लीलावती में कहे गये भास्कराचार्य के प्रीतिं भक्त जनस्य यो जनयते विघ्नं विनिघ्नंस्मृत '' इस पद्य में 'जनयते' शब्द के औचित्य एवं शुद्धि-अशुद्धि की व्याकरण सम्मत विशद व्याख्या।

विशेष ज्ञातव्य––चार पत्रों में समाप्त प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण एवं सुरक्षित है। ज्योतिष शास्त्र के एक शब्द का व्याकरणशास्त्रीय विवेचन इस ग्रंथ की अकेली विशेषता है । रचनाकार गोविंद हैं जो प्रख्यात् ज्योतिविद नीलकंठ दैवज्ञ के सुपुत्र हैं। लिपिकाल संवत् १६४७ होने से ग्रंथ अत्यत प्राचीन है, अत : महत्व पूर्ण है । दे० क्र० सं० ४५ सं० सं० ६४६३ ।

धातुगणपाठ : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२२·२ × ८·७ से०, पूर्ण, पत्र सं० ३०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–६, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–२८, परिमाण (अनुष्टुप् में) ३१५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं–६३ ।

आदि––।। श्री गणेशाय नम: ।। भूसत्तायां चितीसंज्ञाने । अत सातत्य गमनोच्युतिरुआसेचने । श्च्युतिरुन्क्षरणे । मंथ विलोडने ।

अंत––धुञ् कंपने ।। प्रीञ्तप्पणे ।। उभयतोभाषा: ।। इति स्वार्थेन ताश्चुरादय: ।। ।। संवत् १६६१ समये नाम पौष सुदि तृतीया दिने गुरौ लिपितमिदं पुस्तकं गुणाकरकृष्ण पंडिताभ्यां ।। शुभं ।। संगृह्य पुस्तकान्यष्टौसंशोध्य च पुन: पुन: ।। कष्टादलेखि कृष्णेन सद्धातुगण पुस्तकम् ।। १ ।। श्यतुसत्तांसंदेहसंदोहं सामज्ञास्य: ।। ।।

विषय––(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)––धातुतत्त्व निरुण एवं उनके विभिन्न अर्थों में प्रयोग ।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण है । रचनाकर गुणाकर कृष्ण पंडित हैं । लिपि-काल संवत् १६६१ है । लिपिकाल के प्राचीन होने से ग्रंथ महत्वपूर्ण है । दे० क्र० सं० ६३, सं० सं० १७८५ ।

विकृति वल्ली (विकृति कौमुदी टीका) : आधार–देशी कागज आकार–२०·१ × ६ से०मी० पूर्ण, पत्र सं०–१४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१०, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३२, परिमाण (अनुष्टुप् में) – ७०, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–३६०४ ।

आदि––।। श्री गणेशाय नम: ।। श्री नृसिंहाय नम: ।। यत्प्रसादेन भासन्ते ब्रह्माद्या जगदीश्वरा: । यत्ज्ञानाद्विनिवर्तंते पाशा: पुत्रेपणादय : ।। १ ।। तं वंदे परमानंदं जगदानंद वर्द्धनं । नित्यं ज्ञानधनं विष्णुं लोकाधिष्ठानमच्युतं ।। २ ।। ग्रंथे विकृति वव्याख्ये

व्याडिप्रोक्ते पुरातने । टीकेयंक्रियतेस्माभिर्नाम्नां विकृतिकौमुदी ॥ ३ ॥ तद्यथा । तं सर्वज्ञं जगत्सेतुं परमात्मानमीश्वरं १ वंदे नारायणं देवं निर्वद्यं निरंजनमिति ॥१॥

अंत––स्वस्ति श्री गंगाधरभट्टाचार्य विरचितायां विकृति कौमुद्यां टीकायां व्याड्याचार्यप्रणीतं जटाघण्टविकृतिलक्षणप्रतिपादकं विकृति नाम्निग्रंथे जटाविकृति लक्षणं नाम प्रथमं पटलं संपूर्णम् ।········शाके १५०३ वृषनाम सम्वत्सरे आषाढ़ शुक्ल तृतीयां रामचंद्र सूनुना कृष्णेन लिखितं ॥

विषय —(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)– वैदिक ऋचाओं के उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि भेदों सहित सम्यक् उच्चारण के लिये व्याकरण के नियमों का प्रतिपादन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण है । ऋचाओं के उच्चारणार्थ 'जटाघृष्ट विकृति-लक्षण-प्रतिपादक' यह वैदिक व्याकरण का ग्रंथ है। व्याडिराचार्य की 'विकृतिवल्ली' पर गंगाधर भट्टाचार्य की यह विकृति कौमुदी टीका है। लिपिकाल लगभग ४०० वर्ष पूर्व संवत् १६३८ शाके १५०३ होने से ग्रंथ की प्राचीनता स्वयं-सिद्ध है। दे० क्र० सं० २०६ सं० सं० ३६०४ ।

सिद्धांत कौमुदी (पूर्वार्द्ध) : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२४·५ × १०·६ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं०–४५, –पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१३, अक्षर (प्रति-पंक्ति) ५१, परिमाण (अनुष्टुप् में)–३५४, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–४२६० ।

आदि––योगविभागस्येष्टसिद्ध्यर्थत्वात्कतिपयतिङंतोत्तारपदोयं समाप्तः सच छंदस्येवपर्यभूपत् । अनुव्यचतत् ।

अंत—इति द्विरुक्ति प्रक्रिया ॥ इति श्री भट्टोजीदीक्षित विरचितायां सिद्धांत कौमुद्यां पूर्वार्द्धं समाप्तं ॥·······संवत् १६८० वर्षे कार्त्तिक मासे पुर्नवाशि लिषितं काशिक्षेत्रे ॥

विषय––(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)—व्याकरण के नियमों का भाष्य ।

विशेष ज्ञातव्य––सिद्धांत कौमुदी का पूर्वार्द्ध पूर्ण है। लिपिकाल संवत् १६८० है जो गोस्वामी तुलसीदास की निधनतिथि के ३ मास बाद का है। अतः ग्रंथ प्राचीन होने से महत्व रखता है। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं है। ग्रंथ अपूर्ण है जिसके केवल ४७ पृष्ठ (४४–६०) उपलब्ध हैं। दे० क्र० सं० ३८१ । सं० सं० ४२६० ।

(११) साहित्य–अमरुकशतकम्–आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२५ × ८·५ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं०–१४, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–८, अक्षर प्रतिपंक्ति–३६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–२७३, प्राचीन, प्राप्ति साधन–दान, सं० सं० ३२५१ ।

आदि–श्री गणेशाय नमः व्याकृष्टिवद्धखटकामुखपाणिपृष्टप्रेंखन्नखांश्रुचयसंवलितों विकाया । त्वां पातु मंजरितपल्लवकर्णपूरलोभभ्रमद्भ्रमरविभ्रमभृत्कटाक्षः ॥ १ ॥ क्षिप्तो-हस्तावलग्नः प्रसभमयिहितोप्याददानोंशुकांतं गृहणन्केशेश्वपास्तश्चरणनिपतितो नेक्षितः संभ्रमेण ॥ आलिगंन्योवधूतस्त्रिपुरयुवतिभिः साश्रुनेत्रोत्पलाभिः ॥ कामीवाद्रपिराधः सदहतु दुरितं शांभो वः शराग्निः ॥ २ ॥

अंत–स्वभ्रूरिंगितदैवतं नयनयोरीहालिहः सदैवकः स्वामी निःस्वमिनेष्यसूयतिमनो जिघ्र सपत्नीजनः । तद्दूरादयमंजलिः किममुना दृष्टेन कानमे वेदग्धी न तथापि कापि सदनव्यर्थामत्रत्रनः ।। १०२ ।। माजाहीत्यपमंगलंव्रजसखेस्नेहेनहीनं वचः तिष्टेति प्रभुतायथारुचिकुरुपवेदाप्युदासीनता ।। नो जीवामि विना त्वयेव सकलं संभाव्यते वा न वा तन्मां शिक्षय नाथ यत्सुचितं वक्तुंत्वयि प्रस्थिते ।।१०३।। इति अमरुशतकं समाप्तं । शुभमस्तु ।। संवत् ।।१६८६ समये चैत वदि नवमी-भ्रिगूवास लिखितं पुस्तकं काश्यां मनोहर मिश्र ।।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित आरंभ से अंत तक)–प्रस्तुत कृति शृंगाररस की प्रख्यात रचना है ।

विशेष ज्ञातव्य–हस्तलेख पूर्ण है । लेखक अमरु या अमरुक के नाम से प्रसिद्ध कवि हैं । लिपिकार मनोहर मिश्र हैं । लिपिकाल संवत् १६ ६ होने से ग्रंथ महत्वपूर्ण है । दे० क्र० सं० ७, सं० सं० ३२५१ ।

कार्त्तवीर्योदयकाव्य : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार– ०·५ × ११·५ से० मी०, अपूर्ण, पत्र सं०–३७, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–१०, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–३६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१३६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं० ४२५८ ।

आदि–।। श्री गणेशाय नमः ।। अधिवदनमुमायाः सव्यमुद्दामभावं मुकुलितमपि जाग्रद्दक्षिणं धर्ममेघे ।। स्मर बपुषि च वामं यस्य नेत्रं तृतीयं स भवतु मम भूत्यै वल्लभः शैलजायाः ।। १ ।। प्रतिदिनमतिवेलं भूभृतां धर्मभाजां विविध चरित बंधा मंगलं तुंगयंतः ।। विदधति निज कर्त्तुः सत्कवेर्दीघमायुर्नवरसपरिपाक-प्राप्रणीयैर्यशोभिः ।। २ ।। सकलगुणनिकायं कार्तवीर्यं नृपेद्रं प्रतिमतिर-गुणामे वर्णने या प्रवृत्ता ।। उपहसति पुरा मां सज्जनसाम्बशंभू हरि बलमिव सिंधोर्वधने साहसीति ।। ३ ।। नरपति चरिताना वर्णनं व्यासमुख्या-विदित परम तत्वा अप्यकुर्वन्कवींद्राः ।। अहमपि पदबंधैर्वर्णये शुद्ध गर्भं स्तद मुमवनिपालं पांडवेभ्योपि शौर्ड ।। ४ ।।

अंत–यो विद्वद्विजराज राजित गुणात्पुण्येन जन्माप्तवान् भट्ट श्री पुरुषोत्तमात्कुलमणे दुर्गाविका नंदनः ।। तेनोक्ते सति चंद्रचूड कविना श्री बालकृष्णोदये काव्ये पूरिचतुर्दशः श्रुति सुखः सर्गोपवर्गोज्वलः ।। ४५ ।। इति श्री चंद्रचूडविरचिते कार्त्तवीर्योदये काव्ये चतुर्दशः सर्गः ।। संवत् १६६३ शके १५५८ पर संवत्सरे माघवदि पंचम्यां लिखितं पुस्तकं ।। भट्ट श्री चंद्रचूडेन चंडापुरवासिना ।। कार्त्त-वीर्योदयः काव्यं शंकराय समर्पितं ।।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)–महाराज कार्तवीर्य के जन्म से लेकर उसके शैशव, दिग्विजय, केलिक्रीडा कुसल प्रशासनादि तक की आद्योपांत काव्यमयी गाथा ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत ग्रंथ के १७ से लेकर ३४ तक के मध्य के पत्र अप्राप्त हैं । अतः ग्रंथ खंडित है रचनाकार चंद्रचूड़ हैं एवं लिपिकाल संवत् १६६३ है । लिपिकाल

प्राचीन होने से ग्रंथ महत्वपूर्ण है। ग्रंथ में 'कार्तवीर्योदय' के स्थान पर किसी ने श्रोदर राइटिंग करके इसे 'बालकृष्णोदय' काव्य बनाना चाहा है (दे० पत्र सं० १५ का निचला पत्र) । इसी तरह के कुछ और स्पष्ट परिवर्तन किए गये है—जैसे 'हैहयो नाम राजा' की जगह 'नंदको नाम राजा', 'क्षत्रियक्षेत्रलक्ष्म्याः' की जगह 'नंदको नंद लक्ष्म्याः' या 'श्री कार्त्तवीर्यस्य महोदयस्य' की जगह 'बालकृष्णस्य महोदयस्य' इत्यादि । ग्रंथ १४ सर्गों में समाप्त हुआ है । कहीं कहीं कवि ने ग्रंथकार के नाम परिवर्तन के क्रम में 'शाम्ब शंभु' या 'शंभुचूड' ऐसा परिवर्तन किया है । दे० क्र० सं० ३४, सं० सं० ४२५८ ।

काव्यप्रकाश : आधार-देशी कागज, लिपि-देवनागरी, आकार-२७·१ × १०·५ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं—८५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-१०, अक्षर (प्रतिपंक्ति) १५, परिमाण (अनुष्टुप् में) २३९०·६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन--दान, सं० सं०-३६०८ ।

आदि -श्री गणेशाय नमः ।। ।। ग्रंथारंभे विघ्नविघाताय समुचितेष्टदेवतां ग्रंथकृत् परामृशति ।। ।। नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्रां ।। नवरस-रुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ।। ।। नियतिशक्त्या नियतरूपा सुखदुःख मोहस्वभावा परमा एवाणुपादानकर्मादि सहकारिकारण परतंत्रा षड्रसा न च हृद्यैवैः ।। ब्रह्मणो निर्मितिर्निर्माणमेतद्विलक्षणातु कविवाङ् निर्मितिरतएव जयति ।।

अंत -तदेते लंकारदोषा यथासंभविनोप्येवंजातस्य करः पूर्वोक्तये वेरीत्यादोपजात्यंतर्भाविनो नृष्टथक प्रतिपादनमर्हंतीति संपूर्णमिदं काव्यलक्षण ।। ।। इत्येषमार्गो विदुषां विभिन्नोप्यभिन्नरूपः प्रतिभासते यत् । न तद्विचित्रं मदमुत्रसम्यग्विनिर्मिता संघटनैवहेतु।। इति काव्यप्रकाशे मम्मटकृते अर्थालंकारनिर्णयो नामदशम उल्लासः ।। ।। इति श्री काव्यप्रकाशः सपूर्णः ।। ।। संख्या ।।७००।। ।। श्लोकवृत्त १२४२ गद्य-पद्य ७६ प्राकृतार्था ४६ एवं १३५८ अनुष्टुप् २००० ।। शके १५०७ व्यनाम संवत्सरे भाद्रपद वदि नवमी कान्हदेवेन लीख्यते पुस्तक·······।।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित आरंभ से अंत तक)—काव्यशास्त्र की मान्यताओं का गंभीर विवेचन

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है। यह प्राचीनतम उपलब्ध प्रति है । लिपिकाल शाके १५०७ रचनाकार मम्मट हैं । दे० क्र० सं० ३५, सं० सं० ३६०८ ।

किरातार्जुनीयम्—आधार-देशी कागज, लिपि-देवनागरी, आकार-२४·५ × १०·६ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं० ६२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)-८, अक्षर (प्रतिपंक्ति)-३२, परिमाण (अनुष्टुप् में) १४७२, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०—४२६४ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासुवृत्तिं यमयुक्तवेदितुं ।। स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैत वने वनेचरः ।। १ ।।

अंत—अज जयरिपु लोकंपादपद्मानतः सन् गदित इति भवेन श्लाघितो देवसंघैः । निज गृह मथ गत्वा सादरं पांडुपुत्रो धृत गुरु जय लक्ष्मीर्धर्म पुत्रं ननाम ।। ४८ । इति पाठांतरं।

इति श्री किरातार्जुनीये महाकाव्ये भारविकृतौ लक्ष्म्यंके धनंजयेनास्त्र लाभोनाम अष्टादश : सर्ग: ।। शुभंभवत् संवत् १६८३ समये जेष्ठ सुदि प्रतिपद भौमदिने पुस्तकमिदं घनश्यामेण लिषितं आत्मपठनार्थ परोपकारार्थ वा शुभमस्तु । ....

विषय—(पूर्णविवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—किरातवेषधारी शिव से अर्जुन के शस्त्रास्त्र प्राप्ति की काव्यमयी गाथा ।

विशेष ज्ञातव्य—महाकवि भारवि द्वारा रचित 'किरातार्जुनीयम' महाकाव्य आद्यन्त पूर्ण है । लिपिकाल संवत् १६८३ होने से ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है, अत: महत्वपूर्ण है । लिपिकार श्री घनश्याम हैं । दे० क्र० सं० ५०, सं० सं० ४२६४ ।

नैषध पूर्वार्द्ध— आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२६·५ × ६·८ से०, अपूर्ण, पत्र सं० १७०, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–७ अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४६, परिमाण (अनुष्टुप् में) :२१४, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–१८८५ ।

आदि—श्री गणेशाय नम: ।। श्री गुरुभ्यो नम: ।। निपीय यस्य क्षिति रक्षिण: कथाम्स्थाद्रियं तेन वुधा: सुधामपि ।। नल: सित क्षत्रित कीर्तिमंडल: स राशिरासीन्महसांमहोज्वल ।। १ ।। रसै: कथा यस्य सुधावधीरणी । नल: सभूजानिरभूद्गुणाद्भुत ।। सुवर्णदंडैक सितातपत्रितज्वलत्प्रतापावलि कीर्तिमंडल: ।। २ ।।

अंत—श्री हर्ष कविराज राजि मुकुटालंकार हरि: सुतं श्री हरि: सुषुवेजितेंद्रिय चयं मामल्ल देवी चयं ।। ।। श्रृंगारामृत शीत गावयभगादेकादशप्लन्महाकाव्येस्मिन्निपधेश्वरस्य चरिते सर्गो निसर्गोज्वल: ।। १ ।। समाप्तो नैषध पूर्वार्द्ध: ।। संवत् १७०६ ।। समय माघ शुद्ध ।। १३ ।। लिखितं काश्यांमध्ये । श्री काशि विश्वनाथो जयति ।।

विषय—(पूर्णविवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—नैषध महाकाव्यांतर्गत नल कथा ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख पूर्ण है । लिपिकाल संवत् १७०६ है । लिपिकाल प्राचीन होने से ग्रंथ महत्वपूर्ण है । अन्य विवरण उपलब्ध नहीं । दे० क्र० सं० १७५, सं० सं० १८८५ ।

मुद्राराक्षस (मुद्रादीपिका टीका) : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२५ × ८·६ से० मी०, अपूर्ण, पत्र सं० ८१, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–७, अक्षर–(प्रतिपंक्ति)–४१, परिमाण (अनुष्टुप् में)–१४५२·६, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–३२४६ ।

आदि–श्री गणेशायनम: त्रैलोक्यरंगभूमि: सकलगुणवृता नायिका शैलपुत्रे व्योमैवाविवितानं निजवृसनवरं वाघभांडंकपालम् आनंदप्राप्तिरुच्चै: कलिकलुषहतेर्यस्यलाभोजनानां स्थाणुर्विश्वैकदृश्वा सकपठनटनानर्त्तको व: पुनातु १ यद्यपि ते ते गुणिनो येषामग्रेण मे वचनशक्ति: तदपि च तदनुग्रहभूर्भवितुं वांछा ममास्तीह २

अंत–कारुण्यं कृष्ट चेतानि जहितपरता हानितोप्युज्झितश्री: श्रीमान्देवो महेश: प्रभवतु कृतिनामिष्टसिद्धैश्चिराय ।। देशे तीरभुक्तौ सरिसरमहितश्चक्रपाणिर्गुणाद्य: श्रीवृत्सस्तत्सुतोभूत्रयविनयमयस्तंत्रविद्य: कवींद्र: तत्पुत्र: ख्यातकीर्त्ति: कविरवगणितश्रीर्ज्जयादित्यवीर: श्री देवस्तत्सुतोभूत्तदुवितनय: पंडितो रामशर्म्मा

सिद्धेश्वरस्तत्र नयो बभूव द्विजेंद्रवर्गो गणितप्रतिष्ठः तत्सूनुरानम्र शिवागुरुभ्यो ग्रहेश्वरः सन्नयमार्गसेवी ।। तेनेयं रचितो वैर्यत्नान्मुद्राख्यनाटकेटीका ।। सज्जनमनः स्वतोषंधत्तां तत्रत्व बोधेन ।। ।। इति महामहोपाध्याय-श्री ग्रहेश्वरविरचितायां मुद्रादीपिकायां सप्तमोंऽकः समाप्तः ।। संवत् १७५३ पौष शुद्ध २ बुधे पुस्तकं लिखापितं बालात्रिपाठी ।।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, आरंभ से अंत तक) अमात्य की राजनीति-प्रवीणता का निरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख मध्य के कुछ अनुपलब्ध पृष्ठों के अतिरिक्त पूर्ण है। यह विशाखदत्त के प्रसिद्ध नाटक की टीका है । टीकाकार ग्रहेश्वर हैं। लिपिकाल संवत् १७५३ है । प्राचीन प्रति होने के कारण ग्रंथ महत्वपूर्ण है। दे० क्र०सं० २३६, सं०सं० ३२८६ ।

रसमंजरी : आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२१.५ × ११ से०, पूर्ण, पत्र सं० ३१, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–८, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–२६, परिमाण (अनुष्टुप् में)–४५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–२११ ।

आदि–।। श्री कृष्णाय नमः ।। आत्मीयं चरणं दधाति पुरतो निम्नोन्नतायां भुवि स्वीयेनैव करेण कर्षतितरोः पुष्पं श्रमाशंकया ।। तल्पे किं च मृगत्वचा विरचिते निद्रातिभागैर्निजै । रंत प्रेमभरालसः प्रियतमामंगेदधानोहरः ।। १ ।। विद्वत्कुल-मनोभृंग रसव्यासंगहेतवे ।। एषा प्रकाश्यते श्रीमद्‌भानुना रसमंजरी । तत्र रसेषु शृंगारस्याभ्यर्हितत्वेन तदालंबनविभावत्वेन नायिका तावन्निरूप्यते ।। ३ ।।

अंत–माध्वीकस्य दस······ह सुंदरी रसमंजरी ।। कुर्वंतु कवयः कर्णभूषणं कृपया मम ।। ३६ ।।···तो यस्य गणेश्वरः कविकुलालंकार चूड़ामणिर्देशोयस्य विदेहभूः गुरमरित्कल्लोल कि । र्मारिता । पद्येन स्वकृतेन तेन कविना श्रीभानुनायोजिता वाग्देवी श्रुतिपारिजात कुसुमस्पर्द्धाकरी मंजरी ।। १३८ ।। इति श्री भानुदत्तमिश्र प्रकाशिता रस मंजरी समाप्ता ।। स्याम सुंदर जी पाठनार्थं ।। संवत् १७७५ वर्षे श्राद···कृष्ण अष्टमी शुक्रे लिषतं ।

विषय–(पूर्ण विवरण सहित आदि से अंत तक)–नायिका–भेद–वर्णन ।

विशेष-ज्ञातव्य–हस्तलेख पूर्ण है। रचनाकार श्री भानुदत्त मिश्र एवं लिपिकाल सवत् १७७५ है। अंत के १०–१५ पृष्ठ कीटों के कारण क्षतिग्रस्त हैं । दे० क्र० सं० ३३६, सं० सं० २११ ।

विदग्ध माधव नाटक : आधार–देशीकागज, लिपि–देवनागरी, आकार–३३.२ × १२.८ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं०–५७, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–११, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–५२, परिमाण (अनुष्टुप् में) २०३८, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–४१५६ ।

आदि––श्री कृष्णाय नमः सुधानांचांद्रीणांमपिमधुरिमोन्माददमनी दधानाराधादि प्रणयघन-सारैः सुरभितां समंतात्संतापोद्गम विषम संसार सरणी प्रणीता ते तृष्णां हरतु हरि लीलाशिखरिणी १ अपि चा अनर्पित चरींचिराऽकरुणापीवतीर्णः कलौ समर्पयितु-मुत्तमोज्वल रसांस्व भक्तिश्रियं हरिं पुरह सुंदर द्युति कदंब संदीपितः सदा हृदय

कंदरे स्फुरतु वः शचीनंदनः २ नाद्यंते सूत्रधारः अलमितिविस्तरेण ।

अंत––कृष्णः स्मित्वा भजवति तथास्तु तदेहिगोदोहावसरेमामप्रेक्ष्य चिंतयिष्यंतौ मातर पितरावविलवं गोकुलं प्रविश्यनंदयाम इति निःक्रान्ताः इति श्री गौरी तीर्थ विहारो नाम सप्तमोंकः श्री रूप सनातन परम वैष्णव विरचितं विदग्ध माधवं नाम नाटकं समाप्तं राधाविलास वीताकं वतुः षष्टिकलाधरं विदग्धमाधवं साधु शीलयतु विचक्षणाः १ नंद सिंधुरखांगेन्दुसंख्ये संवत्सरे गते विदग्ध माधवं नाम नाटकं गोकुले कृतं २ श्रीकृष्णाय नमः

विषय––(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)––श्री राधा-माधव-लीला का मधुर नाटकीय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य––हस्तलेख आद्यन्त पूर्ण है । लिपिकाल सम्वत १६७६ (?) होने से ग्रंथ प्राचीन है । अतएव यह महत्वपूर्ण है । दे० क्र० सं० ३८७, सं० सं० ४१५६, ।

विदग्ध मुखमंडन––आधार–देशी कागज, लिपि–देवनागरी, आकार–२२ × ६˙२ से० मी० पूर्ण, पृ० सं०–१८, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १०, अक्षर (प्रति पंक्ति) ४२, परिमाण (अनुष्टुप् में)–४७३, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं०–५१७८ ।

आदि––।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। सिद्धौषधानिभवदुःख महा गदानां पुण्यात्मनां परमकर्ण रसायनानि ।। प्रक्षालनैक सलिलानि मनोमलानां शौद्धेदनेः प्रवचनानिचिरं जयंति ।।१।। जयंति संतः सुकृतैक भाजनं परार्थ संपादन सद्व्रतस्थिताः ।। करस्थ वीरोपमविश्वदर्शिनो जयंति वैदग्ध्य भुवः कवेगिरः ।।२।।

अंत––सदा गति हतो छायस्तमसो वश्यतां गतः ।। अस्तमेष्यति दीपो यं विधुरेकः शिवंस्थितः ।।७२।। पूर्णचंद्रमुखी रम्या कामिनी निर्मलांबरा ।। करोतु कस्य नस्वातं एकांते मदनातुरं ।। ३३ ।। च्युत दत्ताक्षर जातिः ।। इति श्री विदग्धमुखमंडने श्रीधर्म दास विरचिते चतुर्थः परिछेदः समाप्तः ।। संवत १६६६ । काल युक्त माम संवत्सरे दक्षिणायने हेमंत ऋतौ पौषेमासि कृष्णपक्षे षष्ठ्यां सौम्य वासरे पूर्वानक्षत्रेप्रीतियोगे रघुनाथेनलिखितमिदं पुस्तकं स्वार्थ परार्थं च ।।

विषय (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)––अनेक प्रकार के विषय से सम्बन्धित सुललित सरस श्लोकों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य ग्रंथ आद्यन्तपूर्ण है । रचनाकार धर्मदास एवं लिपिकार श्री रघुनाथ है । १८ पत्रों में पूर्ण इस हस्तलेख का लिपिकाल सं० १६६६ है; अतः लिपिकाल की प्राचीनता के चलते ग्रंथ काफी महत्वपूर्ण है । परिशिष्ट के क्रम में इसी नाम का एक सं० १७२६ के लिपिकाल का भी ग्रंथ सम्मिलित है । विशेष विवरण ज्ञात नहीं है । दे० क्र० सं० ३८६, सं० सं० ५१७८ ।

वृन्दावन काव्यम्––आधार–देशीकागज, लिपि–देवनागरी, आकार,–२४.१ × ६ से० मी०, पूर्ण, पत्र सं०–५, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)–४, अक्षर (प्रतिपंक्ति)–४४, परिमाण (अनुष्टुप् में)–५५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन–दान, सं० सं––३६१० ।

प्रारंभ––श्री गणेशाय नमः ।। वरदायनमो हरयेपतति जनोयं स्मरन्नपि नमो हरये । बहुशश्चक्रं दहतामनसि दितिर्येनवक्रं दैत्यवक्रंदहता ।।१।। स्वमिव भुजंगविशेषं व्युपधायचयः स्वपिति

भुजंग विशेषं। नव पल्लवसमकरया श्रियोर्मिपंक्त्यावसेवित: समकरया २ येन च वलिरसुरोध: क्षितेरवस्थापित: सुरैरसुरोध: ।। पृथुक: सन्निभवदनश्चिक्षेपवद्य: सरोजसन्निभवदन: ३

अंत—नदतिजलदनिदाघेसारंगोपास्त्रेविभ्रति कैतकमवनै: सारंगोपास्त्रे । संप्रत्ययवर्मकालोन वाहिनीपानां त्वन्मुखसुरभीणां श्रोतुर्नवाहिनीपानां ५१ इत्याह पीतवाससमाय-तनेवस्त्रं कसासुरात्पमायतनेवस्त्रं हसितानां विमलतयासहलीलाजानांछायां प्रकिरण दशनैसहलीलाजानां ५२ ।। इति श्री कालिदास विरचितं वृंदावनाख्यं काव्यं समाप्तं ।। १ ।। संवत् १६६४ ।। शुभमस्तु ।।१।।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित आरंभ से अंत तक)—श्रीकृष्ण लीलाओं का स्फुट वर्णन

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्त लेख पूर्ण है। य प्राचीन कृति कालिदास के नाम के साथ संयुक्त होने से महत्वपूर्ण है। ग्रंथकार के रूप में कालिदास का नाम अंकित है। लिपिकाल संवत् १६६४ है। दे० क्र० सं० ३९१ सं० सं०—३६१० । इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ की २ प्रतियाँ और हैं जिनकी सं० सं० ३९०६ और ७१४४ है।

वृत्त रत्नाकर—आधार—देशी कागज, लिपि— देवनागरी, आकार— २३·७ × ७·१ से० मी०, प्राप्ति—स्थान—पूर्ण, पत्र संख्या ४९, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, अक्षर (प्रति पंक्ति) ४०, परिमाण (अनुष्टुप में) ७३५, प्राचीन, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०—५३९० ।

आदि—।। ।। नमो भगवते वासुदेवाय ।। ।। या देवी वाग्वितानं वितरति नितरां सुप्रसन्ना कविभ्यो याधत्ते सर्वशास्त्र व्यतिकर रचितां ज्ञान गम्यां तनुञ्च । या सर्वं प्राणि जिह्वा त्रिदश मुनि नुता या श्रुता सिद्ध सर्वैरङ्घ्रिद्वंद्वारविंदं प्रणिहित मनसा नौमि तस्या : सदैव ।। १ ।। छंद: सिन्धु विधायनाय विलसत्कूक्ति प्रचण्ड द्युति प्राताम्यत्सुमनश्चकोर निकर सांतंस्यत्त संप्रीतये । उद्यद्वित्त स चक्रसंविघटन प्रौढ़ प्रसादो दया श्री मत्कीर्ति करेन्दुनेयमधुना सच्चन्द्रिका तन्यते ।। २।।·······
·······वेदार्थ शैव शास्त्रज्ञ यद्येकोऽभूद्द्विजोत्तम: तस्य पुत्रोऽस्ति केदार: शिव पादार्चने रत: । तेनेदं क्रियते छंदो लक्ष्य लक्षण संयुतम् । वृत्त रत्नाकरन्नाम बालानां सुग्ध बुद्धये ।।

अंत—अत्र सुगमत्वं लघुत्वं निश्चितत्वं च प्रकर्ष: । लक्ष्य लक्षण संयुतत्वं च विशेष इति सर्वमवदातम् ।। अस्ति ध्वस्ताखिलाद्य प्रसरसमुदय स्योल्लसत्कीर्तिरुच्चै र्हौरिलो नाम विद्वान्द्विज निकर नुत: सामगाचार्यधुर्य: विद्यास्त्वष्टादशाख्य: । सवित् मिव यतौ कंठ यैकत्र देशे स्वत्रा द्वीयाम्विवंधिक्रम यस्विलनैर्यत्र विश्रान्तिमीयु: ।।····
······तस्यात्मजस्यमुरजिच्चरणारविन्दद्वंद प्रणामयरिलब्धविशुद्ध बुद्धे: । कुर्यादिय प्रगति कीर्ति कराद्य भिधस्यनित्यं कृति: कृतिजनस्य मन प्रमोदम् ।। ।। इति श्री हौरिलात्मज वृद्धा परनामधेय कीर्तिकर विरचितायां वृत रत्नाकरोद्बोध चंद्रिकायां यद्युत्तय प्रकाशनो नाम षष्टोध्याय: ।। शुभमस्तु ।। संवत् १६०० समये मार्ग वदि ११ गुरु वासरे लिखितमिदं पुस्तकम् ।। ।।शुभमस्तु।।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)—छंद शास्त्र के विभिन्न भेदों उपभेदों का निरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आद्यंत पूर्ण है । ग्रंथकार केदार भट्ट हैं । इस पर सर्वांगीण संपूर्ण कीर्तिकार की उद्बोध-चंद्रिका नाम्नी टीका है । लिपिकाल सं० १६०० होने से ग्रंथ अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है । ग्रंथ के किनारे कृमि-कृत्तित है । दे० क्र० सं० ४०६ सं० सं० ५३६० ।

(१२) स्फुट—संस्कृत मंजरी—आधार—देशी कागज, लिपि—देवनागरी, आकार—२३.७ × ६.७ से०, अपूर्ण, पत्र सं०—१, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, अक्षर (प्रति पंक्ति) २५, परिमाण (अनुष्टुप में) १५०, प्राप्तिसाधन—दान, सं० सं०—७७२६ ।

आदि—के अमी किंकुलाः किं नामानोभवंतः ।। नाम किं भवतां ।। तत्सर्वं नोवृत्तजल्लां विहाय वद ।। कस्त्वं ।। ब्राह्मणोऽहं ।। किमिर्थध्रियते पर्णामेतत्वया ।। ब्राह्मणानां भोजनार्थ मेतत्पर्णध्रियते मया ।। इतः ।। आगम्यतां भवता ।। अस्माभिरागम्यते ।।

अंत—अवलोकयतु ।। मवदासो वयं ।। किमपि द्रष्टुमिछावर्तते ।। कि मास्मात्प्रार्थयते भवान् ।। कोभिलाषोहृदिस्फुरति ।। तदुच्यतां भवता ।। बालबुद्धिप्रकाशार्थं दिङमात्र लिखितं मया ।। इति संस्कृत मंजरी समाप्तोयं ।।

विषय—(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ से अंत तक)—संस्कृताभ्यासी शिशु के बाद—विवाद-शक्ति-वृद्धि-हेतु सुगम संस्कृत में वार्तालाप की प्रश्नोत्तर विधि ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख अपूर्ण है । प्रारंभ का प्रथम पत्र अनुपस्थित है । कुल १६ पत्र प्राप्त हैं । लेखक एवं रचनाकाल का विवरण अनुपलब्ध है । बालबुद्धि प्रकाशार्थं लेखक के इस दिग्दर्शन की सार्थकता से यह अपने ढंग का विरल ग्रंथ है । दे० क्र० सं० १०६ सं० सं० ७७२६ ।

संस्कृत मंजरी—आधार—देशी कागज, लिपि—देव नागरी आकार—२२.५ × ६.१ से० मी० पत्र सं०—१६ पंक्ति (प्रति पृष्ट) ६, अक्षर (प्रतिपंक्ति) २५, परिमाण (अनुष्टुप में ३६१ प्राप्ति साधन—दान सं० सं०—४४५३ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। केवल वैदिकानां व्यवहारार्थं कतिपय संस्कृत पदानि लिख्यंते अरे-मया स्नानार्थ गंतव्यं शीघ्रं गंतव्यं पाकस्तु जातः कति ब्राह्मणाः भोजनार्थमानेया-एक एव ब्राह्मण आनेयः स्नानसामाग्रीतर्हिदातव्या जल पात्रं ग्राह्याः तिलाग्रह्याः खड्ग पात्रं ग्राह्यं तिलक साधनं ग्राह्यं शुद्ध वस्त्रं ग्राह्यं उत्तरीयं ग्राह्यं एनत्सर्वं गृहीत्वा मणिकर्णिकायां गत्वा यथाविधि स्नात्वा सन्यासिनां समुद्यपे गत्वा दंड प्रणामं कृत्वा स्वामिनः भिक्षार्थ आगंतव्यमिति प्रार्थितवान्

अंत—कानि कानि भक्ष्याणिपर्य्यवेवेषिषुःमास वटकाः मुद्ग वटकाः चणक वटकाः मंडका लड्डुकाः शष्कुल्याः मोदकाः तिल लड्डुकाः अश्याः पूया पूपाः पिष्टकाः अतिरसाः एतात्यरिवेषणानंतरं सद्योघृतं दुग्धं च पयं वेवेषिषुः वसुवासिन्यः अरे वा मनाश्रमयद्य दत्तं तत्सर्वं भुवान भुक्तं मया स्वामिनः मम यद्वस्तु भक्षणयोग्यं, तदेव मया गृहीत स्वामिनः कृत वरद भट्टेन गीर्वाण पदमंजरी इति श्री संस्कृत मंजरी संपूर्णं शुभ मस्तु संवत् १८१६ लिखिंत काश्यां

विषय–(पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक)–वटुकों एवं वेदांतियों के हेतु काशी स्थित घाटों, विद्वानों, सम्यक भोजन पदार्थों तथा काशी की ऐतिहासिक विवरणिका के साथ साथ उनके लिये आचार संहिता का निरूपण ।

विशेष ज्ञातव्य–प्रस्तुत हस्तलेख आद्यन्त पूर्ण है । कुल १६ पत्र हैं : लिपिकाल संवत् १८१६ हैं । प्रस्तुत हस्तलेख की अपनी एक ऐतिहासिक गरिमा भी है । काशी की विद्वतमंडली का सर्वांगीण परिचय, वहाँ के घाटों का विशद वर्णन तत्कालीन शिष्टाचार एवं बटु-जनोचित भोज्य पदार्थों का सम्यक् निर्देश इस ग्रंथ की अपनी विरल विशेषताएँ हैं । वरद भट्ट इसके रचनाकार हैं । पुस्तक के श्रीगणेश में ही लेखक ने 'केवल वैदिकानां व्यवहारार्थं कतिपय संस्कृत पदानि लिख्यंते' ऐसा उद्धृत कर ग्रंथ के विषयवस्तु का निर्देश कर दिया है । ग्रंथ की शैली, विषय-वस्तु, रचना-कौशल तथा ऐतिहासिक–सामग्री के चलते यह अपने ढंग का अकेला हस्तलेख है । 'संस्कृत मंजरी' नाम कीं अन्य हस्तलिखित प्रतियों से वैषम्य रखता हुआ यह ग्रंथ सबसे महत्वपूर्ण हैं । दे० क्र० सं० १७० सं० सं० ४५४३ ।

